॥ ॐ नमः ॥

॥ पंचप्रतिक्रमणसूत्र ॥

तथा

पोसहविधि, चैत्यवंदन, थोयो, स्तवनो, सज्झायो, गौतमस्वामीना रास, पगामसिज्झाय, पाक्षिकसूत्रादि युक्त.

सुधारा वधारा साथे आवृत्ति त्रिजी.

आ ग्रंथ समस्त जैन बंधुओने अवश्य उपयोगी जाणी तेने
यथामति संशोधन करी छपावी प्रसिद्ध करनार,-

श्री जैन हठीसिंग सरस्वती सभा तरफथी
शाह. मणीलाल वाडीलाल.
अहमदावाद.

श्री जैन विद्याविजय प्री. प्रेसमां शा. चुनीलाल अमथाशाए
छाप्युं. रीचीरोडना पुल नीचे,-अमदावाद.

प्रत ५००.   वीरसंवत २४४३
संवत १९७३-सने १९१७.

किंमत ०-८-०

॥ श्लोक ॥

श्वेतपद्मासना देवी, श्वेतपद्मोपशोभीता,
श्वेताम्बरधरा देवी, श्वेतगन्धानुलेपना; ।
अर्चिता मुनिभिः सर्वै-ऋषिभिस्तूयते सदा,
एवं ध्याला सदा देवीं, वांछितं लभ्यते नरः॥



॥ श्लोक ॥

श्रीमद्विद्यावतंसाः शमदमसहिता बालभावाद्विरक्ता,
ज्ञानाभ्यासे प्रवृत्ता निखिलजनमनोहर्षदाः स्वैर्गुणौघैः।
मध्यस्था मान्यवाक्या दलितमदबला भ्रातृचन्द्राभिधाना
स्तारुण्ये तीर्णमोहा निरुपमचरिताः सूरिराजा जयन्तु॥

॥ श्रीसंविग्नचक्रचूडामणीश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर-सद्गुरुभ्यो नमो नमः॥

तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकोटीकाख्ये गणे।
श्रीमच्चंद्रकुले वटोरुरुहद्गच्छे परिम्लायिते ॥
श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपा प्राप्तावदातेधुना ।
स्फूर्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥ १ ॥

श्री
श्री पा श्री
श्री पा स पा श्री
श्री पा स चं स पा श्री
श्री पा स चं द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र श्व री सू द चं स पा श्री
श्री पा स चं द सू री श्व र स र श्व री सू द चं स पा श्री

जन्म संवत १५३७	गु	क्रियाउद्धार १५६४
चारित्र संवत १५४६	रु	सूरिपद संवत १५६५
उपाध्याय पद १५५४	भ्यो	युगप्रधान पद १५९९
	न	स्वर्ग संवत १६१२
	मो	
	न	
	मः	





॥ तात्कालिक वांछी। फल दाता ॥

॥ पूज्यपाद प्रातःस्मरणीयसातिशयाचार्यमहाराज-
श्री १००८ श्रीभ्रातृचंडसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

श्लोक-येन ज्ञानप्रदीपेन, निरस्याभ्यन्तरं तमः।
ममात्मा निर्मली चक्रे, तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥१॥

श्री
श्री भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र सू द्र चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र सू री सू द्र चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री
श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री

जन्म संवत १५२०	गु	सूरीश्वर पद सं. १९६७
(वांकडीया वडग्रामे.)	रु	ना वैशाख सुद १३ बुधवारे.
दीक्षा संवत १९३५ ना	भ्यो	(शिवगंज नगरे.)
फागण शुद २ (वीरमग्रामे).	न	स्वर्गवास सं. १९७२ ना
क्रिया उद्धार १९३७ ना	मो	वैशाख वद ८ शतभिषा नक्षत्रे
वैशाख सुद ११ (मांडलग्रामे).	न मः	(राजनगरे.)

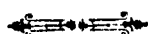






॥ तात्कालिकवांछितफलदाता ॥

अर्पणपत्रिका.



मर्हूम परमपूज्य परमोपकारी गुरुराज आचार्य महाराज श्री श्री श्री १००८ श्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरजी साहेब,-

आपे पोताना पवित्र चारित्रवडे जगज्जीवोना अंतःकरणने सुवासित करीने पोतानी अमृतमय वाणीथी अमारा जेवा अनेक जीवोने आनंद पमाडी उत्तम देहथी परोपकारादि उत्तमकार्य साधी विद्वत्‌शिरोमणी सकलशास्त्रपारगामी समता अने क्षमाना समुद्ररुप थइ जगतनी अंदर निर्मल यशने अचल स्थापी आपश्रीजी स्वर्गवासी थया, ते उक्त आपना अनेक गुणोथी आकर्षायिने आपना अमर आत्माने आ लघु पुस्तक समर्पण करीये छीये.

ली०

श्री जैन० स० स०

अथ श्री त्रण चोवीसीना चोवीस तिर्थंकरोना नाम.

अथ श्री अतित चतुर्विंशति (थइ गइ.)	अथ श्री वर्तमान चतुर्विंशति (चालती)	अथश्री अनागत चतुर्विंशति (हवे पछी थशे.
१ श्रीकेवलज्ञानी.	१ श्रीरीषभदेव.	१ श्रीपद्मनाभ.
२ ,, निर्वाणि.	२ ,, अजितनाथ.	२ ,, सुरदेव.
३ ,, सागर	३ ,, संभवनाथ	३ ,, सुपार्श्वदेव.
४ ,, महायस.	४ ,, अभिनंदन.	४ ,, स्वयंप्रभ.
५ ,, विमलनाथ.	५ ,, सुमतिनाथ.	५ ,, सर्वानुभूति.
६ ,, सर्वानुभूति.	६ ,, पद्मप्रभु.	६ ,, देवश्रुतिनाथ.
७ ,, श्रीधरनाथ.	७ ,, सुपार्श्वनाथ	७ ,, उदयनाथ.
८ ,, दत्तनाथ.	८ ,, चंद्रप्रभु.	८ ,, पेढालनाथ.
९ ,, दामोदरनाथ.	९ ,, सुविधिनाथ.	९ ,, पोटिलनाथ.
१० ,, सुतेजानाथ.	१० ,, शीतलनाथ.	१० ,, सतकीनाथ.
११ ,, स्वामीनाथ.	११ ,, श्रेयांसनाथ.	११ ,, सुव्रतनाथ.
१२ ,, मुनिसुव्रतनाथ.	१२ ,, वासुपुज्यस्वामी	१२ ,, अममनाथ.
१३ ,, सुमतिनाथ.	१३ ,, विमलनाथ.	१३ ,, निःकषायनाथ.
१४ ,, शिवगतिनाथ.	१४ ,, अनंतनाथ.	१४ ,, निःपुलाकनाथ.
१५ ,, अस्त्यागनाथ.	१५ ,, धर्मनाथ.	१५ ,, निर्ममनाथ.
१६ ,, नमिश्वरनाथ.	१६ ,, शांतिनाथ.	१६ ,, चित्रगुप्तनाथ.
१७ ,, अनिलनाथ.	१७ ,, कुंथुनाथ.	१७ ,, समाधिनाथ.
१८ ,, यशोधरनाथ.	१८ ,, अरनाथ.	१८ ,, संवरनाथ.
१९ ,, कृतार्थनाथ.	१९ ,, मल्लिनाथ.	१९ ,, यशोधरनाथ.
२० ,, जिनेश्वरनाथ.	२० ,, मुनिसुव्रतस्वामी	२० ,, विजयनाथ.
२१ ,, सुद्धमतिनाथ.	२१ ,, नमिनाथ.	२१ ,, मल्लिनाथ.
२२ ,, सीवंकरनाथ.	२२ ,, नेमनाथ.	२२ ,, देवनाथ.
२३ ,, स्यंदननाथ.	२३ ,, पार्श्वनाथ.	२३ ,, अनंतवीर्यनाथ.
२४ ,, संप्रतिनाथ.	२४ ,, महावीरस्वामी	२४ ,, भद्रंकरनाथ.

अथश्री हाख महाविदेह क्षेत्रमा वीस भगवान विचरे छे तेमनां नाम.

१ श्रीमंधरस्वामी.	८ श्रीअनंतविर्य.	१५ श्रीइश्वरनाथ.
२ ,, युगमंधरस्वामी.	९ ,, सुरप्रभ.	१६ ,, नेमप्रभु.
३ ,, बाहुस्वामी.	१० ,, विशाळ.	१७ ,, वीरसेन.
४ ,, सुबाहु.	११ ,, वज्रधर.	१८ ,, महाभद्र.
५ ,, सुजात.	१२ ,, चंद्रानन.	१९ ,, देवयस.
६ ,, स्वयंप्रभ.	१३ ,, चंद्रबाहु.	२० ,, अजीतवीर्य.
७ ,, रिषभानन.	१४ ,, भूजंगम.	

श्री रुषभानन. चंद्रानन. वारीषेण. वधमान.

श्री महावीरस्वामीना अगिआर गणधरनां नाम.

१ श्रीइंद्रभूतिजी.	५ श्रीसुधर्मास्वामी.	९ श्रीअचलभ्रातजी
२ ,, अग्निभूतिजी.	६ ,, मंडितजी.	१० ,, मेतार्यजी.
३ ,, वायुभूतिजी.	७ ,, मौर्यपुत्रजी.	११ ,, प्रभासजी.
४ ,, व्यक्तजी.	८ ,, अकंपितजी.	

क्रमांक	४५ आगमनां नाम.	श्लोक.
	॥अगीआर अंग॥	
१	श्री आचारांग सूत्र	....२५००
२	श्री सूयगडांग सूत्र	....२०००
३	श्री ठाणांग सूत्र	....३७६०
४	श्री समवायांग सूत्र	....१६६७
५	श्री भगवती सूत्र	....१५७५०
६	श्री ज्ञाता सूत्र....	....६०००
७	श्री उपासगदसा सूत्र....	....८१२

२८ श्री मरणविभत्ति सूत्र ५ ....७२०

२९ श्री गणिविद्या सूत्र ६ ....१००

३० श्री तंडुलवियाली सूत्र ७ ....४००

३१ श्री देवेंद सूत्र ८ ....२००

३२ श्री आउरपच्चखाण सूत्र ९ .... ८४

३३ श्री महापच्चखाण सूत्र १० .... १३४

॥ ६ छेदनां नाम ॥

३४ श्री व्यवहार सूत्र १ ....६००

३५ श्री निसीथ सूत्र २ ....८१५

३६ श्री महानिसीथ सूत्र ३ ....४५००

३७ श्री पंचकल्प सूत्र ४ ....११३३

३८ श्री दसाश्रुतस्कंध सूत्र १८००

३९ श्री वृहत्कल्प सूत्र ६.... .... ४७३

॥ ४ मूल सूत्र ॥

४० श्री दश वैकालिक सूत्र १ .... ७००

४१ श्री ओघ सूत्र २ .... ८००

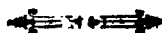
४२ श्री आवश्यक सूत्र ३.... .... १२५

४३ श्री उत्तराध्ययन सूत्र ४ ....२०००

॥ २ ॥ चूलिका ॥

४४ श्री नंदी सूत्र १ ....७००

४५ श्री अनुयोगद्वार सूत्र २ ....१८९९



प्रस्तावना.

—※—

श्रीजिनागमबोहिबं, संसारार्णवतारणं ।
ममेदं दर्शितं येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥

आ श्लोक श्रीमन्नागपुरीय तपागच्छाधिराज भट्टारक श्रीपार्श्वचंद्रसूरियें रचेला घणा ग्रंथोनी आदिमां धरेलो छे. एनो अर्थ एवो छे के " संसाररुप समुद्रथी तारनार आ श्रीजिनागमरुपीजहाज जेणे मने बताव्युं ते श्री गुरुने नमस्कार. " आ उपरथी तथा बीजा घणा पुरावाथी सिद्ध थाय छे के श्री पार्श्वचंद्रसूरियें श्रीजिनागमने अनुसरीनेज क्रियाउद्धार कर्यो छे. अने, खरु जोतां आजकाल आपणने मुख्य आधार पण श्रीजिनागमनोज छे माटे तेने अनुसरती विधियुक्त क्रिया करवाथी आपणने बहु लाभ प्राप्त थाय छे., ए क्रियामां श्रावकने करवानी मुख्य क्रिया षडावश्यक संबंधी छे; माटे ते क्रिया केम करवी तेनी विधि तथा सूत्रपाठ शुद्ध रीते दरेक धर्मानुरागी पुरुषे शीखवा जोइये, अने ए खातर एक शुद्ध पुस्तक छपाववामां आवे तो ते बहु उपयोगी थइ पडे, एम विचारीने आ पुस्तक छपाव्युं छे. अमने आशा छे के ए पुस्तकने ध-

र्मानुरागी जनो विनयथी साचवी तेनो योग्य लाज लेशे. आ स्थळे जणाववुं जरुरनुं छे के आजकाल केटलाएक लोको पोताना गच्छना ममत्वमां लीन थइ दृष्टिरागना आवेशथी हिताहितनो विवेक भूली जइ सभ्यता अने समतानुं उल्लंघन करी क्लेश वधारवा बीजा गच्छवाळाउनी अनेक रीते निंदा करवाना प्रयत्नमां हर हमेश मग्न रहे छे. पण एम करवुं ए धर्मानुरागी सज्जन पुरुषने तो तद्दन अघटित छे. कारण के आजकालमां सर्वज्ञ तो कोइ छेज नहि; माटे "नक्की अमेज खरा छीये" आवो दुराग्रह केम करी शकाय. वळी "अमो जे जे करीये छीये ते सर्व साचुंज छे" आ निश्चय तो कोइ विशिष्ट ज्ञान होय तो थइ शके; ते शिवाय शी रीते थइ शके. शास्त्रकार तो कहे छे के छद्मस्थनी बुद्धि अवश्य स्खलित थाय छे अने तेथीज टीकाकारो जेवा समर्थ आचार्योये पण पोताना ग्रंथना अंते "पोतानां सर्व वचनो सत्यज छे" एवो गर्व न करतां शुद्ध भावथी जणाव्युं छे के "अनेक वाचनाउ होवाथी, पुस्तकोनी अशुद्धताथी, सूत्रोना अति गंभीरपणाथी, तथा केटलीक जगे मतभेद होवाना कारणथी अमारी कृतिमां भूलचूकनो संभव रहेल छे. माटे सुविवेकी पुरुषोये केवळ जे अर्थ सिद्धांतने अनुसरतो

होय ते आमांथी ग्रहण करवो" जुओ ठाणांग सूत्रनी टीकाना प्रांत.- श्लोक॥

वाचननामनेकत्वात्, पुस्तकानामशुद्धितः ।
सूत्राणामतिगांभीर्यात्, मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥१॥
क्षूणानि संभवंतीह, केवलं सुविवेकिभिः ।
सिद्धांतानुगतो योर्थः, सोऽस्या ग्राह्यो न चेतरः॥२॥

आ उपरथी जणाय छे के ज्यारे एवा समर्थ गीतार्थ पण गर्व करी शकता नथी त्यारे आजकालना आपण जेवा हीनदीन अने अल्पज्ञानी जनोने "अमेज साचा अने बीजा बधा जुठा" एवो खाली गर्व करवो शी रीते घटे.

वली परगछवालाओ तरफ मत्सर धरवो ए एक मोहनोज विलास छे. ए बाबत गुणानुरागकुलक के जे तपा श्रीसोमसुंदरसूरिना शिष्य जिनहर्षगणिये करेलुं छे तेमां सारी शीखामण आपेली छे, अने ते बहु उपयोगी होवाथी अहीं गाथा सहित लखिये छैये.

संपइ दुसमसमए, दीसइ थोवो वि जस्स धम्मगुणो; बहुमाणो कायव्वो, तस्स सया धम्म बुद्धीए ॥२५॥
जइ परगछि सगछे. जे संविग्गा बहुस्सुआ मुणिणो; तेसिं गुणाणुरायं, मा मुंचसु मछरप्पहओ ॥२६॥

अर्थः-आजना दुषमकालमां जे पुरुषमां थोडो

पण धर्मगुण देखाय ते पुरुषनो सदा धर्मबुद्धिथी बहुमान करवो. वळी जो के परगछमां रहेलो होय या स्वगछमां होय छतां जे मुनिओ संविज्ञ अने बहुश्रुत होय तेमना गुणो तरफ तुं मत्सरथी प्रहत थइ तारो राग मुकी दइशमां.

आ अमूल्य हितशिक्षा आपणे कदापि वीसरवी घटित नथी. अने एवी रीते चालतां आपणो समतापरिणाम प्रतिदिन वधतो रहे छे, अने आपणे जेम बने तेम समतापरिणाममां रही राग द्वेष छेद करवा, एज आपणो मुख्य उद्देश छे. जे माटे उपाध्याय श्री यशोविजयजी पोताना घणा ग्रंथोना प्रांते सारांशरुपे लखी बतावे छे केः—

किं बहुणा इह जह जह, रागदोसा लहुं विलिज्जंति;
तह तह पयट्टिअव्वं, एसा आणा जिणिंदाणं.

भावार्थः—वधु कहेवानी कंइ जरुर नथी. किंतु मुख्यपणे जिनेन्द्रोनी एज आज्ञा छे के जेम जेम रागद्वेष जल्दी छेदा पडे तेम तेम प्रवर्त्तवुं. आ परथी स्पष्ट जणाय छे के आपणे कोइनी पण निंदा न करतां बधा तरफ मैत्रीभावथी वर्त्तवुं जोइयें. जेथि क्रोध मत्सर, इर्ष्या, निंदकबुद्धि, क्षुद्रता, तथा दुर्जनता विगेरे दुर्गुणो दूर रहेशे.

वली आ प्रसंगे श्रीहीरविजयसूरीश्वरमहाराजे एम जाहेर रीते फरमावेल छे के, परपक्षीओने निह्नव, उत्सूत्रो, के उत्थापक वगेरे निंदामय वचनोथी बिलकुल निंदवा नहि, तेमज ते बाबतपर उत्तराध्ययन टीकाकार श्रीमान् भावविजय वाचके षट्त्रिंशजल्प नामना ग्रंथमां सारी रीते शिक्षा आपेली छे छतां तेम बोलवा के लखवा मांडवुं ए पोताना गुरुओनी आज्ञानुं उल्लंघन कर्या जेवुं छे. माटे पोताना महान् गुरुओनी पवित्रशिक्षा मान्य करी गछवालाओने तो बीजा दरेक गछवालाओ साथे बहु सभ्यताथी ज वर्त्तवानी जरुर छे. अने खरेखर जो एम वर्त्तवामां आवशे तो एथी आ जैन संप्रदायमां बहुज संप वधतो रहेशे.

आ स्थले खरुं विचारतां तरत मालुम पडशे के आपणे कोइ कोइ साथे द्वेषबुद्धि राखवी घटित नथी, कारण के तेम कर्याथी संप सलाह तुटे छे अने क्लेशवृद्धि साथे आंतरंगिक वैरविरोधनां बीज रोपाय छे अने एवा बीज रोपातां तेना परिणाम महा त्रासदायक ज आववाना. जे माटे आचारांगमां कह्युं छे केः—

वेराणु बंधीणि महब्भयाणि.

माटे सर्व गछवालाओयें सर्व गछवालाओ तरफ आजकाल मध्यस्थपणे सभ्यता साचवी संप सलाह

अने मैत्रीभावथी वर्त्तवुं घटित छे. कारण के एम करवाथी आपणा परिणाम क्लिष्ट न थतां समतापणामां रहे छे अने तेथी आपणा मनमां मैत्रीभावना रुप कल्पवल्ली पूरती विकसित थाय छे जेना परिणाममां आपणने " तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पवेइयं " ए पद्धतिने अनुसरीने पारमेश्वरी आज्ञानुं पालन करवा समर्थ थइ शकीए छीए.

आवाज विचारोने अनुसरीने श्रीपार्श्वचंद्र सूरिये स्वहस्त लिखित पत्रमां सर्वगच्छस्थ सदाचारवंत पुरुषोनी पदसेवामां पोतानें परायण जणाव्यो जणाय छे. वली बीजा एवा कागलमां तेमणे लख्युं छे केः—

सुतीक्ष्णापि कृपाणीया स्वं कायं नोछिनत्ति सा
यो जैनी जैन विद्वेषी स तस्या अतिरिच्यते ॥ १ ॥

आ उपरथी एमनी माध्यस्थ्यवृत्ति बहु सरस जणाय छे अने ते धर्मानुरागी पुरुषोने खरी नकल करवा लायक छे.

वली ए महापुरुषनी शोधकबुद्धि पण खरेखर वखाणवा लायकज छे. कारण के एमणे जे अगीआर बोलनी पद्धति खम्मी करी छे ते बहु गंभीर अने वजनदार होवाथी स्पष्टपणे एमनी शोधकबुद्धिने बतावी आपे छे.

ए अगीआर बोलो विषे अहिं वधु विवेचन न करतां एटबुंज जणावीए छीए के ए बाबतमां एमनी करेली अगीआर बोलनी चर्चा अथवा सजाय वांच्याथी तेनी गंभीरता तथा सप्रमाणतानो तरत अनुभव मेळवी शकाशे.

श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरनुं पांडित्य संस्कृत, मागधी, तथा प्राकृत भाषामां खुल्ली रीते विराजमान थइ रहेलुं छे अने दरेक भाषामां तेमणे ग्रंथो तथा लखाण कर्यां छे, जे परथी सिद्ध थाय छे. तेओ दरेक भाषामां प्रविण अने पंडित हता. तथा तेमने जैनी शैली अने जिनागमोनुं पूरतुं ज्ञान हतुं एम तेमना दरेक ग्रंथथी साबित थाय छे. माटे ए महापुरुषने गीतार्थ कहेतां कशी पण हरकत नथी. तेमज एमनी कवित्व शक्ति पण बहु भारी जणाय छे. माटे एवा पंडितराज समर्थ गीतार्थ, अने कवि शिरोमणी महापुरुष सूत्रानुसारी क्रियानो उद्धार करी खरे श्री जिनशासनना प्रभावक थया ते गणीये तेमां लगारे खोटुं नहि कहेवाशे.

एमणे जे पर्वतिथिओ मान्य करी छे त्यां पण घणुं दीर्घदर्शिपणुं वापर्युं छे. जो के आजकाल जुदा जुदा गच्छोमां जूदी जूदी पर्वतिथिओ मानवामां आवे छे छतां एमणे निष्पक्षपातपणे शोध करी सूत्रानुसारी पर्वतिथि-

उं मान्य करी छे. त्या संवछरी पाचमनी स्विकारी छे, ने ते संवछरीनो पाठ समवायांग टीका. ।१। दशाश्रुतस्कंधटीका,।२। निशीथचूर्णी,।३। कल्प निर्युक्ति, ।४। कल्पअंतर्वाचना ।५। प्रमुख घणा सिद्धांतोमां छे. अहीं ते बीना वधारे जणाववानो प्रसंग नथी. आ पांचमनी वात तो बाळगोपाळमां विदित छे (पिष्टस्य पेषणं नास्ति) एटले दळेलाने जेम दळवुं निरर्थक तेम, जे परंपरागमथी सिद्ध भाद्रवा सुदी पांचम छे तेने जे स्थापन करवी ए तो सिद्धने साधवुं एवो न्याय थाय माटे भवभीरु पुरुषोए जेम बने तेम दोष छांमीने सार लै लेवो ते बुद्धिमान् पुरुषोनुं काम छे; ने चौमासी पुनमनी मानी छे केमके सुयगमांगनी टीकामां चौमासी पुनमनी दर्शावी छे. तथा पाखी चौदशनी मान्य करी छे. ए सुयगमांगनी टीका बीजा घणा ग्रंथो करतां जुनी एटले के विक्रमथी सातमी सदीमां बनेली छे अने तेथी करेलो अर्थ वधारे वजनदार गणवो घटीत छे. आ साथे उदियिक तिथि स्वीकारी छे जे बतावी आपे छे. ए महापुरुष जेम बने तेम सूत्रने अनुसरीनेज वर्त्तनार छे.

प्रतिक्रमणनी विधिनो व्यान तो आ छापवामां आवेलुं पुस्तकज पुरुं दर्शाववा समर्थ छे माटे अहीं ते संबंधी वधु विवेचन नथी करता.

आवी रीते ए महापुरुषना विचारोनो संक्षिप्त हेवाल बनावी अमारे जणाववुं जोइये के जेम ए महापुरुषे व्यवहार विधिशुद्धि बतावी छे तेम प्रसंगे प्रसंगे निश्चय विधिशुद्धि बताववाने पण तेओ चूक्या नथी; कारण के श्रावक मनोरथमाला, चारित्र मनोरथमाला, संवरंगप्रबंध. तथा आराधना वगेरे ग्रंथोमां प्रसंगे प्रसंगे तेवी विधिशुद्धि तेओ बतावी गया छे.

आ रीते संक्षेपथी ए महापुरुषना संबंधे अमे अमारो विचार जाहेर कर्यो छे अने तेना खरा खोटापणानुं वास्तविक तोलन सुज्ञ वांचनारने पोताने ज करवा सोंपीयें छीयें.

हवे आ स्थले बीजी एक थोडी बीना जणाववानी जरुर छे के आजकाल लोकोनुं वर्त्तन बहुधा लोकलाज तथा यशकीर्तीना खाली ख्यालोने बहु अनुसरे छे अने तेथीज धर्मने योग्य थवाना साधनभूत नीतिमार्गनी तथा मार्गानुसारि गुणोनी पद्धतिनी प्रवृत्ति विरलामां देखाय छे. माटे आ व्यवहार क्रियाशुद्धि साथे ते प्रवृत्तिने पण पुनरुज्जिवित करवानी तेटली ज आवश्यकता छे. एटला माटे संक्षेपमां आ प्रस्तावनाना अंगेज ते बाबतनी थोडी सूचना करवा इच्छीयें छीयें.

॥ एक उत्तम ग्रंथकार कहेछे के. ॥

अठ न कीरंती मया, अठय कीरंती अठ मुचंति; अठ धरिज्जंति मणे. न वीसमीअवमठन्हं ॥ १ ॥ खलसंगो कुकलत्तं. कोहो वसणे मंतअ कुधणांच; कुग्गाहो मुरकत्तं. अठ न कीरंति एआइं ॥ २ ॥ मित्ती सुगुणभ्भासो, कलीसु कुसलत्तणं सुसीत्तो अ; दरकत्तं करुणा, उज्जमो दमो अठ कीरंति ॥ ३ ॥ निव्वज्जिमा अविणउ, कुसीलया निठुरत्तणं माया; अनउ अजस मसचं. अठविमुचंति निचंपि ॥ ४ ॥ उवयारो अडिवन्नं सुभासियं. साहसं सुविज्जाय; देवो सुगुरु धम्मो, अठ धरिज्जंति हिअयंमि ॥ ५ ॥ काम भुअंग जल जलण, जुवई राग रिउ भूमिनाहाणं; अठन्हं मा पुत्तय, सुमिणं मिवि वीससिज्जाहि ॥ ६ ॥

भावार्थः—आठ बाबतो सदा नहि करवा लायक छे, आठ करवा लायक छे, आठ छांडवा लायक छे, आठ आपणा हृदयमां धरी राखवा लायक छे. अने आठनो विश्वास करवा लायक नथी. आ रीते चालीश बाबतोनी चालीश हितशिक्षाउ अनुक्रमे आ प्रमाणे छेः—

(आठ नहि करवा.)

१ दुर्जन पुरुषनी सोबत न करवी. २ दुष्टाचारवाली स्त्रीने भार्या न करवी. ३ क्रोध न करवो. ४ कोइपण जातनुं व्यसन

न करवुं, ५ कोइपण जातनो मद न करवो. ६ अन्यायथी धन पेदा न करवुं. ७ खोटो हठ नहि करवो. ८ मूर्खता नहि करवी.

(आठ करवां.)

९ सर्व साथे मैत्रीभाव धरवो. १० सारा गुणोनो अभ्यास करवो. ११ दरेक कलामां प्रवीणता मेलववी. १२ मित्र सत्पुरुष करवो. १३ दरेक काममां चतुराइ वापरवी. १४ दरेक प्राणीपर करुणा धरवी. १५ हर हमेश उद्यम करवो. १६ इंद्रियोने दमवी.

(आठ छांडवां.)

१७ निर्लज्जपणुं छांडवुं. १८ अविनय छांडवो. १९ कुशीलपणुं छांडवुं. २० निष्ठुरपणुं छांडवुं. २१ कपट छांडवुं. २२ अन्याय छांडवो. २३ अपकारक काम छांडवुं. २४ असत्य छांडवुं.

(आठ मनमां धरवां.)

२५ कोइये करेलो उपकार भूलवो नहि. २६ पोते जे कबुल कर्युं ते पाळवुं. २७ सुभाषित श्लोको धारी राखवा. २८ साहस एटले हिम्मत धरवी. २९ सारी विद्या शीखवी. ३० सुदेव हृदयमां धरवा. ३१ सुगुरु हृदयमां धरवा. ३२ सुधर्म हृदयमां धरवो.

(आठनो विश्वास न करवो.)

३३ कंदर्पनो विश्वास न करवो. ३४ सर्पनो विश्वास न करवो. ३५ पाणीनो विश्वास न करवो. ३६ आगनो विश्वास न करवो. ३७ स्त्रीनो विश्वास न करवो. ३८ रोगनो विश्वास न करवो. ३९ शत्रुनो विश्वास न करवो. ४० राजानो विश्वास न करवो.

आ चालीश हितशिक्षाने प्रमाणे जो आपणे वर्तिये तो अलबत्त आपणे आपणा पवित्र जिनधर्मना

विशिष्ट धर्मकृत्यो करवाने योग्य थइये. पण ते भिवाय तो पाया वगरनी इमारतो चणवा जेवुं छे. माटे धर्मार्थी पुरुषोये जेम बने तेम सुनीतिने तो मज्जम वळगी र-हेवुं. के जेथी धर्मनी योग्यता मेळवी शकाय.

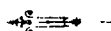
(हवे पांत्रीश मार्गानुसारि गुणो बतावीए छीए.)

१ न्यायथी धन कमाववुं. २ उत्तम पुरुषोना आचारने प्रशंसवुं. ३ सरखा कुळ तथा शीळवाळा साथे वेवीशाळ करवुं. ४ पापथी बीता रहेवुं. ५ प्रसिद्ध देशाचारने पाळवुं. ६ कोइनो अवर्णवाद न बोलवो. ७ अति प्रकट तथा अति गुप्त अने नीकळवा पेसवाना अनेक द्वारवाळा घरमां न रहेवुं. ८ सदाचरणी पुरुषोनो सोबत करवी. ९ माबापनी सेवा करवी. १० उपद्रववाळा स्थाननो त्याग करवो. ११ निंदित काममां न प्रवर्त्तवुं. १२ पोतानी आवक प्रमाणे खरच राखवुं. १३ धनने अनुसरतो वेष राखवो. १४ बुद्धिना आठ गुणने खीलववा. १५ प्रतिदिन धर्म सांभळवो. १६ प्रथम जमेलुं भोजन पच्या विना न जमवुं. १७ जे समे भूख लागे ते समे जमवुं. १८ धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर बाध न थाय तेम सेववुं. १९ प्राहुणा तथा गरीबोने अन्नपान देवुं. २० खोटी हठ न करवी. २१ गुणि पुरुषोनो पक्षपात करवो. २२ निषेधेला देशकाळमां जवुं आववुं नहि. २३ पोतानुं बलाबल विचारी काम करवुं. २४ जेनुं पोषण करवुं घटे तेने पोषवुं. २५ आचारवंत तथा बहुश्रुत पुरुषनी उपासना करवी. २६ दीर्घदर्शी थवुं. २७ विशेषज्ञ थवुं. (स्वपर संबंधी विशेष जाणवो.) २८ कृतज्ञ थवुं. (करेलो गुण जाणवो.) २९ लोकप्रिय थवुं. ३० लज्जाळु थवुं. ३१ दयाळु थवुं. ३२ पोताना आकार सौम्य राखवो. ३३ परोपकार करवो. ३४

काम, क्रोध, लोभ, मान, मद तथा हर्षरूप छ अंतरंग शत्रुओने जीतवा. ३५ इंद्रियो वश राखवी.

आ पात्रिश गुणो वांची जनां ता वहु महेला लागशे पण ज्यारे पालन करवामां आवशे त्यारज एमनुं गंभीरपणुं तथा महत्व जाणवामां आवशे. माटे धर्मानुरागी पुरुषोए आ गुणो पाळवा पूर्वक सघळी जपतपादिक क्रिया करता रहेवुं के जेथी तरतमां मनवंछित सुखनी प्राप्ति थशे.

प्रस्तावनाकार संविज्ञ पक्षीय भिक्षु
भ्रातृचंद्र (भाइचंद.)



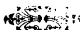
त्रीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

आ पुस्तक बीजी वखत छपावेल ते पण खपी जवाथी त्रीजी वखत छपाववामां आवेल छे. आ आवृत्तिमां प्रथमनी आवृत्ति करतां चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवनादिकनो वधारो करवामां आवेल छे, ते कारणथी तेमज पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय परमोपकारी युगप्रवर शांतदांतादि षट्त्रिंशद् गुणोपेत श्रीमन्नागपुरीयतपगच्छाधिराज आचार्य महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री भ्रा-

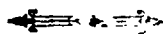
तृचंद्रसूरीश्वरजीना विक्रम संवत् १९७२ ना वैशाख वद ७ बुधवारनी पाछली रात्रे देहोत्सर्गना सबळ प्रयोजनने लीधे आ आवृत्ति छपावी बहार पाडवामां विलंब थयेल छे. वळी आ पुस्तकने सुधारवामां पूज्यपाद आचार्य श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीना शिष्य मुनिमहाराज श्री सागरचंद्रजी साहेबे पोताना अमुल्य समयनो व्यय करेलो छे. तेथी तेओश्रीनो उपकार मानीए छीए. तेमज विकानेरना निवासी अने कलकत्ताना प्रसिद्ध व्यापारी वळी परमपूज्य आचार्य महाराज श्रीभ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीसाहेबना चरणकमलोपासक पून्यप्रभावक सुश्रावक बाबु श्रीयुत बहादुरमल्लजी जसकरणजी रामपुरीयानी आर्थिक सहायथी आ पुस्तकनी अरधी किमत राखी ज्ञानवृद्धिना अभिलाषी शेठजीने धन्यवाद आपीए छीए.

वली आ पुस्तक छपाववामां जे कोइ छापवा संबंधी भूल रही गएल होय तो ते सज्जन पुरुषो सुधारी लइ आ पुस्तकमांथी गुण ग्रहण करशो एज अमारी नम्र प्रार्थना छे.

ली० श्री जैन ह० स० सभा.



॥ सुविहितसुगुरुगीतमिदं ॥



॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तं ॥

योलेभे गुरुसाधुरत्नकृपया पारं श्रुतांभोनिधे,-
र्यो जैनागमसंगतां सुललितां चक्रे हितां देशनां
यः स्वान्योपकृतेर्निमित्तमकरोत् ज्ञानक्रियास्वादरं,
तं सूरीश्वरमुत्तमं युगवरं श्रीपार्श्वचंद्रं स्तुमः ॥ १ ॥

श्रीमद्विक्रमभूपतेर्हयगुणाचारौषधीशाब्दके,
(१५३७) यस्यानल्पगुणाकरस्य सुगुरोर्जन्माभवद्धावुकं,
स्वर्लोके गमनं करेंदुरसभूर्वर्षे तथैवाभवत् (१६१२)
सर्वायुः किल पंचसप्ततिसमास्तं पार्श्वचंद्रं स्तुमः ॥२॥

आस्ते गुर्जरनीवृतीयनगरः श्रीमान् हमीराह्वयो,
जन्मस्थानमहो सुधामविमलं यस्यार्बुदासन्नकः ।
स श्रीप्रागकुलावतंसवणिजः शावेल्हकस्यांगजो,
जीयात् श्रीविमलासुतो गुणनिधिः श्रीपार्श्वचंद्राह्वयः॥३॥

दीक्षां यो रसवेदबाणपृथिवीवर्षे (१५४६)ग्रहीत् शैशवे,
श्रीसूरीश्वर साधुरत्नसुगुरोः पादस्य पादांतिके।
यः सूत्रोक्तसुयुक्तिपंक्त्यनुगतं सद्ज्ञानगर्भं क्रियो,-
द्धारं वाणरसेषुभूप्रमितके वर्षेकरोत् तं स्तुमः॥४॥(१५६५)

चारित्रं प्रतिपालयन् जिनमतं प्रोद्भावयन् भूतले,
कुर्वन् मालवगुर्जरात्रिमरुभूदेशे विहारं क्रमात् ।
प्राप्तो योधपुरं पुरंदरपुरं विज्ञाय चायुःक्षयं,
कृत्वांतेऽनशनं समाधिमरणाद्यः स्वर्गतस्तं स्तुमः ॥

ते धन्याःकृतपुण्यकाश्च खलु ते यैर्लब्ध ईदृग् गुरु-
र्हृत्संदेहहरो भवार्णवतरो गीतार्थसार्थोत्तमः ॥
अस्माकं तु श्रुतोक्तियुक्तिलहरीलोलस्तदीयो वचः-
पारावारवरो वियोगजनितां तप्तिं प्रहर्तुं क्षमः ॥ ६ ॥

॥ द्रुतविलंबित छंद. ॥

सुगुरुगीतमिदंरचितं मया
वसुगुणांकमृगांकितवत्सरे (१९३८)
जगति यावदिहेंदुदिवाकरौ
विजयतात् खलु तावदहर्निशं ॥ ७ ॥

॥ मालिनी छंद ॥

पठत पठत संतः मंगलं भक्तिमंतो
रविविरचितमेतत् पार्श्वचंद्रीयगीतं
शिवयुवतिविवाहे मंगलाग्रं सुलग्नं
सुगुरुगुणनिवद्धं मेतिहासं सुवृत्तं ॥ ८ ॥

अनुक्रमणिका.

पच्चख्काणो.

चैत्यवंदनो.

स्तुतिओ.

अथ स्तवनो.

सज्झायो.



शुद्धिपत्र,

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८	४	चारंड	भारंड
९	१९	घर्म	धर्म
१०	३	ब्रह्मक्वच	ब्रह्मकवच
१०	१३	सग्ग	मग्गे
१४	५	थूल माणानि	माणानि
१४	१९	इच्छाकारण	इच्छाकारेण
१४	१९	संदिसम्ह	संदिसह
१५	९	एकसोवीस	एकसोवीस भेदे
१५	१६	परिग्गहमि	परिग्गहम्मि
२४	७	इच्छागि०	इच्छामि०
२४	१०	इच्छामि–	इच्छामि०
२४	१०	प्रायश्चित्त	पायच्छित्त
२४	११	प्रायश्चित्त	पायच्छित्त
२७	१०	जसुतणुकंत	जसुतणुकंति
२८	८	भवे	भवे भवे
३०	१	विदिसिजिंकेवि	विदिसिजंकेवि
३१	२	कालियसूरीयसंबो	कालियसूरिसंबो
३७	८	जंबुदीवि	जंबुदिव
३७	१०	अउजाणि	अउजाण
४०	१४	कल्याणावलिकद	कल्याणावलिकंद
४२	८	वंदेह	वंदेहं
४४	५	मित्रंसुहृत	मित्रंसुहृत्
४४	६	कुतश्चित	कुतश्चित्

४५	१६	नाणेए आठ	नाणेए आठे
४८	१४	श्रावकने सरस	श्रावकने सरिस
६१	१३	तेने विष	तेने विषे
६५	८	एकज छंद	एकठ छंद
७२	१८	सुखर रइगुण	सुरवर रइगुण
७४	४	परिसाइविश्र	परिसाविश्र
७६	१५	हियडे भाव घण	हियडे भाव घण
७६	१५	महिमागुणसुंदीर	महिमागुणसुंदर
७६	१५	धीरिम मंदिर	धीरिममंधर
७६	१७	श्रीपार्श्वचंद्रसूरिसंथुण्योए	श्रीपार्श्वचंद्रसूरिसंथुणीए
७७	८	नापित्न	नापित्न्
७७	११	विद्युदुद्योतजैत्र्या	विद्युद्द्योतजेत्र्या
८७	१५	दारिद्रय	दारिद्र्य
७९	१६	ते प्रमाणे	ए प्रमाणे
८४	३	उपधिपडिलेहणे	उपधिपडिलेहणं
८५	१९	जाजीवबंभयाहिं	जाजीवबंभयारिं
८९	७	तेनी विघि	तेनी विधि
९२	१८	अप्पख्खाणं	अब्भख्खाणं
९२	२०	विग्धभूयाइं	विग्घभूयाई
९३	९	सव्वं तिविहेणं	सव्वं तिविहेण
९४	४	जेनवसोसियं	जेतवसोसिय
९४	१०	जीवस्सजोइजो	जीवस्सजाइजो
९४	२१	इच्छाकारिभगवन्	इच्छकारिभगवन्
१०१	१०	प्रथितगुंणसमाजान्	प्रथितगुणसमाजान्
१०१	१७	क्षामदेहांस्तपाभिः	क्षामदेहांस्तपोभिः
१०२	३	असुरिंदचिय	असुरिंद सुरिंदचिय

१०२	५	तुझ नमो	तुझ नमा
१०२	७	तुझ नमो	तुझ नमो
१०४	१०	॥ १	॥ २ ॥
१०५	२	वंदते	वंदंते
१०५	५	सर्वाध नाश	सर्वांघ नाश
१०५	१७	वामुपुज्ज	वामुपुज्जो
१०५	१७	अरिठनेमि	अरिट्ठनेमी
१०५	१९	विसंपरि	वीसंपरि
१०६	७	गुरुकल्पतरु	गुरुकप्पतरु
१०९	११	त्रिहुं अक्षर	त्रिहुं अख्खर
१०९	११	ठवीया	ठवीय
११९	२	स्वयमुत्रसंति	स्वयमुत्रसंति
१२०	१	सिद्धानाभिघभूपति	सिद्धांताभिधभूपति
१२०	३	विपुलभद्रं	विपुलभद्रां
१२२	२	नगो नमो	नमो नमो
१२२	४	वीरियरस	वीरियस्स
१२४	१६	स्तंभतीर्थाघिपः	स्तंभतीर्थाधिपः
१२४	२०	संखपुरावतसं	संखपुरावतंसं
१२५	१३	धत्तेह्मसौ	धत्तेह्यसौ
१२८	१६	कलिकुंडाभिघ	कलिकुंडाभिध
१२८	१८	घेयस्त्व	ध्येयस्त्व
१२८	२०	कलिकंड	कलिकुंड
१२९	२	द्वांधोयांतं	ध्वांधोयांतं
१२९	१३	जयिति	जयिनि ·
१३०	२	गुणौधम्	गुणौघम्

१३०	४	इहित	ई हित
१३१	१५	धणंमणुस्सा	धणुंमणुस्सा
१३२	१	मत्तो	मत्ते
१३२	१७	सदूत्तः	सदूत्तः
१३४	२	उयजाति	उपजाति
१३४	२२	नितरा	नितरां
१३५	३	नेमिनाथ	नेमिनाथः
१३६	१	रवधर्म	खेधर्म
१३६	१०	काष्टकमीदं	काष्टकमिदं
१३६	१०	प्रातःपठंनि	प्रातःपठंति
१३८	६	जीनेंद्र	जिनेंद्र
१४४	५	चमररे	चामररे
१४४	१२	प्रवण	पवण
१४४	१६	सविआपणी	सविआपावणी
१४४	१७	अनारजरे तिरिनर	अनारजरे सुरनरतिरि
१४४	१९	मान मन धरि	मान मद धरि
१४८	२	माघववदि	माधववदि
१५०	२१	प्रभु जन्म्यारे	प्रभु जनम्यारे
१५२	१९	विसहसओहि	विसहसओहि
१५३	१०	पहिलोसंघयण	पहिलो संघयण
१५३	१३	पार्श्वचद्रसूरिश्वरकहे	पार्श्वचंद्रसूरीश्वरकहे
१५४	१०	तुहदंसणो	तुहदंसणे
१५४	१०	पामस्ये शुं भणो	पामस्ये शुं भण्ये
१५८	४	देखी हरष पाम	देखी हरष पामे
१५८	१८	(उलालानी ढाल) श्रीजी	(उलालानी ढाल श्रीजी)

१६६	१२	घर पारणुं	घेर पारणुं
१६८	९	चिदानंदकंदं	चिदानंद कंदं
१६९	१९	भावशिरनिज	भावशिरि निज
१७०	२३	वली	वली
१७५	१२	महुर्त क्षण	मुहुर्त क्षण
१७७	१२	जोयण दरश्रण	जोयण दरशण
१७७	२५	लंछन क्रौंच	लंछन क्रौंच
१७८	४	हरखचंदके चित्तपे	हरखचंदके चित्तमे
१८०	१३	त्रिभुवन जयजयकार	त्रिभुवन जयजयकार
१८१	१	कोटि रविथी	कोटि रविथी
१८१	१२	अविचलमुखका	अविचलसुखका
१८४	२४	प्रतिवोधवा	प्रतिबोधवा
१८६	२०	सहिजाणेहो	सहि जाणोहो
१८७	२२	गुणज्ञान अनंदकें	गुणज्ञान आनंदकें
१८८	१३	केसरसमवली	केसरसमवडी
१८८	१७	अन्यदेवो तजी	अन्य देवो तजी
१९०	२१	मुखदीठे परम आणंदाहो	मुखदीठे परम आणंदाहो
१९१	११	त्रिभुवन	त्रिभुवन
१९१	१२	अतिश्चथ	अतिशय
१९२	७	श्री संजातस्वामीनुं	श्री सुजातस्वामीनुं
१९२	९	श्री संजातरे	श्री सुजातरे
१९३	११	पदकज वदेरे	पदकज वंदेरे
१९४	१४	गलधर	जलधर
१९४	२३	ज्यों राजहंस	ज्युं राजहंस
२००	८	घर नवेनिधान	घेरे नवेनिधान

२०४	२१	बलि गरभतणी	वलि गरभतणी
२०५	९	बलफोर्यो	बलफोर्यो
२०९	२	नीयतमिली थकीरे	नीयतमिली थकी
२०९	११	मोहमहावडवारो	मोहमहाभडवारो
२१४	८	ईदलोके	ईहलोके
२२२	१४	षाछुं	पाछुं
२२४	१९	घरणी वत्तिससामुं	घरणीबत्तिसमुं
२२५	२३	पामी सदगुरुतणो	पामी सद्गुरुतणो
२२७	५	जीव ो मणुओ	जीवने मणुओ
२२९	६	समता साहेर्लाशुं	समता साहेलीशुं
२२९	१९	शितलजीन	शीतलजिन
२३१	२२	भविक प्रवोधक	भविक प्रबोधवा
२३२	२४	साधे	साधं
२३६	२३	जपमुं	जंपमुं
२४०	२२	जमगुरु	जगगुरु
२४०	२४	सामिल ससरो	सोमिल ससरो
२४१	२	चिंतवरे	चिंतवेरे
२४३	१०	अैसा हो गथा	अैसा हो गया
२४३	२१	सुहाव	सुहावे
२४४	५	वोलो नांजी	बोलो नांजी
२४४	६	”	”
२४५	७	गंगे अजुवाळे	अंगे अजुवाळे
२४६	२३	ठाम	ठाण
२४७	२१	जीब	जीव
२४९	३	प्राणीजो	प्राणीजो

२५०	२०	छे हीयें ते न संभारोर	हीयें ते न संभारोरे
२५२	१०	प्रतिबोधरे	प्रतिबोधरे
२५२	१३	षीजडा	खीजडा
२५३	१२	सेवक सुखथी	सेवक मुखथी
२५३	१४	हिये उतरी अंगीठीरे	हिये उठी अंगीठीरे
३५३	१७	काया गालो	काया गाली
२६२	१	कुर्वंति	कुर्वंति
२६२	६	गौयमगुरु रासो	गोयमगुरु रासो
२६३	१२	जाजनवाणी	जोजनवाणी
२६४	४	चिते चमकिय	चित्ते चमकिय
२६७	७	निम गोयग गुण	निम गोयम गुण
२६७	१६	पहेलो भणीजे	पहेलो पभणीजे
२६७	१६	श्रवणनिमुलीजे	श्रवणनिमुणीजे
२६७	१८	उवज्जाय थुलीजे	उवज्जाय थुणीजे
२७८	१२	अइयारो कउ	अइयारो कओ
२८२	१५	खामेमि सव्व जीवें	खामेमि सव्वे जीवे
२८३	३	बंभचेर गुत्तिओ	बंभगुत्तिओ
२८४	९	भिरकाविवि	भिरकाविनि
२९८	४	पायल्थित्तं	पायच्छित्तं
३००	५	कम्मसंधायं	कम्मसंघायं
३००	६	जेसिंमुअसायरं	जेसिंमुअसायरंभत्ति

—※※—

श्रीमन्नागपुरीय वृहत्तपागच्छनी पट्टावली.



श्रीमन्तोऽर्हत्सिद्धा,-चार्योपाध्यायसाधवः सर्वे ॥
श्रेयःश्रियः समृध्यै,-सन्तु सतां कार्यसिध्यै च ॥१॥
सिद्धार्थभूपालकुलोदयाद्रि,-प्रद्योतनः श्रीत्रिशलांजजन्मा ॥
श्रीवर्द्धमानो भगवान् प्रवर्द्ध,-मानःश्रिया भव्यजनान् धिनोतु॥२॥
श्री इन्द्रभूतिप्रमुखागणेशा,-नेकादशापि प्रयतः प्रणौमि ॥
विशेषतस्तेषु सुधर्मनामा,-नमस्क्रियामर्हति तीर्थपत्वात् ॥३॥
तीर्थे वीरजिनेश्वरस्य विदिते श्रीकोटिकाख्ये गणे,
श्रीमच्चन्द्रकुले वटोरुहद्दृहद्गच्छे परिम्लायिते ॥
श्रीमन्नागपुरीयकाह्वयतपा प्राप्तावदातेऽधुना,
स्फूर्जद्भूरिगुणान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥४॥
अलौकिकगुणग्रामा-भिरामान्सूरिसद्गुरून् ॥
आचार्यभ्रातृचन्द्राख्या,-न्वन्देऽहं ज्ञानवृद्धये ॥५॥

१ श्री महावीरस्वामी शासननायक,-श्री गौतमस्वामी.

१. निर्ग्रन्थगछ.

२ श्री सुधर्मास्वामी,-श्रीवीरात् २० वर्षे मोक्षे गया.
३ श्री जंबुस्वामी,-छेला केवली, श्रीवी० ६४मे वर्षे मोक्षे गया.
४ श्री प्रभवस्वामी,-सय्यंभवभट्ट प्रतिबोधक, वी० ७५ वर्षे स्वर्ग.
५ श्री सय्यंभवसूरि, मनकमुनिना पीता श्रीवी० ९८ वर्षे स्वर्ग.
६ श्री यसोभद्रसूरि,-श्रीवीरा० १४८ वर्षे स्वर्गवासी थया.

७ श्री संभूतिविजयसूरि,–श्रीवीरा० १५६ वर्षे स्वर्गे गया.
८ श्री भद्रबाहुस्वामी,–श्रुतकेवली. श्रीवीरा० १७० ,,
९ श्री स्थूलीभद्रस्वामी,–कोष्या वेश्या प्रतिबोधक. २१५ ,,
१० श्री आर्य महागिरिसूरि,–जिनकल्पतुलनाकारक.२४५. ,,
११ श्री आर्य सुहस्तिसूरि,–अवंतिसुकुमाल प्रतिबोधक. २९१ ,,

२. कोटिक गछ.

१२ श्री सुस्थितसूरि,–तथा सुप्रतिबद्धसूरि ३७२ ,,
१३ श्री इन्द्रदिन्नसूरि,–श्री वीरा० ४२१ वर्षे स्वर्गे गया.
१४ श्री दिन्नसूरि,–केटलीक पट्टावलीमां एमने पट्टधर गण्या नथी.
१५ श्री सिंहगिरिसूरि,–श्री वीरात् ५४७ वर्षे स्वर्गे गया.
१६ श्री वज्रस्वामी,–छेल्ला दश पूर्वी. (वइरी शाखा) ५८४ ,,
१७ श्री वज्रसेनसूरि,–श्रीवीरात् ६२० वर्षे स्वर्ग.

३. चन्द्र गछ–चन्द्र कुल.

१८ श्री चन्द्रसूरि,– वीरात् ६२७ ,,

४. वनवासी गछ.

१९ श्री सामंतभद्रसूरि,–"निग्रन्थचूडामणी" बिरुदधारक,वी०६७०
२० श्री वृद्धदेवसूरि,–नाहड मंत्री प्रतिबोधक. श्रीवी० ६९९ ,,
२१ श्री प्रद्योतनसूरि,–
२२ श्री मानदेवसूरि,–लघुशान्तिना कर्ता.
२३ श्री मानतुंगसूरि,–भक्तामर स्तोत्र कर्ता.
२४ श्री वीरसूरि,–नागपुरे नमिजिन प्रतिष्ठाकारक. श्रीवी० ८०२
२५ श्री जयदेवसूरि,–श्रीवीरा० ८२० वर्षे स्वर्ग.
२६ श्री देवानंदसूरि. एमना समयमां चैत्यवासी थया.
२७ श्री विक्रमसूरि,–श्रीवीरात् ९९३ वर्षे भावड गच्छे कालकाचार्य थया, तेमणे राजाना आदेशथी कारणे चोथना पर्युषण

कर्या, अने त्यार बाद श्रीवीरात ९९४ मां तेओ स्वर्गे गया.

२८ श्री नरसिंहसूरि,–वी० १००५वर्षे नरसिंहनगरमां यक्षप्रतिबोधक.

२९ श्री समुद्रसूरि,–सीसोदीयावंसी, दिगंबरोने जीतनार.

३० श्री मानदेवसूरि,–बीजा. याकिनी धर्मसूनु हरिभद्रसूरिना मित्र.

३१ श्री विबुधप्रभसूरि,–श्रीवी० १०९० मां विद्यमान हता.

३२ श्री जयानंदसूरि,–उपदेश आपी, जिनालयोनो जीर्णोद्धारकारक.

३३ श्री रविप्रभसूरि,–नांडोल नगरमां श्री नेमिनाथनी प्रतिष्ठाकारक.

३४ श्री यशोदेवसूरि,–"साहित्यपयोनिधि" बिरुदधारक.श्रीवी. ११९०

३५ श्री प्रद्युम्नसूरि,–"भूवलय भूषण" बिरुदधारक. श्रीवी. १२७२

३६ श्रीमानदेवसूरि,–त्रीजा. श्री वी० १२६५ मां आमराजा प्रतिबोधक, उपधान विधिना कर्ता.

३७ श्री विमलचन्द्रसूरि,–चित्रकूटमां स्वर्णसिद्धि करी वाद जीतनार.

५. वड गच्छ.

३८ श्री उद्योतनसूरि,–ज्योतिष शास्त्र पारगामी. श्रीवी० १४६४ मां.

३९ श्री सर्वदेवसूरि,–रामसैन्यपुरमां प्रतिष्ठामां विजय पाम्या.

४० श्री रूपदेवसूरि,–अर्बुदाधिपतिने प्रतिबोधनार.

४१ श्री सर्वदेवसूरि,–बीजा. आठ शिष्योने आचार्य पद आपनार.

४२ श्री यशोभद्रसूरि,

४३ श्रीनेमिचंद्रसूरि,–प्रवचन सारोद्धारना कर्ता.

४४ श्री मुनिचंद्रसूरि,–" तार्किक शिरोमणी " बिरुदधारक, सर्व विगयना त्यागी. वि. सं. ११७८ मां स्वर्ग गया.

६. श्रीमन्नागपुरीय वृहत्तपागच्छ.

(ते हाल पार्श्वचंद्र गच्छथी ओलखाय छे.)

४५ श्री वादिदेवसूरि,–"सकलवादि मुकुट"बिरुदधारक,वि.सं. ११७७ मां साडात्रण लाख श्रावक नवा प्रतिबोध्या. तेओ वि० सं.

११७४ मां आचार्यपद पाम्या, अने वि० सं. ११७७ मां "श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपा"ए प्रमाणे राणाएबिरुद आप्यु तेथी वडगच्छ ते श्रीमन्नागपुरीय वृहत्तपागच्छना नामथी जगत्मां प्रसिद्धिने पाम्यो. वळी दिगंवर विगेरेने वादमां पाछा पाडनार आ शासन प्रभावक आचार्य २४ ने आचार्यपद आप्या छे, एमना समयमां खरतर तथा पुनमीया तथा अंचलीया थया छे.

४६ श्री पद्मप्रभसूरि,–उग्र तपस्वी, नागपुरे राणाने प्रतिबोधनार. वि० सं. १२३६ मां साढ पुनमीया थया.

४७ श्रीप्रसन्नचंद्रसूरि ज्योतिष्शास्त्रवेत्ता. वि. १२५० मां आगमीया थया.

४८ श्री गुणसमुद्रसूरि,–त्रिभुवनपाल राजारंजक, वि० सं. १२८५ मां चैत्रवाल गच्छीय देवभद्रथी तपा थया.

४९ श्री जयशेखरसूरि,–क्रियोद्धारकारकः, वि० १३०१ मां आचार्य पद पाम्या. बार गोत्र प्रतिबोधक.

५० श्री वज्रसेनसूरि,–बीजा. "देशना जलधर" बिरुदधारक.

५१ श्री हेमतिलकसूरि,– भाटीराय, तथा इलचीराय प्रतिबोधक.

५२ श्रीरत्नशेखरसूरि,–"मिथ्यांधकार नभोमणी" बिरुदधारक.

५३ श्री हेमचंद्रसूरि,–वि० १४२८ मां स्वगुरुकृत ग्रन्थोना लेखक.

५४ श्री पूर्णचंद्रसूरि,–हिंगडवंशीय, "कुवलयविबोधक" बिरुदधारक.

५५ श्री हेमहंससूरि,–५००० जिनालयनी प्रतिष्ठा करावनार.

५६ श्री लक्ष्मीनिवाससूरि,–वि० सं. १५१६ मां विद्यमान हता.

५७ श्री पुन्यरत्नसूरि,–वि० सं. १५३० मां विद्यमान हता.

५८ श्री साधु रत्नसूरि,–षट् शास्त्रवेत्ता, संविज्ञपक्षीय.

५९ श्री पार्श्वचंद्रसूरि,–"युग प्रधान" बिरुदधारक, क्रियोद्धारकारक. मरुधराधिपति तथा मालवाधिपति प्रतिबोधक, २२ गोत्र प्रति-

बोधक. पोरवाडवंशी पीता श्री वेलगशाह, माता श्री विमलादेवीनी कुखथी वि० सं. १५३७ ना चैत्र शुदि ९ शुक्रवारे जन्म. हमीरपुर ग्रामे. दीक्षा-वि० सं. १५४६ ना वैशाख सुदि त्रिज, हमीरपुर ग्रामे. उपाध्याय पद-वि० सं.१५५४ मां नागोर नगरे. क्रियाउद्धार-वि० सं. १५६४ मां नागोर नगरे. सूरिपद,-वि० सं.१५६५ मां योधपुर नगरे.युगप्रधान पद,-वि० सं.१५९९ ना वैशाख सुद ३, सलक्षणपुरमां. स्वर्गगमन,-वि०सं. १६१२ ना मागसर सुद ३ योधपुरमां. महाप्रतापी आचार्य श्रीयें पोतानो आत्मवीर्य स्फुरायमाण करी श्रीजैनशासनने दीपाव्यो अने स्व-परनुं आत्मकल्याण कर्युं. ते समये लुंका, कडवामति थया.

६० श्री समरचंद्रसूरि,-"निग्रन्थ चूडामणी"नुं बिरुद धारण करनार

६१ श्री राजचन्द्रसूरि,-खंभातमां आचार्य पद पाम्या.

६२ श्री विमलचंद्रसूरि,-बीजा. ,, ,,

६३ श्री जयचन्द्रसूरि,-वि० सं. १६७४ वर्षे राजनगरमां सूरि थया.

६४ श्री पद्मचंद्रसूरि,-वि० सं. १६९९ वर्षे राजनगरमां सूरि थया. एमना समयमां वि.सं.१७२८मां पीतवस्त्र धारण करनार थया.

६५ श्री मुनिचंद्रसूरि (बीजा),-खंभात नगरमां आचार्यपद पाम्या.

६६ श्री नेमिचन्द्रसूरि,-बीजा, वीरमग्राममां आचार्यपद पाम्या.

६७ श्री कनकचन्द्रसूरि,-वि.सं.१७९६ वर्षे वीकानेरमां सूरि थया.

६८,-श्री शीवचन्द्रसूरि, वि.सं. १८१० वर्षे वीकानेरमां सूरि थया.

६९,-श्रीभानुचंद्रसूरि,-वि.सं.१८२३ वर्षे वड ग्राममां सूरि थया.

७० श्री विवेकचन्द्रसूरि,-वि०१८३७ वर्षे विरमग्राममां सूरि थया.

७१ श्री लब्धिचन्द्रसूरि,-जगत् शेठ गुरु, उज्जेणमां आचार्यपद पाम्या.

७२ श्री हर्षचन्द्रसूरि,- जगत् शेठना गुरु "धर्ममूर्ति" बिरुदधारक.

७३ श्री हेमचन्द्रसूरि,--प्राणीरक्षाने माटे आत्मभोग आपनार.

७४ श्री भ्रातृचन्द्रसूरि,--क्रियोद्धारकारक, स्वपर आत्मउद्धारक.

श्री हेमचन्द्रसूरिनी पाटे पूज्यपाद परमोपकारी प्रातःस्मरणीय परम प्रभावक वचनसिद्धिवाला शांत स्वभावी श्रीभ्रातृचन्द्रसूरि थया तेमनो जन्म वांकडीया वडगामवासी औदिच्य वाडववंशी दानमलजी पिता विजया मातानी कुखथी वि० सं. १९२० मां थयो हतो. वि० सं. १९३५ ना फागण सुद २ दिने आचार्य श्रीहर्षचन्द्रसूरिना शिष्य प्रवर पंडित श्रीमुक्तिचंद्रगणिना हाथे विरमग्राममां दीक्षा लीधी. तेओश्रीये वि० सं० १९३७ ना वैशाख सुद ११ने दिने मांडलग्राममां मुनिमहाराज श्रीकुशलचन्द्रजी गणिनी निश्राए निग्रन्थ प्रवचन संवेग मार्गनी तुलना करी. (क्रियाउद्धार कर्यो.) तेओ महाप्रतापी, बाळब्रह्मचारी, सिद्धान्तपारगामी, संवेगरंगरंगित आत्मा हता. तेमज षट् दर्शनमां पण पोताना सहज गुणो अने विद्वत्ताथी प्रसिद्धि पामेला पूज्य श्रीजी हता, तेथी तेओ श्री पासे अनेक मतानुयायिओ आवीने पोतानी शंकाओने प्रकाश करता तेमने आचार्यश्री शांत स्वभावे एवी रीते उत्तर आपता के जेथी तेओ आनंदित थइ आचार्यश्रीनी मुक्तकंठे सर्वत्र प्रशंसा करता हता.

घणाना मुखथी में . लेखक पोतेज) प्रत्यक्ष रीते जोयेल अने सांभलेल छे के--"सुवर्ण अने सुगंधनी माफक उत्तम श्रेणिना विद्वान् अने तेनी साथे अपूर्व एवा शांति आदि गुणोथी सहित राज योगी सरखा भव्य देदारवाला, पुन्यना पुतला, धर्ममूर्तिरुप आ महात्माना सरखा बीजा कोइपण महात्मा अन्य दर्शनमां पण अमने जोवामां आवेला नथी. " इत्यादिक प्रशंसा करी आनंद पामता हता, टुंकमां जे भव्यात्माओए ए पूज्यपाद श्रीजीनो परिचय कर्यो हशे तेओज ते श्रीनी कहेणीरहेणी, विद्वत्ता, शान्ति जाणी हशे. वली तेमणे पोताना

धर्मोपदेशथी जामनगरना महाराजा जामसाहेब विभाजी बहादुर, ध्रांगध्राना महाराजा मानसिंहजी तेमना भायात प्रतापसिंहजी तथा जालमसिंहजी, वजाणाना दरबार साहेब नशीबखानजी, पाटडीना दरबार सूरजमल्लसिंहजी, लींबडीना नामदार महाराजा श्री जशवंतसिंहजी बहादुर, कच्छभुजनुं राजमंडल तथा जेशलमेरना महाराजा, योधपुरना कविराज महामहोपाध्याय मुरारिदान तेमज न्यायविशारद शास्त्री नारायणदत्तजी, व्याकरणाचार्य विद्याभूषण पंडित भगवतीलालजी, आशु कवि शास्त्री नित्यानंदजी, शास्त्री हरिकृष्णजी साहित्य पंडितजी उमाशंकरजी, शास्त्री मणीशंकरजी, राजवैद्य पंडित हेमराजभाइ, आदित्यराम विगेरेने जैनधर्म प्रत्ये सारी लागणीवाळा कर्या हता. जीर्णोद्धारना उपदेशथी बीकानेरना भांडासरजीनुं म्होटुं देरासर तथा खंभातमां नवपल्लवजी, चिंतामणिजी, तथा आदिनाथजीनुं देरासर, अने वीरमगाममां अजितनाथ स्वामीनुं देरासर, इत्यादिक देरासरना जीर्णोद्धार थया. तेओ श्रीना तीर्थयात्रा करवा संबंधी उपदेशथी श्रीसिद्धाचलजी, श्रीगिरनारजी, श्रीसंखेश्वरजी, श्री भोयणीजी. श्रीआबुजी, श्रीवरकाणाजी, श्रीराणकपुरजी, श्रीकेशरीयाजी, श्रीफलवर्द्धिपार्श्वनाथजी, जेशलमेरजी, काविगंधार, नानी महोटी पंचतीर्थिजी विगेरे तीर्थोना संघ छ 'री' पाळता नीकळ्या, तेओ श्रीना पसायथी घणा भव्य जीवोए तीर्थोनां दर्शन करी सम्यक्त्व गुणनी निर्मलता करी. जीवदयाना उपदेशथी वीरमगाम, मांडल, विगेरे स्थळोमां पांजरापोळो थइ, धार्मिक केळवणीना उपदेशथी राजनगरमां श्री जैन हठीसींग सरस्वती सभा, कच्छ मोटी खाखरमां भ्रातृचन्द्राभ्युदय पाठशाळा, तथा कन्याशाळा, ध्रांगध्रामां मुनिश्री कुशलचन्द्रगणि विद्याशाळा तेमज केटलेक स्थळे पोषधशाळा तथा धर्मशाळा विगेरे थयां. वळी कच्छमुंद्रामां अथीर प्रतिमाने स्थीर कर्या संबंधी, वीरमगाममां देरासरजीनी प्रतिष्ठा वखते वृष्टि संबंधी

तेमज खंभात विगेरे स्थळोमां तेमना तप तेजना चमत्कार लोकोने जाणवामां आव्या हता. तेओश्रीए गुजरात कच्छ-काठिआवाड, झालावाड, गोढवाड, मारवाड, मेवाड विगेरे देशोमां विना निश्राये विचरी अनेक भव्यजीवोनो उद्धार कर्यो हतो. घणे स्थळे पडेला तड टंटाओने उपदेश आपी शान्त कर्या. पाटण, जेशलमेर, खंभात, बीकानेर विगेरेना जुना वखतना भंडारो आ आचार्यश्रीये जोइ सारी रीते अनुभव मेळवी प्रवीण थया हता. वि. सं. १९६९ ना वैशाख सुद १३ ने बुधवारे शीवगंज शहेरमां चतुर्विध श्रीसंघना अत्यंत आग्रहथी तेओश्री आचार्यपद तथा भट्टारकपद पाम्या. वि.सं.१९७२ ना वैशाख वद ८ ने बुधवारनी रात्रे १॥ वागे शुभध्यानथी त्रण दिवसना अणसणपूर्वक राजनगरमां तेओश्री स्वर्गवास थया. तेसमये आचार्यश्रीनी वैयावच्चमां तपस्वी मुनिमहाराज श्री जगत्चंद्रजी महाराज तथा मुनिश्री सागरचंद्रजी विगेरेओ सारी रीते तत्पर रह्या हता.

यतः–श्रीमत्पर्वतनायकार्बुदगिरिप्रान्तप्रदेशस्थित–
वड्ग्रामनिवासिनो गुणिवरादौदीच्यविप्रात्सतः ॥
जन्मप्रापदसौ स्वमातृ–विजयाकुक्षौ सुपुण्ये दिने,
भाईचन्द इति प्रथां च धृतवांश्चन्द्रोपमांगद्युतः ॥ १ ॥
सूरीन्द्रं भ्रातृचंद्राख्यं, दिव्यं स्याद्वादवादिनम् ॥
पदस्थं नयनिष्णातं, वन्दे श्री मुक्तिनंदनम् ॥ २ ॥
श्रीमद्विद्यावतंसाः शमदमसहिता बालभावाद्विरक्ता,
ज्ञानाभ्यासे प्रवृत्ता निखिलजनमनोहर्षदाः स्वैर्गुणौघैः ॥
मध्यस्था मान्यवाक्या दलितमदबला भ्रातृचंद्राभिधाना–
स्तारुण्ये तीर्णमोहा निरुपमचरिताः सूरिराजा जयन्तु ॥३॥

अनेकगुणगणशोभित-मूरीश्वरश्रीभ्रातृचन्द्रगुरुम् ॥
सदा शुभाशयेनाह-मंघ्रिसरोजं तस्य वन्दे ॥ ४ ॥

येन ज्ञानप्रदीपेन, निरस्याभ्यंतरं तमः ॥
ममात्मा निर्मलीचक्रे, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥

— अपूर्ण.—

आ पट्टावली प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद आचार्य महाराज श्री भ्रातृचन्द्रसूरीश्वरना शिष्य मुनिमहाराज श्रीसागरचंद्रजीए पोते लखेल मोहोटी पट्टावलीमांथी संक्षेप करी लखी आपेल छे.

प्रकाशक.

—⁂—

श्रीसूरीश्वर स्तवन.

हरिगीत छंद.

श्री पार्श्वचंद्र सूरींद नागपूरींद तपगण नभमणी,
तसपट परंपर गण धुरंधर हेमचंद्रसूरि गुणीः
निग्रंथ गुरु तस पाट राजे आज गाजे मुनिवरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्रसूरीश्वरा. १

छे शांत दांत महंत किरियापात्र समतासागरु,
पंडित प्रवर विद्वान् बुद्धिनिधान विद्याआगरु;
अघओघवारक महाप्रभावक धर्मधोरी धुरंधरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. २

छे भव्य आकृति धर्म मूर्ति प्रभु तुल्य मनोवृती,
तप तेज दीपे कदि न छीपे भाग्यनी चढती रती;
वळि शरदशशि सम सौम्य कांति शांतिवान् शुभंकरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्र सूरीश्वरा. ३

गुरु गच्छनायक ज्ञानदायक संघमां लायक मुदा,
गतराग रोष न दोष जरिए तोष सुख दुःखमां सदा;
छत्रीस गुणगण युक्त सूरीश्वर चरण गुणथी अलंकर्या,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्रसूरीश्वरा. ४

जिनभाण अस्त थतां सूरीश्वर ज्ञानदीप प्रकाशता,
मिथ्यांधकार विकार टाळी भविकजन प्रतिबोधता;
शुभ छंद सांकळचंद कहे पावन करो भारतधरा,
भवि भक्तिभावे नमो निशदिन भ्रातृचंद्रसूरीश्वरा. ५



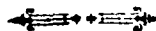
॥ अथ सूतक विचार लिख्यते ॥

॥ जेहने घरे जन्म थाये तेहने १० दिन पुत्र जन्म थये सूतक, दिन ११ पुत्री जन्मनो सूतक जाणवो, मृत्युं घरनो–सूतक दिन १२ नो ते घरनो आहार साधु लिये नहो, ते घरनी अग्नि तथा जलथी जिन पूजा न सूझे एटले थाये नही, एम निशीथचूर्णिमें कह्यो छेः निशीथ-में १६ मे उद्देशेमे, जन्म तथा मरणनो घर दुगंछनीक जाणवो; वली व्यवहार भाष्यमे मलयगिरिजी कृत टीकामें कह्यो छेः जन्मनो सूतक जन्मथी दिन १० ताइ, वली विचारसार प्रकरणमें कह्यो छेः प्रसुता स्त्री एकमास सुधी प्रतिमादिकनुं दर्शन करे नहींः दिन ४० तांइ जिन-पूजा करे नही; साधुने न विहरावे; जेहने घरमे जन्म तथा मरणनो सूतक थाये तेहना घरना जिमणवाला १२ दिन लगें जिनपूजा न करे; मृतकने अडकनहारा १६ पोहोर लगें पडिकमणादि करे नहीं; मृतक कलेवरने कांध देणहार २४ पोहोर लगें पडिकमणादि न करे; वेसना पालटणहारा ८ पोहोर सूतक टाळे पछे पडिक्रमणादि करे; बीजा ग्रंथांतरे कह्यो; जन्मनो सूतक १० दिन जन्मना स्थाने मास

१ रो मृतक, घरना गोत्रीने दिन ५ नो सूतक टाले; जन्म हूओ ते दिनहीज मरे तथा देशांतरे मरे, सन्यासी मरे, अनेरो कोइ मरे तो दिन १ तथा तीननो सुतकः आठ वरसथी नीचो बालक तेहने दिन ८ नो सूतक. एम जन्म मरणनो सूतक ग्रंथथी जाणवो; विचार सार प्रकरणमें ऋतुवंती स्त्री ३ दिन लगे तो भांडादिकने न छुहैः दिन ४ पछे प्रतिक्रमणादिक करे; तपस्या करे ते लेखें लागे; दिन ५ पछे जिनपूजा करे; अने जो स्त्रीने रोगादिकने कारणथी ३ दिन २४ पोहोर उलंध्या पछे वली रुधीर देखवामें आवे तो तेहनो दोष नहीः विवेक करी पवित्र थइ प्रतिमादिक जिन दर्शन अग्र पूजादिक करेः मुनिराजने पडिलाभे; जिनप्रतिमानी अंग पूजा न करे; एम चर्चरी ग्रंथमें कह्यो छे, इति मृतकविचार संपूर्णम्. ॥

॥ अथ श्रीहेमाचार्यो विचारचिंतामणौ श्लोकद्वयमाहुः -

—मृतकं वृद्धिहानिभ्यां, दिनानि त्रीणि द्वादशः ।
प्रसूति स्थान मासैकं, वासरा पंच गोत्रिणाम् ॥ १ ॥
प्रसूनिस्तद्दिने बाले, देशांतर रणे मृते;
संतान मरणे जाते, दिनमेकं च मृतकम् ॥ २ ॥



॥ ॐ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री प्रतिक्रमण सूत्र. ॥



॥ अथ नमस्कारमंत्र ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

॥ अथ पंचिंदिअ ॥

पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो ॥ पंच समिओ ति गुत्तो, छत्तीस गुणो गुरुमज्झ ॥२॥

(ए गाथाओवडे गुरुस्थापना करवी.)

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥

॥ अथ इरियावहि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि, इच्छं ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरिया-

वहियाए, विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे, बीअक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउत्तिंग पणग दग, मट्टी-मक्कडा संताणासंकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

तस्सउत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिउ हुज्जमे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥ तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(चार नवकार अथवा एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो.)

॥ अथ लोगस्स* ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपिकेवली ॥ १ ॥ उसजम-जियं च वंदे, संजवमजिनंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अजिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलानं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सागरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

॥ अथ पमिलेहणा ॥

१ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् पमिलेहणं संदिसाएमि ॥ इच्छं ॥

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नि-

---

* लोगस्सने चतुर्विंशति स्तव अथवा चोवीसथ्थो पण कहे छे.

सीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहणं करमि ॥ इच्छं ॥

(पछी मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा तथा शरीरनी २५ पडिलेहणा करवी. पडिलेहणा करतां नीचेना पचास बोल चिंतववा.)

॥ अथ पडिलेहणाना ५० बोल ॥

सम्यक्त्वमूल निर्मलदृष्टे जीव जोइ जयणा करुं. (एम कही दृष्टिपडिलेहणा करवी) सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय, परिहरुं ॥ कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग, परिहरुं ॥ सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, आदरुं ॥ कुदेव, कुगुरु, कुधर्म, परिहरुं ॥ ज्ञान, दर्शन चारित्र, आदरुं ॥ ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्रविराधना, परिहरुं ॥ मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, आदरुं ॥ मनोदंड, वचनदंड, कायदंड, परिहरुं॥ (एवी रीते मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा.) हवे अंगनी २५ पडिलेहणा आ प्रमाणेः-) हास्य, रति, अरति, परिहरुं ॥ भय. शोक. दुगंछा, परिहरुं॥ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव, परिहरुं॥ मायाशल्य, नियाणशल्य, मिथ्यात्वशल्य, परिहरुं ॥ क्रोध मान परिहरुं ॥ माया लोभ परिहरुं ॥ पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय. विराधना परिहरुं (पछी)

१ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामाइयं संदिस्साएमि ॥ इच्छं ॥

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामाइयं ठाएमि ॥ इच्छं ॥

(पछी नवकार १ भणी कहीये)

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायिकदंडक उचरावो ॥

(एम कही सामायिक दंडक उचरवुं.)

॥ अथ सामायिक ॥

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ अथ गुरुवांदणा ॥

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ १ ॥ अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥२॥ निसीहि ॥ अहो, कायं, काय, संफासं, खमणिज्जो, भे. किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण भे, दिवसो, वइक्कंतो ॥ ३ ॥ जत्ता, भे ॥ ४ ॥ जवणिज्जं, च, भे ॥५॥ खामेमि खमासमणो, देवसियं वइक्कम्मं ॥ ६ ॥ आवस्सिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए,

आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिछाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सवकालिआए, सवमिछोवयाराए, सवधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, अइआरो, कउ, तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥

(ए रीते बे वांदणां देवां. बीजो वांदणो बेठा रही पूरो करवो. चउविहार उपवास करनारे वांदणा देवा नहि. पछी "आवस्सई" भणी अवग्रह बाहेर नीकळी कहेवुं–इच्छकारि भगवन् पसाय करी पच्चक्खाण करावो, एम कही यथाशक्ति पच्चक्खाण करवुं.)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥

(एम कही डाबो ढीचण भूमिथको ऊंचो ने जमणो भूमिए लगाडी अंजलि करी मुहपत्ति मुखे देइ भणिए.)

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

एस करेमि पणामं, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स;
सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥
जगमङ्गलजियाणं वियसियवरनाणदंसणधराणं;
नाणुज्जोयगराणं, लोगंमि नमो जिणवराणं ॥ २ ॥
तिछयरे जगवंते, अणुत्तर परक्कमे अमियनाणी;
तिन्ने सुगइगइगए, सिद्धिप्पह देसए वंदे ॥ ३ ॥

वंदामि महाजागं, महामुणिं–महायसं महावीरं;
अमरनररायमहियं, तिन्नयर मिमस्स तिन्नस्स ॥ ४ ॥
वयणामएण जुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता;
जियलोय मुद्धरंता, अरिहंता हुं तु मे सरणं ॥ ५ ॥
उज्झियजरमरणाणं, समत्तडुक्खत्तसत्तसरणाणं;
तिहुयणजणसुहियाणं, अरिहंताणं णमोताणं ॥ ६ ॥

तेह श्री अरिहंतजीने महारो नमस्कार हुवो, केहवा ते श्री अरिहंत, जिणे श्री अरिहंते रागद्वेषरूपिया अरि वैरी जीत्या, अने अढार दोष रहित हुवा, ते अढार दोष कहेवाः–

॥ अथ अन्नाणकोह ॥

अन्नाणे कोहे मयं माणं लोहं, मायां रइअं अरइअं; निद्दां सोगं अलियवयणं, चोरियां मच्छरं नयां ॥ १ ॥ पाणिवहं पेमकीलां, पसंगं हांसां य जस्स ए दोसा; अढारसवि पणढा, नमांमि देवाहिदेवंतं ॥ २ ॥

एहवा देवाधिदेव, सुरासुरविहितसेव, सर्वज्ञ, भगवंत, जगन्नाथ, जगजीवना तारक, कुगतिमार्ग निवारक, निरीह, निरहंकार, निस्संग, निर्मम, शांत, दांत, करुणासमुद्र, विश्वोपकार सागर, अनंतगुणना आगर, चउसठ इंद्रना पूजनीक, वज्रऋषभनाराच संघयण, समचतुरस्रसंस्थान, अष्टसहस्र वरपुरुषलक्षणना धरण-

हार, समुद्रनीपरे गंजीर, मेरुपर्वतनीपरे धीर, संखनीपरे निरंजन, वायुनीपरे अप्रतिबद्ध विहार, आकाशनीपरे निरालंब, जीवनीपरे अप्रतिहतगति, कूर्मनीपरे गुप्तेंद्रिय, खड्गी जीवना शृंगनीपरे एक, चारंम पंखियानीपरे अप्रमत्त, सिंहनीपरे डुर्धृष्य, वृषजनीपरे उदारसहस मीलंगरथधुरंधर चंद्रमानीपरे सौम्यकांति, सूर्यनीपरे सतेज, पंखियानीपरे विप्रमुक्त, कुक्षिसंबल, वसुंधरानीपरे सर्वसह, अनंतज्ञान. अनंतदर्शन. चउत्रीश अतिशयसंयुक्त, पइंत्रीश जाषागुण परिकलित, अष्टमहाप्रातिहार्य विराजमान, पादपीठिका सहित सिंहासन ठत्रत्रयचामर शोजायमान, पूठ पाठल जामंम्ल दीपे, तेजे करी श्री सूर्यने जीपे, श्री अरिहंत उपर अशोकवृक्ष गाया करतो संघाते चाले, धर्मध्वज आगल ठती लहलहे, आकाशगत धर्मचक्र जलहले, देवडुंडुजि स्वामी आगल वाजे ॥ श्री अरिहंतनी वाणी मेघनीपरे गाजे ॥ योजनहारिणी वाणी अमृतसमाणी सर्व जाषानुगामिनी ॥ सकललोकना संशय हरे, त्रिजुवनजनना मनने करे उत्साह ॥ मुक्तिनगरी प्रते सार्थवाह ॥ एहवा श्री अरिहंत जगवंत गुणवंत देवाधिदेव, तेहनो गुणस्तुति जणुं-(एम कही उत्ना थइ थूइ जणवी.)

॥ *अथ सिरिसिद्धेसरनी थूइ ॥
(छंद छप्पय.)

सिरिसिद्धेसर गुणनिधान ॥ सेवक सुखदायक,
अजितें जीत्या कर्म सबल ॥ हुवा जगनायक;
संभव भवना भय हरेवि ॥ पाम्या शिवराज,
अभिनंदनजिन मुझ मिल्या ॥ सीधा सवि काज;
सुमति सुमति दायक जिनह ॥ सुरनर सारे सेव,
पद्मप्रभ जिनदंसणे ॥ जनममरण संखेव ॥ १ ॥
श्रीसुपास मुज पूरे आश ॥ भवना दुख वारी,
चंद्रप्रभजिनतणी ॥ कांति देखत मनोहारी;
सुविधि सुविधिपरि धर्म कह्यो ॥ तिहुयणजण साखी,
शीतल संयमसिरि वरी ॥ षट् जीवसु राखी;
श्रीश्रेयांस पाय प्रणमिये ॥ इग्यारमो जिणिंद,
वासुपूज्य मन ध्याइये ॥ केवलनाण दिणिंद ॥ २ ॥
विमल विमल धीकरण ॥ तरण-भवसायर-प्रवहण,
जिण अनंते भवअंत कर्यो ॥ जाणे सुर नर जण,
धर्मजिणेसर सोमवयण ॥ तप तेजे दिनमणि,
कृपाकरण श्री शांतिनाथ ॥ त्रस थावर अणुदिणि;
कुंथुनाथ चक्री जगही ॥ छट्ठो सत्तरमो धर्म,
अरजिनवर पय छलगे ॥ लब्भे शिवपदशर्म ॥ ३ ॥
मल्लिनाथ ज्य मल्ल डुज्जय ॥ अंतरना जीत्या,

* आ पांच गाथानी स्तुति श्री समरचंद्रसूरिनी करेली छे.

मुनिसुव्रत व्रत सुष्टु धरी ॥ लोकाग्रे पहुता;
नमि नामी रतिपतिय मान ॥ रिपु सर्व खपाव्या,
नेमि जिणेसर ब्रह्मकच ॥ पहेरि गिरि आव्या;
श्री पार्श्वनाथ त्रेवीसमो ॥ त्रिभुवन सकल सरूप,
श्री महावीर तीर्थंसरु ॥ नमिये त्रिविध सरूप ॥ ४ ॥
एणिपेरे जिण चोवीस थव्या ॥ पुरुषोत्तम सीधा,
सेव करि एक चित्ते जेणे ॥ ते माटे लीधा;
यद्यपि जिणवर राग रहित ॥ पण सेवकने तारे,
द्वेष तज्यो पण अवर ॥ लोगसुं संग निवारे;
तिणकारण भगते भणिय ॥ वंदु देव त्रिकाल,
प्रभु तुठे वंछित फले ॥ जाणे बालगोपाल ॥ ५ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

जंकिंचि नाम तिथ्थं, सग्ग पायालि तिरिय लोयम्मि, जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

नमुत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहथ्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्म-

नायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं ॥६॥ दीवोताणं, सरणगइ पइठा, अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्कय मव्वाबाह मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं. संपत्ताणं, नमोजिणाणं जियभयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अइआ, सिद्धा, जेअ भविस्संति णाग ए काले॥संपइअ वट्टमाणा सव्वे, तिविहेण वंदामि॥१०॥*

१ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणवंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री आचार्य वांडुजी ॥

२ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपाध्याय वांडुजी ॥

३ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सर्व साधुजीने त्रिकाल वंदना होज्यो.

* नमोत्थुणंनी नव संपदाओ.—१ स्तोतव्यसंपत्. २ ओघ संपत्. ३ इतरहेतु संपत्. ४ विशेषहेतु संपत् ५ तद्धेतु संपत्. ६ विशेषोपयोग संपत्. ७ स्वरुपयोग संपत्. ८ निजसमफल संपत्. ९ मोक्ष संपत्.

४ इच्छकार भगवन् सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुखसंजम जात्रा निर्वहोछोजी ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि ?

(गुरु कहे "ठाएह.") इच्छं भगवन् तहत्ति. (पछी "नमो अरिहंताणं" तथा "करेमिभंते" कही.)

॥ इच्छामि ठामि काउसग्गं ॥

जो मे देवसिउ अइयारो कउ काइउ वाइउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्विचिंतिउ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तिणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

(पछी "तसउत्तरी तथा अन्नत्थ उससिएणं" कही आठ अतिचारनी गाथा अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो.) अतिचारनी आठ गाथा आ प्रमाणे छे.

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो इय एसो पंचहा भणिउ ॥१॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहेव निह्नवणे॥

वंजण अत्र तडुनए, अटविहो नाणमायारो ॥२॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढ दिठीय ॥ उववूह थिरीकरणे, वछलप्पनावणे अठ ॥३॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिंतिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिय तवे, सप्निंतर बाहिर कुसलदिठे॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो ॥५॥ अणसणमूणोयरिया, वित्ती संखेवण रसचाउ. कायकिलेसो संलीणयाय, बज्झो तवो होइ ॥६॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गो विय, अप्निंतरओ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअ बलविरिउ, परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो॥ जुंजइ अजहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥

(पछी काउसग्ग पारी "लोगस्स" कही "वांदणां" देइ, आवस्सइ भणी अवग्रह बाहेर नीकली कहीये) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसियं आलोएमि. (पछी "जोमेदेवसिओ" कहेवो. पछी)

॥ अथ सातलाख ॥

सातलाख पृथ्वीकाय, सातलाख अपकाय, सात लाख तेउकाय, सातलाख वाउकाय, दशलाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउदलाख अनंतकाय, बे लाख बेंद्री, बे लाख तेंद्री, बे लाख चउरिंद्री, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यंच, चउदलाख मनुष्यपंचेंद्री, एवंकारे चोराशी लाख जीवाजोनिने विषे

जे कोइ माहरे जीवे पाप कर्युं होय, कराव्युं होय, करतां प्रत्ये भलुं जाण्युं होय. ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिछामिदुक्कडं ॥

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥

थूलप्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रतिअरति, परपरिवाद, मायामोस, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानकमांहि जे कोइ पापस्थानक में सेव्युं होय, सेवाव्युं होय, सेवतां प्रते भलुं जाण्युं होय, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिछामिदुक्कडं ॥

॥ अथ चार विकथा ॥

राजकथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा, ए चार विकथामांहि जे कोइ विकथा में करी होय, करावी होय, करतां प्रते भली जाणी होय, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिछामि दुक्कडं ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

सव्वस्सवि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिठिय, इछाकारेण संदिसह, इछं, तस्स मिछामिदुक्कडं॥

(एम कही विषमासने बेसी, पछी) "नमोअरिहंताणं" "करेमि भंते सामाइयं" (कहीने).

॥ अथ चत्तारि मंगलं ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,

साहूमंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा. सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमा ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि.

पछी "इच्छामि पडिक्कमिउं, जो मे देवसिओ अइयारोकओ," ए पाठ कहीने "इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए" (इत्यादिक पाठ करी पछे "अढार लाख चोवीश हजार एकसो वीश इरियावहीनी क्रियाने विषे जे कोइ दुषण लाग्युं होय ते सवी मिच्छामि दुकडं." आ प्रमाणे बोलीने पछे "वंदित्तु" सूत्र भणवुं.)

॥ अथ वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्र) ॥

वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहूअ; इच्छामि पडिक्कमिउं, सावग धम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जोमे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्तेअ; सुहुमो अ बायरोवा, तंनिंदे तंचगरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे, कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिंकसाएहिं अप्पसत्थेहिं, रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे; अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु, सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ६ ॥

छकाय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा, अत्तट्ठाय परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचह्णमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिह्णमइयारे, सिरकाणं च चउह्णं, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईओ, आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए, पढम वयस्स इयारे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग अलिअवयण विरइओ, आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएस अ कूड लेहे अ, बीअ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरणविरइओ, आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ, कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदार गमण विरइओ, आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे, चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरियमप्पसत्थंमि ॥ परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण धन्न खित्तवत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ

तिरिअं च ॥ वुड्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंध मल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेवयदं*, तलक्ख रस केस विस विसयं ॥२२॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सर दह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गि मुसलजंतग, तणकट्ठे मंत मूल भेसज्जे, दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरस गंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥ सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥ देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ ॥ २९ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चे-

* दंतंमि शब्दमां दं ऊपर आर्यानो विश्राम आवे छे.

व ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु य दुहिएसु य, जा मे अस्संजएसु अणुकं-पा ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरणकरणजुत्तेसु॥ संते फासुअ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह-लोए परलोए, जीवियमरणे अ आसंस पओगे ॥ पंच-विहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ का-एण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदण वय सिक्खा गारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ स-म्मद्दिट्ठी जीवो, जइवि हु पावं समायरे किंचि ॥ अ-प्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंत मूल विसारया, विज्जा हणं-ति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठवि-हं कम्मं, राग दोस समज्जियं ॥ आलोअंतो अ निंद-तो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणु-स्सो, आलोइय निंदिअ गुरु सगासे ॥ होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअ भरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्स-एण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ ॥ दुक्खाण

मंतकिरिअं, काहि अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-अणा बहुविहा, नय संभरिया पडिक्कमणकाले, मूल-गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

(पछी ऊभो थइने अथवा जमणो पग नीचो बेसाडी नीचेनी गाथा बोले.)

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥

(पछी वांदणां बे दइने गुरुने खामणा करवां.)

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अब्भुठिओ मि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं० ॥ इच्छं० ॥ खामेमि देव-सिअं. जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभा-साए उवरिभासाए जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सु-हुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

(ए रीते खामणा करी, "आवस्सई" कही अवग्रह बाहेर आवी "आयरिय उवज्झाए" कहेवुं.)

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ, जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजलिं करिय सीसे,

सवं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, नावओ धम्म निहिय नियचित्तो, सवं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

(पछी, नवकार, करेमिभंते, इच्छामि ठामिकाउसग्गं, तसउत्तरी अन्नथ्थ उससिएणं, कही चारित्राचार विशुद्धि माटे बे लोगस्सनो काउसग्ग करी,) मगट लोगस्स कहेवो. पछी

॥ अथ सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदण वत्तिआए, पुअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाजवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सद्धाए, मेहाए, धीइए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं.

(अन्नथ्थ उससिएणं कही, दर्शनाचार विशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउसग्ग करी) पारी " पुख्खरवर दीवड्ढे कहेवुं. "

॥ अथ पुक्करवरदी ॥

पुक्करवर दीवड्ढे, धायइसंमे अ जंबुदीवे अ ॥ नरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम तिमिरपम्मल विद्धंसणस्स, सुरगण नरिंद महिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्कलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्न करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे नो पयओ णमो

जिणमए, नंदीसया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नरगण, स्सप्नूय नावचिए ॥ लोगो जन्न पइठिन जगमिणं, तेलुक मचासुरं, धम्मो वढ्ढउ सासउ विजयउ, धमुत्तरं वढ्ढउ ॥ ४ ॥ सुश्रस्स नगवउ, करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिश्राए० अन्नन्न उससिएणं० (ज्ञानाचार विशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, पारी) पछी

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोश्रग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देवदेवमहिश्रं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसार सागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेलसिहरे, दिक्का नाणं निसीहिश्रा जस्स, तं धम्मचक्कवट्टिं, श्ररिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि श्रठ दस दो, श्र वंदिश्रा जिणवरा चउव्वीसं, परमठनिठिश्रठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

(पछी "वांदणां" बे देइ सामायक, चोविसथ्थो, वांदणा, पडिकमणुं, काउस्सग्ग, पच्चखाण, संभाळवां. पछी "आवस्सई" भणी अवग्रह बाहेर नीकळी कहिये.)

इच्छामोणुसट्ठिं; नमोखमासमणाणं.

॥ पछी नमस्कार कहेवो ॥

॥ नमो दुर्वार रागादि, वैरिवारनिवारिणे, अर्ह-तेयोगिनाथाय, महावीरायतायिने ॥ १ ॥ मंदरगिरि-रधीरः प्राप्तभवापार नीरनिधितीरः, निर्जित मन्मथवीरः, श्रियेस्तु सश्रीमहावीर ॥२॥ सर्वेजिनास्तुल्य गुणैर्नमस्याः, समत्वभावेन जगत्प्रशस्याः, तथापि वीरं निकटोपकारं, तीर्थेश्वरंनौमि सदा मुदारं ॥३॥

(ए रीते नमस्कार कही पछी "नमोथ्थुणं" बे खमासण पूर्वक स्तवनं संदिस्साएमि, स्तवनं भणेमि. कही नवकार मंत्र गण्या पूर्वक स्तवन कहेवुं.)

॥ अथ श्री शांतिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ अहिपुर मंमन सोलमो, जिनवर कंचन कांतिरे ॥ निरखिये मूरति स्वामिनी, हियमले लागि भे खांतिरे ॥ १ ॥ शांतिजिन सांभलो वीनती, माहरी परम दयालरे ॥ तुम्हविणु कोइ बीजो नहि, सेवकजन प्रतिपालरे ॥ २ ॥ शां० ॥ दुल्लहो माणुसभव लह्यो, आरजक्षेत्र अवताररे ॥ जनम श्रावक कुले मुज थयो, सांभळ्यो धर्म आचाररे ॥ ३ ॥ शां० ॥ पंचमा कालने दुषणे, बहु मत जिनमत गणरे ॥ तिणे भ्रमे भूलो ए प्राणियो, नवि लहे प्रवचन वाणरे ॥ ४ ॥ शां० ॥ अविरति देवदेवी नमे, सुगुरु कुगुरु समतोलरे ॥ धर्म सावद्य भाषे सदा, रंजए कुगुरु-कुबोलरे ॥ ५ ॥ शां०॥

जिनमती जिनमती नवि मिले, निंद ए मांहोमांहिरे ॥ जंमि समता ममता धरे, पाम ए लोकप्रवाहरे ॥ ६ ॥ ॥ शां० ॥ मोहराजा परिवारस्युं, राग ने द्वेष वलि कामरे ॥ पूठे लाग्या जमे अहनिसे, शुद्धजाव ए ठामरे ॥ ७ ॥ शां० ॥ विषय कषाय ने काठिया, वंच ए.पंच प्रमादरे ॥ एहतणो जय तो टले, जो तुमे करो प्रसादरे ॥ ८ ॥ शां० ॥ हवे तुम्ह शरणले आविउं, वज्रपिंजर सम जाणरे ॥ आगे पारेवमो राखिउं, आपणा प्राणने प्राणरे ॥ ९ ॥ शां० ॥ हुं सदा सेवक तुमतणो, तुम्हे प्रजु जगतसाधाररे॥ तुह्मसम त्रिजुवन को नही, जीवने अजय दाताररे ॥ १० ॥ शां० ॥

॥ कलस ॥ इम नागपुरवर जविय मनहर; शांति जिनवर सामिया; बहु दिवसकेरो हर्ष पहुतो तुम्ह दरिसण पामिया॥ तुम शरण आव्यो उव्य जावत सहुअ वैरी जय टव्या, पार्श्वचंडसूरि पजणे हर्ष बिगुणे मन मनोरह सवि फव्या. ॥ ११ ॥

॥ अथ जयवीयराय ॥

जय वीयराय जगगुरु, होउ मम तुहपजावउं ॥ जयवं जव निवेउं मग्गाणुसारिआ इठफल सिद्दी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाउ, गुरुजणपूआ परठकरणं च॥ सुह गुरु जोगो तवय ए, सेवणा आ जव मखंमा ॥

॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआ, ण बंधणं वीयराय तुह समए ॥ तह वि मम हुज्ज सेवा, नवे नवे तुम्ह चलणाणं ॥ २ ॥ डुक्कक्खउ कम्मक्खउ, समाहिमरणं च बोहिलाभोय ॥ संपज्जउ मह एवं, तुह नाह प-णाम करणेणं ॥ ४ ॥ सर्व मंगलमांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतिसासनं ॥ ५ ॥

१ इच्छामि० इच्छाकारेण० श्री आचार्य वांडुजी. २ इच्छामि० इच्छाकारेण० श्री उपाध्याय वांडुजी. ३ इच्छा-मि० इच्छाकारेण० सर्व साधुजीने त्रिकाल वंदना हो-ज्यो. ४ इच्छामि-इच्छाकारेण० देवसीयप्रायश्चित्त वि-शोधनार्थं काउसग्गं करेमि ? ॥ इच्छं ॥ देवसीअप्रायश्चि त्तविशोधनार्थं करेमि काउसग्गं ॥

(अन्नथ्थ ऊससिएणंनो पाठ कही, चार लोगस्स अथवा १६ नवकारनो काउसग्ग करवो. काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही)

१ इच्छामि० इच्छाकारेण० बेसणे संदिसाएमि. २ इच्छामि० इच्छाकारेण० बेसणे ठाएमि. ३ इच्छामि० इ-च्छाकारेण० सज्झायं संदिसाएमि. ४ इच्छामि० इच्छाकारे ण० सज्झायं करेमि, इच्छं ॥

(एम कही नवकार गणी बेठा सज्झाय भणिये गुणिये.

॥ अथ विनयनी सज्झाय ॥

॥ श्रीगुरु गौतमगुण हियमें धरी, कहिशुं वि-

नयविचार ॥ स्वामी सोहमगणधर दाखवे, उत्तराध्ययन मझार ॥ १ ॥ विनय करीजेरे जवियण जावसुं, जेहथी लहिए नाण ॥ अनुक्रमे समकित चारित्र गुण ग्रही, पामीजे निर्वाण ॥ २ ॥ वि० ॥ गुरुने पासेरे रहिये सर्वदा, वहिए गुरुनी सीख ॥ काज करीजेरे वंछित गुरुतणुं, तो हुवे सफली दीख ॥ ३ ॥ वि० ॥ कुहिए कानेरे जेवी कूतरी, काढे घरथीरे लोय ॥ तिम अविनितने काढे गञ्जथकी, जसमो जाग न होय ॥४॥ ॥ वि० ॥ सूअर छंमीरे कुंकु कणतणुं, राचे विष्टापूर ॥ अविनय राचे तिम अविनीतजे, परिहरे संयम दूर ॥ ५ ॥ वि० ॥ ए संजारीरे अविनय जावना, विनय करे गुण जाण ॥ तेहने श्रीगुरु सूत्र अरथ कहे, ए जिनवरनी वाण ॥ ६ ॥ वि० ॥ मूल विनयछेरे जिनधर्म तरुतणुं, ज्ञानादिक तसु माल ॥ कीरति कुसुम अमरसुख मुगतीना, फल पामे सुविशाल ॥७॥ वि० ॥ परिमल रूमीरे सहजे मालती, शीतल सुगंध कपूर ॥ तिम सुविनीतरे सहजे सुंदरु, पामे गुण अंकूर ॥ ८ ॥ ॥ वि० ॥ सफला तरुवर फलजारे नमे, मेह नमे जलजार ॥ सालिजरी जिम दीसे ढलकती, सुपुरुष विनय विचार ॥ ए ॥ वि० ॥ जुवो नर नारीरे जगमां देखता, गज वृषज अने तुरंग ॥ पग पग दुःख सहे, अविनीत

जे, विनये सुख लहे चंग ॥ १० ॥ वि० ॥ जेय प्रकामेरे अवगुण गुरुतणा, छिद्र निहाले आप ॥ शीख देयंतारे रीस जिको करे, तेहने बहुला पाप ॥ ११ ॥ ॥ वि० ॥ गुण वखाणेरे गुरुमाहमितणा, ढांके अवगुण जाण ॥ सीख देयंतारे प्रीत जिको करे, ते गुण पामे प्राण ॥ १२ ॥ वि० ॥ गौतम सुनखत्त साधूतणी परे, पामे जग जसवाद ॥ परजव सुरसुख अने मुगती लहे, जिहां नही दुःख विवाद ॥ १३ ॥ वि० ॥ विनय तणा फल जाणी रूअमां, ते करज्यो गुणवंत ॥ तसु पय लागेरे ब्रह्मो दलि वलि, मागे सुख अनंत ॥१४॥ वि०॥

इछामि० इछकार० जगवन् दुक्खक्खय कम्मक्खय कर्मनिर्जरानिमित्तं काउसग्गं करेमि, इछं. दुक्खक्खय-कम्मक्खय कर्मनिर्जरानिमित्तं करेमि काउसग्गं.

अन्नत्थ उससिएणं कही–(चार लोगस्स के सोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो.)

सामाइक, चोवीसत्थो, वांदणा, पडिक्कमणुं, काउसग्ग, पच्चक्खाण, ए षमावश्यकने विषे जे कोइ जाणतां अजाणतां दूषण लागो हुवे ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिछामिदुक्कडं.

॥ इति देवसिक प्रतिक्रमण विधिः ॥

(हवे सामायिक पारवानी विधि लखीए छीए.)

इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पारवा इरिया-वहि पडिक्कमुजि; इच्छं.

(इरियावहि-तसउत्तरी-अन्नत्थ ऊससिएणं कही एक लोग-स्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी, पारी लोगस्स कहेवो.)

इच्छामि० इच्छाकारेण० चैत्यवंदन करुंजी, इच्छं.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण, दुज्जय मयण बाण मुसुमूरण; सरस पियंगुवन्न गयगामी, जयो पास भुव-णत्तय सामी ॥ १ ॥ जसुतणुकंतकडप्प सिणिद्धो, सोहे फणि मणि किरणा लिद्धो; नुन्नव जलहर तडिल्लय लंछिय, सोजिण पास पयच्छउ वंछिय ॥ २ ॥ (पछी नमोत्थुणं कही.)

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ, अहे अ, तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइंताइं वंदे, इहसंतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

॥ अथ जावंत केविसाहू ॥

॥ जावंत केविसाहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वेसिंतेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

(बे खमासमणपूर्वक " स्तवनं संदिसाएमि, स्तवनं भणेमि " नवकार कही स्तवन कहेवुं.)

॥ अथ उवसग्गहरं स्तवन ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं;

विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठधारेइ जो सया मणुअ; तस्स गह रोग मारी, दुठ जरा जंतिउवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्झपणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर तिरिए सुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्त लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए; पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

(जयवीयराय कही इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पारुं? गुरु कहे, पुणो वि कायव्वं श्रावक कहे यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पार्युं? गुरु कहे, आयारो नमोत्तव्वो. श्रावक कहे तहत्ति. इच्छामि० इच्छाकारेण० सामायिक पारवा गाथा भणुं, पछी एक नवकार भणी) नीचेनो पाठ कहेवो.

॥ अथ सामाइअ वयजुत्तो ॥

॥ सामाइअ वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो, छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइय जत्तिआवारा॥१॥ सामाइअंमिउकए, समणोइव सावओ हवइ जम्हा, एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥

॥ सामायिकव्रत विधिए लीधुं, विधिए पार्युं, विधि करतां जे कोइ अविधि आशातना हुइ होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं; दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, एवंकारे बत्रीश दुषणमां जे कोइ दुषण लाग्युं होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ (पछी त्रण नवकार गणवा, इति सामायिक पारवानी विधि).

॥ अथ श्री राइ प्रतिक्रमण तथा तेनी विधि ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमी सामायिक लेवुं. पछी ऊना थइ खमासमण दइ कहेवुं, इच्छाकारेण संदिसह जगवन् कुसुमिण दुसुमिण राइ प्रायश्चित विशोधनार्थं काउसग्ग करुं? गुरु कहे करेह. इच्छं. करेमि काउसग्गं. अन्नछ० कही चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउसग्ग करी, पारी प्रगट लोगस्स कही, खमासमण दइ कहेवुं " इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं " इच्छं. ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

जगचिंतामणि जगहनाह, जगगुरु जगरक्कण ॥ जगबंधव जगसत्ववाह, जगनाव विअक्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठविणासण॥ चउविसंपि जिणवर जयंतु, अप्पमिहयसासण॥१॥ कम्मनूमिहिं कम्मनूमिहिं, पढमसंघयणि॥ उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नवकोमि केवलीण, कोमिसहस नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीसमुणि, बिहुं कोमी वरनाणि ॥ समणह कोमी सहसदुअ, थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामी जयउ सामी, रिसह सत्तुंजि, उज्जिंते पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरिमंमण, नरुअच्छे मुणिसुव्वय॥ मुहरि पास डुहडुरिअखंमण, अवर विदेहे तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि वि-

दिसि जिं केवि, तीअ अणागय संपइअ, वंउजिण-सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ महस्सा, लक्का उप्पन्न अठ कोमिओ ॥ बत्तीस बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नरस कोमिसयाइं, कोमी बायाल लक्क अ-म्वन्ना ॥ उत्तीस सहस असिआ, सासयबिंबाइं पण-मामि ॥ ५ ॥

(पठी जंकिंचि० नमोत्थुणं० जावंति चेइआइं कही, खमासमण बे पूर्वक "स्तवनं संदिसाएमि, स्तवनं ज-णेमि" पठी नवकार, उवसग्गहरं, जयवीयराय, कहे-वुं. त्यारकेमे खमासमण देइ "इछाकारेण संदिस्सह जगवन् बेसणे संदिसाएमि" बीजे खमासमणे "बेस-णे ठाएमि." त्रीजे खमासमणे "सज्ञायं संदिस्साए-मि" चोथे खमासमणे "सज्ञायं जणेमि." पठी एक नवकार गणी जरहेसरबाहुबलिनी सज्ञाय कहेवी.)

॥ अथ जरहेसरबाहुबलिनी सज्ञाय ॥

जरहेसर बाहुबली, अजयकुमारो य ढंढणकुमा-रो ॥ सिरियो अनियपुत्तो, अइमतो नागदत्तो य ॥१॥ मेअज्ज थूलिजद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी ॥ क-यवन्नोअ सुकोसल, पुंमरियो केसि करकंमू ॥२॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिजद्दो य ॥ जद्दो दसन्नजद्दो, पसन्नचंदो य जसजद्दो ॥३॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इला

इपुत्तो, चिलाइपुत्तो सुबाहुमुणि ॥४॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो॥ कालियसूरीय संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो य ॥५॥ पन्नवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी य ॥ सेयंस कूरगडूउ, सिज्जंनव मेहकुमारो य ॥६॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलिज्जंति ॥७॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेह दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥८॥ रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवि॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पन्नावई चिल्लणादेवी ॥९॥ बंन्नी सुंदरि रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा य जयवंती ॥ देवइ दोवइ धारणि, कलावई पुप्फचूला य ॥१०॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लक्कमणा सुसीमा य ॥ जंबुवइ सच्चनामा, रुप्पिणि कण्हठमहिसीउ ॥११॥ जक्काय जक्कदिन्ना, नूया तह चेव नूयदिन्ना य॥सेणा वेणा रेणा, नइणीउ थूलनद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासइउ, जयंतु अकलंकसीलकलियाउ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जस्स पम्हो तिहुयणे सयले ॥१३॥

(पछी एक खमासमण देइ आचार्य० एक खमासमण देइ उपाध्याय० एक खमासमण देइ साधु वांदी, इच्छकारसु० चउन्नो खमासमण दइ कहेवुं “इच्छाकारेण संदिसह नगवन् राइपमिक्कमणं ठाएमि.”

(गुरु कहे ठाएह) पछी नमोअरिहंताणं० करेमिभंते० इच्छामिठामि काउसग्गं० तसउत्तरी० अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी, पारी प्रगट लोगस्स कही, पछी, " सव्व लोएअरिहंत चेइआणं० " कही दर्शनाचारविशुद्धि माटे एक लोगस्सनो काउसग्ग करी पारी " पुक्खरवरदीवड्ढे० " कही, " सुअस्स भगवओ० " कहीने काउसग्ग करवो, तेमां अतिचारनी आठ गाथा चिंतववी, पारी " सिद्धाणं बुद्धाणं० " कही बे वांदणा देवा. (वांदणाना पाठमां ज्यां " दिवसो वइक्कंतो " एवो पाठ छे, त्यां " राइ वइक्कंता " एम कहेवुं " देवसिअ " ना ठेकाणे " राइअं " ने " देवसिआए " ने ठेकाणे " राइआए " एम कहेवुं.)

पछी " आवस्सइ " भणी अवग्रह बाहेर नीकली कहेवुं. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, राइयं आलोएमि. (गुरु कहे आलोएह) इच्छं. आलोएमि. जोमे राइओ अइआरो कओ० सातलाख० अढार पापस्थान, चार विकथा० सव्वस्सवि० आलोवी विषमासने बेसी नमो अरिहंताणं० करेमि भंते० चत्तारिमंगलं० कही, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइयो अइआरो० कही, इरियावही पडिक्कमी० अढारलाख कहि० " वंदित्तु " कहेवुं (वंदिता सूत्रमां " पडिक्कमे देसिअं सव्वं " ए ठेकाणे " पडिक्कमे राइअं सव्वं " एम बोलवुं.)

॥ पछी वांदणा दइ 'इच्छाकारेण संदिसह भग-वन्, अप्भुठिओमि अप्भिंतर राइयं खामेउं, इच्छं खामेमि राइयं ॥ ए रीते खामणा करी आवस्सहि भणी अवग्रह बाहेर नीकली ॥ "आयरिय उवज्झाए" कही "नवकार, करेमिभंते, इच्छामि ठामि काउसग्गं, तस्स-उत्तरी करणेणं, अन्नत्थ उस्ससिएणं० कही ॥ काउ-सग्ग करवो ॥ ए काउसग्गमां नीचे लखी "छम्मासी तप चिंतवणा" करवी. ते न आवडे तो चार लोगस्स के सोळ नवकारनो काउसग्ग करवो.

॥ छम्मासी तपचिंतवणा ॥

॥ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरदेवे छमासी तप कीधो ॥ अरे जीव तुं छमासी तप करी शके? न शकुं ॥ एक दिवस ऊणो करी शके? न शकुं ॥ बिहु दिवस ऊणो करी शके? न शकुं ॥ त्रिहुं दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ चिहुं दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ पांच दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ ६-७-८-९-१० दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ ११-१२-१३-१४-१५ दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ १६-१७-१८–१९–२० दिवसे ऊणो० न शकुं ॥ २१-२२-२३-२४-२५ दिवसे० ? न शकुं ॥ २६ दिवसे० ? न० ॥ २७ दिव० ? न० ॥ २८ दि० ? न० ॥ २९ दिवसे ऊ-

णो ठमामी तप करी शके? न शकुं॥ इणिपरे पंचमासी, चउमासी. त्रिमासी, बिमासी चिंतववो ॥ पछे श्रेर जीव एकमासी तप करी शके ? न शकुं॥ एक दिवस ऊणो करी शके ? न शकुं ॥ बे दिवसे ऊणो करी शके? न शकुं ॥ त्रिहुं दिवसे ऊ० ? न शकुं ॥ चिहुं दि० ? न शकुं॥ पंच दि०? न शकुं ॥ एवं ६-७-८-९-१० दिवसे ऊणो०? न शकुं॥ ११-१२-१३ दिवसे ऊणो०? न शकुं॥ चोत्रीसम करी शके ? न शकुं ॥ एवं बत्रीसम, त्रीसम, अठावीसं. ठवीसम, चउवीसम, बावीसम, वीसम, अढारसम, सोळसम, चउदसम, डुवालसम, दसम, अठम. ठठ, चउञ्ज, करी शके ? न शकुं ॥ इम जुजुआ कहेवा ॥ जेटलो तप कीधो होय तिहां इम न कहियें; करी न शकुं ॥ किंतु, दिवमां न थाय इम कहिये. पछे आंबिल, नीवी, एकासणुं, बिआसणुं, पुरिमढ्ढ, साढपोरसि, पोरसि, नवकारसी. जे पच्चक्काण करवा वांछे त्यां लगी चिंतवी काउसग्ग पारे ॥ पछे लोगस्स कही वांदणा देइ ऊना थइ तीर्थमाला कहेवी ॥

॥ अथ तीर्थमाला ॥

॥ श्री सकलतीर्थाय नमः ॥ श्री शत्रुंजयाय नमः ॥ आबु , अष्टापद, समेतशिखर, विपुलगिरि, वैनारगिरि, स्वर्णगिरि, रत्नगिरि, जाइं जिणबिंबाइं ताइं

सव्वाइं वंदामि ॥ चोवीस तीर्थंकरोनां नाम लइ पछी नीचेनो पाठ कहेवो ॥

अनंत चउवीसी जिन नमुं, सिद्ध अनंति कोम ॥ केवलज्ञानी थविर सवि, वंदु बे कर जोम ॥ १ ॥ दो कोमी केवलधरा, विहरमाण जिण वीस ॥ सहस जुगल कोटी नमुं, साध सवे निसदीस ॥ २ ॥ प्रतिमा पनरह कोम्सिय, वली बेतालीस कोम ॥ लाख अठावन तीस उह, सहस असि अधिक जोम ॥ ३ ॥ एउे प्रतिमा जिनतणी, ऊर्ध्व अहो तिरि लोय ॥ अरिहंत भाव जुहारतां, जिणसरिसो फल होय ॥ ४ ॥ ऋषभ चंद्रानन जाणिये, वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार नाम ए सासतां, प्रणमुं मन धरी ध्यान ॥ ५ ॥ इणे नामे बहु को हुवा, न हुवे न हुस्ये कोइ ॥ जइ एहनी प्रतिमा भणुं, तो सासती न होइ ॥ ६ ॥ आदि अंत जेहनो नहि, ते सासती कहाय ॥ तास पटंतर जिणपमिमा, मणुअलोक इह थाय ॥ ७ ॥ नर नरपति जे करावी, असासती ते जाण ॥ जे हुवा जे हुवे जे हुस्ये, जिणवर गुणमणि खाण ॥ ८ ॥ अष्टापद समेतशिखर, शत्रुंजय गिरनार ॥ अर्बुद गामागरनगर, जिहजिह जिनह विहार ॥ए॥ जिहां मुनिवर अणसण करी, मुगति गया जिण ठाम ॥ सिद्धखेत्र तसु दंसणे, शुभ फल शुभ परिणाम ॥१०॥ भरतेसर नरवइ पमुह, करावी मनभाय ॥

ते जिन प्रतिमा वंदतां दूरे दुरित पलाय ॥ ११ ॥

॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभु ॥ मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥१॥ सर्वारिष्ट प्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ॥ सर्व लब्धि निधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥२॥ अंगुठे अमृत वसे, लब्धितणो भंमार ॥ जो गुरु गौतम समरिये, मनवंछित दातार ॥ ३ ॥ गामतणे पञ्चसारूं, गुरुगौतम समरंत ॥ इच्छाभोजन घर कुशल, लब्बीलील करंत ॥४॥ पुंमरीक गौतमपमुह, गणधर गुणसंपन्न ॥ प्रह उठी नित प्रणमिये, चउदहसय बावन्न ॥ ५ ॥ सुरगोतरूमणि संपजे, जेहने लीधे नाम ॥ एहिज अक्षर समरता, सीझे वंछित काम ॥ ६ ॥

(पछी उभा थइ पचख्खाण करवुं) पछी

(सामाइक, चोवीसत्थो, वांदणा, पमिक्कमणुं, काउसग्ग, पचख्खाण कर्युं छे.)

(पछी बेसी "इच्छामोणुमाहिं, नमोखमासमणाणं" कहीने चैत्यवंदन करवुं.)

॥ अथ चैत्यवंदन-विशाललोचनदलं ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्मकृत्वा, मत्ताहर्षभरात् सुखंसुरेंद्राः ॥ तृणमपिगणयंति नैवनाकं, प्रातः संतुशिवायतेजिनेंद्राः ॥ २ ॥ कलंक-

निर्मुक्त ममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्वचंद्रं जिनचंद्र भाषितं, दिनागमेनौमिबुधैर्नमस्कृतं॥३॥

॥ अथ श्री वर्त्तमान जिनस्तुति ॥

स्वामी वंदु विहरमाण, जिनवर सीमंधर,
सीमनाम मर्याद, धर्मनी तास धुरंधर;
युगमंधर आधार, त्रिजगे नमुं भवसिंधुर,
बाहु सुबाहु जिणिंद, नमुं महिमा गुणसुंदर;
जंबुदीवि चत्तारि जिण, विजयवंत विहरंत,
क्षेत्रविदेहे तमतिमिर, दिनयर जेम हरंत. ॥ १ ॥
धायइसंमे अठ जाणि, सुजात स्वयंप्रभ,
रुषभानन जिन अनंतवीर्य, प्रणमुं सूरप्रभ;
श्री विशाल गुणगण विशाल, टाले भवफेरा,
वज्रधर धर जुहरि, करे आनंद घणेरा;
चंद्रानन जिन अठमो, डुठ कठ नीवार,
अठकम्म निर्ठविअ, पेंठवस्ये भवनो पार ॥ २ ॥
पुक्करद्धि जिण चंद्रबाहु, जिनराज बिराजे,
चतुरिमचंग भुजंग, वाणिगुण घण जिम गाजे;
ईश्वर जगदीश्वर नमेवि, गुण गावे सुर नर,
नेमिप्रभ प्रभु वीरसेन, महाभद्र सुहंकर;
नमिये ते श्री देवयश, जग जस पसरे जास,
अजितवीर्य अष्टम करे, दिन दिन ज्ञानप्रकाश ॥ ३ ॥
मणुयखित्त पणयाल, लक्क जोयण जाणोजे,

तेह्वे पंच विदेह, गुरु उपम तसु दीजे;
उसर्प्पिणी अवसप्पिणी काल, तिह नहिय निरंतर,
स्वामी सिंहजिणिंद, कालसरिसो नहु अंतर;
सत्तरिसय उक्कोस पदे, जघन पदे जिन वीस,
विहरमान संपइपयम्, त्रिजग नमुं निसदीस ॥ ४ ॥
चउरासीलख पुव्व आयु, ए वीस जिणेसर,
पणसय धणुअ पमाण देह, दाने अलवेसर;
प्रजु अतिशय चौत्रीस, सहस अठोत्तर लक्षण,
वाणीगुण पेंतीस जणी, रंजीय विचक्षण;
पालि राज महवयधरी, पामी केवलनाण,
पार्श्वचंदसूरि नित प्रहसमे, प्रणमे सुखनो ठाण ॥ ५ ॥

(पछी जंकिंचि० नमोथ्थुणं० कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवनं संदिसाएमि, बीजे खमासमणे स्तवनं भणेमि, नवकार गणी स्तवन कहेवुं.)

॥ अथ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

सिखर समेत जुहारीयेरे, धन आज दिहारा ॥ संतमनोरथनीपरे उंचा, देखत मोहनगारा ॥ सत्तरम कुंथुजिणेसर जेट्या, सत्तरअ संजमधारारे ॥ धन० ॥ १ ॥ ते पासे श्री पनरम जिनवर, धर्म धर्मना दारा ॥ पंच सुमतिना दायक पंचम, सुमतिनाम रसारारे ॥ धन० ॥ २ ॥ सोलकषाय निवारक सोलम, शांतिशांतिदातारा ॥ साते जयना जीपक सप्तम, नाथ सुपारस साररे ॥ धन० ॥

॥ ३ ॥ तेरम जिणवर किरियाचायक, विमल विमलमतिकारा ॥ बंधन दोय निवारक तारक, अजित जिनंद अति सारसे ॥ धन० ॥४॥ तिहांथी चलत चलत बहु तुंगा, तेवीसम जिनधारा ॥ पारस पारसथी अधिकेरा, जीवनकुं सुखकारारे ॥ धन० ॥ ५ ॥ पश्चिम दिसिमे अठ शिखरवर, वंद्या जहवकारा ॥ त्यांथी फरीने यात्रा करीने, पूर्वदिसे चित्त धारारे ॥ धन० ॥ ६ ॥ एकवीसे सबल निवारक, नमि नामे चित्तधारा, नव दु कुशील निवारक जिनपति, अरजग जीव जधारारे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ जंगणीसम मल्लिप्रभु भेट्या, त्रिभुवन रा उदारा ॥ एकादश प्रतिमाना प्ररूपक, श्री श्रेयांस निहारारे ॥ धन० ॥ ८ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्तिना पालक, सुविधिदेव दयारा ॥ ठ लेश्याने भांजी अलेसी, पद्मप्रभु निरहंकारारे ॥ ध० ॥९॥ मुनिसुव्रत वीसम जिन भेदी, असमाधि जंजीरा ॥ त्यांथी नीचा अति बहु ऊंचा, अष्टमटुंक संचारारे ॥ ध० ॥१०॥ मद जीपीने चरण धरीने, करम कर्या सब दूरा ॥ चंद्रप्रभ जिणवर त्यां सिद्धा, अक्षयसुख लह्या पूरारे ॥ध०॥११॥ चउदह जीवरासना पालक, अनंतनाथजिन सूरा ॥ श्रमणधरम दसविधना धारक, सीतल सहज सनूरारे ॥ धन० ॥ १२॥ दंमगुप्ति त्रिय वारी पारी, संभव भवकुं निवारा ॥ मेघाम्बर चिहुंगत भेदक, अभिनंदन लह्या पारारे ॥ धन० ॥ १३॥

वीस जिणेसर वीस टुंके, कर्म कर्या सहू चूरा॥ ए जिनचरण जे नावे वंदे, सुख लहे ते जग सूरारे ॥ध०॥ ॥ १४ ॥ वरस श्रढार तेणवे पोसे, उजाल सातम फारा ॥ तलहटि मंदिर ते सवि वंद्या, हर्षचंडसूरि साररे ॥ धन० ॥ १५ ॥

॥ पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ कहिये श्री आचार्य० बीजे उपाध्याय० अने त्रीजे सर्व साधु वांदीए, पछी खमासमण देइ श्रावक सामायक पारे. ॥

॥ इति राइ प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण प्रारंज ॥

॥ चतुर्विंशतिजिन नमस्कार ॥

श्रर्हंतं जगदीश्वरं गुणनिधिं वार्स्विङ्दोषोज्झितं,
जंतूनां हितकारकं प्रणमतां जावेन जव्यात्मनां;
कल्याणात्रलिकदकंदलनता प्रावृट्पयोदोपमं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्री आदिनाथं मुदा. ॥१॥
मोहाद्यैररिजिः कषायगुरुजिर्गाढं च संतापितः
तिर्यक्नारकदेवमानव कुगत्योघासुखं प्रापितः
तज्जेतार ममुष्यवारणकृते कृत्वोद्यमं सांप्रतं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्री वीतरागाजितं. ॥२॥
सावित्रीयुवतीरतः कमलजूर्विष्णू रमासंगतः
कंठेकाल उमायुत स्रय इमे देवाः सरागा जुवि,

नोत्तीर्णाः स्वयमन्य तारणविधौ नाखं विदित्वा ततो,
वंदे संभव मुत्तमं सुरनतं श्री वीतरागं मुदा. ॥३॥
ख्यातो यः किल सर्वतीर्थिकगणैः तथ्योपदेशोत्तम,
श्वंचत्केवलकेवलैकनिलयो योनंतभानूपमः
संतं तं कृतमस्तकांजलिपुटो भक्ति प्रशस्ताशयो,
वंदेहं सततान्निनंदनजिनं श्री वीतरागं मुदा. ॥४॥
यं जन्मावसरे सुरेंद्रनिवहाः स्वर्णाद्रिश्रृंगोत्तमे,
तुंगे स्म स्नपयंति निर्मलजलैः स्तुत्वा स्म चोपासते;
जिग्युर्नो परतीर्थिकाः श्रुतबलैर्य मोघवाचो हितं,
वंदेहं सुमतिं सुरासुरनतं श्री वीतरागं मुदा. ॥५॥
येनाजेयबलः स्मर स्त्रिभुवने युद्धे जितो लीलया,
येनाज्ञानतमो विनेयहृदयस्थानस्थितं हेलया;
दूरोत्सारित मेव सत्यवचनै राकृष्य तं बोधिदं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं रक्ताभ पद्मप्रभं. ॥६॥
यस्मै सत्तपसे विशालयशसे दत्वा विशुद्धं त्रिधा.
हारं पारणके चतुर्विध मिह प्रापुर्मनोवांछितं;
भव्याः प्रेत्य सुजन्म तुच्छभवतां चेत्यद्भुतार्थं हितं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीम सुपार्श्वं मुदा. ॥७॥
यस्मा ज्जैनमतं मतोत्तम, मिदं प्रावर्त्तत प्रीतिदं,
सम्यक् प्राणिदयोपदेशपरमं मिथ्यात्वविध्वंसनं;
निर्दोषं शिवयानयानसदृशं पापप्रणाशाय तं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं चंद्रप्रभाख्यं जिनं. ॥८॥

यस्यास्या ङ्रुपनिर्गता मधुरगी रार्याननार्यानपि,
प्रीणातीषुगुणप्रमाणगुणवत्यायोजनं संस्थितान्;
संशीते रपनोदिनी सुरनृणा माल्हादिनी तं प्रत्नं,
वंदेहं सुविधिं सुरासुरनतं श्रीवीतरागं मुदा. ॥९॥
यस्मिन् श्रीधृतिकीर्त्तिकांतिबलधीमुख्या ध्यनेकेगुणा,
यस्मिन् दोषलवोपि नैवज्ञवति स्फीतंयशोनिर्मलं;
तद्गृह्णाति गुणान्न दोषनिचयं यस्तं सता मुत्तमं,
वंदेह सततं सुरासुरनतं श्रीशीतलस्वामिनं ॥१०॥
कांस्यामत्र मिवोज्ञितोदकमलं नीरंजनं शंखवत्,
निर्लेपं च पयोजवद् गगनवन्नित्यं निरालंबनं;
केनाप्य प्रतिहन्यमानगतिता संचारिणं जीववत्,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रेयांसनाथं मुदा. ॥११॥
एकंखड्गिविषाणव द्विरहितं द्वेषेण रागेण वै,
कंपांकाप्रतिबद्ध मत्रगमिव श्रीकुद्दिपाथेयकं;
राकाचंद्रमिवेह सौम्यगुणतायुक्तं प्रज्ञाज्ञास्करं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीवासुपूज्यं मुदा. ॥१२॥
ध्वांताराति मिव प्रदीप्तमहसं सत्केवलज्ञानिनं,
शीलांगानसि धुर्यमुद्धतरवद् गाढंदढे दुर्द्धरे;
शौंमीरं करिराजवद् बलगतिस्थैर्यादिज्ञिः सद्गुणै,
वंदेहं विमलं सुरासुरनतं श्रीवीतरागं मुदा. ॥१३॥
ध्याढ्यैः पर्शुज्ञिः कुतीर्थिकगणै र्दुर्धृष्य मैज्ञारिवत्,
पारावारगज्ञीरिमं धरणिवत् सर्वसहं स्वामिनं;

स्वछस्वांतमिवांबुशारदतमं कालुष्यदोषोज्झितं,
वंदेनंत महं सुरासुरनतं श्रीवीतरागं मुदा. ॥१४॥
स्याद्दासुमगराज धीर मनघं, मंदारवत् प्राणिना,
मिष्टप्राप्तिकरं सुधासमगिरं संतापचिंताहरं;
रूपन्यक्कृत मन्मथं शिवरमाशृंगारहारंवरं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्री धर्मनाथं मुदा. ॥१५॥
सच्चित्तेतरमिश्रवस्तुनिवहेनंतात्मके द्रव्यतो,
ग्रामादौ समयावलीप्रभृतिके तु क्षेत्रतः कालतः
भावादप्रतिभावकं तु मदनीहास्य क्रुधादौ समं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीशांतिनाथं मुदा. ॥१६॥
आद्यं संहननं तनोः सुरुचिरं संस्थान माद्यं तथा,
यस्याष्टाधिक सत्सहस्रगणना युक्तं लसल्लक्षणं;
मानोन्मान मथप्रमाण मुदितं शास्त्रे स्थितं तं सदा,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीकुंथुनाथं मुदा. ॥१७॥
अर्थ स्तावद नूदनंतगमयुक् सूत्रं ततो जायते,
स्यानंतार्थसुसंग्रहिण्युपचितं निर्युक्तियुक्तं नृतं,
पांचांगं जिनतो यतः किमपरं त्रैलोक्यसारं चतं,
वंदे श्रीअरनाथ मुत्तममहं श्रीवीतरागं मुदा. ॥१८॥
साष्टैकमिता विधाश्च विविधाः संति क्रियावादिना,
मज्ञानां मुनिषट्प्रमाश्च जलनिध्यष्टाऽक्रियावादिनां;
द्वात्रिंसद्विनयश्रिता मनुपमं दृष्टिषु सम्यग्दृशं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीमल्लिनाथं मुदा. ॥१९॥

धन्यास्ते नरजन्म तैः सफलितं तेषां च हस्तागता,
सिद्धिश्रीर्विपुलामला ज्ञगवतः पादारविंदद्वये;
ज्नक्त्या यैं र्भ्रमरायितं, तदनुमंतात्मीयज्नक्तौ रतो,
वंदेहं मुनिसुव्रतं सुरनतं श्रीवीतरागं मुदा. ॥२०॥
विश्वं कोदरिधर्त्तिलोकविदितो मित्रं सुहृत स्वागतं,
संलापोत्तरकाल मालपति किं, प्रीतः कुतश्चित कथं;
ध्यंतर्वेश्मसुतिष्टतीनि विनयोपेतः प्रभुंताद्दशं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीवीतरागं नमिं. ॥२१॥
स्यादेकाद्दरिणा पदेन धरणी शंत्रु स्तथैवाग्रतः
ताद्दक् किं सविसर्जनीय इह नोतारं सतारं कथं;
इत्यन्यर्थनया फलेग्रहिवचो विज्ञप्तिका पूर्वकं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीनेमिनाथं मुदा. ॥२२॥
कार्येषु प्रसृता सती च न ज्नवेद्भृत्यक्रिया कीद्दशी,
नृणांके जनयंति दुःखमतुलं तेवा विसर्गो यथा;
इत्यन्यर्थनया फलेग्रहिवचो विज्ञप्तिकापूर्वकं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीपार्श्वनाथं मुदा. ॥२३॥
निस्संगं नितरां निरीह मतुलं निर्द्वेष दोषांकुरं,
नीरागं किल नीरिरंसरुचिरं निःपंथिकं निर्ज्नयं;
विज्ञःश्रीगुरुसाधुरत्न पदवी मारूढ मासोत्तमं,
वंदेहं सततं सुरासुरनतं श्रीवर्द्धमानं मुदा. ॥२४॥
कः पानवाचो किल धातुवर्णो॥विजाति ज्नूती स किमंबरेण॥
इत्थं तदाह्वेन जिनःस्तुतोयां॥ददातुसिद्धिं लघु साधुजक्त्या॥

॥ अथ श्रावक पाक्षिकादी अतिचार ॥

(चउपई.)

नाणे दंसण चरणे जाण, समकितशुं व्रत बार वखाण ॥ संलेहण तवं विरियायारं, तिहनां आलोईशुं अतिचार ॥ १ ॥ नाणे दंसणे चरण प्रत्येकं, आठ आठ अतिचार विवेकं ॥ समकितमूल बार व्रततणा, अतिचार असी तिहं जणया ॥ २ ॥ संलेहण तव विरियायार, तेहना जाणी वीस अतिचार ॥ सर्व मली एकसो चउवीस, गुरुसाखें गरहुं निशंदीस ॥ ३ ॥ नाणतणा आठे आचार, विपरीतांचरणे अतिचार ॥ ते प्रमादें वलि आणोंभोग, ते आलोवुं गुरुसंजोग ॥ ४ ॥ काले न जणयो जणयो अकाल, विनयहीन बहुमान निटाल ॥ नें वह्या आवश्यक उपधान, पूछ्या गुरु उलव्या प्रधान ॥५॥ अक्षर काने मात्र अशुद्ध, सूत्रअर्थ पण कह्यो विरुद्ध ॥ सूत्र अर्थ जिनभाषित बेव, जणया कुम विस्तर संखेव ॥ ६ ॥ नाणे ए आठ अतिचार, वलिय अनेरा घणा प्रकार ॥ निह्नवणा—सायण अंतराय,

---

१ ज्ञानमां. २ तप. ३ वीर्याचार. ४ तेना. ५ आलोवीश ६ प्रत्येकमां. ७ विवेके करीने. ८ एंसी. ९ त्यां. १० रात्रिदिवस, अहर्निश. ११ विपरीत आचरण करतां. १२ प्रमादे करीने. १३ अनुभोगे करीने—अजाणपणे. १४ गुरुना संयोगमां—गुरुसमीप. १५ अकाले, अकालमां. १६ दूरकरी.

विसंवादने कर्यो कसाय ॥ ७ ॥ अक्षर चांप्या चरणह हेठ, मुह्वागालण दीधी हेठ॥ नाणोपगरण आसातना, जे में कीधी तसु जावना ॥७॥ सूक्ष्म बादर उजयप्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ करजोमी मस्तक नामिये आ जव परजव ते खामिये ॥ ए ॥ अहनिसि पक्की चउमासी फुमं, संवत्तरि मिह्वाङकम्मं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरु साखे ते मुजने हज्यो॥११॥

ज्ञानाचारना आठ अतिचार-तेहने विषे जे कोइ पख्खी चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

दंसण जणया आठ आचार, विपरीताचरणे अतिचार ॥ ते प्रमाद वली आणाजोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ ११ ॥ संका देसत सर्वत करी, निरती आण हीये नहु धरी ॥ लेखव्या धर्म सवे सारिखा, सत्य नलीधो करी पारिखा ॥१२॥ धर्मतणा फलनो संदेह, अहवा निरखी मुनिवरदेह ॥ मलि मह्वा र्डुगंध विशेष, तसु हीला कीधी विद्वेष ॥ १३ ॥ श्रुतसागर गाढो गंजीर, रह्यो मूंफ नवि पाम्यो तीर ॥ साधु साहम्मी जाणी गुणी, उपवृंहणा नहु कीधी घणी ॥ १४ ॥ शुद्ध धर्मथी पमतो जाण, उर्दंजादिक नहु मन आण ॥ ते थिर न कर्यो जिम श्रीवीर, मेघकुमार पहुचाव्यो तीर.

॥ १५ ॥ महाशतक संताप्यो नार, संथारे चम्यियो अवधार ॥ रीसाणो गौतम पाठवी, रोस खमावी दृढमति ठवी ॥ १६ ॥ एहवो थिरीकरण नहु कर्यो, जिनसान वच्छलगुण न्यर्यो ॥ न्नले न्नाव ते कीधो नहि, अंतरजगति चित्त नहु वही ॥ १७ ॥ धन धन जिनसासन इम कहे, मिथ्याती सुधी मति लहे ॥ जे देखी न्नावे न्नावना, ते नहु कीधी सुप्रन्नावना ॥ १८ ॥ सूक्ष्म बादर उन्नय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ न्नव परन्नव ते खामिये ॥१९॥ अहनिसि पक्कि चउमासी फुर्म, संवछरी मिछाउक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ २० ॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार–तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

चरणे न्नएया आठ आचार, विपरीताचरणे अतिचार ॥ ते प्रमाद वलि आणान्नोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ २१ ॥ मारग समितिसहित चालियें, सावद्य रहित वचन बोलियें ॥ दोषरहित लीजे आहार, करिवो मुकण ग्रहण विचार. ॥२२॥ दृष्टियें जोइ पमजाण करी, लेवुं मूकेवुं चित्त धरी ॥ चोथी समिति एह जाण

वी, हवे पंचमि हियमे आणवी. ॥२३॥ कुमे दस गुण थंमिल जोय, जीवविराहण जिहां नवि होय ॥ उच्चारादिक तिहां परिठवे, पंचमिसमिति एणिपरे हुवे ॥२४॥ आर्त्तरौद्रचिंतन परिहरे, सर्व जीवनी समता धरे ॥ इणिपरे चित्त सदा राखिये, मनोगुपति प्रवचन भाखिये ॥२५॥ मौनी सानें नहु ववहरे, हुंकारादिक सवि संवरे ॥ वचनगुपति ते कहिये सही, सुगुरुतणे वचने में ग्रही ॥२६॥ दुस्सह चउविह उवसग्ग सहे, मेरुतणी परें निश्चल रहे ॥ तनु वोसरावी काउसग्ग करे, कायगुपति जिन इम उच्चरे ॥२७॥ इणिपरें आठे प्रवचन माय, सघलुं प्रवचन जिहां समाय ॥ जावजीव साधे पालिये, असमितिमति दूरे टालिये ॥२८॥ पोसह सामायिक अवसरे, श्रावक एहतणी खप करे ॥ नाणादिक पंचे आचार, साधु श्रावकने सरस विचार ॥ २९ ॥ सूक्ष्म बादर उभयप्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार॥ करजोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ३० ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुरं, संवच्छरि मिच्छादुक्कडं ॥ अरिहंत सिद्धसवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ ३१ ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

हवे विशेष श्रावकनो धर्म, समकिततत्व लहे लघुकर्म ॥ समकित लाधे सर्व प्रमाण, जप तप संजम नाण विनाण. ॥३२॥ समकित रतन जतन करि ग्रहो, जासु प्रसादे शिवसुख लहो ॥ समकित पाखे शिवपद दूर, चउगइ जीव भमे भव भूर. ॥ ३३ ॥ चारित्र पाले वार अनंत, तो पण नहु पामे भव अंत ॥ इम जाणी समकित आदरो, समकित आदर किरिया करो. ॥३४॥ समकित किरिया बे जो मिले, तो भव भमवाना भय टले ॥ समकित सुधा दंसण नाण, देवगुरु धर्म विषे ते प्रमाण, ॥३५॥ देव एक अरिहंत विदीत, राग द्वेष वैरी जिण जीत ॥ दोष अढार रहित हितकार, त्रिभुवन जनने तारणहार. ॥३६॥ नाम ठवण द्रव्य भाव विचार, निक्षेपा अनुयोगद्वार ॥ चिहुं प्रकार एणिपरें अरिहंत, चउथे भेद नमुं जयवंत. ॥ ३७ ॥ चउवीसत्थो भणतां नाम, जिन नामे तसु करुं प्रणाम ॥ ठवणा श्री जिनप्रतिमा कही, जिनभावे ते वंडु सही. ॥३८॥ पंचमअयण आवश्यकतणे, अधिकारे यति श्रावक भणे॥ पढम उवंगे दसमे अंग, प्रगट साखि जाणो मनरंग. ॥३९॥ आवंती चउवीसी हुस्ये, लहि केवल जिनधर्म भाखस्ये॥ आगम भाख्या द्रव्य जिणिंद, ते प्रणमुं मन धरि आणंद. ॥४०॥ इम चउवीसी जे जिन यदा, एहिज चउवीसत्थो तदा ॥ वंदनिक इम द्रव्य जिनेस, गुरु पुन्नी

जाणो सुविशेष. ॥ ४१ ॥ एणिपरें देवतत्व अरिहंत, गुरु सुसाधु जे जग गुणवंत ॥ सूधो निरवद्य दे उपदेश, टाले सावद्यनो लवलेश. ॥ ४२ ॥ परिग्रह ने आरंभ निवार, वरने निरने पंचाचार ॥ आणक्रिया जे पाले खरी, दोष रहित वहोरे गोचरी. ॥ ४३ ॥

इस्या सुगुरु गुरुतत्व सद्दहुं, तेनी आणा मस्तक वहुं ॥ जिनभाषित ते साचो धर्म, पालंता आपे शिवसर्म. ॥ ४४ ॥ सर्व जीव वलि हणवा नही, इण उपदेशें धर्म हुवे सही ॥ एक करि थापे आरंभ धर्म, ते जिनमतनुं न लहे मर्म. ॥ ४५ ॥ धर्मारथ आरंभ मिथ्यात, एहवि वात करे विख्यात ॥ बहु जन मांहे जे इम कहे, ते पण जैन धर्म नवि लहे. ॥ ४६ ॥ बे बे भाव जिहां ए नही, तेहिज धर्म साचो सद्दही ॥ एणिपरें पाद्धुं त्रिणे तत्त, साचुं सद्दहतां समकित. ॥४७॥ समकित मूल भणया व्रत बार, तेहना पंच पंच अतिचार ॥ गुरुमुख सांभली तेहनी विगत, जाणी टालिशुं आतमसकत. ॥ ४८ ॥ जीवादिक जिनभाषित तत्त, साचुं सद्दहतां समकित ॥ तेह विषे शंसय आणिये, संकादोष ते श्रुत जाणिये ॥ ४९ ॥ बीजा धर्मतणो अभिलाष, ते कंखा कहिये जिन भाष ॥ धर्मतणा फलनो संदेह, त्रीजी वितिगिछानी रेह ॥ ५० ॥ मिथ्यादृष्टि प्रशंसा करे, तसु परिचय दंसण अतिचरे ॥ समकितना पंचय अतिचार, तेहतणो करस्युं

परिहार. ॥ ५१ ॥ एह व्रतां समकित ऊपाय, मूल विना फल फूल न थाय ॥ धर्ममूल तिम समकित जाण, एह विना हुवे बहु व्रत हाण ॥ ५२ ॥ समकित विणु व्रत वार अनंत, पालंता न थयो भव अंत ॥ करे अभव्य बहु कायकलेश, तोय न आवे समकित लेश ॥ ५३ ॥ तिण समकित जामलि नहु कोय, जिनवर वचनं विमासी जोय ॥ समकित लाधे दुर्गति टले, अनुक्रमें शिवपुर पदवी मले. ॥ ५४ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये. ॥ ५५ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुर्म, संवछरि मिछाडुक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो. ॥ ५६ ॥

समकितना पांच अतिचार–तेहने विषे, जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुकडं.

रीसे दृढ बंधन दृढ घात, अंगचर्मनो करे विघात॥ अति भारारोपण विख्यात, रुंधीजे जे पाणी भात. ॥ ५७ ॥ पहिला व्रतना ए अतिचार, न लगामे श्रावक सुविचार॥ व्रतनो धारक इम जाणिये, तेहना गुण हियमे आणिये. ॥ ५८ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार,

जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आजव परजव ते खामिये, ॥ ५९ ॥ अहनिसि पक्कि चउमासी फुर्म, संवहरि मिह्राडुक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो. ॥६०॥

पहिलुं थूल प्राणातिपात विरमण व्रत-तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

कूम आल दे सहसाकार, गुज्ञ प्रकाशे जे अविचार ॥ मंत्रजेद निज नारीतणो, करतां लागे दूषण घणो ॥ ६१॥ जे दीजे मिथ्या उपदेश, कर्म धर्म पामिये किलेस ॥ कूम लेख ए बीजे व्रते, अतिचार समरशुं दिन प्रते ॥ ६२ ॥ सूक्ष्म बादर उजय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ करजोमी मस्तक नामिये, आ जव परजव ते खामिये ॥ ६३ ॥ अहनिसि पक्कि चउमासी फुर्म, संवहरि मिह्राडुक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्धसवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ ६४ ॥

बीजे थूल मृषावाद विरमण व्रत-तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

चौर हरी वस्तु ववहरे, चौर प्रयोग सखायत करे॥

दाण विसाई राज्यविरुद्ध, उत्तम श्रावकने प्रतिषिद्ध. ॥ ६५ ॥ वानि भेळ ने कूडु मान, कूम तोल परिहरे सुजाण ॥ त्रीजा व्रतना ए अतिचार, पंचतणो करिशुं परिहार ॥ ६६ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने· लाग्या अतिचार ॥ करजोमी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ ६७ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुर्म, संवछरि मिछादुक्कम्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरु साखे ते मुजने हज्यो ॥ ६८ ॥

त्रीजो थूल अदत्तादान विरमणव्रत—तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खि, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

भामे राखी थोमे काल, इत्तर परिग्गहिया संभाल ॥ विधवा दासी वेश्या जाण, अपरिग्गहिया ते मन आण ॥६९॥ तेहतणो जे कीजे संग, उत्तमने जाणो व्रत भंग ॥ फरसे परनारीना अंग, क्रीमा कहिये तेह अनंग ॥७०॥ आतमसंतति विण परतणा, मेळे नात्रा जे नर घणा ॥ कामभोग नावे संतोष, चउथे व्रत ए पंचय दोष ॥७१॥ शेठ सुदंसण प्रमुख अनेक, तेहना गुण जाणे सुविवेक ॥ निरतिचार जे पाळे शील, आ भव परभव तेहने लील ॥ ७२ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ करजोमी मस्तक

नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ ७३ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुर्म, संवछरि मिछाडुक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ ७४ ॥

चोथुं स्वदारासंतोष, परदाराविरमण व्रत–तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

बांधी मुके जे धन धन्न, एणिपरे रुप सोवन्न हिरन्न ॥ खेत्र गेह बे मेली एक, डुपद चउपद गर्ज अनेक ॥ ७५ ॥ कुविय वधारे तोले जेय, परिग्रह मान अतिक्रम तेह ॥ पंचमव्रत अतिचार निवार, सफल करे ते धन संसार ॥ ७६ ॥ सूक्ष्म बादर उनय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार॥करजोमी मस्तक नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ ७७ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुर्म, संवछरि मिछाडुक्कर्म ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरु साखे ते मुजने हज्यो ॥ ७८ ॥

पांचमुं परिग्रह परिमाणव्रत–तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

उंचो नीचो तिरछी दिसें, मान अतिक्रम करियें

वसे ॥ स्वारथ जणो अधिको करे, पंचम मान कर्यो वीसरे ॥७ए॥ बहा व्रतना ए अतिचार, न लगामे श्रावक सुविचार ॥ व्रतनो धारक इम जाणिये, तेना गुण हियमे आणिये ॥७०॥ सूक्ष्म बादर उजय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ जव परजव ते खामिये ॥ ७१ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुमं, संवछरि मिछाजुक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ ७२ ॥

छठुं दिशिविदिशिपरिमाणव्रत–तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी, दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

सप्तमव्रत हवे करिशुं विचार, तेना संजारुं अतिचार ॥ करमे पनरह जोजन पंच, एवं वीस नही खल खंच ॥ ७३ ॥ सचित आहारे अचिते वृंद, वृक्षथकी उखेमी गुंद ॥ खारेक रायण बीज समिद्ध, बीजो बे सचित्त प्रतिबद्ध ॥ ७४ ॥ अमि अपक्क ते अप्पोलिआ, उंला पुहुंक ते डुप्पोलिआ ॥ बीज रहित उसहि जे तुब, जे जुंजे तेहनी मति तुब ॥ ७५ ॥ अतिचार जोजन जाणवा, कर्मादान पनर टालवा ॥ त्रिविधे श्रावकनो आचार, पंचमंगिए जणयो विचार ॥ ७६ ॥

(यतः श्रीभगवतीसूत्रे अष्टमेशतके पंचमोद्देशके)

" जे इमे पुणोसमणोवासगा भवंति तेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सइं करेत्तएवा, कारवत्तएवा, करंत वा अन्नं समणुजाणित्तए वा ॥ तंजहा इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलावसोसणया, असइजणपोसणया. " (इतिवचनात्)

भाडभुंज सोनार ठंठार, इंटवाह नीवाह लोहार ॥ धातुधमण इत्यादि अधर्म, ए पहिलो इंगाली कर्म ॥८७॥ कण भरडावे आटा दाल, पान फूल फल विक्रय टाल॥ मुंढ लोढावे जे कपास, वणकर्म ते भणि पाप निवास ॥८८॥ वेचे सगड अने सगडंग, साडीकर्म करे व्रतभंग ॥ सकट पमुह जसु भाडे वहे, भाडीकर्म ते गिरुआ कहे ॥ ८९ ॥ जे भुंइ फोडे हल कुद्दाल, खणिवो कूप सरोवरपाल ॥ काढे लूण माटि पाषाण, फोडी कर्म कुकर्मनी हाण ॥ ९० ॥ मृगमद चामर ने गजदंत, करे प्राण जे त्रसना अंत ॥ आगर जलधी ए ववहरे, दंतवणिज्ज पापे पिंड भरे ॥९१॥ लाख गुली मणसिल धाहुडी, तूरी डुषी सुरी फिटकडी ॥ साजी

साबु ने पम्वास, इण व्यापारे डुर्गतिवास ॥ए२॥ मधु माखण विस मद ववहार, मीण महूमा प्रवृति अ-सार ॥ डुपद चउपद विक्रय करे, रस-केसह-वाणिज. किम तरे ॥ए३॥ विसहल लोह अने हरताल, वेचे बहु सावद्य हथियार ॥ ए विषवाणिज प्रवचन जाण, नहु टाले तेहने व्रतहाण ॥ ए४ ॥ ईष तेल सरसव एरंम, पमुह पीलणे पाप प्रचंम ॥ तिल दलेलनुं देवुं वार, यंत्रपीलण कर्म अधर्म निवार ॥ ए५ ॥ नाकविध अंकनुं दाण, गलकंबल कापे जे अजाण ॥ वींधी करे करणणनो ढेद, निर्लंडणनो करे निषेध ॥ ए६ ॥ पुण्यबुद्धि वसुने दव देइ, दवदाणे ते सुकृत खवेइ ॥ कूवा सर नदि ऊह जल शोष, मोटुं दूषण ते सर शोष ॥ ए७ ॥ सूआ सालहि तीतर मोर, कूकम कूकर हिये कठोर ॥ दुष्ट चित्त दासी मंजार, पोषे असती पोष निवार ॥ ए७ ॥ सप्तमव्रत वीसे अतिचार, टालंता श्रावक आचार ॥ पाप तुलावट दाण अधर्म, एम अनेरा जे खरकर्म ॥ एए ॥ सूद्दम बादर उन्नय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ नव पर नव ते खामिये ॥ १०० ॥ अहनिस पक्खि चउमासी फुमं, संवछरि मिछाडुक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरु साखे ते मुजने हज्यो ॥ १०१ ॥

सातमुं भोगोपभोगपरिमाणव्रत–तेहना वीश अतिचार, पांच भोजनना ने पंदर कर्मादानना, एवं वीस अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी, दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

अष्टम व्रत पंचय जाणवा, सकतिसीम ते पण टालवा ॥ जेहथी दीपे कामविकार, इस्या वचन बोले अविचार ॥१०२॥ भंमतणी पर चेष्टा करे, लोक हसामी व्रत अतिचरे ॥ मुखथी भाषे आलपंपाल, लोकमांहि भणिये वाचाल ॥ १०३ ॥ जोग करे अधिकरणतणो, इणपर लागे दूषण घणो, न्हाण अधिक खल जल रेल्वो, अधिको भोजन आरंभवो ॥ १०४ ॥ ए अतिचार सहु टालिये, निर्मल अष्टम व्रत पालिये ॥ श्रावकनें ए करवा नहि, एह वात जिनआगम कही ॥१०५॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १०६ ॥ अहनिसि पक्कि चउमासी फुमं, संवछरि मिछाउक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १०७ ॥

आठमुं अनर्थदंड विरमण व्रत–तेहना पांच अतिचार, तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्या होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

सामाइक लीधे डुर्ध्यान, मन आणे ते दोषनिधान ॥ वचने नाषे जेय सपाप, कायाइं करि ते प्राण संताप ॥ १०८ ॥ विस्मृति आवे वेलातणी, आदर नकरे जे व्रतजणी ॥ नवमा व्रतना ए अतिचार, जे टाले तसु हुं बलिहार ॥ १०९ ॥ सूक्ष्म बादर उजय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ ११० ॥ अहनिसि पक्कि चउमासी फुमं, संवछरि मिछाडुक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो.

नवमुं सामायिक व्रत. तेहना पांच अतिचार, तेने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

दशमे व्रत दिसिनुं परिमाण, संखेपे जे श्रावक जाण ॥ तेना जाणी पंचय दोष, टाली आणे मन संतोष ॥ ११२ ॥ बाहिरथकी मांहि आणवे, मांहिथकी बाहिर मोकले ॥ साद करी देखामी रूप, कांकरि नांखी कहे सरूप ॥ ११३ ॥ सूक्ष्म बादर उजय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ ११४ ॥ अहनिसि पक्कि

चउमासी फुर्म, संवछरि मिछाडुक्कर्मं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ ११५ ॥

दशमुं देसावगासिक व्रत-तेना पांच अतिचार, तेहने विषे, जे कोइ पख्खी, चउमासी, सवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

अतिचार इग्यारमे व्रते, सकतिसीम टालसुं दिन प्रते ॥ अप्रतिलेखी डुःप्रतिलेख, शय्या संथारो ऊवेख ॥ ११६ ॥ अपमज्जण डुपमज्जण करी, शय्या संथारो परिहरी ॥ नीति वमी लहुमी थंमिला, पमिलेहण पमज्जण जला ॥ ११७ ॥ सम्यक्विधि ए नहु पालिये, पोसह अतिचार टालिये ॥ पर्वतिये ए व्रत अधिकार, जाणे श्रावक जे सविचार ॥ ११८ ॥ सूक्ष्म बादर उजय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ जव परजव ते खामिये ॥ ११९ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुर्म, संवछरि मिछाडुक्कर्मं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १२० ॥

इग्यारमुं पोसहव्रत, तेना पांच अतिचार, तेने विषे जे कोइ पख्खि, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

पर्वदिवस पोसह पारणे, अवलोके निज घर बारणे ॥ भोजन वेला पामी साध, मन चिंतवे जखे ए लाध ॥ १३१ ॥ मूके सचित ऊपरे जेय, सचितशुं वलि ढांके तेय ॥ वस्तु आपणी परनी कहे, भोलपणे मन मत्सर वहे ॥ १२२ ॥ गोयरवेला टाली करी, साधु निमंत्रे भोलम धरी ॥ बारमा व्रतना ए अतिचार, टालंता श्रावक आचार ॥ १३३ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १२४ ॥ अहनिसि पक्खि चउमासी फुमं, संवछरि मिछाउक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १२५ ॥

बारमुं अतिथिसंविभाग व्रत–तेना पांच अतिचार, तेने विष जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुकडं.

राजरिद्धि वंछे इहलोक, इंद्रादिक पदवी परलोक ॥ सुखियो वंछे बहु जीवियें, दुःख आवे मरवुं वंछिये ॥ १२६ ॥ कामभोगनी आशा करे, संलेहण इणिपरे अतिचरे॥ ए अतिचार टालि व्रत धरे, तासु प्रशंसा सूरपति करे ॥ १२७ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्र-

कार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ १२८ ॥ अह-निसि पक्खी चउमासी फुमं, संवछरी मिछाडुक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो. गुरुसाखे ते मुजने ह-ज्यो ॥ १२९ ॥

संलेखणाना पांच अतिचार—तेने विषे जे कोइ पख्खी च-उमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अ-नाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छा-मिदुक्कडं.

तपाचार बारह आचार, विपरीताचरणे अति-चार ॥ ते प्रमाद वलि अणानोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ १३० ॥ बाहिर अन्यंतर छह छह नेद, ए जाणे जे होइ सनेद ॥ देखीतो ते बाहिर कह्यो, अ-न्यंतर बीजो संग्रह्यो ॥ १३१ ॥ अणसण कहिये जे उ-पवास, एकथकी ज्यांलगी छमास ॥ ऊणोदरी ऊणो आहार, इक बि ति कवले करी विचार ॥१३२॥ विगइ सचित्त द्रव्यादिकतणो, एहनो करिये संखेपणो ॥ वृ-त्तिसंखेप ए त्रीजो नेद, आंबिल नीवी रस विछेद॥१३३ सीत वात आतप जे सहे, एहने कायकिलेस जे कहे॥ संलीनता जे अंग उवंग, आसन करि संवररंग॥१३४ ए छ नेद बाहिरतप जाण, छती सक्ति आलस मन आण ॥ न कर्यो जतन रतन आदरी, जाणे नांख्यो

कांकर करी ॥ १३५ ॥ अभ्यंतर तपतणा प्रकार, सुगुरु साखे आलोयण सार ॥ काढी शल्य न तप पडिवज्यो, वडातणो विनय में तज्यो ॥ १३६ ॥ बालगिलान ने तपसीतणो, वेयावच्च न कीधो घणो ॥ वायण पुछण परियट्टणा, धम्मकहा ने अणुपेहणा ॥ १३७ ॥ पंचभेद सझाय नहु कर्यो, ध्यानरंग हियडे नहु धर्यो ॥ यथासक्ति काउसग्ग नहु कीध, मणुयजनमनुं नहु फल लीध ॥ १३८ ॥ सूक्ष्म बादर उभय प्रकार, जे मुजने लाग्या अतिचार ॥ कर जोडी मस्तक नामिये, आ भव परभव ते खामिये ॥ १३९ ॥ अहनिसि पक्खी चउमासी फुडं, संवछरि मिछाउक्कडं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १४० ॥

तपाचारना बार अतिचार–तेने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

विरियायार त्रणे आचार, विपरीताचरणे अतिचार ॥ ते प्रमाद वलि आणाभोग, ते आलोवुं गुरु संजोग ॥ १४१ ॥ रुडुं धर्मध्यान परिहरी, आर्त रौद्र निहियडे धरी ॥ मननो वीर्य एम गोपव्यो, अतिचार पहिलो ए ठव्यो ॥ १४२ ॥ तातिं कलह निंदा चस्तरी,

पापतणे उपदेशे करी ॥ फोरव्यो वीरिय वचनतणो, बीजो अतिचार ए नणयो ॥१४३॥ कायाए कीधो आरंन घणो, न कर्यो आवश्यक वंदणो ॥ उती सकति आलसव्यापार, कायवीर्य त्रीजो अतिचार ॥१४४॥ सूक्ष्म बादर उनय प्रकार जे मुजने लाग्या अतिचार॥ कर जोमी मस्तक नामिये, आ नव परनव ते खामिये ॥ १४५ ॥ अहनिसि पक्खी चउमासी फुमं, संवब्रि मिह्नाडुक्कमं ॥ अरिहंत सिद्ध सवे जाणज्यो, गुरुसाखे ते मुजने हज्यो ॥ १४६ ॥

विर्याचारना त्रण अतिचार-तेहने विषे जे कोइ पख्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

इम आलोवे सवि व्रतधार, एकसो चउवीसे अतिचार ॥ पर्व दिवस गुरुसाखे करी, जिनवर वचन ते हियमे धरी ॥ १४७ ॥ जासु नही व्रतनो उच्चार, ते आलोवे पाप अढार ॥ दामातणो वरतारो करे, गुणतो सूत्र सवे ऊचरे ॥ १४८ ॥ जिनवर प्रतिषेध्युं ते कर्युं, करवा कह्युं ते नहुं कर्युं ॥ जिननाषित जे नहु सद्दह्युं, आगमथी विपरीत जे कह्युं ॥ १४९ ॥ व्रतधारकने जे अतिचार, अविरतने ते पापव्यापार ॥ आलोवतां हलुवा करे, अल्प अल्प नारे उतरे ॥ १५० ॥ निंदण

गरहण टाले दोष, थाये धर्मतणो इम पोष ॥ सहुए श्रावक इणिपरे करे, हेले जेम भवसायर तरे ॥ १५१ ॥ धन धन दश श्रावक निर्मला, आणंदादिक मन निश्चला ॥ करे सलाघा श्रीमुख वीर, जे प्रभु सागर जिम गंभीर ॥ १५२ ॥ तेणिपरे हुं व्रत न शकुं पाल, पण तेहना गुण मन संभाल ॥ सकतिसीम अविरती परिहरुं, वार वार अनुमोदन करुं ॥ १५३ ॥ एवं श्रावकना अतिचार, एकसो चउवीसे सुविचार ॥ एकज छंद करी चउपई, पार्श्वचंद्रसूरि हरखे कही ॥ १५४ ॥ पक्खी चउमासी संवछरि, सहुए श्रावक आदर करी ॥ श्राविका भणज्यो गुणज्यो सदा, लहिज्यो शिवसुखनी संपदा ॥ १५५ ॥

एवंकारे समकितमूल बारे व्रततणा एकसो चोवीस अतिचारने विषे जे कोइ पक्खी, चउमासी, संवच्छरी दिवसने विषे अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामिदुक्कडं.

(॥ इति अतिचार समाप्त ॥)

॥ अथ श्रीअजितशांति स्तवं* ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥
जयगुरु संति गुण करे, दोवि जिणवर पणिवयामि॥१॥
॥ गाहा॥ (अ. ४२, सं. २, गु. १५, ल. २५, मा. ५७. छं. १)

ववगय- मंगुलभावे, तेहं विउलतवनिम्मलसहावे ॥
निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिठ सप्भावे ॥ २ ॥
गाहा. (अ. ४०, सं. ४, गु. १६, ल. २०, मा. ५७, छं. २)

सव्व दुक्खप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥
सया अजिअ संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥
सिलोगो. (अ. ३२, सं. ५, गु. १७, ल. १०, मा. ५७, छं ३)

अजिअजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणं ॥ तहय धिइमइप्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ.

(अ. ४६, सं. ८, गु. १४, ल. २४, मा. ६०, छं. ४)

किरिआविहि संचिअ कम्मकिलेसविमुक्कयरं ॥
अजिअं निचिअं च गुणेहि महामुणिसिद्धिगयं ॥
अजिअस्स य संतिमहामुणिणो विअ संतिकरं ॥
सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ आलिंगणयं. (अ. ७२, सं ५; गु. २४, ल. ४३, मा. ९६, छं. ५)

---

* आ स्तव श्री वीरस्वामीना शिष्य नंदिषेणमुनिए शेत्रुंजयपर अजितनाथ अने शांतिनाथना मंदिरो वच्चे ऊभा रही कर्युं छे.

पुरिसा जइ छुक्कवारणं, जइअ विमग्गह सुक्ककारणं॥ अजिअं संतिं च नावओ, अजयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ.

(अ. ४३, सं. ४, गु. १७, ल. २२, मा. ६०, छं. ४)

अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जरमरणं ॥ सुर अ-सुर गरुल नुअगवइ पययपणिवइअं ॥ अजिअ मह मविअ सुनयनयनिउण मनयकरं ॥ सरण मुवसरिअ नुविदिविज महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं.

(अ. ८६, सं. ०, गु. ५, ल. ८१, मा. ९१, छं. ४)

तं च जिणुत्तम, मुत्तम नित्तम सत्तधरं ॥
अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहिनिहिं ॥
संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं ॥
संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं.

(अ. ६४, सं. ९, गु. २४, ल ३१, मा. ८८, छं. ४)

सावत्थि पुव्वपत्थिवं, च वरहत्थिमत्थय पसत्थविच्छिन्न संथि-अं ॥ थिरसरिछवच्छं, मयगललीलाय माणवर गंधहत्थि पत्थाणपत्थिअं, संथवारिहं ॥ हत्थिहत्थबाहुं, धंतकणग-रुअग निरुवहय पिंजरं, पवरलक्खणो वचिअ सोमचारु रूवं, सुइसुहमणाभिरामपरम रमणिज्जवर देवदुंदुहि-निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ९ ॥ वेढ्डओ.

(अ. १३०, सं. १७, गु. ४४, ल. ६९, मा. १७७, छं. २)

अजिश्रं जिश्रारिगणं, जिश्र सव भयं भवोहरिउं ॥
पणमामि श्रहं पयर्ज, पावं पसमेउ मे जयवं ॥ १० ॥
रासालुद्धओ. ॥ संदानितकं.*

(अ. ३८, सं. १, गु. १५, ल. २२, मा. ५३, छं. २)

कुरुजणवयहत्थिणाउर नरेसरो पढमं तर्ज महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो ॥ जो बावत्तरिपुरवरसहस्स वरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो ॥ चउदसवररयण नवमहानिहिचउसठि सहस्सपवरजुवईणसुंदरवई, चुलसी हयगय रह सय सहस्ससामी, छन्नवइगामकोमि सामी, आसी जो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेढओ.

(अ. १४४, सं. १३, गु. ४६, ल. ८५, मा. १९३, छं. २)

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सवभया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदिअं. (युग्मं.)

(अ. २७, सं. २, गु. १७, ल. ८, मा. ४५, छं. ५)

इरकाग विदेह नरेसर नरवसहा, मुणिवसहा ॥
नवसारयससि सकलाणणविगयतमा, विहुअरया ॥
अजिउत्तम तेअ गुणेहि, महामुणि अमिअबला,
विउलकुला ॥ पणमामि ते भवभय मूरण, जगसरणा,
ममसरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा.

---

* संदानितकं एटले बे काव्यो अर्थमां साथे जोडायलां छे, एने "युग्मं" पण कहे छे

(अ. ८८, सं. २, गु. २०, ल. ६६, मा. १०९, छं. ४)

देवदाणविंद, चंदसूरवंद, हठतुठजिठ परम ॥
लठरूव, धंतरुप्पपट्टसेश्र सुद्धनिद्ध धवल ॥
दंतपंति, संति, सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्तिं पवर ॥
दित्ततेश्र, वंद, धेश्र, सवलोश्र भाविश्रप्पभाव, णेश्र,
पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायणं.

(अ. ८६, सं १६, गु. ३८, ल. ३२, मा. १२४, छं. ३)

विमल ससि कलाइरेश्रसोमं ॥
वितिमिर सूर कलाइरेश्र तेयं ॥
तिश्रसवइ गणाइरेश्ररूवं ॥
धरणिधर प्पवराइरेश्रसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया.

(अ. ५०, सं. १, गु. १८, ल. ३१, मा. ६०, छं. ५)

सत्ते श्र सया श्रजिश्रं, सारीरे श्र बले श्रजिश्रं ॥ त-
वसंजमे श्र श्रजिश्रं, एसं थुणामि जिणं श्रजिश्रं
॥ १६ ॥ भुश्रगपरिरिंगिश्रं. (युग्मं)

(अ. ३६, सं. १, गु. १८, ल. ३१, मा. ६०, छं. ५)

सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी ॥
तेश्रगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिश्रसगणवई ॥
सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥१७॥ खिज्जिययं.

(अ. ६८, सं. ०, गु. २०, ल. ४८, मा. ८८, छं. ४)

तिब्बवरपवत्तयं तमरयरहिश्रं ॥
धीरजणथुश्रच्चिश्रं चुश्रकलिकलुसं ॥

संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयर्ज ॥
संतिमहं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १० ॥ ललिअयं.
(अ. ६०, सं. ४, गु. १७, ल. ३९, मा. ७७, छं. ४)
विणओणय सिररइ अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विबुहाहिव धणवइ नरवइथुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गय सरय दिवायरसमहिअ सप्पनं तवसा ॥ गयणं गणविअरण समुइअचारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला.
(अ. ८९, सं. ३, गु. १९, ल. ६७, मा. १०८, छं. ६)
असुरगरुल परिवंदिअं, किंनरोरगनमंसिअं ॥
देवकोडि सयसंथुअं, समण संघ परिवंदिअं॥२०॥सुमुहं.
(अ. ३९, सं. ०, गु. १३, ल. २६, मा. ५२, छं. ३)
अभयं अणहं, अरयं अरुयं ॥
अजिअं अजियं, पयर्ज पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसिअं. (त्रिभिर्विशेषकं)
(अ. २४, सं. ०, गु. ८, ल. १६, मा. ३२, छं. ६)
आगया वरविमाण दिव्वकणगरहतुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ ससंभमो अरण खुभिअ लुलि चलकुंडलं गयतिरीड सोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥ वेढओ.
(अ. ५९, सं. १, गु. १५, ल. ४३, मा. ७४, छं. २)
जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेरविउत्ता भत्ति सुजुत्ता ॥
आयर भूसिअ संभमपिंडिअ, सुट्ठसुविम्हिअ सव्वब-

लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविश्र, जासुर जूसण जासुरिश्रंगा ॥ गायसमोणय जत्तिवसागय, पंजलिपेसिश्र सीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला.

(अ. ९०, सं ८, गु. ३६, ल. ४६, मा. १२८, छं. ५)

वंदिऊण थोऊण तो जिणं ॥
तिगुणं मेवय पुणो पयाहिणं ॥
पणमिऊणय जिणं सुरासुरा ॥
पमुइश्रा सन्नवणाइँ तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं.

(अ. ४६, सं. ०, गु. १८, ल. २८, मा. ६४, छं. ३)

तं महामुणि महंपि पंजली ॥
राग दोस जय मोह वज्जिश्रं ॥
देव दाणव नरिंद वंदिश्रं ॥
संत्ति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥
खित्तयं. (चतुर्भिः कलापकं)

(अ. ४४, सं. २, गु. २०, ल. २२, मा. ६४, छं. ३)

श्रंबरंतर विश्रारिणि श्राहिं ॥
ललिश्र हंस वहु गामिणि श्राहिं ॥
पीणसोणि थण सालिणि श्राहिं ॥
सकल कमलदल लोश्रणि श्राहिं ॥ २६ ॥ दीवयं.

(अ. ४७, सं. ०, गु. १७, ल. ३०, मा. ५४, छं. ३)

पीण निरंतर थणजर विणमिश्र गायलयाहिं ॥
मणिकंचण पसिढिल मेहल सोहिश्र सोणितमाहिं ॥

वरखिंखिणिनेउर सतिलय वलय विभूषणिआहिं ॥
रइकर चउर.मणोहर सुंदर दंसणिआहिं ॥ २७ ॥
चित्तक्खरा. (अ. ७९, सं. ०, गु. २१, ल. ५८, मा. १००, छं. ४)
देव सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआ य जस्स तेसु विक्कमा कमा, अप्पणो निमालएहिं मंडणो डुणपगार-एहिं केहिं केहिंवी अवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं, जत्तिसंनिविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ.
(अ. ९४, सं. ९, गु. ४७, ल. ३८, मा. १४१, छं. ३)
त, महं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुय सव्वकि-लेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदियअं (चतुर्भिः कलापकं) (अ. २८, सं. १, गु. १२, ल. १५, मा. ४०, छं. ३)

थुअ वंदिअयस्सा रिसि गुणदेव गणेहिं ॥
तो देव वहूहि पयओ पणमियस्सा ॥
जस्स जगुत्तम सासण यस्सा ॥
जत्तिवसागय पिंमिअयाहिं ॥
देववरछरसा बहु आहिं ॥
सुरवर रइगुण पंमिअयाहिं ॥ ३० ॥ जासुरयं.

(अ. ७७, सं. ७, गु. २४, ल. ४६, मा. १०४, छं. ४)
वंससद्दतंतिताल मेलिए तिउक्खराजिराम सद्दमीसए कएअ सुइसमाणणे अ ॥ सुद्धसज्जगीय पायजाल घं-टिआहिं वलयमेहला कलावनेउराजिराम सद्दमीसए

कएण्श्र ॥ देवनट्टिश्राहिं हावजाव विप्नमप्पगारएहिं न-
च्चिऊण श्रंगहार एहिं वंदिश्राय जस्स ते सुविक्कमाक्कमा॥
तयं तिलोय सवसत्तसंतिकारयं ॥ पसंत सवपावदोस मेसहं
नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ. (युग्मं)

(अ. १४७, सं. १६, गु. ७१ ल. ६०, मा. २१८, छं. ३)

छत्त चामरपडाग जूश्रजव मंमिश्रा ॥
झयवर मगरतुरयसिरिवड सुलंछणा ॥
दीवसमुद्दमंदर दिसागयसोहिया ॥
सत्थिश्रवसहसीह रहचक्कवरंकिया ॥३२॥ ललिश्रयं.

(अ. ६४, सं. ५, गु. २०, ल. ३९, मा. ८४, छ. ४)

सहावलठा समप्पइठा, श्रदोसडुठा गुणेहि जिठा ॥
पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहि इठा रिसीहि जिठा
॥३३॥ वाणवासिश्रा.

(अ. ४०, सं. ९, गु. १६, ल. १९, मा. ६४, छं. ५)

ते तवेण धुश्रसवपावया, सवलोश्रहिश्रमूलपावया ॥
संथुश्रा श्रजिश्रसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया
॥३४॥ श्रपरांतिका, (त्रिभिर्विशेषकं.)

(अ. ४४, सं. ७, गु. २०, ल. २२, मा. ६४, छं. ५)

एवं तवबलविउलं, थुश्रं मए श्रजिश्रसंतिजिण जुयलं॥
ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा.

(अ ४३, सं. १, गु. १४, ल. २८, मा. ५७, छं. २)

तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण-परमेण श्रविसायं ॥ नासेउ

मे विसायं, कुणउ अपरिस्साविअ पसायं ॥३६॥ गाहा.
(अ. ४०, सं. २, गु. १७, ल. २१, मा. ६७, छं. २)
तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मभिनंदिं॥ परिसा-
इवि अ सुहनंदिं, ममय दिसउ संजमे नंदिं॥३७॥ गाहा.
(अ. ३९, सं. ०, गु. १८, ल. २१, मा. ५७, छं. २)
पक्खिअ चउम्मासे, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो॥ सो-
अव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा.
(अ. ३५, सं ०, गु. १५, ल. २०, मा. ५७, छं. २)
जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिय संति-
थयं॥नहु हुंति तस्स रोगा,पुव्वुप्पन्ना विणासंति॥३९॥गाहा.
(अ. ३९, सं. ४, गु. १५, ल. २०, मा. ५७, छं. २)
जइ इच्छह, परमपयं, अहवा कित्तिं सुविच्छमं भुवणे॥ ता
तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा.
(अ. ४० सं. ५, गु. १५, ल. २५, मा. ५७, छं. २)
ववगय कलिकलुसाणं, ववगयनिद्धंतरागदोसाणं ॥
ववगय पुणब्भवाणं, नमोत्थु देवाहिदेवाणं ॥ ४१ ॥
सव्वं पसमइ पावं, पुण्णं वद्धइ नमस्समाणस्स ॥
संपुण्णचंदवयणे, कित्तयणे अजिअसंतिनाहस्स ॥ ४२॥
(गीतिः) इत्यजितशांतिस्तवः समाप्त.* ॥

॥ *अजित शांति स्तवनी मूल गाथा (३७) छे.
ते शिवाय बाकीनी (३) पेहेली तथा बे बीजी मली
पांच गाथा क्षेपित थएल छे. ए वात तेनी वृत्तिमां

स्पष्ट लखेल छे. मूल गाथा (३७) तथा पहेलीवार क्षेपित थएली गाथा (३) मली (४०) गाथाउमां दरेक गाथामां केटला अक्षर छे ते सारुं नीचे ते संबंधी पांच गाथाउ लखी छे. ॥

बायालीसं[४२] चत्तां[४०], बत्तीस[३२] छयाल[४६] बिसयरि[७२] तिआला[४३] ॥
छासीई[८६] चउसठी[६४], सयं च तीसुत्तरं[१३०] नवमे ॥ १ ॥
अडतीसं[३८] चउआलाहियसय[१४४] सगवीस[२७] अडसीइअ[८८] ॥
छासीई[८६] पन्नासा[५०], छत्तीस[३६] अडसट्ठि[६८] सट्ठि[६०] गुणनवइ[८९] ॥२॥
गुणचत्ता[३९] चउवीस[२४], गुणसट्ठि[५९] नवइ[९०] छयाल[४६] चोआला[४४]॥
सगचत्ता[४७] गुणसीइ[७९], चउणवइअ[९४] अट्ठवीस[२८] सगसयरी[७७] ॥३॥
तत्तो सगचत्ताहिय सयं[१४७] च चउसट्ठि[६४] चत्त[४०] चउचत्ता[४४] ॥
तेआल[४३] चत्त[४०] गुणचत्त[३९], मुलचित्तकरा[२२८५] एवं ॥ ४ ॥
अन्नकयगाहतिअगे, पणतीसं[३५] इगुणचत्त[३९] तह चत्ता[४०] ॥
तेवीसय नवनवइ[२३९९], सव्वक्खर अजिअ संतिथए ॥५ ॥

॥ आदि अजित श्रीशांतिनो स्तवन. ॥

आदि अजित श्रीशांतिनो, दीठो दरिसण आज ॥
जाणिक जयवंता मिल्या, सीधा सवि काज ॥ १ ॥
त्रिजगजीवन जिन भेटिये, थयो हरख अपार ॥
ए संसार असारनो, लाधो एहिज सार. त्रि० ॥ २ ॥
वंश इख्वागे राजीयो, नृप नाभिमल्हार ॥

माता मरुदेवा उरे, धन धन अवतार. त्रिजग० ॥३॥
अढारसहस सीलंगरथे, सोहे धोरी धीर ॥
वृषजलंबन तिहां आवियो, समरथ गंजीर. त्रि० ॥४॥
जितशत्रु विजयाकुलतिलो, स्वामि अजिय जिणिंद॥
सोमकला ससियर जिसो, दीपे तेजे दिणिंद. त्रि. ॥५॥
गयलंबण धनु च्यारसे, साढा देह प्रमाण ॥
तसु दिन दिन दीपे कला, माने जे जग आण. त्रि.॥६॥
तीर्थंकर जग सोलमो, मृगलंबण एह ॥
त्रीस अधिक दश धनुषनो, सो परिमाणे देह. त्रि. ॥७॥
गर्न्जे बतां गुण एहवा, शांतिकरण श्रीशांति ॥
पूरो आशा अमतणी, टालो जवजयभ्रांति. त्रि. ॥८॥

॥ कलश ॥

इम जिनचउवीसे प्रतिमा दीसे, आदि अजित श्रीशांतिजिन ॥ जसु नासे पडमा च्यारे पडिमा, आणी हियमे नाव घण ॥ महिमागुणसुंदीर धीरिमर्मदिर, मतिमंदिर त्रिजुवनधणि ए ॥ जे जिनवर वंदे ते चिरनंदे पार्श्वचंद्रसूरि संथुणयोए. ॥ ए ॥

॥ अथ पाखी पडिक्कमणानी विधि. ॥

देवसियपडिक्कमणमां वंदित्तुकहियेंडीये, त्यांसुधि सर्वे कहेवुं; पण चैत्यवंदन, " अर्हंतं जगदीश्वरं " क-

देवुं ॥ ने थोय महावीरस्वामिनी कहेवी.

॥ अथ श्रीमहावीरस्वामीनी थुइ ॥

स्वर्भूमे, र्मातृगर्भेगम उदयमहोयः सुमेरु शैलो-त् ॥ सिक्त स्नातालये गाढपचयमनिशं छाययाक्रांत विश्वः ॥ पादो पांतावनम्र त्रिभुवनजनता स्वीकृतोच्चैः फ-लर्द्धिः ॥ श्रीवीरोवोस्तु चिंताधिक तर वरदः कल्पशा-खीनवीनः ॥१॥ जेतव्यं पवनंसकौशिकफणी दंश बले नापिवत् ॥ ततदुःखेनकिलव्यलीयतमनोनाभून्मनोभू-स्ततः ॥ छाद्मस्थ्येप्यमनस्कता सुरवधूसंधानुबंधोथस, व्य-र्थीभूत् सुखमेव यस्यस महावीरोस्तुनः श्रेयसे ॥ २ ॥ यांद्युत्योद्योत्यमुद्यत् द्युसद धिपमताविद्युद्युतजैत्र्या ॥ विद्यानद्यायसद्यानयजपदधते सद्यमोद्यानमोदं ॥ दुर्भे-द्यावद्यमुद्यत् द्युमणिमिव समाम्नायवंद्यानिवंद्या ॥ सद्यो-यत्पाद कंदा यतु सजिनपति र्वौति निंद्यामविद्यां ॥ ३॥ कृत्वाहाटक कोटिभिर्जगद सद्दारिद्रयमुद्राकथं ॥ हत्वा गर्भेसयान्नपि स्फुरदरीन् मोहादिवंशोद्भवान् ॥ तप्त्वा दुस्तप मस्पृहेण मनसा कैवल्य हेतुतप ॥ स्त्रेधावीर य-शोदधद्विजयतां वीर स्त्रिलोकी गुरुः ॥ ४ ॥

पछे इच्छामिख० ॥ इच्छाकारेणसंदिस्सह भगवन्, देवसियं आलोइत्ता पडिक्कमित्ता पक्खियं पडिक्कमणं ठाएमि ? एम गुरु पासे आदेश मागी, इच्छं कही, नव-

कार० करेमिभंते ॥ इच्छामि ठामिकाउसग्गं जोमे प-क्खिउ० तस्सुत्तरी० अन्नत्र० जाव आठ अतिचारनी गाथानुं चिंतवन काउसग्गमां करी, पारतां नमोअरिहं-ताणं कहेवुं. पछे प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी मुहपत्ति-नी दृष्टि पडिलेहण करी, वांदणा देइ, इच्छाकारेण सं-दिस्सह भगवन् पक्खियं आलोएमि ? ॥ एम आदेश मागी, इच्छं आलोएमि कही, जोमे पक्खिउ संपूर्ण कही, पक्खि अतिचार आलोउं, एम कही, मुखे मुहपत्ति करी एकाग्र चित्ते ॥ नांणंमिदंसणंमिचरणंमि ॥ अतिचार आ-लोवी, मिच्छामिदुक्कडं कही ॥ सव्वस्सवि, पक्खिय दुच्चिं-तिय, दुब्भासिय, दुच्चेठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह इच्छं, तस्समिच्छामिदुक्कडं, इच्छाकारेण, पक्खितप प्रसाद करो-जी, पछे पक्खितप चउत्थ भत्तेणं एक उपवास, बे आ-यंबिल, त्रण निवि, चार एकासणा, बेहजार सज्झाय, पइठि. तपकर्यो होय तो पइठि कहीये ॥ अने करवो होय तो, तहत्ति कहीयें ॥ न करवो होय तो मौन र-हीये, पछे नीचा बेसी नवकार, करेमिभंते, चत्तारि मंग-लं० इच्छामि पडिक्कमिउं जोमे पक्खिउ० इरियावहि० कही, अढारलाख, चोविसहजार, एकसोवीस भेदे, इ-रियावहिनी क्रियाने विषें, कोइ दूषण लाग्यो होय, ते सवी हुं मन, वचन, कायाए करी तस्समिच्छामिदुक्कडं. पछे वंदित्तु कहेवुं, अब्भुठिओमिआराहणाए, पद बोल-

तां उत्तुं थवुं ॥ पछे वांदणां देवां, तेमां पक्खित्तं वइक्कंतो जणवो, पछे इच्छाकारेण, संदिस्सह भगवन् अप्नुछिन्नमि अप्भिंतरपक्खियं खामेउं. इच्छं खामेमि पक्खियं, पन्नरसह्नं दिवसाणं, पन्नरसह्नं राइयाणं जंकिंचि अपत्तियं० मिछामिडुक्कडं देइ उन्ना थइ ॥

पुढवाइ सुपत्तेयं, सगवण पत्तेयणंतदस चउदस; विगलेऊ सुर नारय, तिरिय चउचउदसनरेसु ॥ १ ॥ ऊऊमछोमूढमणो, कित्तियमित्तंपि संवरइजीवो; जंचन संजरामि, मिछामिडुक्कडं तस्स ॥ २ ॥ जंजंमणेणबद्धं, जंजंवाया य जासियंपावं ॥ असुहं काएण कयं, मिछामिडुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ सवे जीवा कम्मवस, चउदहरज्ज जमंत ॥ ते में सव खमाविया, मुझवि तेह खमंत ॥ ४ ॥ खम्यो खमाव्यो में खम्यो, ऊविह जीवनिकाय; सिद्धसाख आलोयणा, ते मुझ वैरनजाव ॥ ५ ॥ जे मे जाणंतिजिणा, अवराहा जेसुजेसु ठाणेसु ॥ तं तह्ना आलोएमि, माया मोसं पमुत्तुणं ॥ ६ ॥ ते प्रमाणे कही, पछे नवकार० करेमिजंते० इच्छामिठामि काउस्सग्गं० तस्सुत्तरी० कही बार लोगस्सनो, काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही; मुहपत्तिनी दृष्टिपडिलेहण करी, वांदणां देइ ॥ इच्छामोणुसटिं, नमोखमासमणाणं, निछारगपारगाहोह; पक्खियं पडिक्कमणं समत्तं, अवसेसं

देवसियं ञणेमि ॥ पछे वांदणा देवसिना देवा, अप्नु-ठिर्ज खमावी, आयरियऊवझाए कही; नवकार, करेमिजंते० इछामिठामि काउस्सग्गं० तस्सुत्तरी० अन्नछ० बे लोगस्सनो काऊस्सग्ग करो, प्रगट लोगस्स कही; सवलोए अरिहंतचेझ्याणं० कही; एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी पुक्खरवरदीवढ्ढे० कही; एक लोगस्सनो काऊस्सग्ग पारी, सिध्धाणं बुध्धाणं कही; मुहपत्ति ह-ष्टिये जोइ, वांदणा देवा, पछे सामायिक, चोविसछो, वांदणा, पम्किमणु, काऊस्सग्ग, पच्चरकाण कर्युं छे ॥ पछे इछामोणुसठिं, नमोखमासमणाणं; नमोस्त्ववीरागादि० कही, नमोत्थुणं कही, खमासमण देइ, स्तवनं संदिस्साएमि, बीजे खमासमणे स्तवनं ञणेमि, नवकार गणी, अजितशांति स्तवन ञणवुं; पछे जयवीयराय कही त्रण खमासमणे, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदी, खमासमण देइ; इछाकारेण० देवसि प्रायछित्तनो, चार लोगस्सनो काऊस्सग्ग करवो, प्रगट लोगस्स कही; पछे चार खमासमण देइ, नवकार गणी, नमिऊणतिलोयनी सज्ञाय कहेवी;

नमिऊण तिलोअगुरुं, लोयालोय पयासअं वीरं; संबोहसत्तरिमहं, रएमि ऊध्धार गाहाहिं ॥ १ ॥ सेयंबरोअ आसंबरोअ, बुध्धोअ अहव अन्नोवा; समञाव

प्पाविअप्पा, लहेइ मुक्खं न संदेहो ॥ २ ॥ अठ दस दोस रहिओ, देवो धम्मोवि निउण दय सहिओ ॥ सुगुरुवि बंभयारी, आरंभ परिग्गहा विरओ ॥३॥ अन्नाण कोह मय माण लोह, माया रईअ अरईअ ॥ निद्दा सोग अलीअवयण, चोरिया मच्छर भयाय ॥ ४ ॥ पाणिवह पेमकीला, पसंगहासाय जस्स ए दोसा ॥ अढारसविपणठा, नमामि देवाहि देवंतं ॥ ५ ॥

पछे खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, दुक्खक्खय कम्मक्खयनो चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, पारी, पछे प्रगट लोगस्स कही, पछे सामायक पारवुं ॥ इति पाखी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ चोमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

चोमासी प्रतिक्रमणनी पण एहज विधि जाणवी, पण एटलो विशेष जे, पक्खिना स्थानके चोमासीनो पाठ कहेवो; तथा बार लोगस्सना ठेकाणे वीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो; तथा तपने ठेकाणे छठेरां, बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणा, चार हजार सझाय; ए रीते कहेवुं. (इति)

॥ अथ सांवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥

आ पण उपर लखेली विधि प्रमाणे छे, तथा बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीस लोगस्स, अ-

थवा एकसो साठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे संवछरीतप, अठमेणं, त्रण उपवास, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणा अने छ हजार सज्झाय, ए रीते कहेवुं. तथा पक्खिना ठेकाणे संवछरीना आगार कहेवा ॥ इति सांवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ अथ पोसह विधि ॥

पोसह करनार श्रावक, आजूषण अलंकारनो त्याग करे. पहेलां राइ प्रतिक्रमण विधिपूर्वक करी; आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, पछे इरियावही पडिक्कमी, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ. इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्, पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं ? मुहपत्ति पडिलेही, पछे खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्, पोसह संदिसाउं ? बीजे खमासमणे पोसह ठावुं ? कही, नवकार गणी, पोसहदंडक उच्चरीयें ॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥

करेमिजंते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सवउ वा, सरीर सक्कार पोसहं सवउ, अवावार पोसहं सवउ, बंजचेर पोसहं सवउ, चउविहे पोसहे ठामि; जावदिवसं अहोरत्तं वा, पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं, म-

णेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स-भंते पमिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥

पछे खमासमण देइ, इच्छाकारेण० सामायक संदिसावुं ? बीजे खमासमणे सामायक ठाउं ? एम कही नवकार गणी सामायक उचरीयें ॥ करेमिभंते सामाइयं, सावज्जंजोगं पच्चक्खामि, जावपोसहं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्सभंते पमिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् बहुवेलं संदिसावेमि ? बीजुं खमासमणदेइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, बहुवेलं करेमि ? इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए निसिहियाए मत्थएण वंदामि. इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, पमिलेहण संदिसावेमि? बीजा खमासणे पमिलेहणं करेमि ? इच्छं. कही मुहपत्ति, चरवलो, कटासणुं पमिलेहि; खमासण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह, भगवन्, अंगपमिलेहणं संदिसावेमि? बीजे खमासणे अंगपमिलेहणं करेमि ? एम कही पेहेरवानुं वस्त्र, तथा सुतरनो कंदोरो, उत्तरासण पमिलेहि; पछी खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, पमि

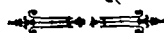
लेहणा पमिलेहावो ? एम कही स्थापनाचार्यनो वैयावच्च करियें, पछे खमासमणदेइ इच्छाकारेण संदिस्सह० उपधिपलेहणं संदिसावेमि ? बीजे खमासमणे उपधिपमिलेहणं करेमि ? एम कही बाकी रहेला सर्व उपकरण वस्त्र पमिलेहियें, पछें खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्, पोसहसालं पमज्जेमि; एम कही उपाश्रय पुंजी, जयणाथि काजो उद्धरीने शुद्ध जुमिकामां परठवतां अणुजाणह जस्सवग्गहो; कही परठवो, पछी वोसिरे, एम कहेवुं. पछे गुरुस्थापनाजी पासे आवीने खमासमणदेइ इरियावहि पमिक्कमी, एक लोगस्सनो काउसग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइने, इच्छाकारेण० बेसणे संदिसावेमि? बीजे खमासणे बेसणे ठावेमि! इच्छामि० इच्छा० सज्झायं संदिसावेमि ? बीजे खमासमणे सज्झायं करेमि; एक नवकार कही ॥

॥ अरहंदेवोनी सज्झाय ॥

अरहंदेवो गुरुणो, सुसाहुणो जिणमयं मह पमाणं ॥ इच्चाइ सुहोजावो, सम्मत्तं बिंति जगगुरुणो ॥१॥ लप्जइ सुरसामित्तं, लप्जइ पहुअत्तणं न संदेहो॥ एगं नवरि नलप्जइ, डुल्लहं रयणं च सम्मत्तं ॥ २ ॥ सम्मत्तंमि उलद्धे विमाण वज्जं न बंधए आउं ॥ जइवि

न सम्मत्त जहो, अहव न बद्धाउ उपुव्वि ॥३॥ दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंमियंएगो ॥ एगो पुण सामइअं, करेइ न पहुप्पए तस्स ॥ ४ ॥ निंद पसंमासु समो, समोअ माणाव माणकारीसु ॥ समसयण परिअण मणो, सामाइअ संगउजीवो ॥ ५ ॥ .

सज्झाय कही, पछे बे वांदणा देइ, अप्जुठिउं खमावी, पच्चरकाण करवुं. पछे विस्तारपूर्वक चैत्यवंदन देव वांदे॥



॥ अथ देववंदन विधि ॥

खमासमण देइ, इछाकारेण संदिस्सह ज्गवन्, इरियावहियं पमिक्कमामि ? एम कही इरियावहि पमिक्कमिने एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही; पछे खमासमण देइ, उत्तरासण करी, इछाकारेण संदिस्सह जगवन् चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

श्रीसिद्ध पढमनाहं, निवं मुणिं जिणवरं च तित्र्यरं ॥ युगआइ सयल ज्वियण, मंगल जय कारगं वंदे ॥ १ ॥ सयलजियलोय पयरं, संतिकरं संतिनाह मुणिपवरं ॥ सोलसमं तित्र्यरं, पंचमचक्किं नमं सामि ॥ २ ॥ जा जीव बंज्ञयाहिं, नियजस पसरेण रंजियं ज्जुवणं ॥ मोम्यि वम्मह माणं, नेमिजिणं तं पणिवयामि ॥ ३ ॥ सुर असुर नाग महियं, लोगालोग प्पयासगं

सूरं ॥ मिच्छत्त तमोहरणं, पासजिणंदं थुणिस्सामि ॥४॥ तिन्नपई सिरिवीरं, गुणागरं संतिसागरं धीरं ॥ पत्तं भवोह तीरं, वंदे कम्मारि सिरि सीरं ॥ ५ ॥ सवेविय जिणनाहा, गणहर सहियाय केवलदिणंदा ॥ अन्नेवि जेय सिद्धा, सवे तिविहेण वंदामि ॥ ६ ॥ संपइ वट्टइ जे जिण, श्रीमंधरसामी पमुह ते सवे ॥ भविय पडिबोह दिणयर, तिकरण सुद्धेण पूएमि ॥ ७ ॥

पढी उभा थइ, गुणह गंभीरनी चार थुइ कही, जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् चारित्राचार विसोधनार्थं, करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ० बे लोगस्सनो काउस्सग्ग, पछे प्रगट लोगस्स कही; सवलोए अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तियाए० एक लोगस्सनो काउस्सग्ग पारी, पुक्करवरदीवड्ढे कही, एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, पछे सिद्धाणं बुद्धाणं० कही निचा बेसी नमोत्थुणं० जावंति० कही, खमासमण देइ, स्तवनं संदिस्साएमि? बीजे खमासमणे स्तवनं भणेमि? एक नवकार गणी, श्री समेतशिखरनुं स्तवन कही जयवीयराय केहेवा ॥ इति देववंदन विधि ॥

पुणपोरसी समय थाय त्यारे उग्घाडापोरसी भणाववी तेहनी विधि. खमासमण देइ इच्छाकारेण सं-

दिस्सह भगवन् उग्घाडापोरसी, बीजे खमासमणे इरियावहि पडिक्कमी एक लोगस्सनो काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् उग्घाडापोरसी मुहपत्ति पडिलेहु? एम कही मुहपत्ति पडिलेहिने, जे पोतामां भाजन वपराय ते पण पडिलेहवां पाणी लाववा माटे. ॥ इति ॥

पछे बपोरनी बेघडी उगी रही होय त्यारे विधिथी देव वांदवा; तेमां स्तवन तारंगाजीनुं केहवुं ॥

अथ पच्चक्खाण पारवानी विधि ॥ खमासमण देइ इच्छाका० इरियावहि पडिक्कमी एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ इच्छाका० चैत्यवंदन करुं. श्रीसिद्धनुं० चैत्यवंदन करी जंकिंचि० नमोत्थुणं० जावंति० खमासमण देथि स्तवननो आदेश मागी नवकार० उवसग्गहरं जयवीयराय० पछे खमासमणदेइ इच्छाका० पच्चक्खाण पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं? मुहपत्ति पडिलेहिने पछे खमासमणदेइ इच्छाका० पच्चक्खाण पारुं? खमासमण देइ इच्छाका० पच्चक्खाण पुरु. नवकार गणी उपवास कीधो तिविहार पोरसी, साढपोरसी, पुरमढ्ढ, अवढ्ढ पच्चक्खाण कर्युं चोविहार.

फासियं पालियंचेव, सोहियं तिरियं तहा, किट्टियं आराहियं चेव, विसोहिज्ज जयं जई ॥१॥ फासुयं एसणिज्जंच, जं जिणेहिं, पवेइयं, तंचनीरंगहिस्सामि, सा-

माइय पोसहे तहा. ॥इति पच्चक्काण पारवा गाथा ॥ पछे पांच गाथानी सज्झाय करीए ॥ इति ॥

पाछला पहोरे छ घमी दिवस रहे ते समये पमिलेहण करवुं तेहनी विधि. खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पमिपुन्ना पोरसी; बीजे खमासमणे इरियावहि पमिक्कमी लोगस्स कही खमासमण इच्छाकारेण० पमिलेहणं संदिसावेमि? बीजे खमासमणे पमिलेहणं करेमि? इम कही मुहपत्ति पमिलेहवी. पछी चरवलो, कटासणुं पमिलेहिने बे खमासमणे अंगपमिलेहणनो आदेश मागी सुतरनो कंदोरो, धोतीयुं, उत्तरासण पमिलेहवुं पछे खमासमण देइ इच्छाकारेण० पोसहसाला प्रमाजुं? एम कही पोसहसालानो काजो एक स्थानके भेलो करवो. पछे इरियावहि पडिक्कमी लोगस्सनो काउसग्ग करी पछे खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन्, पमिलेहणा पमिलेहावो. इम कही थापनाजी पमिलेहवा. पछी खमासमण देइ, सज्झायं संदिसावेमि, बीजे खमासमणे सज्झायं करेमि, एम आदेश मागी एक नवकार गणी अरहंदेवो० सज्झाय करी, पछी वांदणा देइ पच्चक्काण करवुं, पछे खमासमण देइ इच्छाका० उपधिपमिलेहणं संदिसावेमि? बीजे खमासमणे उपधि पमिलेहणं करेमि. एम कही बाकी रह्यां वस्त्र संथारा प्रमुख सर्व पमीलेहीने, पछी सर्व काजो सुद्ध करी जत-

नाथी परठववो; परठवतां अणुजाणह जस्स वग्गहो कहेवुं. परठव्या पछी वोसिरे कहेवुं. पछी इरियावही कही एक लोगस्सनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. पछी संध्याना देव वांदवा तेमां चैत्यवंदन सिरि सिद्ध चक्क नवपय पदमल्लि० कहेवुं, ने स्तवन सुमतिनाथनुं कहेवुं. देव वांदी पछी जो रात्रपोसह होयतो मांम्ला करवा तेनी विधि. खमासमण देइ इच्छाका० इरियावही पडिक्कमी काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् थंम्लिभूमि प्रमार्जु. ते आ प्रमाणे-पोसहमां वडीनीति लघुनीति परठवण योग्य चोवीस मंम्ल करवां ते नीचे प्रमाणे.

॥ प्रथम संथारा पासनी जग्यायें ॥

आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥२॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥३॥ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे ॥४॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥५॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥६॥

॥ उपाश्रय द्वार मांहेनी तरफना ॥

आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥१॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥२॥ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥३॥ आगाढे मज्झे पासवणे

अहियासे ॥४॥ आगाढे दूरें उच्चारे पासवणे अहियासे ॥५॥ आगाढे दूरे पासवण अहियासे ॥ ६॥

॥उपाश्रय द्वार बाहिर नजीक रहीने करे.॥

अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥१॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥२॥ अणागाढे मझ्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥३॥ अणागाढे मझ्झे पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥५॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥

॥ स्थंन्डिलने स्थानके वेगला ॥

अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥१॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥२॥ अणागाढे मझ्झे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ३ ॥ अणागाढे मझ्झे पासवणे अहियासे ॥४॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे॥५॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥६॥ इति चोवीस मांन्डला सपूर्ण. ॥

पछी इरियावहि करी संध्याप्रतिक्रमण विधिथी करवुं तेमां देवसियं आलोएमि, जामे देवसिउं० पाठ कही रह्या पछी, गमणागमण आलोवुं ? कही सात लाख कही, अढार पापस्थानकनो, मिछामिदुक्कम देइ, पछे इर्यासमिति, १ भाषासमिति, २ एषणासमिति ३

आदाननिक्खेवण समिति, ४ पारिष्ठापन समिति ५ मनोगुप्ति, ६ वचनगुप्ति, ७ कायगुप्ति, ८ ए पांच समिति, त्रणगुप्ति, पोसह सामायक मांही, खंम्न विराधना थइ होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी तस्स मिछामिछुक्कमं, एम कही चार विकथा कहेवी; पछे सव्वस्सवि० आ विधि पोसहवालाने देवसियं आलाएमि, जोमे देवसियो० आ पाठ कह्या पछेनी छे, अने बुटाने तो, आठ प्रवचन माताना पाठ न कहेवो.

॥ अथ राइ संथारा विधि ॥

पहोर रात गया पछी खमासमण देइ, बहुपमिपुन्नापोरसी, आदेश मांगी इरियावहि पमिक्कमी, प्रगट लोगस्स कही, इछाकारेण संदिस्सह जगवन् बहुपमिपुन्नापोरसी; एम कही बेसीये. चउक्कसाय० चैत्यवंदन० नमुछुणं० जावंति बे गाथा कही, अनंतासिद्धजीने माहरो नमस्कार होजो कही; स्तवनना आदेश मागी, नवकार, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही खमासमण देइ, इछाकारेण संदिस्सह जगवन्, राइ संथारामुहपत्ति पमिलेहुं ? एम कही पमिलेही, संथार जूमिपाट पमिलेहवी, पछे संथारे बेसीने अणुजाणह जिढिज्जा जिढिज्जा निसिहि नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं कही, नवकार, करेमिजंते० ए पाठ त्रणवार जणियें ॥ पछे ॥

अणुजाणह परमगुरु, गुण गण रयणेहिं मंमिय सरीरा ॥ बहुपमिपुन्ना पोरसी, राइयं संथारयं ठामि ॥१॥ अणुजाणह संथारयं बाहुवहाणेण वामपासेण, कुक्कुम-पाय पसारण, अतरंतोपमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासा, उवट्टंतेयं कायं पमिलेहा, दवाई उवउंगा, ऊस्सासनिरुंभणालोए ॥३॥ जइमे हुज्ज पमाउं, इम-स्स देहस्सि माइ रयणीए, आहार मुवहिदेहं, सवं ति-विहेण वोसिरे ॥ ४ ॥ पछे ॥

अरिहंतो महदेवो; जावज्जीवं, सुसाहुणो गुरुणो, जिण पन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं,॥५॥ पछे च-त्तारिमंगलं पूर्ण पाठ कही;

चउरंगो जिणधम्मो, नकउ चउरंग सरणमवि-नकयं॥ चउरंग नवुछेउ, नकउ हाहारिउ जम्मो॥१॥ अरिहंत सिध्साहू, केवलि कहिउ सुहावहो धम्मो ॥ ए ए चउरो चउगइ, हरणो सरणं लहइ धन्नो ॥२॥ पाणाइवायं मलियं[२], चोरिक्कं[३] मेहुणं[४] दविणमुछं[५] ॥ कोहं[६] माणं[७] मायं[८], लोहं[९] पिज्जं[१०] तहादोसं[११] ॥३॥ कलहं[१२] अन्भकाणं,[१३] पेसुन्नं[१४] रइअरइ[१५] समाउत्तं॥ परपरिवायं[१६] माया, मोसं[१७] मिछत्तसल्लंच,[१८] ॥ ४ ॥ वो-सिरिसुइमाइं मुक्कमग्ग संसग्ग विग्घनूयाइं ॥ डुग्गइ निबंधणाइं, अढारसपावठाणाइं ॥५॥ ए गाथायें अ-

ढार पापस्थानक वोसरावी, पछे सात लाख पृथ्वीकाय कही.

एगोहंनत्थिमेकोइ, नाहमन्नस्सकस्सई॥ एव अदीणमणसो; अप्पाणमणुसासई ॥ १ ॥ एगोवचइजीवो, एगो चेवज्जवज्जई ॥ एगस्सहोइ मरणं, एगोसिज्झइनीरउ ॥२॥ एगोमेसासउअप्पा, नाणदंसण संजुउ॥ सेसामेबाहिरा भावा, सवेसंजोगलरकणा ॥ ३ ॥ संजोगमूलाजीवेण, पत्ताउकपरंपरा ॥ तम्हासंजोग संबंधं सवंतिविहेणं वोसिरे ॥४॥ पछे नवकार गणवा, संसार स्वरूप भाववुं अर्थ विचारीयें निद्रा टालवानी खप करियें.

॥ इति रात्रि संथाराविधि समाप्तः ॥

पाछली राते उठी इरियावहि पडिक्कमी राइपडिक्कमणुं करवुं ते विधि पूर्वे जेम लखी छे तेम जाणवी; पछी पडिलेहण करी सज्झाय करवो, पछी देव वांदवा इच्छामि॰ इच्छाका॰ इरियावहियं पडिक्कमा म एम कही इरियावहि पडिक्कमी काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछे इच्छामि॰ इच्छाका॰ चैत्यवंदन करुं एम कही देव वांदवा तेमां स्तवन ॥ सफल एह अवतार माहारो ए स्तवन ॥ कहेवुं. पछी इरियावही कहेवी, लोगस्स कही इच्छामि॰ इच्छाका॰ पोसह पारुं इच्छामि॰ इच्छाका॰ पोसह पुरुं. एम कही नवकार गणी.

॥ अथ पोसह पारवा गाथा ॥

सागरचंदो कामो, चंदवमिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पमिमा, अखंमिया जीवियंतेवि ॥ १ ॥ जे तव सोसियं काया, ते सव्वे हुंति संथुआजाया॥ आणंद कामदेवा, सु सावया दसवितेधन्ना ॥ २ ॥ धन्ना सला- हणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइ ज- यवं, दढवयंतं महावीरो ॥ ३ ॥ पोसहेसु सुहे जावे, असुहाइं खवेइ नत्थि संदेहो ॥ छिंदइ तिरि निरय गइं, पोसहविहि अप्पमत्तोय ॥ ४ ॥ पोसह सामाइय संठि- यस्स, जीवस्स जाइजो कालो ॥ सोसफलो बोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ इति ॥

पठी इन्नामि० इन्नाकारेण संदिस्सह जगवन् सा- मायक पारुं? इन्नामि० इन्नाकारेण० सामायक पुरुं. पठी एक नवकार गणी सामाइय वयजुत्तो कहेवो. पठी त्रण नवकार गणवा ॥ इति श्री पोसह विधि समाप्त ॥

अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमं- त्रणा करवी ते कहेठे. पच्चखाण कर्या पठी बे ढीचण अने मस्तक जूमिये लगामी माथा हाथे मुखें उत्तरा- सण देइ जमणो हाथ गुरुने पगें लगामी आवी रीते कहे.

इन्नाकारि जगवन् पसाय करी, फासुअं एसणि-

जोणं, असणं पाणं खाइमेणं साइमेणं वत्र, पमिग्गह, कंबल पाय पुछणेणं, पमिहारिअ, पीढ, फलग, सिज्जा संथारएणं जसह नेसज्जेणं नयवं अणुग्गहो कायवो. इति निमंत्रणा. ॥

॥ अथ सामायक लेवानी विधि ॥

नवकार गणी, पंचिंदिय कहीये. स्थापना थापी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहिया० तस्सउत्तरी० अनत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक मुहपत्ति पमिलेहुं ? एम कही पमिलेहण करी पछी खमासमण देइ इच्छाकारण संदिसह जगवन् सामाइयं संदिसावेमि ? इच्छं. वली खमासमण देइ इच्छाका० सामाइयं ठावेमि ? इच्छं. एमकही बे हाथ जोमी एक नवकार गणी इच्छकार जगवन् पसाय करी सामायकदंमक उच्चरावोजी. पछे करेमिजंते० पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् बेसणे संदिसावेमि ? बीजे खमासमणे बेसणे ठावेमि ? इच्छं. एम कही बे खमासमण देइ सज्झायं संदिसावेमि ? सज्झायं करेमि. एम कही बेघमी सज्झाय धर्मध्यानमां लीन थवुं. शास्त्रार्थ शिवाय कांइपण बीजी

वात करे तो सामायक ते माया छे एम जाणी बरोबर धर्मध्यान करवुं.

॥ अथ सामायक पारवा विधि ॥

खमासमण देइ इरियावहिथी जावत् सुधी कही खमास० इच्छाका० कही मुहपत्तिने दृष्टिथी जोइ पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायक पारु ? यथाशक्ति. बीजे खमासमणे सामायक पुरुं ? तहत्ति. कही पछी जमणो हाथ नीचो थापी एक नवकार गणी सामाइय वयजुत्तो कहीये. पछी त्रण नवकार गणवा.

॥ अथ पच्चखाणो ॥

॥ अथ नवकारसिनुं पच्चखाण ॥

उग्गएसूरेनमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं वोसिरे ॥ १ ॥

॥ अथ पोरसिनुं पच्चखाण ॥

उग्गएसूरे पोरसहियं पच्चक्खामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ २ ॥

॥ अथ साढपोरसिनुं पच्चक्काण ॥

उग्गएसूरे साढपोरसियं पच्चक्कामि चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ३ ॥

॥ अथ पुरिमड्ढनुं पच्चक्काण. ॥

सूरेउग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्कामि. चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ ४ ॥

॥ अथ मुट्ठिसहियं गंठसहियंनुं पच्चक्काण ॥

मुट्ठिसहियं गंठसहियं पच्चक्कामि. चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

॥ अथ एकासणानुं पच्चक्काण ॥

उग्गएसूरे नमुकारसहियं पोरसहियं पच्चक्काइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणंपच्चक्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नच्छणाभोगेणं सहस्सागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसार-

णेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारे- णं सवसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरे.

॥ अथ आयंबिलनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गएसूरे नमुक्कारसहियं पोरसहियं पच्चक्खाइ. चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न- त्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसं- सठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरा- गारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्खाइ ति- विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणेणं गु- रुअब्भुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव- समाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछे- णवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरे.

॥ अथ निविगईनुं पच्चक्खाण ॥

उग्गएसूरे नमुक्कारसहियं पोरसहियं पच्चक्खाइ. चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थ- णाभोगेणं सहस्सागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं विगइउनिविगइ

पच्चक्काइ अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं सागारियागारेणं आउट्टणपसारणेणं गुरुअब्भुठाणेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरे.

॥ अथ तिविहार उपवासनुं पच्चक्काण ॥

सूरेउग्गएअब्भत्तठं पच्चक्कामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणहार पोरसियं साढपोरसियं पुरिमढ्ढंवापच्चक्कामि अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरामि.

॥ अथ चउविहार उपवासनुं पच्चक्काण ॥

सूरेउग्गए अब्भत्तठं पच्चक्कामि. चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वस-

माहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥

॥ अथ देशावगाशिक पच्चरकाण ॥

अहन्नंते तुम्हाणं समिवे देसावगासियंपच्चरकामि तंजहादवत्तखित्तत्त कालत्त नावत्त दवत्तणं देसाव-गासियं खित्तत्तणं इत्रंवा अन्नत्रंवा कालत्तणं मुहुत्त परिमाणं जाव धारणा पमाणं पज्जुवासामि नावत्तणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावब्लेणं नब्लिज्जामि अन्ने-णकेण रोगायंकेणवा, परिणामो न परिवमइ ताव मे अ-ज्निग्गहो अन्नत्रणा नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागा-रेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ इति ॥

॥ अथ चउद नियमनुं पच्चरकाण ॥

देसावगासियं उवन्नोगपरिन्नोगं पच्चरकामि अन्न-त्रणानोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरामि ॥

॥ अथ चउविहारनुं पच्चरकाण ॥

दिवसचरिमं पच्चरकामि चउविहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्रणानोगेणं सहस्सागारेणं म-हत्तागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ डुविहारनुं पच्चरकाण ॥

दिवसचरिमं पच्चरकामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नत्रणानोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥

अथ चैत्यवंदनो.

॥ अथ श्री जीनेंद्र चैत्यवंदन ॥

समवसरणमध्ये रत्नसिंहासनस्थान्, जगति विजयमानान् चामरैर्वीज्यमानान्, मनुजदनुजदेवैः संततं सेव्यमानान्' शिवपथकथकांस्तानर्हतःसंस्तुवेहं ॥१॥ शिवयुवतिकिरीटान् शुष्कदुष्कर्मकंदान्, विमलतम समुद्यत्केवलज्ञानदीपान्, अणुमनुजसुदेहाकारतेजः स्वरूपान्, अधिगतपरमार्थान् नौमि सिद्धान् कृतार्थान् ॥२॥ अतुलतुलितसत्वान् ज्ञातसिद्धांत तत्वान्, चतुरतर गिरस्तान् पंचधाचार शस्तान्, प्रथितगुण समाजान् नित्यमाचार्य राजान्, प्रणमतयुग मुख्यान् सत्क्रिया बद्ध सख्यान् ॥३॥ प्रणयिषुपठनाया न्युद्यतेषुप्रकामं, वितरतश्चहसौत्रीं वाचनामागमस्य, अगणित निजकष्टान् कामिताजीष्टसिद्धान्, सरससुगम वाचो वाचकान्संस्तवीमि ॥४॥ दशविधयतिधर्माधार जूतान्प्रजूतान्, श्रमण शत सहस्रान श्रमान् स्वक्रियायां, सविनयमतिजक्त्या न्युल्लसच्चित्तरंगः, सततमपिनमामि क्षामदेहांस्तपाजिः ॥५॥ चतुर्गात्रं चतुर्वक्रं, चतुर्धा धर्म देशकं, चतुर्गति विनिर्मुक्तं, नमामि जिन पुंगवं ॥ ६ ॥

॥ अथश्री नवपदजीनु चैत्यवंदन ॥

सिरिसिद्धचक्कनवपय, महल्लपढमिल्लपयमयजिणं-
द ॥ असुरिंदचिय, पयपंकय नाह तुज्झनमो ॥ १ ॥ सि-
रिसिद्धेसरसामिय, कामियफलदाण कप्पतरुकप्प ॥ कं-
दप्पदप्पगंजण, भयभंजणदेव तुज्झ नमो ॥ २ ॥ सि-
रिनाभिरायकुलगर, कुलकमलुल्लास परमहंससम ॥ अ-
समतमतमतमोभर, हरणिक्कपईव तुज्झ नमो ॥ ३ ॥
सिरीमरुदेवासामिणी, उयरदरी दरियकेसरीकीसोर ॥
घोरउयदंभखंम्मिय, पयंभ मोहस्स तुज्झ नमो ॥ ४ ॥ इ-
क्खागुवंसभूसण, गय दूसण दुरिय मयगलमियंद ॥ चं-
दसमवयणवियसिय, निलुप्पलनयण तुज्झ नमो ॥ ५ ॥
कल्लाण कारणुत्तम, तत्तकणयकलस सरीससंठाण ॥
कंठठिय कलकुंतल, नीलुप्पलकलिय तुज्झ नमो ॥ ६ ॥
आईसरजोईसर, लयगयमणलक्क लक्खिय सरूव ॥ भव
कूव पडियजंतु, तारण जिणनाह तुज्झ नमो ॥ ७ ॥ सिरि
सिद्धसेलमंडण, दुहखंडण खयररायनतपाय ॥ सयल
महसिद्धि दायग, जिणनायगहोउ तुज्झ नमो ॥ ८ ॥ तुज्झ
नमो तुज्झ नमो, तुज्झ नमो देवदेव तुज्झ नमो ॥ पणय-
सुर रयणसेहर, रुइरंजिय पाय तुज्झ नमो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जीनेंद्र चैत्यवंदन ॥

जगन्नाथ जगत्रात, कृपाकर कृपापद ॥ शरण्य

भक्तसाधार, शृणु विज्ञप्तिकांमम ॥ १ ॥ नाथोसि त्वम नाथानां, जंतूनां भव तारकः ॥ ममोद्धर्त्ता किलेदानी, मेकस्त्वमसि नापरः ॥२॥ यदहं किंचिद ज्ञाना, द्विपरीतं तवागमात् ॥ ब्रवीमि मध्ये लोकानां, तत्रत्वं मम साक्षिकः ॥ ३ ॥ त्वत्तःपरं न देवं मनसा ध्यायामि सर्वथा नाथ ॥ वचसापि न स्तवीमि, प्रणमामि न मस्तकेनाहं ॥४॥ भावविशुद्धिं स्वामि, न्मम विज्ञाता त्वमेव सर्वज्ञ॥ किंबहुना गदितेन, प्रभुरेको मे त्वमेवासि ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री जीनेंद्र चैत्यवंदन ॥

अद्यमे सफलं जन्म, अद्यमे सफला क्रिया॥ शुभदिनो दयोष्माकं, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥१॥ अद्य मिथ्यांधकारस्य, हंता ज्ञान दिवाकरः ॥ उदयतो मछरीरेस्मिन्, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥२॥ अद्यमे क्षालितं गात्रं, नेत्रेच विमली कृते॥ स्नातोहं धर्मतीर्थेषु, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥ अद्यमे कर्म्म संघातं, विनष्टं चिर. संचितं ॥ दुर्गत्यापि निवृत्तोहं, जिनेंद्र तव दर्शनात्॥ ॥४॥ अद्याभवत् सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणांबुजवीक्षणेन ॥ अद्य त्रिलोक तिलक प्रतिभासते मे, संसार वारिधिरसौ चलुकः प्रमाणः ॥ ५॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष रक्ष परमेश्वरः ॥ ६ ॥ नहि त्राता नहि त्राता

नहि त्राता जगत्रये ॥ वीतराग परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥७॥ न कोपो न लोभो न मानं न माया, न हास्यं न लास्यं न गीतं न कांता ॥ नचापत्य शत्रोर्न मित्रं कलत्रं, तमेकं प्रपद्ये जिनं देवदेवं ॥८॥ इति ॥

॥ अथ श्री आदिनाथनुं चैत्यवंदन ॥

भत्तिभर नमिर सुरिंद विंद वंदिय पय पढम जिणंद चंद चंडुज्जल केवलकित्तिपूर, पूरिय भुवण तर वेरिसूर ॥ १ ॥ सुरुव हरिय तम तिमिर देव, देवासुर खेयर विहिय सेव ॥ सेवागय गयभय राय पाय, पायम्हि पणामह कय पसाय ॥ १ सायर सम समयामय निवास, वासव गुरु गोयर गुण विकास ॥ कासुज्जल संजम सील लील, लीलाइ विहिय मोहावहील ॥३॥ हीला परजंतुसु अकय साव, सावय जण जणियाणंद भाव ॥ भा वलय अलंकिय रिसह नाह, नाहत्तणु कर हर दुक्कदाह ॥ ४ ॥ रिसह जिणेसर भुवण दिणेसर, तिजय विजय सिरिपाल पहो ॥ मयणाहिय सामिय सिवगइ गामिय, मणह मणोरह पूरपहो ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय चैत्यवंदन ॥

आदिनाथ जगन्नाथ, विमलाचल मंमन ॥ जय नाभि कुलाकाश, प्रकाशन दिवाकर ॥ १ ॥ तवनाथ पदांभोज, सेवाति दुर्लभा भवेत् ॥ पुण्य संभारहीना-

नां, कल्पवल्लीव देहिनां ॥ २ ॥ ते धन्या मानवा देवा, यैरापि तव शासनं ॥ वंदनीया विज्ञो ते ये, वंदते ज्ञवतः पदौ ॥ ३ ॥ प्रचंम्तमरागादि, रिपुसंघातघातकं ॥ श्रीयुगादिजिनाधीशं, देवं वंदे सदा मुदा ॥ ४ ॥ श्रीशत्रुंजय कोटीर, कृतं राज्यश्रिया विज्ञो ॥ सर्वाघ्ननाशनमेतत्, शासनं ते ज्ञवे ज्ञवे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

अष्टापद श्री रिषज्ञदेव, सिद्धा सहु जाण; चंपानगरी वासुपुज्य, पावा वर्द्धमान ॥ १ ॥ नेमिसर बावीसमा, गिरनारे सिद्धा; ए चारे जिन जुजुआ, शाश्वत सुख लीधा ॥ २ ॥ अवर वीस तीर्थंकराए, समेतशिखर गिरिराज; ज्ञानुचंद मुक्ति गया, सिद्धा आतम काज ॥३॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

तिहुयण तिलयं वंदे, तिहुयण जण नमिय विमल पयकमलं; तिहुयण सरणं वंदे, हय मरणं जिणवरं रिसहं ॥ १ ॥ अष्ठावयंमि उसज्ञो, सिद्धिगउ वासुपुज्ज चंपाए; पावाइं वद्धमाणो, अरिठनेमि अज्जंते ॥ २ ॥ अवसेसा तिज्ञयरा, जाइ जरा मरण बंधण विमुक्का; समेअ सेल सिहरे, विसंपरि निव्वुए वंदे ॥ ३॥ धन्नोहं कयपुन्नोहं. नितिसोहं ज्ञवसवा. अणाइ ज्ञवसंसारे दिठोजेण जिणोमये ॥ ४ ॥

॥ श्री सिद्धचक्रेनुं चैत्यवंदन ॥

जो धुरि सिरिअरिहंत मूल, दढ पीठ पइठियो; सिद्ध सूरि उवज्झाय साहु, चउ साह गरिठ्ठ ॥ १ ॥ दंसण नाण चरित्त तवहिं, पडिसाहाहिं सुंदरु; तत्तक्खर सरवग्ग लद्धि, गुरु पयदल दंबरु ॥ २ ॥ दिसिवाल जक्ख जक्खिणि, सुर कुसुमहिं अलंकिउ; सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु, अम्हमण वंछिय दिअउ ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशतिजिन नमस्कार स्तुतिः ॥

रिसह जिणवर रिसह जिणवर जणणि मरुदेवी, नाभिराय कुल कमलवर । विमलसोह पडिबोह दिण-यर जगजीवन जगतिलो ॥ जगनाह जगजीव जयकर जोगीश्वर जग जासु जस । जगमग जगे अपार, प्रथम तिर्थंकर मुझ सरण कर प्रभु सेवक सार ॥ १ ॥

मात विजया मात विजया, तात जितशत्रु पामा सारे बेरमे । ईलापाल कहियें न हारें, कुंखें जिणवर अवतरिय ॥ माय दाय जय वृद्धिकारें, कारण जाणी पुत्रनो । अजीत नाम जिण दीध, सो वीतराग वंछिय करण त्रिभूवन मांही प्रसिद्ध ॥ २ ॥

भवह संभव (२)* स्वामि अवधार, ते संभव तु-

* जे जे पद आगल कौंसमां (२) मुक्या छे ते प्रथमनुं पद बे वखत वांची लेवुं.

म्ह हि नथी। अचल अदर्य शिवपद पधार्या, प्रनु सेवक तुम्हतणो ॥ चन्दराज जव जमि वधार्या, कृपा करी हियम्हें धरी । ते ग्रालो हिवे देव, संजव जिणवर त्यां लगे, जवजव तुम्ह पाय सेव ॥ ३ ॥

देव दांणव (२) मिलिय नर कोम, संयम अवसर समवसरण । विनय परम संवेग कारण, रतन जमित आजरण सवि ॥ जंमि रिद्धि मन कर्म दारण, चरण करण गुण अणुसरी । पामी केवल सार, श्रीअजिनंदन जिन नमुं, जन मन घन संशयहार ॥ ४ ॥

सुमति दायक (२) सुमति जिनराय, सांजलो मुज विनती । वसो तुम्ह मुझ चित्त ठामें, रागादिक तिहां किम रहे ॥ होय त्रास जसु स्वामि नामे, आलकरें केसरी गुफा । जंबुकते हरि लाज, इम जाणी स्वामी करो, तुमे तुमारो राज ॥ ५ ॥

गरुम वाहन (२) धरें हथियार, रमणि रामा रंगे रमें । हंस यान सावित्र संगे, वामदेव वामा वसें ॥ इंद चंद रवि राग रंगे, ते किम सेवुं देव गणी । तारक एकज होय, पदमप्रनु जिण ज्यां मिले, अवर न दीठो कोय ॥ ६ ॥

नाण दंसण (२) चरण गुणवास, श्री सुपास जल्लासकर । जविय लोय सवि आस पूरे, हिवमा जावि-

त जिन विरह ॥ नविय डव्य जाणग सरीरह, नाम अनें जिण थापना । बिहु करि प्रनु आराध, रे मन नावें सरिस गणी, पर परमारथ साध ॥ ७ ॥

चिहुंअ पखें (२) हीणससि चंड, अंतरालि वलि कालिमा । विणुंराका पूरो न दीसे, तेह सरिस प्रनुतनु प्रना ॥ कहु केम मननी जगीसे, चंड नाम हिम वालुका । शीतल धवल सुगंध, तसु उपम जिण चंदपह, टाले नव डुह बंध ॥ ८ ॥

सुविधि विधि निधि (२) सुविधि अरिहंत, पुप्फदंत नगवंतनो । बीय नाम जगमांहि दीपे, नयगम नंग विचारकर ॥ समवसरण चत्तारि जीपें, करी विवेक चिहुंथी जुउ । जिणमत जे जाणंत, नाण मूल शिवपद फलंत बोधबीज पावंत ॥ ए ॥

चंड शीतल (२) हरे रविताप, गंधसार घनसार वलि । विविध डव्य जनमन सुहावे, शीतल वाणी जिनतणी ॥ पाप ताप हेले समावे, आपे सुख अक्षय अचल । डुख समूल निवार, शीतल जिणवर पाय, नगत उतारे नव पार ॥ १० ॥

तुम्ह सासण (२) देव डुल्लंन, कुगुरु वचन श्रवणें सुण्या । उपादेय नहु हेय जाण्या, आश्रवते संवर गण्या ॥ बंध मोक्ष एकज वखाण्या, हवे तुम्ह

आगम सद्दही । श्री श्रेयास जिणंद, तिन्न तत्व निरता लही पाम्यो परमाणंद ॥ ११ ॥

नरग दुस्सह (२) सह्यां बहु दुःख, परवसे परमाह्म्मिय । पाप ताप पीमा पमाव्यो, बंध बंधादिक तिरिय गइ ॥ रोग सोग नरत्तव संताव्यो, देवनियोगी किंवसीय । दुर्गति गती संचार, नागो लागो तुम्ह चरण वासुपुज्य साधार ॥ १२ ॥

जनह रंजन (२) कवण जग होई, पूजा कारण कवण गुण । कवण देह विद्या विभूषण, जल तारण नर कवण ॥ कवण केकि कुल नट्ट पोषण, त्रिहुं त्रिहुं अक्षर पद तवीया । पढम अक्कर जसु नाम, तासु जिणेसर पय नमंत लब्नें निर्भय ठाम ॥ १३ ॥

गयण अंगुल (२) गणे जई कोय, सुर सरिया वालुआ । कण प्रमाण जे कहियें जांणे, खंधा देस पएसवलि ॥ परिमाणुं संख्या वखाणें, गुण अनंत जगपतितणा । ते पण न लहुं पार. जय जय स्वामी अनंत जिन, त्रिलुवन जन साधार ॥ १४ ॥

धवल धोरी (२) धर्मधुरि धार, काल अनंतें जिन कहिय । नांण जाण ते धर्म जाख्यो, जे पूछे नर अमर ॥ तासु विगत विवरीय दाख्यो, जहठिय वाईय दुग दुग चउ । दश वली बार प्रकार, धर्म्म जिणेसर

समरीये तो तरीये संसार ॥ १५ ॥

सकल-स्वामी (२) संति जिणराय, कमलनयण कर चरणवंर आप तरण परजीव तारण, दुःखहरण सुख करण सवि मोह सुहम दल हेलि वारण, पाय पसाये तुमतणे में लाधी जिण आण, संतिकरण तुह दंसणे होजो नित्य सुविहाण ॥ १६ ॥

लख चोरासी (२) हस्ति रहवाय पायक छन्नू कोम कर जोम सेव सारे, निरंतर नव निधान चौदे रयण नारी सहस चोसठ सुंदर, रुध्धि रुध्धि मनसुरू धरी, सिद्ध भणी उमाह, कर्मदय वंछित फल्यो, जयो कुंथु जिणनाह ॥ १७ ॥

अरजिणेसर (२) अरय गतिपत्ति, तीर्थंकर अढारमो चक्रवर्त्ति सप्तम सुहावह, सारण वारण शीखवण विहित करण जनता पियामह, पावठाण अढारह गिणी, अढारस भेय अबंभ, दोष अढार निराकरण जित्यो दुर्जय दंभ ॥ १८ ॥

कवल खेपे (२) भरिय आकंठ, छहमित्र पमिबोहवा हेम पमिम आपणीय कारिय, ते उघामिय गंध बले, जाइसरण संकेत पूरीय, संवेगे संयम ग्रही सिद्ध थया छहराय, इम उपगार शिरोमणी धन्य मल्लि जिनराय ॥ १९ ॥

कवण लंबे (२) सिद्धनो गाम, ते बल कहीये केवो सहुअजीव जग किसुं इहै, चतुराननने कुण थयो, कवण तेयजसु कर्म बीहे, पंचश्रेणी बिहुवर्णनी प्रगट रहे जसु नाम, बीजो अक्षर लोपतां तेहने सदा प्रणाम ॥ २० ॥

काय सोवन (२) वर्ण नहुखेद, रोगरहित गोखीर जेम, मंस रुधिर मल पंक वर्जित, कमलगंध मुख साससम त्रीस पंच गुण गर्जित, विषय कषाय अक्रुष्ट मन तिण नवि लागे दोष, कंसतोय जसु स्वामि नमी करो अम्ह गुण पोष ॥ २१ ॥

नेमि जिणवर (२) बालब्रह्मचारि, नारि मित्र नव भव लगे नेह बरु मंबरु ददमन, रायमई रायमई रायमई तजि भज्यो कानन, समुद्रविजय सिवादेवी सुत, सांमलवरण शरीर, संख लंछन दस धनुष तनु धर्मधुरंधर धीर ॥ २२ ॥

पास पूरे (२) पास जिण आस, पाप पास तोडे मयल गुणगण निवास, वासव नमंसिय हास कास संकास जसु, जासचास तनु भास संसिय, तासु दास हुं प्रभुतणो मागुं सिद्धिवास, उल्लासे आपो सही दिन दिन ज्ञान प्रकाश ॥ २३ ॥

तिह्रनायक (२) वीर जिणराय, उपगारी आसन

समय नाणजाणि जिनधर्म भाख्यो, पंचम काल विशाल बले जैनमांहे पसरंत राख्यो, तेहिज धर्म जयवंत बे वरस सहस इगवीस, वर्द्धमान जिनवरतणो वर्द्धमान निसदीस ॥ २४ ॥

जय जिणवर (२) पयम चोवीस, भव अपार सायर थइ तरिय सरिस बहु जीव तारिय, टालिय सयल किलेस थुणी भावसहित गुणहिये धारिय, लहिये चंद उज्जल सुधी समकित तत्व विचार, ते आणंदे पामस्ये पासचंद्र(किरतिगति) सुखकार ॥२५॥

॥ इति श्रीचतुर्विंशतिजिन नमस्कार स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तुति ॥

यो भव्यवृंदैः समुपास्यमानः, संपूर्णशीतां शुविभासमान; समस्ततापप्रशमं विधत्ते, श्रीपार्श्वनाथं तमहं नमामि ॥१॥ प्राप्य प्रसन्नं यमिनां विशिष्टः, फलेग्रहिः सर्वमनोरथः स्यात्; विशां समाराधनतत्पराणां ॥ श्रीपार्श्व० ॥ २ ॥ कर्म्मारयो येन मृगारिणेव, स्तंबेरमास्तत क्षणतो निरस्ताः; विश्वत्रयी पालनसावधानं ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ३ ॥ यस्मै नमस्यंति सुरासुरेंद्राः, स्वर्गच्युतौ जन्मनि संयमित्वे; ज्ञानोदये निर्वृति राज्य

प्राप्ते ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ४ ॥ यस्मान्नमस्कारपदानि वह्नौ, ज्वलन्समासाद्य यशस्कराणि, लेभे भुजंगो भुजगाधिपत्यं ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ५ ॥ एतत्फलं दर्शनमात्रलभ्यं, मन्येऽल्पकल्पं बहुपर्युपास्त्याः; यस्य प्रसादात्सुलभा शिवश्रीः ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ६ ॥ गर्भस्थिते मातुरथ प्रजाते, सौधर्म्मशक्रो निधिनिश्चयस्मिन्, पितुर्गृहं श्री सदनं चकार ॥ श्रीपार्श्व० ॥ ७ ॥ इति स्तुतत्वं जिनपार्श्वचंद्र, विधेन नित्यं तव सेवकेन; श्रीपार्श्व संसेवित पादपद्म, श्रीपार्श्व विश्वेश्वर शं विधेहि ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनागत चोवीसी स्तुति ॥

पद्मनाभ पहिलो जिणंद, श्रेणिकराय जीव, आवंती चोवीसी हुस्ये, भवसायर दीव; सूरदेव सूपास जीव, तिर्थंकर बीजो, जीव उदायणनो सुपास, जिन नायक तीजो; स्वामी स्वयंप्रभु तुरियजिन, पोट्टिल जीव विचार, श्रीसर्वानुभूइ पंचमो, जीव दढाइ उदार ॥१॥ कत्तियशेठतणो जीव, देवसुन छठो, उदय तिर्थपति सत्तमो, संख जीव विसठो; आणंद केरो जोव हुस्ये, अष्टम पेढाल, पोट्टिल नवमो सुणंद, जीव जगनाथ दयाल; श्रुत कीरति दसमो सतक, श्रावक व्रत गुण धार, सुव्रत इग्यारमो तिर्थपति, रेवइजीव संभाल ॥ २ ॥ अमम तिर्थंकर बारमो, कृष्ण वासुदेव जोइ, निःकषाय

तेरमो जिणंद, सतकी जीव होइ; निःपुलाक चउदमो जिनेस, जीव बलदेव केरो, सिवसुख लहिस्ये कर्म खपी, टली जव फेरो; पन्नरमो जिण निरममोए, सुलसा सावइ जाण, सोलमो चित्रगुप्ततणो, रोहणी जीव वखाण ॥ ॥ ३ ॥. सत्तरमो जिणवर समाधि नाम, देवकी जीव जाणु, अढारमो संवरनाथ नमुं, सयल जीव वखाणु; दीपायणनो जीव हुस्ये, उंगणीसमो जिनपति, यशोधर नामे गुण विसाल, नमस्ये सवे सुरपति; करण जीव श्री विजयजिन, वीसमो जग आधार, मल्लिनाथ एकवीसमो, नारदशील जंमार ॥ ४ ॥ बावीसमो जिनदेव नाम, अंबम्ह जीव होसे, तेवीसमो श्रीअनंतवीर्य, जीव अमर लहिस्ये; चोवीसमो श्री जडंकर जिनेस, स्वातजडंकर सोइ, क्षेत्रविदेहे सिद्ध हुस्ये, नामंतर जोइ; इम चोवीसे जिन थव्या ए, आगामी सिद्ध जाण, श्री समरचंदसूरि आणंदसु, जाणे गुणमणि खाण ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अतीतचोवीसी स्तुति ॥

उसज चोवीसी थकी प्रथम, जिन केवल नाणी, तिरथपतिना नमुं पाय, बीजा निर्वाणी; सागर जलनिधि सरिस थवुं, गुण अनंत सुजाणी, महिमा जसु जस महिमा निहाण जस मधुरी वाणी; पंचम विमल विमल जगेए, विमल दंसणने नाण, श्रीसर्वानूजूइ सिर तिलो, छठो अ-

जिनव जाण ॥१॥ श्रीधर श्रीधर जिणवरिंद,सत्तम सतधीर, दत्तदान दीधो अनंत, अजयादि धीर; दामोदरनो नाम जपे, हुवे मन उल्लास, सुतेजस तेजें सयल, लोकनो कियो प्रकास; स्वामी जिन अग्यारमोए, नमीयें मन आणंद, मुनिसुव्रत व्रत सुध धरी, पाम्यो परमाणंद ॥ २ ॥ प्रणमुं सुमति सुमति दातार, तेरम मनरंगे, सिवगति सिवगति नारसिंह, पाम्यो व्रत चंगे; पनरमो जिण अस्तांग सुण्या, समवाया अंगे, नमीसर सोलम नाम लह्यो, सदुगुरुने संगे; सतरम अनिल जिणेसरु, मुक्तिवधु सिणगार, अठारमनाथ जिणेसरु, जस गुणनो नंमार ॥ ३ ॥ कृतारथ कृतारथ जिनपति, सयल अरथ नवियणना सार्या, जिणेसर जिननी सेव करी, ते पार उतार्या; सुधमति करणें सुधमतें, आराधो एक चित्त, सिव करि सिवसुख करण सदा, मुज आपो सुहमत्त; स्यंदन स्यंदन सिवपथेंए, पहोंचाम्ने सुख ठाण, संप्रति जिण चोवीसमो, संप्रतिवालो आण ॥ ४ ॥ ए अतित चोवीसीतणा, जिणवर चोवीस, काल अनंते अनंत हुआ, प्रणमुं निसदीस; सयल करम खय करिय सिरु, थया बहु गुणवंत, नांण दंसण सुख वीर्यच्यार,तिहांछे अनंत; इम अतीत जिनवर वंदशुंए, आणी मन आणंद, श्री समरचंद्र समरे सदा,जसगुरु पार्श्वचंद्र सूरिंद्र ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री एकादशीपर्व स्तुतिः ॥

एकारं कालचक्रं नहि भवति कदा द्वादशारं प्रसिद्धं,
सूर्येनोप्येकचक्रं वहति च गगने बहुरं लोकरूढ्या ॥
यद्यानं मार्गयोग्यं घनसदरमिदं दृश्यते सिद्धिचक्रं,
चित्रं सद्धर्म्म मुक्ति प्रवहण मनघं प्रापयत्येककारं ॥१॥
नाभेयाजित वासुपूज्य सुविधि श्रेयांश पद्मप्रभान्,
श्रीशांति शशिसंभवार सुमतीन्नेमिं नमिं शीतलं;
धर्मं पार्श्व सुपार्श्व वीर विमलानंतां स्तथा सुव्रतं,
कुंथुं मल्ल्यभिनंदना स्तुवे जिनानेताँश्चतुर्विंशतिं ॥२॥
जंबूद्वीप विदेह पुष्करवरद्वीपार्द्ध सद्धातकी,
खंम्डेषु प्रवरेषु ये च भरतेष्वैरावतेषु स्थिताः ॥
नम्राखंम्डल मंम्डली मधुकर श्रेणीभरासेविता,
स्तेषां तीर्थकृतां मुदे भवतु नः पादारविंदद्वयो ॥ ३॥
श्रेयः संकेतशाला सुगुणपरिमलैर्जयमंदारमाला,
भिन्नव्या मोहजाला प्रमदभरसरः पूरणे मेघमाला ॥
नम्रः श्रीमन्मराला वितरणकलयानिर्जितस्वर्गिशाला,
त्वन्मूर्त्तिः श्रीविशाला विदलतुदुरितं नंदितद्रोणिपाला॥४

॥ अथ श्री चिंतामणीपार्श्वनाथ स्तुति ॥

श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं, महा मोह भूभाय नासे दिनेशं, नतंनाकिभिर्भक्तिभिर्जीवनाथं, स्तुवे देव चिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महानाग पारींद्र वै-

श्वानराहि, प्रवातां बुद्धिरोग मंदानदाहं, जितानेकपद्मं त्रिविश्वैक नाथं ॥ स्तुवे देव० ॥ २ ॥ क्षमापाश्वसेनस्य वंशेऽवतंसं, हृतक्रोधशत्रुं च लक्ष्मीनिवासं, जनांजोजखंम स्फुट घसनाथं ॥ स्तुवे देव० ॥ ३ ॥ सतां मोक्षपद्मा प्रदानैकहेतुं, महाकृछ्र विछेदने धूमकेतुं, कर्मेंदीवराछीननागांकनाथं ॥ स्तुवे देव० ॥ ४ ॥ संनीरांबुदश्याम शिष्टांगकांतिं, सुविस्तारिता विष्टपाशेषशांतिं, गतान्यून दोषं वरं मुक्तिनाथं ॥ स्तुवे देव० ॥ ५ ॥ नरेंद्रादिवंद्यं सदा लब्धयोगं, निशारत्नकप्राननं त्यक्तशोकं, कृपापात्रजनं विश्वदेवाधिनाथं ॥ स्तुवे देव० ॥६॥ जगत्तारकं दायकं सज्जनानां, श्रियं वांछितार्थापकं निर्द्धनानां, सुरम्यास्यरुङ्निर्ज्जितात्राधिनाथं॥ स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कषायाग्नि संतर्पणे वारिदात्रं, जरा भीरु मातंग पंचास्य शोत्रं, विदुष्टाष्टकर्म्मोरगे पत्रिनाथं ॥स्तुवे देव० ॥ ८ ॥ इत्येवं श्रीमद्वीर चंद्रशिशुना मब्रकचंद्रेण ॥ जयतु चिरं नूतः, पार्श्वजिनवरो विजितमदरागः ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ स्तुति ॥

वृषभतुल्यगतिं वृषदं सदा, व्यजितदर्पकदर्पकभेदकं, अमितशंभवनीति विवर्जितं, जिनमहं प्रणमामि सुशीतलं ॥ १ ॥ दृढरथाख्यकुलागजिनंदनं, सुमति

धाम विचक्षण पुंगवं, भवि विनिर्जित पद्मप्रभं वरं॥ जिनमहं० ॥ २ ॥ यमसुपार्श्व विभूषित विग्रहं, विशद चंद्रप्रभाननबंधुरं, सुविधिरंजित भव्य जनव्रजं ॥ जिनमहं० ॥ ३ ॥ विबुध मोदक शीतल वाग्भरं, सकल श्रेयसि कामघटोपमं, सुवसुपूज्यपदं शिवदायकं ॥ जिन० ॥ ४ ॥ विमल नीरजपत्रविलोचनं, गृहमनंत गुणस्य कृपापरं, सदय धर्म्म प्रवृत्ति प्ररूपकं ॥ जिन० ॥ ५ ॥ जगति शांति वितान निपादकं, धृतशमं किलकुस्थमनिंदितं, विगतदोषमरं भवि नौनिभं ॥ जिन० ॥ ६ ॥ युगकषायजयप्रति मल्लभं, कनकवर्णधरं मुनिसुव्रतं, नमत दानव मानव राजितं ॥ जिन० ॥ ७ ॥ वितत धर्म्म रथांगक नेमिकं, निखिल विष्टप पार्श्वमदूषणं, सबल मोह विनाशन वीरकं ॥ जिन० ॥ ८ ॥ इति स्तुतः श्री जिनशीतलाख्यः, स्थितः पुरेरायधनाभिधाने, श्री वीरचंद्रस्य मलूकचंद्र, नाम्ना विनेयेनविशां श्रियेस्तात्॥९

॥ अथ श्री शांतिनाथनी स्तुति ॥

भू भामिनी भूषणतां दधाने, पुरे वरे रत्न पुराभिधाने, सुरासुरैरर्चितांघ्रि सेवं, श्री शांतिनाथं प्रणमामि देवं ॥ १ ॥ येनाग्रमेतं सततं भजंति, ते रत्न भूतामनुजा भवंति, सत्यार्थता तैर्निवसद्भिरंत, र्युक्तं पुरस्यास्य वदंति संतः ॥ २॥ ज्योतिर्मयी ते प्रतिमाप्रधाना,

मालोक्यजव्या ज्ञुविसावधानाः, तत्किंचनज्योतिरहो स्पृशंति, यस्मात्तमांसि स्वयमुत्रसंति ॥ ३॥ जयायजूपानहि बद्धजावाः, खलानखेलंत्यशुजस्वजावाः, जवंतिजूताज्ञुवि निःप्रजावाः, स्फुरंतिनैवानलनीरदावाः ॥ ४ ॥ रोगाः पुरोगानवसंतिदर्पाः पतंति चौराश्वरद्याः ससर्पाः, त्वन्नाम मंत्र जपतां नराणा, मंगे लगंत्येवनयोधवाणाः ॥ ५ ॥ निशम्यनामापितव प्रकर्ष, मस्मादृशां देवजगामहर्षः, निजालिते च त्वयि वीतखेदः, सक्रापिमातातदहं नवेद ॥ ६ ॥ न हीयतेकिंचन तापदोषे, चैत्येस्थितस्येति जनप्रघोषे, जनार्जितं पापमुपैतिसादमेकांतवादस्तदसूपपादः ॥ ७ ॥ कालः कलिस्तेप्रकट प्रजाव, विशालजालेसुकृतस्वजावः, धारागृहं किंनहि निर्विकल्पं, ग्रीष्मं विधत्ते शिशिरर्तुकल्पं ॥ ८ ॥ श्रीधामरत्न पुरनामक सन्निवेश, शृंगारहारचरणानतनिर्जरेश, श्रीशांतिनाथ मम समंतमेतदेव, यद्दर्शनं तव लन्नेय सदैव देव ॥ए॥

॥ अथ श्री ज्ञान स्तुति ॥

जयति कामितपूर्त्ति सूरडुमः, सुरनरोरगनाथ नतक्रमः ॥ कुशलपद्मविकाश दिनेश्वरः, सुमतिपारगतः परमेश्वरः ॥ १ ॥ जाताः पंच मतिश्रुतावधिमनः कैवल्य पुत्राः प्रज्ञो, स्तन्मध्ये श्रुतनंदनो जगवता संस्थापितः स्वपदे ॥ अंगोपांगयुतश्च पुस्तकगजाध्यारोह लब्धो-

दयः, सिद्धातान्निघमूपनिर्गणधरामात्यश्चिरं नंदतात् ॥ २ ॥ विदधदिह्यदाज्ञां निर्वृतौ शंमणीनां, सुखनिरतनुतानो नुत्तमास्तेमहांतः, ददतु विपुलभद्र्दं द्राग् जिनेंद्राः श्रियंस्वः, सुखनिरतनुतानोनुत्तमास्तेमहांतः ॥ ३ ॥ कृतसुमतिबलर्द्धिध्वस्तरुग्मृत्युदोषं, परमम्रृतसमानं मानसंतापकांतं ॥ प्रतिदद रुचिकृत्वाशासनं जैनचंद्रं, परमम्रृतसमानं मानसंतापकांतं ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री वीसविहरमाणजिन स्तुति ॥

श्री सीमंधर नमुं पाय, जगजीव दयाकर, युगमंधर जिनराय अछे, सेवकजन सुखकर; बाहु जिणेसर बाहुबलें, वेरी सवि जीता, श्री सुबाहुजिन नरवरिंद, परषदें विदीता ॥ १ ॥ जंबूदीवें चार जिण, पूरव अवर विदेह, दोई दोई अहनिसि ध्याइयें, सुख संपजें देह; श्री संजात जिणवर नमेसु, भवसागर तारण, स्वयंप्रभु प्रभुनो स्वरूप, भवदुख निवारण ॥ २ ॥ श्री रिसहानन ऋषभ सरिस, सीलंगरथ धारक, अनंतविरियनो बल अनंत, मोह मल्ल निवारक; श्री सूरप्रभ सूरजिम, लोकालोक प्रकास, करे हरे संसय सदा, नमतां पूरे आस ॥ ३ ॥ श्री विशालना गुण विशाल, ते अछे अनंत, वज्रधर तपबलबले कीधो भव अंत; चंद्रानन जिण चंद सरिस, सीतल सुखकारी, धायइखंडे पुरव पश्चिम, चउ

चल मन धारी; हिवे पुखरर्दवि थवूं ए चंद्रबाहु जिन नाम, श्री भुजंग भव भय हरे त्रिभुवन करे प्रणाम ॥ ४ ॥ ईश्वरजिननो शरण करियें परमेश्वरध्याय, नेमि प्रभुनो चरण नमियें दुख दूरें जाय; वीरसेन बावीस पंरिसह, सेना सवि जीपे, तिर्थंकर महाभद्र भद्रकर, विषये न लीपे; देवयश देव सकल अबे ए, इंद्रादिकनो देव, अजित विरिय जिणवरतणी, करिये नित पयसेव ॥ ५ ॥ जिणवर कुंथु अर अंतरे, जन्म पाम्या सवि जिणवर, गृहवासें वर्षा पुव लक्क, त्यामी पछे सुखकर; संयम मल्लि मुनिसुव्रत वचें, लेई पाली निर्मल, कर्म खपावी च्यार सबल, ग्यान पाम्या केवल; पंच धनुष शत हेमतनु, पूरे मनह जगीस, वर्त्तमान जिन संथवे श्री समरचंद्र जगदीस ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवपदमहात्म स्तुति ॥

उपन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पामि हेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो नमो होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमो नमो णंतचउक्कयाणं ॥ सूरिण दूरिकिय कुग्गहाणं, नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥ २ ॥ सुत्तत्र विज्ञारण तप्पराणं, नमो नमो वायग कुंजराणं॥ साहूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥ ३ ॥ जिणुत्त-

तत्ते रुइलक्कणस्स, नमो नमो निम्मल दंसणस्स ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥ आराहिया खंमिय सक्कियस्स, नमो नमो संयम वीरियस्स ॥ कम्मडुमुम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोन्नरस्स ॥ ५ ॥ इय नवपय सिद्धं लद्धिविज्जा संमिद्धं, पयम्मियसरवग्गं ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणि पीढावयारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री जिनेंद्र स्तुति ॥

गुनह गंजीर अचलजिम धीर कर्म्मरिपुवीर नवजल तारी, वमी गृहवास तजी उद्दास नजी वनवास नए अनगारी ॥ मनमथ मान मोरिकर ध्यान पाय सुन्नग्यान बहुत सुककारी, समर अरिहंत नजित नगवंत मुक्तिवरकंत वृषन्नपदधारी ॥ १ ॥ अजित जिनराय सुरासुरपाय नमत बहुनाय गुणाकर जाणी, सुधाकर वृष्टि करत सुखसृष्टि सदा समदृष्टि कहत मुखबानी ॥ सुनत संतोष करत धर्म पोष हरत मनरोष धरत जे प्राणी, समरसिंघदेव करहु तसु सेव जोम कर वेव नाव मन आणी ॥ २ ॥ संनव जगदीस नमुं निसदीस नक्ति सुजगीस मुक्तिपंथ गामी, मानमातंग दमीउत्तंग नये निरन्नंग मिथ्या मत नामी ॥ सफल मुफ नयन

देखी प्रभु वयन अभिनव मयन रूपसम पामी परं तुह्य चरण जोर जरा मरण जवभ्रयहरण करहु मोश स्वामी ॥ ३ ॥ अभिनंदननाथ परम सुख साथ जोर दोउं हाथ रंगचित्त लावुं, बारजि जमाय पासफुनिआय कहत्त निम्माय ज्ञाग्यवसि पाउं ॥ रस नमुह एक बहुरन विवेक तुम गुन जेक केम हुं गाऊं, भ्रमणकऊमूर कर्मऊनमूर रहे प्रभु दूर जावधर ध्यावुं ॥ ४ ॥

॥ स्तंभनाधीश श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

श्रीवामेयं विधुममवदनं, वंदे मंगलकमलासदनं; निर्जितदुर्मदमदनं, अश्वसेनकुलपंकजसूरं; दुःखमहारिपुपरिजवसूरं, विशदसकलगुणपूरं ॥ १ ॥ अतुलबलं सुरगिरिसमधीरं, पापरजोजरहरणसमीरं, प्राप्तजवोदधितीरं, कर्मधराधारणशुजमीरं; दशन पंक्तिजितनिर्मलहीरं, क्रोधदवानलनीरं ॥ २ ॥ मानकरटिविघटनपंचास्यं, दूरोत्सारितमोहनहास्यं, अमरवधूकृतलास्यं, नित्यं सुरनरपूजितचरणं, रक्तोत्पलकोमलकरचरणं, पालितनिर्मलचरणं ॥ ३ ॥ दुःखितजगती जनगणसरणं, वारितजन्मजराजयमरणं, मन ईहितसुखकरणं, विदितनिखिलजुवनत्रयसारं, प्रजावती हृदयस्थलहारं, बोधिबीजदातारं ॥ ४ ॥ नित्यं धरणनागपतिमहितं, निजशंसापरनिंदारहितं, केवलदर्शनसहितं, सुरतरुचिंतामणयवतारं,

कामगवीव समीहितकारं, सेवकजनताधारं ॥ ५ ॥ निजतनुरूपकांतिजितमारं, सुखमूरुहसेचनजलधारं, स्तंननपुरश्रृंगारं, निःकृंतितमायावनगहनं, दुःकृतदारुमहानरदहनं, समतागुणशुनवनं ॥ ६ ॥ दूरीकृतविकटप्रत्यूहं, विधुरितबहुनवतृष्णाव्यूहं, रक्षितसत्वसमूहं, प्रकटितधर्म्म सत्वहितार्थं, ज्ञानकलाविदिताखिलमर्थं, साधितचुर्यमहार्थं ॥ ७ ॥ दहनवदननिःकासितनागं, दर्शितपंचनमस्कृतिरागं लंनितसुरगतिनागं, निजगतिजितमानसिकमरालं, सततयोगपराजितकालं, महिमामोदविशालं ॥ ८ ॥ त्रिनुवनवत्सलममलममोहं, लोकोत्तरशोनासंदोहं, त्यक्तसदाव्यामोहं, मदनमहानटलंगत्यक्तं, परमानंदसुखावहदक्षं, प्रत्यक्षीकृतलक्षं ॥ ए ॥ नीलकमलकज्जलसमदेहं, निःकंदितपृबकर्मदेहं, सन्नक्षणगणगेहं, अणिमाद्यष्टसिद्धिविस्तारं, तीर्थविनुं श्री पार्श्वमुदारं, सेवे वारं वारं ॥ १० ॥ अनुष्टुपबंदः ॥ इत्थं श्री स्तंनः पार्श्वः, स्तंनतीर्थाधिपः सदा ॥ संस्तुतोब्रह्मणा नूयात्, नव्यनां नव्यसौख्यदः ॥ ११ इति ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरपार्श्वनाथनी स्तुति ॥

समस्तकल्याणनिधानकोशं, वामांगकुक्ष्ये कमरालहंसं; अलंकृतेदवाकुविशालवंशं, वंदे सदा संखपुरावतंसं ॥ १ ॥ आराधितः श्रीक्रुषनस्य काले, विद्याधरेंद्रेण

नमीश्वरेण; पूर्वं हि वैताढ्यगिरौ जिनं तं ॥ वंदे० ॥
॥ २ ॥ यः पूजितः पन्नगनायकेन, पाताल भूमौ
भवनाधिपेन; कालं कियंतं जिननायकं तं ॥ वंदे० ॥
॥ ३ ॥ यदा जरासंधजयोद्यतेन, कृष्णेन नेमीश्वर शा-
सितेन; पातालतो बिंबमिदं तदानी,-मानीय संस्था-
पितमेव तीर्थे ॥ ४ ॥ जरार्त्तभूतं स्वबलं विलोक्य, यत्-
स्नात्रपीयूषजलेन सिक्तं; सज्जीकृतं तत्क्षणमेव सर्वं
॥ वंदे० ॥ ५ ॥ पंचाशदादौ किल पंचयुक्ते, एकादशे
वर्षशतव्यतीते; निवेशितः सज्जनश्रेष्ठिना त्वं ॥ वंदे०
॥ ६ ॥ प्रभूतरोगेण विनष्टदेहे, आराध्य यं दूर्ज्जनश-
ल्यदेवः, चकार देहं मदनस्य तुल्यं ॥ वंदे० ॥७॥ का-
ले कलौ कामगवी प्रनष्टा, चिंतामणी कल्पतरुश्च नष्टः,
धत्ते ह्यसौ तत् प्रतीहकत्वं ॥ वंदे० ॥ ८ ॥ राज्यार्थिनां
राज्यसुखप्रदाता, सुतार्थिनां संततिदायकोभूत् नेत्रा-
र्थिनां लोचनदः स नित्यं ॥ वंदे० ॥ ९ ॥ इति स्तु-
तः श्री मुनिचंद्रसूरिणा, कृपापरः संखपुरावतारः; प्रबंध-
कादौ प्रणतांगभाजां, प्रयछ नित्यं निजपादसेवां ॥१०॥
इति श्री संखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथनी थुइ ॥

॥ पणिपरे रिषभ अजीत संभवजिन.-ए देशी ॥

सुर असुरेसर नर विद्याधर, आवे जिनवर पासे-

जी; त्रण प्रदक्षिणा देइ वांदे, मागे सीवसुख वासोजी ॥ १ ॥ एलजपुर मुखमंम्न स्वामि, नमीये ते शीरनामीजी; बाळब्रह्मचारी नेमिजिन मलीजे भव संकट सवि टलीजेजी ॥ २ ॥ समुद्रविजय शीवादेवी नंदन, तुम गुण न लहुं पारोजी; राग राज राजेमति परिहरी, लीधो संयमभारोजी ॥ ३ ॥ जनम जरा भय मरण निवारी, केवलज्ञाने दीपेजी; अंतरंग वैरी मद मछर, हेला मात्रे जीपेजी ॥ ४ ॥ दरशन ज्ञान, अनंता जिनचा, सुख अनंत सुहावेजी; सकल कर्मनो क्षय करीने, मुक्तिवधु ते पावेजी ॥ ५ ॥ नाम ठवण द्रव्य भाव निक्षेपा, जे प्रभु गुण आराधेजी; समरचंद्रसूरी शिष्यवाचक शिवचंद्र शीवसुख मागेजी ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

सकलमार सुरतरु जगजाणं, जसु जसवास जग्गत परिमाणं; त्रेवीसमो जिन मुगट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मनरंगं ॥१॥ छंदजाति ॥ जे जिन पति मन रंगं, अकल अजंगं, तेज तुरंगं नीलंगं ! सवि सोजासंगं, दग्ध अनंगं, सीस भुजंगं चतुरंगं ॥ बहु पुन्य प्रसंगं, नित उछरंगं, नवनव रंगं नारंगं। कीरति जलगंगं, देस कुरंगं, सुरनर अंगं सारंगं ॥२॥ सारंगावक्त्रं, पुन्य पवित्रं, रुचिर चरित्रं जीवीत्रं । तेजोजित मित्रं, पंकज पत्रं,

निरमल नेत्रं सावित्रं ॥ जग्गजीवन मित्रं, त्रंसत शत्रं, मित्रामित्रं मावित्रं । विश्व त्रय नेत्रं, चामर छत्रं, सीस धरित्रं पावित्रं ॥ ३ ॥ पावित्रा धरणं, मुगुटाजरणं, त्रिभुवन सरणं आचरणं । सुखर चित चरणं, सिवसुख करणं, दालिद्र हरणं माचरणं ॥ गोमृतझरणं, मनमथ मरणं, भवजल तरणं उध्धरणं । सवि संपत भरणं, अघसंहरणं, वरणावरणं आदरणं ॥ ४ ॥ आदरणा पालं, झाकझमालं, नित भूपालं अजूआलं । अष्टमी शशी भालं, देवदयालं, चेतन चालं सुकुमालं ॥ त्रिभुवन रखवालं, काल डुकालं, महाविकरालं भय टालं । शृंगार रसालं, महि केमालं, हृदय विशालं भूपालं ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ अकल रुप उदार सार, शिव संपत कारण; रोग सोग संताप, दुःख डुरित निवारण; चिहुं दिस आण अखंन्ड, चंद तप तेज दिणंद; अमर अपछर कोन्द, गायें जस नमे नरिंद । श्री संखेश्वर सुरमणि पाय अधिक मंगल निलो; मुनिश्री मेघराज कहे जिनवर जयो, श्री पार्श्वनाथ त्रिभुवन तिलो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरिवरमंन्डन आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ राग गीति ॥

श्री शत्रुंजयगिरिवर–शिरस्थितमादिमं जिनं नौमि ॥ सेवकजनहितकारं, तारं भवभीतिहर्तारम् ॥ १ ॥

अकलं विकलं सरलं, सुगुणं विगुणं भवाब्धिपोतसमं॥ सागरवद्गंभीरं, धीरं सुरशैलवत् वंदे ॥ २ ॥ मोहगजे हरिकल्प,-मनल्पबुद्धिं सुराधिपैः सेव्यम् ॥ पंकजवन्निर्लेपं, कामजले हेमवर्णाभम् ॥ ३ ॥ श्रीमरुदेव्यास्तनयं, त्रिभुवनतिलकं जिनेश्वरं सूरम्॥ भुवनप्रकाशकरणं, मोहतमोहरणमतिदक्षम् ॥ ४ ॥ भव्यजनानां चक्षुः, कर्माविने महाकुठारोयम् ॥ निर्विघ्नाशुभाद्रिखंभन,-वज्रसमानं सदा जयतु ॥ ५ ॥ पंचधनुः शतदेहो, वृषलंछन एष राजते नित्यम्॥ सेवकजनसुखकर्ता, ददातु सिद्धिं मुदा तुष्टः ॥६॥ (इन्द्रवज्रावृत्त) भाग्योदये पादयुगं त्वदीयं, प्राप्तं मया चाद्य महोद्यमेन ॥ श्री पार्श्वचंद्राभिधसूरिशिष्यः, स्तुतिं चकारेति सदादरेण ॥७॥ इति॥

॥ श्री कलिकुंडपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ शिखरिणीवृत्तं ॥

नमामि श्री पार्श्वं कलिगिरिशिरःकुंडनिकट,-प्रदेशावस्थानाधिगतकलिकुंडाभिधमहम् ॥ तदासंनायातक्षितिपबहुमानातिशयतः, स्वयं प्रादुर्भूतप्रतिममखिलोपद्रवहरम् ॥ १ ॥ त्वमर्च्यस्त्वं ध्येयस्त्वमनिशमुपास्यः सुकृतिनां, त्वमानम्यः सम्यक् कमिह बहुना त्वं च शरणम् ॥ त्वमेवासित्राता जगति कलिकुंडत्वदपरो, न कश्चित् क्षुद्रोपद्रवहरणदक्षः क्षम (क्षित) भयः ॥ २ ॥

॥ २ ॥ सकारांतं बीजाक्षरमथ(थ)नकाराग्रिमयुतं, कृतो-र्ध्वाधोयांतं द्विजपतिकलाबिंदुकलितम् ॥ निविष्टांतर्नामप्रणवपुटकोटीपरिगतं, चतुर्भिः संभिन्नं निशितसुरराजप्रहरणैः ॥ ३ ॥ अधोवज्रस्याग्रात्परिवृतमकारादिभिरपि, द्विरष्टाभिर्वर्णैरिह इति चरमैर्दक्षिणगमात् ॥ तदित्थं संपूर्णं गुरुजनगिरा दोषहरणं, परिज्ञानं तत्वं जयति कलिकुंडाख्यमखिलम् ॥ ४ ॥ पवित्रे पात्रे च स्फुरदमलसौराष्ट्रकमये, शुचिश्रीखंडेन प्रगुरुघनसारान्यगुणिना ॥ त्रिमुष्टिप्रामाण्यैः कुशसहितदर्भैर्विलिखितं, क्षणादेतत्तत्त्वं भुवि विजयते स्वास्थ्यजनकम् ॥ ५ ॥ अशक्तं शाकिन्या शिरसि निहितं शंकुशकलं, कृतं लीलामात्रान्निखिलपरविद्याविदलनम् ॥ विशीर्णा चेदानीं जगति ननु दाहज्वरकथा, पुरः साक्षाद् दृष्टे जयिति कलिकुंडे भगवति ॥ ६ ॥ प्रचंडो दंडोयं सपदि कलिकुंडस्य सहसा, भवेद्भूतादीनां प्रकटमिह दंडो निरवधिः ॥ असावेव त्राणं सपदि नियतं मांत्रिकतते,-रपि क्षुद्रात्तीयाः क्वचिदपि कथंचित् विधिवशात् ॥ ७ ॥ इतिश्रीमत् पार्श्वप्रभुरखिलकल्याणभवनं, समुद्रो विद्यानामतिशयवतीनां निरुपमः ॥ स्थितः सिद्धस्थाने महति मुनिचंद्रप्रकटितः, स्फुरन् मंत्रात्मानः शमयतु समग्रं भवभयम् ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री सुपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

वंदे मंम्पमंम्न,-मनंतविज्ञानमद्भुतगुणौघम् ॥ श्रीमत्सुपार्श्वजिनवर,-मानंदविधायकं भविनाम् ॥ १ ॥ (त्रोटकवृत्तं) भविनां मन इहित सौख्यकरं, करुणालसबोधनबरुरुचिं, रुचिरांगमनंगविकारहरं, हरकेशवदेवविशिष्टगुणम् ॥ २ ॥ गुणरत्नसमुद्भमसुद्रशिवं, शिवसाधकधर्मविवृद्धिपरं ॥ परदत्तसमामितदानभरं, भरतादिविम्रीशगणैर्विनुतम् ॥ ३ ॥ नुतमिन्द्रवरैः कमलांकमुखं, मुखकान्तिविराजितमादिविधुम् ॥ विधुतागुणगौरवलब्धसुखं, सुखलालितसुंदरशीलतरुम् ॥ ४ ॥ तरुणारुणदीप्तिसमानतनुं, तनुमानमिदं शतचापयुगम् ॥ युगकोटियशोत्तरगेयगुणं, गुणलुब्धजनाखिनिषेव्यपदम् ॥ ५ ॥ पदपंकजपूजकदुःखहरं, हरवाहनजातिविशिष्टबलम् ॥ बलवद्रिपुराशिविनाशपटुं, पटुधर्मकथाकथनोद्यमिनम् ॥ ६ ॥ दमिनामतिसुंदरवृत्तविदं, विदयारसलीनमतर्क्यमुदम् ॥ मुदनाहतमानवहर्षकरं, करकोमलताजितसंवरजम् ॥ ७ ॥ रजनीकरमंम्लपूर्णकलं, कलहंसवदुज्वलकीर्तिधरम् ॥ धरणीधरधीरगुणप्रवरं, वरनिर्जरवृन्दवदान्यजिनम् ॥ ८ ॥ जिनराजमनाविलसत्वशुभं, शुभभावनिदर्शनभूतहितम् ॥ हितदायकमात्मगुणैकनिधिं, निधिदानसमर्थमनंततरम् ॥ ९ ॥ तरणीन्द्रनतं

सुखदं विजयं, जयसूदरभेदंनवभ्रममम् ॥ समतारसरंजितभव्यजनं, जनतापहरं प्रणमामि सदा ॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडितवृत्तं) इत्थं मंम्मपमूधरे जिनवरः स सौख्ययुग् ब्रह्मणा, भक्त्या नित्यममन्दभावमहितो गीर्वाणवाएया स्तुतः ॥ पृथ्वीसूनुरसौ प्रतिष्टतनुजो लोकोत्तरख्यातिमान्, देयादीप्सितसिद्धिमद्भुततरामाज्ञापराणां मुदा ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शान्तिजिन स्तुतिः ॥

दंतं पसंतं महिमानिसंतं, खंतं सुकंतं च अणंतकित्तिं ॥ विसुद्धचित्तं सुहदं समस्सा–पएहिं संतिं थुणिमो जिणिंदं ॥ १ ॥ संती जिणंदो चइऊण रज्जं, पवज्जमादाय खवित्तु कम्मं ॥ नाणी भवित्ता भवएसमाह, असंखयं जीवियमाप्पमाए ॥ २ ॥ लनित्तु दुल्लंभमणुस्स जम्मं, तुज्झे लहु इवह सिद्धिसम्मं ॥ संचेहमासेवह संति पाए, जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा ॥३॥ हत्थे गहीऊणय खंतिखग्गं, मोहाइए कम्मरिउजिणित्ता ॥ संतीसरो लक्ष्जसो जयंमि, तेणे जहा संधिमुहे गहीए ॥४॥ सव्वेसि जीवाण तुमं समत्रो, गम्भाइदुक्खागमपाम्मंमि ॥संतिस्स दप्पं पकरेह एयं, संसारमावन्न परस्सअट्ठा ॥५॥ तिलोयनाहे निववित्ससेणा, चिरं गए मत्तगए गएण संतीसरे काउमणब्भलेसं, वित्तेणत्ताणं न लभे प-

मत्तो ॥ ६ ॥ बुद्धाजत्ते जागरियं च बुद्धं, तित्थंकरा सुव्वय जागरंति ॥ संतीतत्ते केवलनाणजाण, सुत्तेसुयावि पमिबुद्धजीवी ॥ ७ ॥ जालनरे वरनयरे, पयमित्ते सव्वनवलोयाणं ॥ संतिकरो मंतिजिणो थुणित्ते पासचंद सूरिहिं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभादिजिन स्तुतिः ॥

॥ स्रग्धरावृत्तम् ॥

श्रीनाभेयःप्रदीपःसुचिररुचिररुचिःसर्वदा सद्दशाव्यः, सस्नेहो ध्वान्तहर्ता जनजनितसुखः कामितार्थप्रदाता ॥ पूज्यःक्ष्मापालमुख्यैरिह सकलजनैर्मंगलानां निवासः, सत्पात्राधारभूतस्त्रिभुवनभुवने दीप्यमानः श्रियेस्तात् ॥१॥ (शार्दूलविक्रीमितवृत्तम्) अश्रांतं विभूतानि पंच[1] नियतं त्यक्तानि [2]पंचौजसा, धैर्यात्पंच[3] जितानि [4]पंचभुवने यैर्भूषयामासिरे ॥ [5]अष्टानां [6]रिपवोष्टभिर्विरहिता [7]भान्तोष्टभिश्चाष्टभि[8],-र्युक्तास्तेप्यजितादिका जिनवराः कुर्वन्तु सौख्यं सताम् ॥ २ ॥ सर्वाशावदनं मरीचिनिचयै–रुद्योतयन् संततं, सद्वृत्तः सुतरां तमोपहरणे दक्षःसतां सम्मतः ॥ दोषाछेदकरः समस्तजनतानेत्राब्जसंजीवनं, श्रीवीरो दिवसेश्वरो विजयतां चित्रं न चंद्रःक्वचित् ॥ ३ ॥ (स्रग्धरावृत्तम्) पाथोदः पंकहेतुर्निधिरपि पयसां

---

१ व्रतानि, २ प्रमादानि, ३ इन्द्रियाणि, ४ ज्ञानानि, ५ कर्मणाम्, ६ मदस्थानैः, ७ प्रातिहार्यैः, ८ मंगलैः पूजाभेदैर्वा.

सर्वतःद्वारखानि, स्निग्धाशुभ्रंमरोची रजनिपरिवृढो जाड्यपात्रं नितांतम् ॥ देवाद्रिः कूटगेहं सुरतरुनिकरः स्थावरत्वेन दुष्टः स्वामी श्री गौतमस्तन्निखिलगुणनिधिः कीर्त्यते केन तुल्यः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री शत्रुंजयमंमन आदिनाथ स्तुतिः ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

पूर्णानंदमयं महोदयमयं कैवल्यचिद्दृग्मयं, रूपातीतमयं स्वरुपरमणं स्वाभाविकीश्रीमयम् ॥ ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं, श्री सिद्धाचलतीर्थराजमनघं वंदेहमादीश्वरम् ॥१॥ (इंद्रवज्रावृत्तम्)॥ श्रीमद्युगादीश्वर-मात्म-रूपं, योगींद्रगम्यं विमलाद्रिसंस्थम् ॥ सद्ज्ञानसद्दृष्टि-सुदृष्टलोकं, श्रीनाभिसूनुं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥ (उपजातिवृत्तम्)॥ राजादनाधस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोजपीठम् ॥ देवेंद्रवंद्यं नरराजपूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सहस्रकूटे जिनराजमूर्तीः॥ सौम्याकृतीः सिद्धतती भिभाश्च, शत्रुंजयस्थाः परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाच्च, विनिर्गतां श्री त्रिपदीमवाप्य ॥ यो द्वादशांगी विदधे गणेशः, स पुंडरीको जयतात् शिवाद्रौ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजयादि स्तुतिः ॥

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

चउद्दशाणं सयसंखगाणं, बावससहियाण गणाहिवाणम् ॥ सुपात्रआ जत्र विराजमाणा, सत्तुंजयं तं पणमामि निच्चम् ॥ १ ॥ चत्तठकम्मा परिणामरम्मा, लद्धप्पधम्मा सुगुणेहिं पुन्ना ॥ चत्तारिअठादस डुन्नि देवा, अठावए ताइं जिणाइं वंदे ॥ २ ॥ अणंत नाणी अणंत दंसिणो, अणंत सुक्काण अणंत वीरिणो ॥ वीसं जिणा जत्र सिवं पवन्ना, सम्मेयसेलं तमहं थुणामि ॥३॥ जत्रेव सिद्धो पढमो मुणिंदो. गणाहिवो पुंमरीयो विसिठो ॥ अणेग साहु परिवार संजुत्त, तं पुंमरीयाचलमंचयामि ॥४॥ (मालिनीवृत्तम्) ॥ विमलगिरिवतंसः सिद्धिगंगांबुहंसः, सकलसुखविधाता दर्शनज्ञानदाता ॥ प्रणतसुरनरेंद्रः केवलज्ञानचंद्रः, सृजतु मुदमुदारं नाभिजन्मा जिनेंद्रः ॥ ५ ॥ इति तीर्थस्तुतिः ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथजिन स्तुतिः ॥

(उपजातिवृत्त)

नमामि नेमिं नमतां नराणां, हिताथेदं दत्तवियुक्तिचित्तं ॥ ब्रह्मव्रतप्राप्तविशिष्टरेखं, तीर्थंकराणां जितमारवीरं ॥ १ समुद्रपूर्वो विजयो यदीय,–स्तातःशिवा यस्य सती सवित्री ॥ स शंखलक्ष्मा भ्रमरालिनीलः, पायादपायादशचापमानः ॥ २ ॥ विवाहकाले नितरा विरक्तो,

जीवासुसंज्ञत्रिविधिं समीक्ष्य ॥ राजीमती त्यागमसौ चकार, श्रीनेमिरङो च तपांसि तेपे ॥ ३ ॥ स्थित्वा स वेदाङ्कमितान्यहानि, छद्मस्थतायामथ नेमिनाथ ॥ समाससादोत्तमकेवलित्वं, प्रबोधयन् नृन् विजहार भूमौ ॥४॥ सर्वं सहस्रं शरदां यदायु,-स्ततः शिवश्रीरमणो बभूव॥ भूवह्निसिद्धादिगुणैरपारै,-र्युक्तः स सिद्धालयमध्युवास ॥ ५ ॥ बोधेन सामान्यविशेरुपा,-नाकारसाकारविशेषितेन ॥ समन्वितस्तेन च केवलिना, सिद्धः स सिद्धिं विदधातु नेमिः ॥ ६ ॥ श्रीनेमिः पार्श्वचंडेण, प्रणेमे जालपापुरे ॥ उल्लासरूपमत्यंतं, लेभे तत्पारितोषिकं॥७॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीनी स्तुतिः ॥

(वसंततिलकावृत्तम्)

सिद्धार्थभूपकुलपल्वलराजहंसं, देवासुरेंद्रमनुजेंद्रशिरोवतंसं ॥ शीतांशुगौरगुणराजिविराजमानं, भक्त्या स्तवीमि गिरिपावकवर्द्धमानं ॥ १ ॥ चामीकरप्रकरकांतिकलापगेहं, सिंहध्वजं सकलसप्तकहस्तदेहं ॥ भव्यांगिलोचनचकोरसुधांशुपानं ॥ भक्त्या० ॥ २ ॥ ध्यानानले हुतशुभाशुभकर्मकक्षं, सेवागतामरनरासुरकोटिलक्षं॥ कंदर्पदर्पदलनं जितमोहमानं ॥ भक्त्या० ॥ ३ ॥ वाणीसुधाशमितनिष्ठुरजंतुजातं, श्रेयःप्रदं द्रुतनिवारितशुभ्रपातं ॥ सिंहासने विमलकेवलचित्प्रधानं ॥ भक्त्या०

॥ ४ ॥ खेधर्मचक्रसुरचामरछत्रजाजं, केकिल्लिडंझनि-निनादलसत्समाजं ॥ मोहांधकारहरणे तरणेः समानं ॥ जक्त्या० ॥ ५ ॥ संसारनीरनिधितारणयानपात्रं, कारुण्यशांतरसपूरितपुण्यगात्रं ॥ षड्जीवकायनिरुपायदयानिधानं ॥ जक्त्या० ॥६॥ जानुप्रमाणसुरनिर्मितपुष्पवर्षं, दृष्ट्वानृलोकसुरलोककृतातिहर्षं ॥ संसारजारजरखिन्नशिवाध्वयानं ॥ जक्त्या० ॥ ७॥ मेरूपमे गिरपतांविहकल्पसालं, जूरिप्रजावजरदूरितदुष्टकालं ॥ त्रैलोक्यलोककमकल्पितसिद्धिदानं ॥ जक्त्या० ॥ ८ ॥ श्रीपावकाष्टकर्मीदं किल ये मनुष्याः, प्रातः पठंति हृदि वीरजिनं स्मरंतः ॥ तेषां तु याति कलिकष्टविनाशमाशु, संपद्यते सकलसौख्यरमाविलासः ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन स्तुति ॥

(उपजातिवृत्तं.)

सिद्धत्थभूपाल कुलावयंस, कुच्छिसरंमि तिसलाय हंस ॥ थुणे तवं ते छउमत्थकाले, जं निम्मियं वीरतए विसाले ॥ १ ॥ नवेमि सामी चउमासीयाइं, कयाइं छच्चेव छमासियाइं ॥ तत्तो परा बारस मासियाइं, बावत्तरी अद्धय मासियाइं ॥ २ ॥ एगं छमासं कयऊणमूणं, बीयं छमासं दिणपंचगोणं ॥ तिमासिया दो दुदिवड्ढमासा, दोइज्जमासा यछ्वे निरासा ॥ ३ ॥ जद्दा मद्दा-

जइय सवजद्दा, सोलोववासा पमिमातिजद्दा ॥ तो एग राइपमिमा जदारा, डुवालसे अठमजत्त सारा ॥ ४ ॥ एगूणतीसा हिय दोसयाइं, बठाणि दिस्का दिए संजुयाइं ॥ एगूणवन्ना तिसया दिणाणं, जिणंद जाया तुह पारणाणं ॥ ५ ॥ न निच्चजत्तं न चउब्जत्तं, कयं कयाइं न जलेण जुत्तं ॥ सव्वं तवे नाह तए समेणं, जग्गोवसग्गोरपरीसहेणं ॥ ६ ॥ एवं तवे बारसवब्बरीए, सढस्स मासे अ कए विहीए ॥ अंतोमुहुत्ताउं परंपमाउं न जस्स ते नाह कयाइं जाउं ॥ ७ ॥ इय गुरुतव तेउ सो तुमं नाणकेउ; जवणजणियसेउ, सवदेविंदगेउ ॥ चरमजिणथुणंतं, मं जवंमि जवंतं; नय परमपयंतं, जब सुक्कं अणंतं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सामान्यजिन स्तुतिः ॥

॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥

जक्तिथकी परमजाव धरी प्रजुने, निश्चे करी हृदःयमां न धर्या विजुने ॥ जेथी अचिंत्य परिताप वियोग पामुं, व्याक्षेप चित्तकिरिया फळथी विरामुं ॥ १ ॥ शब्दो कदी श्रवणमां तुम सांजळेला, पूज्यातणा चरण कोइ समे पूजेला ॥ देख्या हशे नजरथी कदी कोइ वेळा, एकाग्रचित्त शुजजाव न चिंतवेला ॥ २ ॥ स्वामी जिनेश करुणानिधि दीनबंधु, हे नाथ पूज्य परमेश्वर

तात सिन्धु ॥ गंभीर वीर अतिधीर महाप्रतापी, जो शांत दांत भगवंत अनंत व्यापी ॥ ३॥ नेत्रो सुकोमळ सुभव्य प्रकाशकारी, दृष्टिसुधारस सुरा निरखी तुमारी ॥ चाहे निरंतर सुधारस स्वाद लेवा, पीनार भक्त वचनामृत सुज्ञदेवा ॥ ४ ॥ वंदु त्रिलोक परिताप नीवारनारा, वंदु त्रिलोक परमेश्वर प्रीतिधारा ॥ वंदु जीनेंद्र भवसिंधु उतारनारा, वंदु जिनेश त्रविभुषण श्रेयकारा ॥५॥

॥ अथ श्री महावीर स्तुतिः ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

जगतकल्पना कल्पवृक्षोपमानं लसत्केवलज्ञानलक्ष्मीनिधानम् ॥ महानन्दशोभाकरं स्वर्णदेहं सदा श्री महावीरदेवं स्तुवेऽहम् ॥ १ ॥ तपोलब्धिसंप्राप्तसंसारपारं हतानेकदुर्वारभावारिवारम् ॥ शुभध्यानतेजोजितानङ्गदेहं, सदा श्री महावीरदेवं स्तुवेहम् ॥ २ ॥ सुराणामधीशैरलं सेव्यमानं, त्रिलोके भवं भूरिविस्तीर्णदानम् ॥ नमन्नाकिनागेन्द्रसंपूज्यदेहं, सदा श्रीमहावीरदेवं स्तुवेऽहम् ॥ ३ ॥ विषव्यालवेतालदोपैरजेयं, सदाभोगसौभाग्यभागैरमेयम् ॥ कृताशेषभव्यालिमाङ्गल्यगेहं, सदा श्री महावीरदेवं स्तुवेऽमम् ॥ ४ ॥ (इन्द्रवज्रावृत्तम्.) एवं महावीरजिनाधिराजं, भक्त्यानिशं ये भविनः स्तुवन्ति॥ कल्याणमालाकलितं त्रिलोके, ते शाश्वतं सौख्यभरं लभन्ते ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

जगन्मण्डले मध्यमालानिधाने, प्रधाने सुदेशेऽव-तीर्णः सुरदुः ॥ कृपाङ्कः स्थितो जालपादे पुरेऽस्मिन् मनोवांछितार्थप्रदः पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ प्रभुस्त्वं मया वीक्षितो भक्तिभाजाधुनालोचना नन्दकेयराजा ॥ विजेजीयसे तीर्थनाथः सुपाथ,-स्तमःपङ्कसंहारिणे शुद्धगाथः ॥ २ ॥ जिनाधीश ते मूर्ति रेषेन्दुरेखा, यशःशालिनी पन्नताशेषलेखा ॥ प्रमोदं विधत्तेऽनिशं नाथ चेत,-श्चकोरस्य मेऽत्यद्भुतं दृष्टमेतत् ॥ ३ ॥ प्रभुस्त्वं गुरुस्त्वं पिता त्वं त्वमम्बा, सखा त्वं सुबन्धुः शरण्यो वरेण्यः ॥ भवात्तारको वारकोऽमित्रभीते,-स्त्वमेव त्वमेव त्वमेव त्वमेव ॥४॥ जनोयं तवादेशवर्ती पुरस्थो, नियोज्य स्ततो नो वियोज्यः कदापि ॥ सदा किंकरस्ते प्रभो पार्श्वचन्द्रः, करोतीति विज्ञप्तिमेतां वितन्द्रः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ स्तुतिः ॥

(हरिगीत छंद.)

अष्टापदे श्री आदिजिनवर, वीर पावापुरी वरुं;
वासुपुज्य चंपानयरि सिद्धा, नेम रैवतगिरिवरुं ॥
समेतशिखरे विस जिनवर, मुक्ति पहोता मुनिवरुं;
चोविश जिनवर नित्य वंदु, समर संघे सुखकरुं ॥ १ ॥

॥ अथ स्तवनो ॥

॥ अथ श्री ऋषन्नदेव स्तवन ॥

जिनेशर मूरते मन मोह्युंरे, मन मोह्युं सयल दुःख खोयुं ॥ जिनेसर मूरते मन मोह्युंरे ॥ ए आंकणी ॥ जिन न्नेट्या मन हुलसाय, अति आनंद अंग न माय ॥ प्रन्नु ध्याता अखय पदपाय ॥ जिनेसर० ॥ १ ॥ प्रन्नु मूरति मोहनगारी. निरखंता लागे प्यारी; निज सेवकने हितकारी ॥ जिनेसर० ॥ २ ॥ निज आतम अनुन्नव शाखे, वचनामृतसम जिन न्नाखे; न्नवि सब मिल तेयोरस चाखे ॥ जिनेसर० ॥ ३ ॥ नव मोह विकलता जाय, सुध्ध समकीत अनुन्नव थाय; अगणीत पिणगणीत गणाय ॥ जिनेसर० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुणनुं धाम, दायक शिव वंछित काम; सेवो ऋसहजिनेश्वर स्वाम ॥ जिनेसर० ॥ ५ ॥ कलकत्ते मंमणदेवा, दुख दोहग दूर हरेवा; सुखसंपत्ति संघ करेवा ॥ जिनेसर० ॥ ६ ॥ श्री जिनप्रतिमानो आधार, होजो न्नवन्नव एह उदार; कहे श्री लब्धिचंद्रसूरि सार ॥ जिनेसर० ॥ ७ ॥

॥ अथ केसरीयाजीनुं स्तवन ॥

केसरीयाको दरिसन करणेकु आयो; हांरे मन

मेरो अति उलसायो ॥ केसरी० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ नाभिनरेसर वंश प्रकासक, माता मरुदेवी जायो; वृषभ लंछन धर चरणकमलमें, मनमधुकर लपटायो ॥ केसरी० ॥ २ ॥ क्षुधा परिषह सहके स्वामी, केवल पदवी पायो; हेत धरी माताने दीधो, दीन दयाल कहायो ॥ केसरी० ॥३॥ फुलमाल फल देइ साहिब, उंबर रोग गमायो; त्रिकरण शुद्ध कर पूजा करतां, लंकेसर सुख पायो ॥ केसरी० ॥ ४ ॥ कीरती मोटी सुणके आयो, मनमें हरख नरायो; मोहनी मूरति नयणे निरखी, हृदयकमल विकसायो ॥ केसरी० ॥ ५॥ कलियुगमे ए अनुपम तीरथ, सुरनर मुनिजन ध्यायो; परचा पूरे चिंता चूरे, नाम सदा सुखदायो ॥ केसरीया० ॥ ६ ॥ उंगणीससें चार फागुण मासे, सुदी बारस गुण गायो; संघ प्रतापे प्रभुकु नेटे, दिन दिन हर्ख सवायो ॥ केसरीया० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री शांतीनाथजीनुं स्तवन ॥

मोह्यो मुज मन तुम गुणें, श्री शांतिनाथ जिनरायारे; महीर करो मुज उपरे, लागुं लळी लळी पायारे ॥ मोह्यो० ॥ १ ॥ तुम नामामृत वेलमी, में पीधी निरधारोरे; नव नव संकट टाळजो, पातिक दूर निवारोरे ॥ मोह्यो० ॥ २ ॥ सेवक जाणी आपणो, तो कर क्युं

न संवाहोरे; तारोजी त्रिजुवन धणी, तारक साच कहावोरे ॥ मोह्यो० ॥ ३ ॥ तुम मुख चंद्रज पेखतां, मुज थायें उल्लासोरे; मो मुख एकज जीजमी, कही न सकुं जस तासोरे ॥ मोह्यो० ॥ ४ ॥ शांतिकरण तुं साहीबा, सेवकने सुखदातारे; प्रेमचंद्रने आपज्यो, अविचल सुखनी सातारे ॥ मोह्यो० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सांभळजो मुनि संजमरागी.—ए देशी ॥

मूल अनादि ज्ञान गुण अविहम, परिणामिक जव थाणेरे ॥ समकितपीठ सबल चिहुं पासे, मांड्यो खरे विनाणेरे ॥ १ ॥ आज जविकजन वंछितदायक, त्रिजुवन नायक वंदोरे ॥ सुमति जिणेसर अजिनव सुरतरु, देखी मन आणंदोरे ॥ २ ॥ आंचली ॥ नय विचार लघु मूल विविधपरे, सुमति कंद थिर सोहेरे ॥ बार जावना थम अति जामो, जोतां जन मन मोहेरे ॥ आज० ॥ ३ ॥ जपसम अने विवेक सुसंवर, इण जल योगें वाधेरे ॥ चार ज्ञान चतुराइ शाखा, जाणे चतुर दिसि साधेरे ॥ आज० ॥ ४ ॥ विविध लब्धिबल बहुपम्नि साखा, कोलंजा शुज लेस्यारे ॥ आश्रव संवर विवरण साचा, पान तिहां जपदेस्यारे ॥ आज० ॥ ५ ॥ च्यार प्रमाण कली कुसुमावली, हेतुविकाश सुहावेरे ॥

सरस कोमल पंखम्निया तिहां, नवे तत्त्व मन न्नावेरे ॥ आज० ॥ ६ ॥ परिमल सुजस दसे दिशि पूरे, नविक भ्रमर बहु आवेरे ॥ वाणीरस मकरंदे माता, गुंजारव गुण गावेरे ॥ आज० ॥ ७ ॥ कवल फलें फल्यो नितु स्वामि, समतारस करी मीठोरे ॥ बोधिबीज अविचल सुखदायक. धन धन ते जीणें दीठोरे ॥ आज० ॥ ८ ॥ सेवक लोक मदा पंखी जीम, निशिदिन सेवा सारेरे ॥ सुरनर सुखसंपद लीला लहे, न्नाव नगति अनुसारेरे ॥ आज० ॥ ९ ॥ पापपान नीरस ते खेरे, गुण नवपल्लव सोहेरे ॥ दयादान गया अति सुंदर, तिहां सुखअरथी थोन्नेरे ॥ आज० ॥ १० ॥ मेघराय कुलतिलक त्रिजगपति, सुमंगला सुत साचोरे ॥ कनकवान तनु वंदो अनुदिन, अन्निनव सुरतरु जाचोरे ॥ आज० ॥ ॥ ११ ॥ आजकाज मनवंछित फलियो, आज पापन्नय टलियोरे ॥ ब्रह्मस्वामि श्री पंचम जिणवर, सुमति जिणेसर मिलियोरे ॥ आज० ॥ १२ ॥

॥ अथ श्रीजिन चोत्रीशअतिशयगर्न्नित स्तवन ॥

जिन चोत्रीसेरे अतिशय श्रुत नणया, चोथे अंगेरे गुरुमुख में सुण्या ॥ ते हवे कहीस्युंरे हरख हैये धरी, स्वामी पामीरे जब केवलसिरी ॥ त्रुटक ॥ सिरकेश नख नहु रोम वाधे, रोग मल तन हुवे नही; गो-

क्षीर उज्ज्वल मंस शोणित, गात्र संपद ए कही ॥ जसु श्वास परिमल कमल सरिखो, विधि आहार नीहारनी; कोइ न देखें च्यार अतिशय, जीविय लगें स्थिति एहनी ॥१॥ (चालती) धर्म्मतणोरे प्रजु पासे दीप ए, चक्रज तेजेंरे सूरिय जीपए; छत्र त्रय वलिरे गगन विराजए, श्वेत चमररे ससि उपमा छाज ए ॥ त्रुटक ॥ छाज ए आसण पायपीठ सहित आगळ चल्लए, धजा उंची सहस जोयण, मोह अरिमिन सल्लए ॥ किंकिल्लितरुवर करे छाया, जिहां श्री जिन वीसमें; मळ्रुम छामे पद्मामंम्ल, पूठ तम निशि निगमें ॥२॥ (चालती) सम जूमंम्लरे स्वामी जिहां रहे, कंटक अधोमुखरे ऋतु सुखकर हुवे; जोयण मंम्लरे पवण प्रमारजें, लघु जलधारारे वरसे नीरजें ॥ त्रुटक॥ रचे ढींचणसम कुसुमें पगर शब्दादिक सहु, हुंति रूमा टले विरुआ यद्म बे पासे बिहुं; उखेवे चामर गहिय करयल वाणी जोयण गामिणी, अरिहंत जाषे अर्द्धमागहि जांणे सविआपणी॥३॥ (चालती) आरज आनारजरे तिरि नर हित गिणे मन्नर धररे सुरजावे सहु सुणे; नर तिरि वेरीरे वेर ते परिहरे, जे परतीर्थिरे अविनय आचरे ॥ त्रुटक ॥ आचरे अविनय मान मन धरि वाद हारे ते सहि, जिण देश विचरे तिहां साते ईति जीति हुवे नहि; पचवीस जोयण उत्पन्न रोग व्याधि सहु जय

टले, चोत्रीस अतिशय एम भणता, मनह वंछित सवि फलें ॥ ४ ॥ कलश ॥ इम च्यार अतिशय जन्म साथे जावजीव लगे रहे, इग्यार अतिशय कर्मक्षयथी हुंति गीतारथ कहे; लगणीस सुरकृत त्रीस च्यारे एह साधारण भणया, सर्व जिनने भक्तिभावे श्री पार्श्वचंद्र सूरि संथुणया ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीफलोधिपार्श्वनाथजिननुं स्तवन ॥

॥ नदी जुमनांके नीर उडे होय पंखीयां.–ए देशी ॥

फलवधिमंमण देव सेवकां सुखकरे, विनती सुणो महाराज मया कर मोपरे ॥ अवर देव सवि मेवतुमाने चित्त धर्यो, दुषणसहित विमास तिके दूरे कर्या ॥ १ ॥ सुमति थइ हवे आज कुमति दूरे गइ, नाठां भवभव पाप साता मुजने थइ ॥ जिनवर देख्या नेण विघन मनना टल्या, ईतभीत सवि नास मनोवंछित फल्या ॥ २ ॥ नरक निगोदमां दुःख सह्यां इण प्राणीये, भव अनंत अज्ञानवसे इम जाणीये ॥ करूणाकर किरतार सगति छे ताहरी, भवोदधिथी तुं तार सार कर माहरी ॥ ३ ॥ रसायन जिम ताम्र कनक करी दाखवे, फिर तांबु नवि थाय इसि जिन भाखवे ॥ जिनवर सेव्या जिन थाय न संशय आणवो, ए उखाणो न्याय सहिते जाणवो ॥ ४ ॥ पारसथी जिम लोह सुवर्णमयी

हुवे, माह्हरे तुम तिम स्वामि इहनव परजवे, कल्पतरु तुम नाम हृदयजूमि धर्यो, जाणुं जिनराय कारज मोरो सर्यो ॥ ५ ॥ संवत अढार पंचावन वरसें गाइयो मागशिरवदि सुखकार तीज तिथि ध्याइयो ॥ मेम्ता नगर मोफार चोमासो जमंगसु, श्री लब्धिचंद्रसूरि सार थुएयो मन रंगसु ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरस्वामीजीनुं स्तवन ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणां जयवंताजी.-ए देशी ॥

श्री सीमंधर विचरता गुणवंताजी ॥ श्रेयांसराय-ना नंद जयवंताजी ॥ माता जेहनी सत्यकी ॥गुण०॥ कुलवंस विकसण चंद ॥ जय० ॥१॥ जार्या सहु गुण धारती ॥ गुण० ॥ रुकमणीराणी जास ॥ जय० ॥ लं-ठण प्रजूने दीपतो ॥ गुण० ॥ वृषज मंगल गुणवास ॥ जय० ॥ २ ॥ विजयवसु पुखलावती ॥ गु० ॥ पुंम-रीका नयरी सार ॥ जय० ॥ चउ कल्याणक तिहां थ-या ॥ गुण० ॥ त्रिजुवन जन हितकार ॥ जय० ॥३॥ एह जाणी मन उल्लस्यो ॥ गुण० ॥ देखण तुम दी-दार ॥ जय० ॥ दया करी मुफ दीजीये ॥ गुण० ॥ नित दरसण किरतार ॥ जय० ॥ ४ ॥ लब्धिकमल वि-कसाववा ॥ गुण० ॥ कलानिधी तुं जाण ॥ जय० ॥ हर्षविनय जावें करी ॥ गुण० ॥ आपो अविचल नाण

॥ जयवंताजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री तारंगाजीनुं स्तवन ॥

॥ सिद्धाचलगिरि भेट्यारे धनभाग्य हमारा.–ए देशी ॥

तारंगागढने मंदिरमांहे, अजितजिनंद महाराजा ॥ तेहनी प्रदक्षिणा मांहे गाजे, चोमुख मंदिर ताजारे ॥ धन्य० ॥ १ ॥ तेह पासे बीजा मंदिरमें, सहसटुंक अति भारी ॥ पनरसे जुयला चरणनका, इण विध मनमें धारीरे ॥ धन्य० ॥ २ ॥ चोवीस जिन चउदसें गणधर, बावन वीस जिन न्यारा ॥ सासयजिन चिहुना वे चरणां, निरखत लागत प्यारारे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ वीस स्थानक मधु बिंदव नवपद, लोकनाल अति दीपे ॥ अष्टापद निरखीने रावण, करम अरी बहु जीपेरे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ पनरसे तिमोत्तर तापस, गौतम गणधर आया ॥ च्यार आठ दस बे जिन वांदी, तन मन अति हुलसायारे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ सिखरगिरीनी थापना रूडी, देखत मन हरखाया ॥ गढ त्रिहुं सोभित समोवसरणमें, चोमुख जिनवर रायारे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ तीजे मंदिर नंदीसरनां, बावन जिनालय गाजे ॥ चोथे मंदिर कुंथु जिणेसर, पेखत भवदुख भाजेरे ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ मंदिर पासे डुंगर शोभे, सिद्धमुनिना धामा ॥ एहने फरसे बहु मन हरषे, वरस्ये सिववहू वामारे ॥ धन्य० ॥

॥ ८ ॥ तीन पूरणनंद इंडु वरसे, श्री लब्धिचंदसूरि राया ॥ तास शिष्य माधववदि बारस, हर्षथकी गुण गायारे ॥ धन्य० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री राणकपुरजीनुं स्तवन ॥

॥ गीरुआरे गुण तुमतणा.-ए देशी ॥

राणकपुरे अति शोजतो, त्रैलोक्य दीपक नामारे ॥ मंदिर तेहनी मांमणी, अद्भुत नहीं कोइ ठामारे ॥ राणक० ॥ १ ॥ एक अधिक चालीस छे, पाहुल्यिां अजिरामारे ॥ दोय सहस बावीस छे, थंज सुंदर सुखधामारे ॥ राणक० ॥ २ ॥ चौरासी जुइरां जलां, चौरासी डुख हर्त्तारे ॥ पंचजूमी जिन देहरो, पंचमी गतिनो कर्त्तारे ॥ राणक० ॥ ३ ॥ पांच शिखरबंध देहरां, सयअठोत्तर देहरीरे ॥ सहस चक्र प्रतिमा जली, पूजिन हुवे गुणसेहरीरे ॥ राणक० ॥ ४ ॥ चउवीस मंमप सोहणा, दंम चउवीस हणतारे ॥ अष्टापद श्री सिद्धगिरि, मेरू माहि जणतारे ॥ राणक० ॥५॥ सहस टुंक मनोहरु, नंदीश्वरमांहि आयारे ॥ ए सब जाव पण देखणें, मंदिर सर्व संकायारे ॥ राणक० ॥६॥ केई अधोलोके गया, केइ द्वीपांतर मिलियारे ॥ ऊर्द्ध लोक मानुं पेसिया, सेवकजन मन मिलियारे ॥ राणक० ॥७॥ धन्नासाह पोरवाम्ने, अपूर्व सिद्धालय थापीरे ॥

आदिजिणंद चोमुख रची, सुगति गयो प्रभु जापीरे ॥ राणक० ॥ ८ ॥ कर पूरणनंद एकमे, फाल्गुन पंचमी स्यामारे ॥ श्री लब्धिचंद्रसूरि शिष्य कहे; पूजी लहो शिववामारे ॥ राणकपुर० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिजिननुं स्तवन ॥

त्रिभुवन प्रभुरे मल्लिजिणंद जुहारिये, भवजल निधिरे पभतो आपण तारिये ॥ नर उत्तम रे कुंभ धराधिप कुलतिलो, जसुजननीरे सतिय प्रभावती गुण निलो ॥ त्रुटक ॥ गुणनिलो जननी जासु सो जिन, रूप त्रिभुवन मोहए ॥ तनु तेज समता सोम गुण, जग सूर ससि जिम सोहए ॥ स्त्रीरूपे तिर्थंकर अछेरो, मित्रसुं माया करी ॥ कियां कर्म्मह को न छूटे, चतुर चेतो चित्त धरी ॥ १ ॥ चालती ॥ सलिलावतिरे विजयवती शोकापुरी, तिहां नरपतिरे बल तेहने कुल अवतरी ॥ धन धारणिरे उर सरहंस जिसो वसी, नव मासेरे जायो मुख पूनिमससी ॥ त्रुटक ॥ जिम ससी बीजतणो अनुक्रमे ग्रहिय बावत्तरि कला, नामे महाबल मित्र तेहने थया छह गुण आगला ॥ तिण कीध मांहोमांही वाचा तुम्ह साथ न मूकिये, सुख दुख नयरिए घर विदेसिए दीख सीख न चूकिये ॥ २॥ चालती ॥ भर जोबनरे वरी पंचसय अंतेउरी, गुणलाव-

एयरे रूप जिमि सुरसुंदरी॥ तसु सरिसोरे रमे भ्रमर जिम मालती, इणि अवसररे विहरंत तिहां आव्या यती ॥ त्रुटक ॥ यती जोग वाणी सुणी समरसपूर संयम आदरी, उद मित्र सरिसी वचन रचना सरिस तप करिवे करी ॥ वम्मलहुदे सीइं सीहकीधो किंचि अधिको महबले, कर्म धर्म न जली माया वेदनारी इणि बले ॥ ३ ॥ चालती ॥ वीसथानकरे फरसी तिर्थंकरपणो, वलि बंध्योरे संध्यो माग सुहामणो ॥ चुलसी लखरे पूरव आउ पूरा कर्या, अणुत्तररे सहुय जयंतें अवतर्या ॥ त्रुटक ॥ अवतर्या णुत्तरजयंते आउ उहमित्रपणो, देसुणसागर त्रीस ङुङ महबल पूरो ते जणो ॥ तेहथकीय चवी करी उहयदेमें उहय राजा, जुजूआ, संग्राम सूरा तेज पूरा रूप गुण आगल हुआ॥ ४॥ चालती ॥ इणे अवसररे कुंजराय महिलापुरी, प्रजावतिरे तेहने घर अंतेउरी ॥ तसु उरेरे महबलसुर चवि अवतर्या, रीखीअश्विनीरे जिन उगुणीसमा गुणजर्या॥ त्रुटक ॥ गुणजर्या चउद सुमिण देखी राय आगल ते कही, सुपन शुज फल श्रवण सांजलि हरखी हियमे इम गहगही ॥ सुप्रजाते तेमी सुमिणपाठक पूछी परमारथ लह्यो, जिननाथ अथवा चक्रि तुम्ह कुले हुस्ये मंगण तिण कह्यो ॥ ५ ॥ चालती ॥ प्रजु जन्म्यारे

मागसिरसुदी इग्यारसी, रिखी अश्विनिरे मास साढानव उर वसी ॥ दिशिकुमरीरे सुइ कर्म चोसठ सुरपहु, सुर गिरि सिरे न्हावियो करि उछव बहु ॥ त्रुटक ॥ करि बहुश्च उछव राइ दस दुई दिवस मल्लिकुंअरी, ए नाम दीधो क्रमे वाधे रूप यौवन गुणभरी ॥ देसूण इकसो वरस बोल्या मित्र उह अवधिए करी, निरखीय हरखी आपसरखी सोवनमय प्रतिमा करी ॥ ६ ॥ चालती ॥ एकेकेरे कवले भोजन अवसरें, घालंतारे कंठ लगी प्रतिमा भरे ॥ गंध प्रगट्योरे अहि गो नर मम्म सारिखो, दाखेवारे रमणिन रंगह पारिखो ॥ त्रुटक ॥ पारिखो देखी चित्त जाणी एहथी प्रतिबूझसे, उह मित्र चित्र विचित्र भगवति मोह ग्रहि नहु मूझसे ॥ एणि अवसर उए आव्या परणवा एकठ करी, चतुरंग सेना सहित वेंटी भुजग जिम मिथिलापुरी ॥ ७ ॥ चालती ॥ मन जाणीरे तात चित्ते चिंता घणी, तेम्हावीरे दूत त्रिभुवनधणी ॥ ऊघाम्हीरे प्रतिमा गंधति बुझवे, जातीसमरणरे पूवभवंतर सूझवे ॥ त्रुटक ॥ सूझवे पुव चरित्र निरता विषय विरता गहगहे, निज पुत्र थापी राज राजा संयम लेवा ऊमहे ॥ श्री मल्लि देई दान वरसी पोस सुकिल अगियारसे, अश्विनी योगे दीख लीधी चित्त वास्यो समरसें ॥ ८ ॥ चालती ॥ तिहां उछवरे चउसठ

इंद्र मली करे, नरनारीरे तिनिसय संजम आणुसरे ॥ गुणि गुरुआरे राजकुमर आठइ वली, तिणि दिवसरे स्वामी हुआ केवली ॥ त्रुटक ॥ केवल महिमा करें सुरवर मल्लिदेसण तिहांकरें संसारसायर तरण तरणी वाणि जाणी अमी झरें ॥ उह मित्र आवी दीख पावी सीख भावी संचरे, गया मुगतिनी गति उत्तम संगति काज सवि एणिपरें सरें ॥ ए ॥ चालती ॥ प्रभु परिखदरे भीतर नारी सांभले, वलि बाहिरे परखद पुरुष सहु मिले ॥ इण कारणरे चेतन चतुर न चूकिये, फल निश्चेरे तोय व्यवहार न मुकिए ॥ त्रुटक ॥ मुकिये माया नहिय काया तोज लहिये स्त्रितणी, दृष्टांत जाणी इह अम्हारो भविय करजो खप घणी ॥ करि इमो कहेवा सभा नारी पुरुषनो अंतर करे, ववहार सूधे सहु जिणवर साधुमारग ववहरे ॥ १० ॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥ जसु गुण गणधर अट्ठावीस, मुणिवर थया सहस चालीस ॥ सहस पंचावन साहुणि मिली, इक लख सहस चोरासी वली ॥ ११ ॥ इणि प्रमाण श्रावक श्राविका, त्रिणि लख पेंसठ सहस भाविका ॥ छहसय चउदह पूरवधार, विसहस उहि नाणी सविचार॥१२॥ सहस त्रण छस्से केवली, पंचत्रीससय वैक्रीय वली ॥ मणपज्जवनाणी आठसे, वादीचउदहसें नवी खसे॥१३॥

डुनि सहस अणुत्तर उववाइ, चउविह संघतणे समवाइ ॥ मध्य देश जिणवर विहरंत, समेतं पहुता गुणवंत ॥ १४ ॥ मास एक संलेहण ठाण, सहस पंचावन वरस प्रमाण ॥ पाली आउ इकसो गृहवास, बीजा केवलनाण प्रकास ॥ १५ ॥ चैत्रमास बीजे पख कही, चउथ तिथि आव्यो ससि वही ॥ सुरसरणी भरणीने जोग, जिन पहुता चउदमे अजोग ॥ १६ ॥ बाहिर सभा साहु पंचसें, अभ्यंतर साहुणि पंचसें ॥ एतला सहित कर्मक्षय करी, मल्लिनाथ पहुता शिवपुरी ॥१७॥ पंचवीस धणु देह प्रमाण, पहिलो संघयण प्रथम संठाण ॥ प्रियंगु सरीखो नील शरीर, स्वामी सायर जिम गंभीर ॥ १८ ॥ सेवक वीनतभी अवधार, प्रभु मुऊ आवागमण निवार ॥ पार्श्वचंद्रसूरिश्वर कहे, जे सेवे ते शिवसुख लहे ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीजीनुं स्तवन ॥

अचल पद वासनो दायक सामियो, नयरितय-सि श्री वीरजिण पामियो ॥ मणहर सुंदर रुप मन रामियो, भगतिने भाव तसु पाय सिर नामियो ॥ १ ॥ चंडसम सोमगुण नयणें जो निरखियो, देव साचो सही एह में परखियो ॥ जाखने सेष अवसेष सुर डंभिया, राग दोसादि भावारि तेखंभिया ॥२॥ दूर न शकुं

रुही नाह एके घमी, जाए किर रंक किर रुंम साकर चमी ॥ हर्ष अति मुज घणो लहि तुह दंसणं, जेम तुख्यो लही दधि घृत भोयणं ॥ ३ ॥ ग्रीसमे तृषित नर जेम शीतल जलं, विघन घन जपने जेम शुन्न मंगलं ॥ अमवि जुलो जमी शुद्ध मारग लही, सुवन रयणें जर्यो गेह निर्धन ग्रही ॥ ४ ॥ पूनिम शशिधर जेम चकोरमो, मेघनी गाज जिम सांजली मोरमो ॥ जगतो रवि जिम लहिय सगमंगियो, रीमव्यो नृपति सुप्रसन्न अनुषंगियो ॥५॥ एहवो हरख लहि नाह तुह दंसणो, पामिय पामियो पामस्ये शुं जणो ॥ तेहवो मुजनें वीर दंसण थयो, डुःख दोहग्ग सहु डुरिय दूरें गयो ॥ ६ ॥ कल्पतरू सूरमणी कामगावी मली, आज मुज मनतणी सहूअ पूगी रली ॥ स्वामि तीरथतणो वीर जुहारियो, मोहराजा महा शत्रुज हारियो ॥ ७ ॥ बंधनें जदय जदीरणा जे जणी, जे हती कर्मनी सत्ता अतिही घणी ॥ नाथने निरखणें तेय बहुली टली, हवे सहु सिद्धिनी आस सफली फली ॥ ८ ॥ संचि संचिया विसुज कर्मनी संपदा, जइ वसी वीरनी मूरति मन सदा ॥ ज्यां लगी पवन न तनुथकी नीसरे, त्यां लगी एकला किमें मत विसरे ॥९॥ हवें सारोधार प्रञ्जु आपने वीनवुं, मुजने हरख होज्यो दिन दिन नवुं ॥ स्वामि

सेवा भणी वलीवली आविये, मनतणी ऊलटें भावना भाविये ॥ १० ॥ (कलश) इम वीर जिणवर सयल सुखकर ऊंझसिपुरि नितु दीपतो, ए पंचमकालें तणीय लीला हेलिसें प्रनु जीपतो ॥ मणहरसि संवत सोलसें दस वरसें अधिके गुण्यो, श्री पार्श्वजिनवर जनम दिवसें सूरि श्री पार्श्वचंडें संथुण्यो ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ राग केरवो ॥

प्रनुजीसे मोरी लगन लगी, अब दरसणरो मोहे चाहजी ॥ प्रनु० ॥ ए चाल ॥ सुरतरु सुरमणि कामगवीसें, अधिक अधिक सुखदायजी ॥ सुर० ॥१॥ एसे नवपदसें लय लावो, नव नव एही सहायजी ॥ सुर० ॥ २ ॥ प्रथम देव अरिहंत बिराजे, पूजो सुद्ध कर कायजी ॥ सुर० ॥३॥ देवपाल कार्तिक जिम पावो, राज्य शक्रपद नायजी ॥ सुर० ॥ ४ ॥ डुजे पद श्री सिद्धकुं ध्यावो, अंतर लगन लगायजी ॥ सुर० ॥५॥ पुंमरिक पदमादिक मुनिपरे, अष्टकरम नय जायजी ॥सुर० ॥६॥ आचारज गुण तीजे गावो, मात पिता अधिकायजी ॥ सुर० ॥ ७ ॥ पापी परदेशी सुर थइयो, ए पदनें सुपसायजी ॥ सुर० ॥ ८ ॥ उवफाया चोथे पद समरो, जे सेवक गुणदायजी ॥ सुर० ॥ ९ ॥ सीहमिरीना मु-

निवरनी परि, कीरति जग जस गायजी ॥ सुर० ॥१०॥ पंचम पद माहण गुण धारी, आराधो चित लायजी ॥ सुर० ११ ॥ ते आराधनसें जिम रोहिणी, गुरु सुख लह्या कहायजी ॥ सुर० ॥ १२ ॥ शुद्ध दंसण छठे पद धारो, नवदुःख दूर पलायजी ॥ सुर० ॥१३॥ ए गुणधारी जिन संचारी, सुलसा वीरजिनरायजी ॥सुर०॥१४॥ पद सत्तम गुण ज्ञान आराधो, मिथ्या तिमिर मिटायजी ॥ सुर० ॥१५॥ सीलमती जिम तुमकुं प्रगटे, अनुनव गुण महिमायजी ॥ सुर० ॥१६॥ नावथकी चारित्र पद पालो, अष्टम अधिक सुहायजी ॥सुर०॥१७॥ सिवकुमार शुनजोग करी निज, जंबु थइ सुख पायजी ॥ सुर० ॥ १८ ॥ नवमें पद तप सुंदर दाख्यो, आतम लब्धि उपायजी ॥ सुर० ॥ १९ ॥ वीरमती नव एह आराधी, नइ दमदंती मायजी ॥ सुर० ॥ २०॥ ए पद विधिकर जे नवि सेवे, रुद्धि वृद्धि तसु आयजी ॥सुर० ॥ २१ ॥ वरस अढार नवाणुं आश्विन, उज्जल पूनम वधायजी ॥ सुर० ॥२२॥ श्रीहर्षचंद्र सूरीसर नाखे, संघ प्रताप सवायजी ॥ सुर० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय महात्म्य स्तवन ॥

॥ ह्रैँ ॥ श्रीँ॥ विमलगिरिइंदइंदं, नवियाणं जणियपरमआणंदं ॥ मद मणचकोरचंदं, आदिजिणंदं

थुणिस्सामि ॥ १ ॥ ॥ ढाळ पहेली ॥

(गौतम समुद्रकुमार सागर गंभीर–ए देशी.)

विमलाचल प्रनु आदि जिणवर वंदिस्युं, मनह मनोरथ पुरिस्युं ए ॥ पोते कर्म्म अनादि, जे बे माहरे, हेलि डुरित ते चूरिस्युंए ॥ जलट अंग न माय, स्वामिय पामिय, अपुरव दंसण ताहरोए ॥ त्रिपतो किमइ न थाय, निरखी निरखीय, हियमो हरखे माहरोए ॥ २ ॥ काल अतीत अनंत, चिहुं गति नमताए, पूदगल पूर्या में सहीए ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल, नावन सुखिम, बादर ठम अम्गया वहीए ॥ चउदहराज प्रमाए, लोक चउरासीय, लाख जीवयोनी वस्योए ॥ तुम्हारी विण आण, विविध विमंबण, पामी इम नव नव कसि कस्योए ॥ ३ ॥ गंठिनेद अपुव, करणें मिछत्त, नासण सासण तुम्हतणोए ॥ लाधो आरिजखेत्र जनम उत्तमकुल, श्रावकनुं जगमंमणोए॥ जिणवर देव सुसाधु, गुरु दयाधर्म, केवलीनाषित जे लह्याए ॥ ते हूआ सिद्ध अनंत करि नव अंतज, जिणे ए निरता संग्रह्याए ॥४॥ ढाल बीजी ॥ (चालती) जिण थानकरे सिद्धा संथारो करी, बहु मुनिवररे पूरे अणसण उचरी ॥ ते तीरथरे नाख्यो प्रवचने जिणवरें, पणयालीसरे लाख योजन पुर्यो नरें ॥ त्रुटक ॥ जे नरें पूर्यो

खेत्र शिवपद जाणिये ते तेटलो, जिहा नहीय थानक सिद्ध पाखें अग्र अंगुल जेटलो ॥ केवली विण ते कवण जाणे जगति किम हुवें तेहनी, छदमस्थ देखी हरष पाम साखि सुत्रे जेहनी ॥५॥ (चालती) देस सोरठरे शेत्रुंज तीरथ में सुएयो, विमलाचलरे पुंमरीक नामे जएयो॥ जिहां सिद्धारे उत्तम गुण रयण भर्या, अनंतारे मुगति रमणीसें वर वर्या ॥ त्रुटक ॥ वर वर्या उत्तम दम दयालु एणी गिरि ऊंचा चमी, उतर्या नीचा नहिय मंमी क्षपकश्रेणी सुपावमी ॥ श्रीरिसह जिणवर प्रथम गणधर पुंमरिक प्रसिद्धत्त, चैत्रीय पुनीम दिवस निर्मल नाण दंसण सिद्धत्त ॥६॥ (चालती) तसु नामेरे पुंमरीक गिरिवर ए सही, जे सिद्धारे मुनि तसु संख्या लहु नही॥ थावचोरे सुकपरित्राजक गुणनिलो, इणि गिरिसिररे करिय संथारो अति जलो ॥ त्रुटक ॥ अति जलो पामी विमल केवल सहस सहसें परिवर्या, पंथगादिक पंचसयसुं सेलगारिय गुण जर्या ॥ पंच पंमव बहुअ यादव कुमर कोमी शिवपुरी, प्रजुपदें पहुता विमलगिरि सिर अमल अणसण ऊचरी ॥७॥ (जलालानी ढाल) त्रीजी इणि परें सिद्ध अनंत, हुआ हुस्यें गुणवंत ॥ तिण सिद्धि खेत्र पवित्र, जरतें बहुल चरित्र ॥८॥ इम सुणी हियमे ऊमाह्यो, माहरो न रहे साह्यो ॥ चिंतु

जो पंखम्यि, होय बिहु भागें घम्यि ॥ ९ ॥ तो सेत्रुंजगिरि चम्यि, कर्यिं सफल अखंम्यि॥ आभा कर्म्म अंतराइ, तिण कीधी बहुल सबलाइ ॥१०॥ मांहोमांहि विरोध, जीव कर्म जिम प्रतियोध ॥ आण आयुध बले ठेली, रिपु सुभक्क म करि बेली॥११॥ (ढाल चोथी) पूठे पवन सरय तनु प्रेरियो, चालता हरष तरु हेलि अंकूरियो ॥ जेम जेम मारगे ढुकम्यो आवियो, जाणिये सहिय हिव तारक पावियो ॥ १२॥ तेम तेम तेणि डुमपत्र पल्लव वली, साह प्रतिसाह घण सघण बहुली मिली ॥ जेटले शेत्रुंज सिहर मणहर चड्यो, तेतले तेय तरु कुसुम परिमल चड्यो ॥ १३ ॥ संधि मधुमाधवी पूनिमें जेतले, द्दष्टिगोचर थयो नाह भावे भले॥ फल्यो मुझ आज ते हर्षतरु तेटले, काज सवि सीधला कीधला एटले ॥ १४॥ आज मुझ अंगणे कल्प पादप फल्यो, आज मुझ डुरित अरि सबल दल भय टल्यो ॥ विमलगिरि मंम्न आदि जिणवर नम्यो, चरण तुझ चपल मुझ चित्त थिर वीसम्यो ॥ १५॥ नाभि मरुदेवीय नयण आणंदणो, वंस इक्काग गगण वण चंदणो, पंच धणु रायतणुं मुगति पह संदणो, जय जयो रिसह जिण भविय डुह खंमणो ॥ १६ ॥ (कलस) इम विमल गिरिवर सिहर सुंदर आदि जिणवर संथव्यो ॥ चिर

काल लग हतो जेय चिते आज हर्ष ते पूरव्यो॥ वलि वलिय स्वामि तुम्हदंसण होजो एहज मागियें॥ पय कमल अलि जिम पार्श्वचंद्रसूरि मन आणंदें लागियें ॥१७॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथजीनुं स्तवन ॥

(राग प्रभाति) पार्श्व संखेश्वरा० ए देशी.

सकल कला तिसो पूनिम शशी जीसो, कौमुदी कुमुदनी स्वाम॥ अमृतरस पूर ए मरण जरा चूर ए, नव निधि जेहनें नामरे ॥ प्राणी प्रह समे सुमति दातार, सुमतिजिन पंचमो, वचन तन मन नमो, त्रिभुवन जीवनो साररे ॥ प्राणी० ॥१॥ मयण भ्रम भंज ए कुमति मत गंज ए, जन मन रंज ए नाह, बावना चंदन जेम आनंदन, टालए भवदुह दाहरे ॥ प्राणी० ॥३॥ मंगल कारण दुरित निवारण भवजल तारण देव, सरस सरजीतलो जासू लंछण भलो, सारस सारय सेवरे ॥प्राणी० ॥ ४ ॥ सूरनर इंद्र नागेंद्र सेवा करे, आकरे राग अपार ॥ वंश इखाग वम भाग सूमंगला मेघघर जय जयकाररे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ त्रिणसे चाप तनु व्याप छे जेहनो, देहनो सोवनवान ॥ भविक जन चंग ते लहे मनरंग ते, जे करे प्रभू गुण गानरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ विमल रवि उगियें सयल जग जागिये, लागियें प्रभुतणे पाय ॥ पार्श्वचंद्रसूरि सदानंद जिम वंदिये, भव भव सुमति पसायरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रत्नाकरपञ्चविंशतिका प्रारंभ॥

(उपजातिच्छन्दः)

श्रेयः श्रियां मङ्गलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदेवेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! ॥ सर्वज्ञ ! सर्वातिशयप्रधान !, चिरंजय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !, दुर्वारसंसारविकारवैद्य ! ॥ श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्धभावा-द्विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किञ्चित् ॥ २ ॥ किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ? ॥ तथा यथार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तं ॥ शुभो न भावोऽप्यभवद्भवेऽस्मिन्, विभो ! मया भ्रान्तमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ॥ ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया-जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ? ॥ ५ ॥ कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् ! ! अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त-त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥ द्रुतं महानन्दरसं कठोर-मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण ॥ प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक ! पूत्क-

रोमि ॥ ८ ॥ वैराग्यरङ्गः परवञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय ॥ वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद् ? ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ! ॥ ९ ॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परापायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं ? विभोऽहम् ॥ १० ॥ विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्ति–दशावशात्स्वं विषयान्धलेन[2] ॥ प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥ ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहताऽऽगमोक्तिः ॥ कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसङ्गा–दवाञ्छि ही नाथ ! मतिभ्रमो मे ॥ १२ ॥ विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः ॥ कटाक्षवक्षोजगभीरनाभि–कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः॥१३॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसे[3] रागलवो विलग्नः ॥ न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक ! कारणं किम् ? ॥ १४ ॥ अङ्गं न चङ्गं न गणो गुणानां न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः ॥ स्फुरत्प्रभा[4] न प्रभुता च काऽपि, तथाऽप्यहङ्कारकदर्थितोऽहम् ॥ १५ ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि–र्गतं वयो नो विषयाभि-

१ रङ्गोऽ २ अंसलवत्सलादिवदौणादिकालप्रत्ययागमेन, विद्युत्पत्रान्धाल्लइति प्राकृतलक्षणेनेतिकश्चित् तन्न प्राकृतगन्धस्याप्यत्राभावात्, मुरलादेराकृतिगणत्वाच्च नालप्रत्ययदुर्लभता.

३ मानसो. ४ प्रधानप्रभुता.

लाषः ॥ यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोह-विडम्बना मे ॥ १६ ॥ नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयम् ॥ [1]अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव ! धिङ्माम् ॥ १७ ॥ न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः॥ लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलाप-तुल्यम् ॥ १८ ॥ चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु-कल्पद्रु-चिन्तामणिषु स्पृहार्त्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावम् ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ॥ दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन[2] ॥ २० ॥ स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः ॥ नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव !, तार्यः कथंकारमयं भवाब्धिः ॥ २२ ॥ पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥ यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥ २३ ॥ किंवा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्

१ आधारि. २ दुष्टोऽयं प्रयोग इति कश्चित्, स जडिमावष्टब्धान्तःकरण एव यतो न न्यभालि तेन युष्मदस्मदोऽसोभादिस्यादेः (श्रीसि० ७-३-३०) इति सूत्रम् ॥

पूज्य ! त्वदग्रे चरितं स्वकीयम् ॥ जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप–निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥२४॥ (शार्दूलविक्रीडितछन्दः) दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा–पात्रं नात्र जने जिनेश्वर ! तथाप्येतां न याचे श्रियम् ॥ किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकर ! मङ्गलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥ ॥ २५ ॥ इति रत्नाकरपञ्चविंशतिका संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तवन ॥

सफल एह अवतार माहारो, इणे संसार असार ॥ नरभव लही हरखे मन वास्यो, देवगुरु धर्म्म विचार भावसुं ॥१॥ जतन विमलगिरि चमस्युं, सुधे ध्यान रतनमन जमस्युं ॥ श्री सिद्धतणा गुण ग्रहीस्युं, एतो मनवांछित फल लहिस्युं भावसु ज० ॥ २ ॥ करत विचार श्रवणे सांभलीयो, श्री शेत्रुंजे तीरथ सार ॥ इणिगिरि सिद्धि अनंता पहुता, टाळी भव अवतार भावसु ज० ॥३॥ सहससहसमुनिवर परवरिया, थावच्चा सुक सिद्धा ॥ पंचसयांसुं सेलग मुनिपति, शिवनगरी पद लीधा भावसु ज० ॥ ४ ॥ पंडव पंचय जालिमयालि, प्रमुख यादवरिद्धिभंमी ॥ तपजप कर्म्म खपीने इणिगिरि, प्रीति मुगतिसु मंमी भावसु ज० ॥ ५ ॥ अंगुल अंगुल सिद्ध अनंता, सूत्र वचन सद्दहिए ॥ जे-

हनो नाम विशेषें न लहिए, ते तीरथ किम कहिये नावसु जं० ॥६॥ उत्तम पुरुष हणिगिरि वासो, तिणे ए तीरथ नणीयें ॥ तसु दंसण जे नावे पामे, सफल जनम तसु गणियें नावसु जं० ॥७॥ तिणे कारण मुज मन उमाह्यो, श्री शेत्रुंजे जात्रा काज ॥ मोरतणी परे हुं हरखित, सांनली जलधर गाज नावसु जं० ॥८॥ नरनव पामी उहरी पालत, विधिस्युं यात्रा करिये ॥ प्रवहणपूरी जिम व्यापारी, हेले नवजल तरियें नावसु जं० ॥ ए ॥ ब्रह्मचारीने नूमि संथारी, लहिए एकल आहारी॥ पदचारी सचित्त परिहारी, सुद्धा समकितधारी नावसु जं० ॥१०॥ धन्य वरस धन्य मासए पक्ष, धन्य दिवस धन्य याम॥ धन्य घमी धन्य धन्य ए वेला, जिण प्रजु करुं प्रणाम नावसु जं० ॥ ११॥ विनवीयें श्री शेत्रुंजे स्वामी, वलि वलि दंसण देज्यो ॥ करजोमी पार्श्व चंडसूरि बोले, विनती सफल करेज्यो नावसु जं०॥१२॥

॥ श्री चंडप्रजुनुं स्तवन ॥

सकल मंगल कला गुण निलो, महसेन वंश अवतंसरे ॥ जणणी शोनागिणि लखमणा, उरवर सरोवर हंसरे ॥ १ ॥ अष्टम जिनवर जग जयो, प्रणमता पूरवे आसरे ॥ चंद्रप्रन चंदन सियलो, अममन करे उल्लासरे ॥ अष्टम० आंकणी ॥ २ ॥ जिसोरे आसो

हियपूनमे, चंद्रमा निर्मलो होयरे ॥ माहरो चित्त चकोरझो, हर्ख लहे जोई जोईरे ॥ अष्टम० ॥ ३ ॥ चविय विजयंत विमानथी, चंद्रपुरी अवतारेरे ॥ वंस इख्यागह दीपतो, जयसिरी रमणी उरहारेरे ॥ अष्टम० ॥ ४ ॥ रिखी अनुराधायें जनमीआ, प्रनुतणी वृश्चिकरासरे ॥ दसलाख पूरव आउखो, लही वसे सदा वासरे ॥ अष्टम० ॥ ५ ॥ चंद लंठन धनु एकसो, उपर अधिक पचासरे॥ एटलो मान ठे देहनो, चंद जेम उजालोजासरे ॥ अष्टम० ॥ ६ ॥ राजलंमी संजमलीयो, स्वामीय ठठतप कीधरे ॥ कनकधारा घण वरसीता, दान संवछर दीधरे ॥ अष्टम० ॥ ७ ॥ सोमदत्ता घर पारणुं, प्रथम प्रमोद परिमन्नरे ॥ सुर मली उछ्वव तिहां करे, सहुय नणे धन धन्यरे ॥ अष्टम० ॥ ८ ॥ नागतरु नीचले उपनो, ठठतप केवलनाणरे ॥ आठने पणसिय गणधरा, चउदह पूरव जाणरे॥ अष्टम० ॥ ॥ ९ ॥ साहुसाहुणी गण परिवर्यो, सिखर समेतगीर स्वामरे ॥ पहुतला मास तप सहससु, उत्तम सिवपुर ठामरे ॥ अष्टम जिनवर जग जयो ॥ १० ॥ (कलस) इम जिनवरनायक, शिवसुखदायक, चंदप्रनु त्रिनुवन धणीय ॥ अमियघणवुठो, जो प्रनु तुठो, श्री पार्श्वचंद्रसूरि संथूणीय ॥ अहनिसी तसु सेवा, लागी देवा,

करी एक चित्त हरख भरे ॥ मनवंछित लहीयें, जिनगुण गाहीये, आवे नवनीधि तासु घेरे ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ सूरि श्रीपार्श्वचंद्रविरचितं श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

कल्याणमालामणिसन्निधानं, श्रीगौतमाद्यैर्मुनिभिः प्रधानम् ॥ यशोगुणैः संप्रति वर्द्धमानं, स्तवीमि भक्त्या जिनवर्द्धमानम् ॥ १ ॥ अष्टभक्षसमानाः सन्ति लोका इदानी–मघनसरलभूता वक्रभावप्रभूताः॥ कथमिह हि लभन्ते प्राज्ञवं शुद्धमार्गं, प्रचुरतरविशस्ते तेन तुभ्रा नु चित्रम् ॥ २ ॥ लक्षवर्णादयोऽनेके, वार्धिपद्ममिताहेताम् ॥ ह्रस्वदीर्घप्लुतभेदाः, सवर्णा इति मे मतिः ॥३॥ प्राप्तासन्धि बुधा एऐ–, त्रओ सन्ध्यक्षराणि च ॥ व्याकुर्वन्ति यथा भावं, तथाऽहं वीर दर्शनात् ॥ ४ ॥ जैना अजैना उभये स्वरायं, संगृह्य मह्यां च विराधकाः स्युः॥ आराधिका वा जिन पर्युपास्ते–, स्तदन्तरं शुद्धधियाः कृतायाः ॥५॥ यावन्तः सन्ति विख्याता, अवर्जा नामिनः प्रभो ॥ तावन्तः शत्रवो दूरं, भूयासुस्त्वत्प्रसादः ॥ ६ ॥ आद्यन्ताभ्यामर्हतां सुप्रसिद्धौ, यौ चक्राते वार्षिकं सामि वर्षम् ॥ विश्वाधीशौ वन्दनीयौ जनानां, नित्यं वन्दे तावहं भक्तियुक्तः ॥ ७ ॥ भूयांसीहाऽनेहसा व्यञ्जनानि, भुक्त्वा भुक्त्वा भूयसा नैव तृप्तिम् ॥ याता जीवास्त्वत्प्रभो तावकीनां, श्रुत्वा वाचं वीतरागा बभूवुः ॥ ८ ॥

स्वामिन् मे सर्वपापानां, कार्यायेत्संज्ञया समम् ॥ जायते यदि सामर्थ्यं, त्वत्स्वरूपं लभेत्तदा ॥ ए ॥ श्रामाः श्रृएवन्तु मोहाद्या, श्ररेदोन्नामिनो गुणः॥ यथाऽयुर्वेदिनो जन्तो–, स्तथा वीरो मयेक्षितः ॥१०॥ एवं कल्याणनिर्वाण–, कल्याणिकतपोहनि ॥ संस्तुतः पार्श्वचन्द्रेण श्रीवीरो दिशतु श्रियम् ॥ ११ ॥ इति.

अथ श्री वीतराग स्तुति.

शिखरणी छंद.

चिदानंदकंदं जिनपति जिनेंद्रं अघहरं, सदा सुत्रं ज्ञानं विसदवर ध्यानं सुखकरं; शरएयं कारुएयं अचल शिव अद्कं मुनिवरं, अनंतं अव्याधं परमपदसादं जिनवरं ॥१॥ हितं सर्वसत्वं सुगुण गणराजं जगपतिं, विधी व्रह्मं रम्यं विदित सबजोगं मगपतिं; अनेकं एकं वा हरन सबरोगं प्रञ्च तमे, सदासक्तिव्यक्ति परम सुखरक्ति विज्ञु तमे. ॥२॥ जगतवंद्यं जेष्टं जयतिजगश्रेष्टं जगगुरुं, महाधीरंवीरं सकलमतिन्नासं नयहरं; महान्नाग्यं नोग्यं नगतजनपालं गतदरं, महामोहं सोहं रहितरजपंकं जयकरं. ॥३॥ गुणाधीपं धीशं रटत तव नामं मुनिजनं, सदामुक्तं गुप्तं कटत सबक्लेसं न्नमवनं महाबुद्धं सिद्धं चढत सुखश्रेणिं दमयुतं, महाकिर्त्ति स्फुर्त्ति घटत छुखश्रेणीं समयुतं. ४ ॥ इति वितराग स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री ऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग भैरव ॥

उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाइयें ॥ उठत० ॥ नाभिजिके नंदके, चरण चित लाइयें ॥ उठत० ॥ १ ॥ आनंदके कंद जाकुं पूजत सुरिंद वृंद, एसो जिनराज छोड ओरकुं न ध्याइयें ॥उठ०॥ ॥२॥ जनम अयोध्या ठाम, माता मरुदेवा नाम ॥ लंछन वृषभ जाकें, चरण सोहाइयें ॥ उठत० ॥ ३ ॥ पांचसें धनुष मान, दीपत कनकवान ॥ चोराशी पूरव लाख, आयु स्थिति पाइयें ॥ उठत० ॥ ॥ ४ ॥ आदिनाथ आदिदेव, सुर नरहि सारे सेव ॥ देवनको देव प्रभु, शिव सुख दाइयें ॥ उठत० ॥ ५ ॥ प्रभुके पादारविंद, पूजत हरखचंद्र ॥ मेटो भव दुःखदंद, सुख संपद बढाइयें ॥ उठत० ॥६॥

॥ श्री छठा पद्मप्रभुजीनुं स्तवन ॥

॥ देशी हरियाळानी ॥

श्री पदम सदम कमलातणो, पाय पदम रह्यो जास ॥ सनेही ॥ तिण पदमां तिहुं लोकनी, वासी पदमप्रभु पास ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ ॥ १ ॥ कमला ते बेहु भातनी, द्रव्य भाव प्रकार ॥ सनेही ॥ द्रव्य रमा अरिहंतनी, सुर निरमित प्राकार ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रातिहार्य आठ जे, जन सुखकारी विहार ॥ सनेही ॥ हाटक कज पद थापना, सुर नायक छडीदार ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ ३ ॥ भावश्रिर निज घरतणी, ज्ञानानंद अखंड ॥ सनेही ॥ लोकालोक प्रकाशक, दर्शन सहित प्रचंड ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ ४ ॥ संतत निज गुण भोग जे, अव्याबाध स्वभाव ॥ सनेही ॥ चपळा कमळा थीर रही, ए तुम अतुल प्रभाव ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ ५ ॥ महिमानिधि प्रभु मुज मल्या, प्रसर्यो पुन्य प्रकाश ॥ सनेही ॥ वाचजी मुनिना भाणने, द्यो शिवकमळा विलास ॥ सनेही ॥ श्री० ॥ ६ ॥

॥ श्री सुविधिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ कपुर होवे अति उजळो रे.–ए देशी ॥

सुविधिनाथ जगनाथजी रे, अनुपम सुविधि निधान ॥ अविधि दोष सवि वारता रे, करता सकळ विधान रे ॥ १ ॥ स्वामी बलिहारी तुम धर्म ॥ जे आपे शिवशर्म रे स्वामी, दुर हरे भव भर्म रे॥ ए आंकणी ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ विधि भाख्यो अरिहंतजी रे, सकळ जीव सुखकार ॥ हिंसा अविधि जिहां नहीं रे, जीव दयाविधि सार रे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ जे विधि कह्यो जगतातजी रे, ते विधि में नवी थाय ॥ विधि विना शिवपद नहीं रे, हवे स्यो सिद्धि उपाय रे ॥ ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ विधि अविधि जाणुं नहीं रे, सेवुं प्रभुना पाय ॥ बांह्यग्रह्यानी लाजथी रे, आपे तारस्यो जिनराय रे ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥ तारक बिरुद जिणंदनो रे, जगमां छे सुप्रसिद्ध ॥ ते इण ठामे किम रहे रे, जो मुज काज न सिद्ध रे ॥ स्वामी० ॥ ६ ॥ पोतावट जाणी करी रे, आपो अविचळ राज ॥ वाघजी मुनिना भाणने रे, ए सवि सिद्धां काज रे ॥ स्वामी० ॥ ७ ॥

॥ श्री शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ अभिनंदनजिन दरिसण तरसीये.–ए देशी ॥

सहेजे शीतल शीतलजिनतणी, शीतल वाणी रसाळ ॥ चंदन चंद्र बरास अधिक सुणी, समजे बाळगोपाळ ॥ सहेजे० ॥ १ ॥ मर्म न भाखेरे संसय नवि राखे, दाखे भवजळ दोष ॥ रागादिक रे मूषक दूर हरे, करे संयमनो रे पोष ॥ सहेजे० ॥ २ ॥ सुर नर तिरिगण मन एकाग्रथी, निसुणे हर्ष अपार ॥ वेर विरोध न भूख तृषा नहीं, वळी नहीं निद्रा लगार ॥ सहेजे० ॥ ३ ॥ सहुने सुणतां रे हर्ष वधे घणो, उत्तम अधिक उच्छाह ॥ तृपति न पामेरे स्वादुपणा थकी, जिहां लगी भाखेरे नाह ॥ सहेजे० ॥ ४ ॥ ताप मिटे सवि

विषय कषायनो, शीतल हुवे भवि मन्न ॥ अमृतपान तृपति जिम सुख लहे, वहे जनम धन धन्न ॥ सहेजे० ॥ ५ ॥ भवदव ताप निवारो नाथजी, द्यो शीतलतारे सार ॥ वाघजी मुनिनो भाण कहे, प्रभु जिम लहु सुख अपार ॥ सहेजे० ॥ ६ ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथजीनुं स्तवन ॥

(सांभळ रे तुं सजनी मारी रजनी क्यां रमीआवीजी.-ए देशी.)

श्री श्रेयांस निःश्रेयसयायी, श्रेयो वृद्धि वधाइरे ॥ जिणे निज आतम सिद्धि निपाइ, सहज रिद्धि सवि पाइ ॥ प्रभुजी सुखदाइ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मिथ्या रजनी विनाशकारी, दिनकरने अनुहारीरे ॥ कर्म गजेंद्र घटा निवारी, मृगपति विक्रम धारी॥ प्रभु० ॥ ॥ २ ॥ अज्ञान क्रोध प्रमुख जे दोषा, दुरे कर्या राग रोषारे ॥ भाषा दोय बोले चिहुं कोशा, सत्यासत्यामोषा ॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥ जेहनी शीतळ मुद्रा दीसे, देखत हियडुं हीसेरे ॥ अति सुप्रसन्न रहे निसदीसे, अवितथ विसवावीसे ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥ दोष रहित गुण सहित जे देवा, नितु कीजे तस सेवारे ॥ वाघजी मुनिना भाणने हेवा, चरण रहुं नित मेवा ॥ प्रभुजी० ॥ ५ ॥

॥ श्री वासुपूज्यजीनुं स्तवन ॥

(देशी नणदलनी.)

वसुपुज्य नृप कुळ मंडणो, वासुपुज्य जिनराय जिनवर ॥ वस्तु तत्त्व प्रकाशता, वासव पुजित पाय जिनवर ॥ १ ॥ बलिहारी तुम नामने. जेहथी कोडी कल्याण जिनवर ॥ नामथी दुःख दोहग टळे, मळे सुख निरवाण जिनवर ॥ बलि० ॥ २ ॥ नामनुं स्मरण जे करे, प्रतिदिन उगते भाण जिनवर ॥ ते कमळा विमळा लहे, पण करे कोइ सुजाण जिनवर ॥ बलि० ॥३॥ चंदन पन्नग बंधन, शिखि रवे छुटि जाय जिनवर ॥ कर्म बंधन तेम जीवथी, छुटे तुम

काम पमाय जिनवर ॥ बलि० ॥ ४ ॥ सघन घनाघननी घटा, विघटे पवन प्रचंड जिनवर ॥ मयंगलनो मद किम रहे, जिहां वसे मृगपति चंड जिनवर ॥ बलि० ॥ ५ ॥ सहस किरण जिहां उगीयो, तिहां किम रहे अंधकार जिनवर ॥ तिम प्रभु नाम जिहां वसे, तिहां नहि कर्मबिकार जिनवर ॥ बलि० ॥ ६ ॥ भाण कहे मुनि वाघनो, नितु समरुं तुम नाम जिनवर ॥ जिम शिवकमळा सुख लहुं, माहरे एहीज काम जिनवर ॥ बलिहारी० ॥ ७ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

(छोडोनांजी छोडोनांजी कोस्याजी, विसयणा.–ए देशी.)

श्री पार्श्वजिनेश्वर परम दयानिधि, दुःखहर सुखकर स्वामी ॥ कुमत निशा निमिसंतक दिनमणी, शिवमंदिर विशरामी ॥ अंतरजामी तुं परिणति निःकामी, तें निज प्रभुता पामी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ तुं सुखदायक त्रिभुवन नायक, नतसुर नायक वृंद ॥ मोह महा तस्कर प्रतीघायक, ज्ञायक सकल जिणंद ॥ अंतर० ॥ २ ॥ असुराधम कमठासुर सढतर, हठभर दलन घरट्ट ॥ जयकृत कर्मसमूह विजय जिम, मर्दित मदन मरट्ट ॥ अंतर० ॥ ३ ॥ अश्वसेन नृपकुळ तिलकोपम, लंछन जास फणिंद ॥ लब्ध पसाय कसाय वहुल जे, फणिधर हुवो धराणिंद ॥ अंतर० ॥ ४ ॥ वामासुत अद्भुत गुणगण युत, इंद्रनील सम काय ॥ वाघजी मुनिनो भाण कहे प्रभु, करो शिवसुख पसाय ॥ अंतर० ॥ ५ ॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग प्रभाती. पार्श्व संखेश्वरा सार कर० ए देशी.)

सार कर शामला, बार लागी घणी; मेहेर करी मुजरो मान लीजे ॥ तम्हनो दास हुं, बार उभो अछुं; शामळा माहरी सार कीजे ॥ सार० ॥ १ ॥ बिकट भय चूरवा, सवी सुख पुरवा; दुर्जनत-

णो भय टाल दूरे ॥ आ कलियुग विषे, कोइ नहि तुज समो, प्रभु हवे माहरी आश पूरे ॥ सार० ॥ २ ॥ चूक पडे चाकरी, तोहि कीजे दया; दासरो दास हुं छुं दयाळा ॥ नाभिरायाह, मरुदेवी कुळे दीपतो, सर्व भविजनतणा प्रतिपाला ॥ सार० ॥ ३ ॥ दया करी दीजीये, दास जाणी मुने; तुज पदपंकज सेव सारी ॥ मुनि खुशी-आल कहे, तुज पद सेवतां; नाम प्रभु जाउ वलिहारी वारी ॥सार०॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

(अहिपुर मंडन सोलमो.-ए देशी)

वंश इख्वागे राजीयो, कुलगर नाभी कुलचंदरे ॥ जननी मारुदेवा जाइयो, वंदिय सुरनर इंदरे ॥ आदिजिन सुणो मुज विनती ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ हुं प्रभु तुज दरिसण विना, भम्यो काळ अनंतरे ॥ विषय तृष्णारसे वश पड्यो, चउगति दुःख सहंतरे ॥ आदि० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म जे, सेविया बहुपरे तेहरे ॥ क्रोध मान मायातणो, लोभनो थयो वळी गेहरे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ श्रवण पूजा तथा पेखणुं, द्रव्यथी वळी हुओ तुजरे ॥ भाव विना ए सहु वृथा, अहो अहो थयो सवि मुजरे ॥ आदि० ॥ ४ ॥ जेह छे तुज पद सेवना, तेह छे जिनपद हेतुरे ॥ मनमथ अघ दूर टाळवा, तुम दर्शन अपुरव केतुरे ॥ आदि० ॥ ५ ॥ दोष अढार दूरे करी, घातीआ कर्म दहंतरे ॥ शुद्ध स्वरुपता तें लही, भांगे सादि अनंतरे ॥ आदि० ॥ ६ ॥ शुद्ध स्वरुपता नवि लहुं, त्यां लगी तुंहीज देव रे ॥ कल्पलता फळे माचीया, किम रुचे आकफळ सेवरे ॥आदि०॥ ॥ ७ ॥ शुद्ध निरंजन तुज छे, निरुपाधिक गुण धामरे ॥ शुद्ध प्रणिधान जे सेवना, आपे अविचळ ठामरे ॥ आदि० ॥ ८ ॥ भविजन कमल विकासता, फेडतो तिमिर भ्रमपूररे ॥ लोकालोक प्रकाशतां, कनक प्रभुनुतन सूररे ॥ आदि० ॥ ९ ॥ वृषभलंछन धनु

पांचसो, जलधीसम तुंही गंभीररे ॥ विबुधमुनि मोहन इम वंदे, तुं जय जगत एक वीररे ॥ आदि० ॥ १० ॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग प्रभाती गोडी.)

रिखभजिन विनवुं देव अवधारीए, आपनो सेवक पार उतारीए ॥ तुम विनां अवर नही कोइ करुणा परो, निरखिये अतुल बळ निलय अलवेसरो ॥ १ ॥ चतुरपणे तेहने चरण शीर नामीये, तेहथी पार संसारनो पामिये ॥ जाणी एम स्वामी बहु ठाम हुं रडवड्यो, सहीय मुज आज चिंतामणि कर चड्यो ॥ २ ॥ नाथ तुज दर्शन दुर्लभ जे लह्यो, सहेज मुज हियडो हरखे अति गहगह्यो ॥ अमृतमय मूरति द्रष्टिगोचर थइ, पापने आपदा सहूय दूरे गइ ॥ ३ ॥ सौम्यगुण शशधर तेज दिणयर जिसि, साचीय वात मन वसीय जोवो कसी ॥ अन्यथा भविय भव ताप किम उपसमे, दर्शने केम अज्ञान तम नीगमे ॥ ४ ॥ मोह मिथ्यात संताप संतापीयो, नाथ दुःख दाह जल शरण हुं आवीयो ॥ चउगति चूरीने मुक्तिपद आपजो, आपना टूंकडो पार्श्वचंद्र स्थापज्यो ॥ ५ ॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

(अजीत जीणंदशुं प्रीतडी.-ए राग.)

वे कर जोडी वीनवुं, मोरा स्वामि हो, श्री आदिनाथ के ॥ आनंद उपजे नवनवुं, तुम दरशण हो, मुज भवभवे आथ के ॥ बे० ॥ ॥ १ ॥ आशा पुरो माहरी, तुज सेव्यां हो, सीजे सघळां काज के॥ आण वहे जे ताहरी, ते पामे हो, शीवपुरनुं राज के ॥ बे० ॥ २ ॥ भवसमुद्र तारण भणी, तुम मूरति हो, मानुं उत्तम नाव के ॥ प्रतिमा न माने जिनतणी, ते रुलसे हो, सींची बहुला पावके ॥ बे०॥ ॥ ३ ॥ माता मरुदेवा जनमियो, नाभिनंदन हो, जगु कुल अभिराम

के ॥ नर सुरवर बहु प्रणमियो, जिन पाम्या हो, श्री अविचल ठाम के ॥ बे० ॥ ४ ॥ दरिशन करवा उमह्यो, तुं तारण हो, प्रभु दीन दयाल के ॥ हीयडो हेजे गहगह्यो, एम जंपे हो, श्री मुनि नरपाल के ॥ बे० ॥ ५ ॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

(नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया.–ए राग.).

जगदुद्धारण देव कृपानिधि सुखकरुं, अद्भुत रुप निधान अनंत गुणे जिनवरु ॥ घाति अघाति कर्म चूर शिवपद वर्यो, अलख निरंजन रुप साहिबजी तुम धर्यो ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन हितकाज राज ए दीपतो, नवपदनो दातार रोग अरी जीपतो ॥. साधिष्टायक ईश केशरियानाथजी, चूरो चिंता स्वामी करो सुख साथजी ॥ २ ॥ धन्य वरष ऋतु मास पक्ष ए सोहनो, धन्य दिवस ए पहोर महुर्त क्षण मोहनो ॥ भेट्या प्रथम जिणंद शुद्ध करणे करी, भाग्यां भवनां दुःख देव शरणे करी ॥ ३ ॥ उगणीशसें दोय माघ चोथ वदि ध्याइयो, श्री लब्धिचंद्र सूरि शिष्य हरखशुं गाइयो ॥ भवभव दर्शन देव तुम्हारो मुज भणी, होजो ए अरदास करुं त्रिभुवन धणी ॥४॥

॥ श्री अजितनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(मारुं मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचलेरे.–ए राग.)

अजीत जीनवर वालम मुजतणोरे, सेवकजन आधार ॥ तुम दरिसन विन जन्म मरणे करीरे, पूर्यो अनंत संसार ॥ अजीत०॥१॥ काळ अनंतो बाळपणे गयोरे, वार्यो मोह मिथ्यात ॥ थयो उन्मत्त तेणे नवि पामीयोरे, तुम दरिसन जगतात ॥ अजीत० ॥ २ ॥ गिरिना खंड त्रुटे तेम माहरोरे, नाठो कर्मनो बंध ॥ वळि रुडी थइ परिणती काळनीरे, भाग्यो दुःखनो धंध ॥ अजीत० ॥ ३ ॥ वळी वळी लाधो नरभव दोहिलोरे, शुभ कुळमां अवतार ॥ जो तुज द-

रिसण भावथकी थयोरे, तो हुवो जय जयकार ॥ अजित० ॥४ ॥ भव भव होजो सेवा ताहरीरे, अवर न मागुं राज ॥ सागरचंद्रनी भावे विनतीरे, मानी ल्यो महाराज ॥ अजीत० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

अजित चरन परिचरनां, सरनां नितु करनां ॥ करनां सदा सुख वरनां, सरनां नितु करनां ॥ ए आंकणी ॥ चिदानंदघन चिन्मय मूरत, चिद्रुपी चित्त धरना ॥ सरना० ॥ १ ॥ सहजानंद रमण परिणामी, घननामी अनुसरना ॥ सरना० ॥ २ ॥ ज्ञान दरशन वीर्य सहकारे, सुख भरपुरे भरनां ॥ सरना० ॥ ३ ॥ अकल अमल अविचलपद ध्याता, दूरित तिमिर परिहरनां ॥ सरना०॥४॥ भानचंद्र प्रभु चरण कृपाये, भव भव फेर न फीरना ॥सरना०॥५॥

॥ श्री अजितनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

तुं परमेश्वर मेरो, अजीतजिन तुं परमेश्वर मेरो ॥ तुं त्रिभुवनपति समरथ साहीव, खिजमतगार हुं तेरो ॥ अजित० ॥ १ ॥ विषय विकल जो देव कहावत, सोतो मोह अंधेरो ॥ राग दोषविण जग उपगारी, याही देव भलेरो ॥ अजित० ॥ २ ॥ मेरे मनमें तुंही बसतहे, नाम जपत हुं सवेरो ॥ सेवा न छोरु कवहुं चरणेकी, होइ रहु नितु चेरो ॥ अजित० ॥ ३ ॥ मोपर करुणाकर जगतारक, दुःख सह्यो में घणेरो ॥ अब मोये दीजे महासुख एसो, जामे नहि भव फेरो ॥ अजित० ॥ ४ ॥ मेरे महोदय काज कियोमे, सरण जग पतिकेरो ॥ भानचंद्र प्रभु सेवत पायो, दिन दिन सुख अधिकेरो ॥ अजितजिन तुं परमेश्वर मेरो ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(गीरुआरे गुण तुमतणा.-ए राग.)

आज भलो दिन उग्यो मेरे. तारंग मंडण भेव्यारे ॥ अजित

जिनेश्वर सब जग सुखकर, निरखत भवदुःख मेव्यारे आज भलो० ए आंकणी. ॥१॥ तेहनी सुरत मोहिनी मूरत, देखत होय उजेरारे ॥ तेहथी दर्शन ज्ञान चरण लही, निश्चल होत पूजेरारे ॥. आज० ॥२॥ पूजेरा त्रिहुं काले तरीआ, निंदक भवमांहि फिरीयारे ॥ एम जाणी ए प्रासादनी परे, ऊंच भावे होजो भरीयारे ॥ आज० ॥३॥ ओगणिससें तिया वद वैशाखे, पूज्या श्री जिनचंदारे ॥ श्री लब्धिचंद्रसूरि शिष्य कहे इम, होजो परमाणंदारे ॥ आज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री अभिनंदनस्वामीनुं स्तवन ॥

(कोयलो पर्वत धुंधलोरे लो.-ए राग.)

द्यो दरसण प्रभु माहरारे लो, अभिनंदन जिनराजरे वालेसर॥ त्रिभुवननायक सुखकरुरे लो, कुण जाणे तुजमाजरे वालेसर ॥ द्यो० ॥ १ ॥ जोयण दरशण दोहिलोरे लो, सकल गुणनो ठाणरे वालेसर ॥ तोपण साहिब ताहरीरे लो, जो करुणासयराणरे वालेसर ॥ द्यो० ॥ २ ॥ तो क्षणमांहे पामीयोरे लो, अनुभव रस भरपूररे वालेसर ॥ गौतम प्रमुखतणी परेरे लो, विघन टळे सहु दूररे वालेसर ॥ द्यो० ॥ ३ ॥ चरमावर्त थया पछीरे लो, अपूर्वकरण गुणठाणरे वालेसर ॥ सबला टी घण कर्मनीरे लो, भेदे आतमरामरे वालेसर ॥ द्यो० ॥ ४ ॥ अकल अमर अजरामररे लो, भगतवच्छल सिरताजरे वालेसर ॥ सागरनी ए विनतीरे लो, अवधारो महाराजरे वालेसर ॥ द्यो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री सुमतिनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(केशरियाको दर्शन करनेकुं आयो-ए राह.)

निरख बदन सुख पायो, में प्रभुको निरख वदन सुख पायो ॥ सुमतिनाथके मुखकी शोभा, देखत चित्त उमायो ॥ में० ॥ १ ॥ मेघ नृपतिके नंद आनंदन, माता सुमंगला जायो ॥ लंछन क्रौंच

अजोध्या उपजे, कनक वरण तन छायो ॥ में० ॥ २ ॥ धनुष तीन शत मान विराजीत, जसु जस तिहुं जग गायो ॥ चालीश लाख पूरव संवच्छरको, आयु प्रमाण बतायो ॥ में० ॥ ३ ॥ पंचम जिन पंचम गति गामी, परम पुरुष जीही ध्यायो ॥ हरखचंदके चित्तें तुम विण, और देव नहि आयो ॥ में० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभुस्वामीनुं स्तवन ॥

(आदि अजित श्री शान्तिनो–ए राग.)

पद्मप्रभ प्रभु विनवुं, तुमे परम दयाल ॥ त्रिभुवन जन उपगारीया, करो मुज संभाळ ॥ १ ॥ निज सेवक प्रभु उधरो ॥ सेवा तुमारी विणु रुल्यो, भव भम्यो अनंत ॥ चउगति दुःख सागरतणो, इम न लह्यो अंत ॥ निज० ॥ २ ॥ स्वामी हिवे हुं क्यम करुं, क्यम पाळुं आण ॥ दुर्बळ खरे कीम उपडे, हस्तितणो पलाण ॥ निज० ॥ ३ ॥ मोह सबळ संकेतियो, निज नंदन काम ॥ तेणे वनीता वश पाडीयो, न गम्यो तुम नाम ॥ निज० ॥ ४ ॥ विषयरसे सर्व हुं रम्यो, रस गंध सु फास ॥ शब्द रुप ए पाडुआ, कुडा मन मृगपास ॥ निज० ॥ ५ ॥ ते में जाण्या रुअडा, परिग्रह आरंभ ॥ कुगति कारण नहु ओळख्या, थयो बोधिदुलंभ ॥ निज० ॥ ६ ॥ मोहवधु आवी नडे, करे धर्म विघात ॥ चउद पुरवधर रोळव्या, मुज केवी वात ॥ निज० ॥ ७ ॥ ते निंद्रावासे वसे, मुजतणे निशदिश ॥ कामणगारी जिम दमे, तोय न चडे रीश ॥ निज० ॥ ८ ॥ विकलपणुं ए माहरुं, जाणी तुम आण ॥ जुओ वयरी केलवे, मोह मत्त अनाण ॥ निज० ॥ ९ ॥ तारे ते केम बोलवे, ए प्रगट प्रमाद ॥ जिनवर ते किम कारवे, ए किम विधिवाद ॥ निज० ॥ १० ॥ द्विगुणो मुज मुरखपणो, एक करुं प्रमाद ॥ जिनवचने थापुं वळी, ए विष निसवाद ॥ निज० ॥ ११ ॥ मोह मिथ्यातें भोळव्यो, पाड्यो सबल

प्रवाह ॥ श्रुत अविलंबण थंभीयो, तारो जगनाह ॥ निज० ॥ १२॥ समकित संबळ आपीयो, कापियो किलेश ॥ भयभंजण स्वामी मल्यो, त्रिहुं भुवन नरेश ॥ निज० ॥ १३ ॥ धर धरणीपति कुलतिलो, पद्मांक प्रधान ॥ जणणी सुशीमा उरसरे, राजहंस समान ॥ निज० ॥ ॥ १४ ॥ सुरतरु सरिखा किम कहुं, धवळ चारु करीर ॥ किम विद्रुम ओपमा लहे, प्रभु तुम शरीर ॥ निज० ॥ १५ ॥ कलश—वैरागे सतो राग न रातो, उगतो रवि जिम तिमिरं हरो, पद्मप्रभु स्वामी मस्तक नामी ॥ पार्श्वचंद्र शिव सुख करो ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रभुस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग धनाश्री.)

मो मन तो पर नापर लीनो, निसदिन तेरो ध्यान धरतुहे ॥ रहे रंग रस भीनो ॥ मो मनतो० ॥ १ ॥ ओर देवनसें नाहि ढुकतुहे, सोस वडोसो कीनो ॥ भुलि अनादि अंधेरो घटको, दुर विदारी हिदीनो ॥ मो मनतो० ॥ २ ॥ बहुत काळ ढुंढत नहि पायो, सांइ परम नगीनो ॥ जिनकी ज्योति जलकमे मेरो, अब अपनो पद चीनो ॥ मो मनतो० ॥ ३ ॥ त्रिभुवन जयकमळा घर लायो, वैरीनुंको बल छीनो ॥ भानचंद्र प्रभु तेरी कृपाथी, महानंद सुख लीनो ॥मो०॥४॥

॥ श्री श्रेयांसनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग गोडी मल्हार.)

अबतो उधारो मोहे चाहिये जिणंदराय, राखुं भरोसो में राय के चरणको ॥ सुणो श्री श्रेयांसनाथ, साचो शिवपुर साथ ॥ विरुद तुमारो, प्रभु तारण तरणको ॥ अबतो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सिंहपुरी जन्म ठाम, पिता विश्नुसेन नाम ॥ विश्नाराणी कूखे जायो, कंचन वरणको ॥ अबतो० ॥ २ ॥ वरस चोराशी लाख, आयुको प्रमाण भाख ॥ लंछन चरण खडगी, सुखके कारणको ॥ अबतो०

॥ ३ ॥ हुं तो छुं अनाथ तुमे, नाथनके नाथ प्रभु, तुम विणु अवर, न दुसरे चरणको ॥ अबतो० ॥ ४ ॥ प्रभुके पादारविंद, पूजत हरखचंद ॥ दीजीए आनंद, दुःख मेटीए मरणको ॥ अबतो० ॥५॥

॥ श्री शांतिनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(त्रिसलानंदन चंदन शित-ए राग.)

श्री शांतिजिन सुणो अरदास, सेवकजननी पुरे आश ॥ शांति सेवीये ॥ तुम दरिशण हुवे परमाणंद, नाठो मिथ्यामोहनो फंद ॥ शांति० ॥ १ विश्वसेन नृप कुल अवतार, अचिरामाता हर्ष अपार ॥ शांति० ॥ मृगलंछन सोवनवान, धनुष चालीस देहनुं मान ॥ शांति० ॥ २ ॥ पांचमो चक्रि भरत मोझार, जीत्या देश बत्रीश हजार ॥ शांति० ॥ छ खंड साधी छांड्या पृथ्वीराज, संयम आदरी साध्या काज ॥ शांति० ॥ ३ ॥ तप करी पाम्या ज्ञान अपार, हुवो त्रिभुवन जय जयकार ॥ शांति० ॥ चोसट इंद्र करे नितु सेव, तुम सम अवर नहि कोइ देव ॥ शांति० ॥ ४ ॥ तुम ध्यानथी शांति थाय, विघ्न दारिद्र्य दूर पलाय ॥ शांति० ॥ अष्ट कर्म खपी मुक्ति लहंत, भांगे पहुता सादि अनंत ॥ शांति० ॥ ५ ॥ जिन प्रतिमाने जिनमान भेद, वंदतां करस्ये पापनो छेद ॥ शांति० ॥ निश्चय व्यवहारे पूजे जेह, शिवसुख पामे तेमां न संदेह ॥ शांति० ॥ ६ ॥ आप तरण प्रभु तारणहार, प्रसर्यो जग शांति उद्धार ॥ शांति० ॥ पंडित मुनि श्री मोहन शिष, वीरचंद्र पभणे जगदीश ॥ शांति० ॥ ७ ॥

॥ श्री मल्लिनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(तुं परमेश्वर मेरो अजीतजिन-ए राग.)

सुखकारक प्रभु मल्लि जिनेश्वर, सर्व जीव हीतकारि ॥ भोयणी ग्रामे श्री जिनराजे, उत्तम नर उपगारि ॥ हो मल्लिजिन तुम नामे बलिहारि, सेवकने सुखकारि ॥ हो मल्लि० ॥ १ ॥ मोहनी मूरत सुं-

दर सोहे, शिवसुखने दातारि ॥ कोटि रविथी ए प्रभु दीपे, तेजे अधिका भारि ॥ हो मल्लि० ॥ २ ॥ सुणी तीरथ हुं दूरथी आव्यो, हर्ष अधिक मन धारि ॥ प्रतिमा जोता आनंदे मोत्ता, पाप तिमीर विदारि ॥ हो मल्लि० ॥३॥ अर्ज करुं हुं उभो द्वारे, मनधारो ब्रह्म चारि ॥ मिथ्यात मोह अंधकारे लीनो, हेते करो भवपारि ॥ हो मल्लि० ॥ ४ ॥ भू रस उगणीश महा वदेरे, बुध एकादशि सारी ॥ सूरिराज श्री सहज कलानिधि, सागर सेवे वारंवारि ॥ हो म०॥५॥

॥ श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(हिरज्झाकी चाल.)

चिन्तामण स्वामी अरज हमारी सुन लीजीये ॥ चिन्तामन० ॥ तुम राजा हम प्रजा तुमारी निशदिन करते सेवा ॥ सु निजर करके मुझकुं दीजे, अविचल सुखका मेवा ॥ हो चिं० ॥ १ ॥ तुम शिववासी हम जगवासी, एही बडा अंधेरा ॥ इसकुं आप विचारो मनमे, कैसे होय निवेरा ॥ हो चिं० ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल कहावो, जगजीवन जिनराया ॥ एसा विरुद तुमारा साहेब, सवहीके मन भाया ॥ हो चिं० ॥ ३ ॥ चरणकमलकी सेवा चाहुं, एह विनती मोरी ॥ कहत अवीर कृपा जिनवरकी, लागी मुगतिकी डोरी ॥ हो चिन्तामन० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(तपपदने पुजीजे हो भविया.- ए राग.)

संखेश्वर पासजिन वंदो, भविकजन संखेश्वर पासजिन वंदो ॥ सुरत मंडन दुरित विहंडन, एह साहेब चिरनंदो ॥ भ० ॥ १ ॥ अश्वसेन कुल गगन दिणयर, वामा कुखे कज चंदो ॥ नील कमलदल नव कर काया, सेवत लंछन फणिंदो ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभु मुख दीठे तीरय गति छेदी, पद पायो धरणिंदो ॥ जिन पडिमा जिनवरसम

भावत, पावत परमानंदो ॥ भ० ॥ ३ ॥ अशुद्ध पुंज विकल्पने छांडे, प्रगट्यो समरस कंदो ॥ शुद्ध स्वरुपी सहजानंदी, ध्यावो असंग अफंदो ॥ भ० ॥ ४ ॥ संवत अढार छेताले माधव, सीत दशमी जिन वंद्यो ॥ पंडित श्री वीरचंद्र कृपाथी, मलुकचंद्र दुःख छंड्यो ॥ भविकजन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

तुंही नाथ हमारो हो जिनपति, तुंही नाथ हमारो ॥ ए आंकणी ॥ योग क्षेमंकर भविक सकलके, सेवक हैयामां धारो ॥ हांहां रे प्रभु, सेवक हैयामां धारो हो जिनपति. तुंही नाथ हमारो ॥ १ ॥ यो गुन पाये नहि सो मिलावत, पाये गुनकूं सुधारो ॥ हांहां रे० ॥२॥ अनभिराम कलिमल करो दूरे, अब मोहे पार उतारो ॥ हांहां रे० ॥ ३ ॥ त्रिभुवननाथ सार करो मोरी, करुणा नजर निहारो ॥ हांहां रे० ॥ ४ ॥ पास चिंतामणी भानुचंद्रकी, एही विनती अवधारो ॥ हांहां रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री गोडीजीपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(व्याकुल थाओ मांरे वाला, हमणां लाग नथी नंदलाला-ए देशी.)

जय जय श्री गोडी जिनराया, सुरपति चोसठ सेवे पाया ॥ दिन दिन परतारे सवाया, सांभळी सेवक चरणे आया ॥ जय० ॥ १ ॥ होंस हीयामां रे हुंती, आज माहरे संपूरण ते पोहती ॥ पाट पधारि घो मोहलो, पडदो परो करी चित्त खोळो ॥ जय० ॥ २ ॥ विलंब न कीजे रे वाला, वामा सुत जिनजी मतवाला ॥ अरथी दर्शन करवा आव्या, हेज भराणा स्वामि सुहाव्या ॥ जय० ॥३॥ आपी दरसन रे दुःख टालो, स्वामि सेवक संबंध संभाळो ॥ दोडी आव्या छे जे दासा, गोडीराय तेहनी पूरो आसा ॥ जय ॥ ४ ॥ घणुं स्युं कहीये रे घननामी, दिलना महिरम अंतरयामी ॥ सुनजर करीने नाथ निहाळो, परमेश्वर सेवक प्रतिपाळो ॥ जय० ॥ ५ ॥ दर्शन तु-

मचुं रे ते समकित, सकल धर्म्ममां होये समचित ॥ तेहथी भासन गुण अविरुद्धो, प्रगटे निज आतमने सुद्धो ॥ जय० ॥ ६ ॥ चरण रमणनी रे संपद, तेहथी अलगी भवनी आपद ॥ पामे पूर्णानंदी लच्छी, सुविहित प्राणी लीला स्वच्छी ॥ जय० ॥ ७ ॥ अश्वसेन नृपना रे नंदा, सेवक पोमावइ धरणेंदा ॥ परतो पूरे आण अखंड, धवल धींग यक्षराय प्रचंड ॥ जय० ॥ ८ ॥ पारकर देशे पोढो, सोभे जगमां समरथ सोढो ॥ तिणे भेटाव्या रे हरखे, अढारसें चोवीसाने वरसे ॥ जय० ॥ ९ ॥ पोष सुदि तेरसने दहाडे, वासर रविसुत मननी रुहाडे ॥ गुणनिधि गोडीचो विराजे, भेट्यां भव भय भावठ भाजे ॥ जय ॥ १० ॥ बुध श्री गुलालचंदगणि सीस, गुणचंद थुणिया श्री जगदीस ॥ देज्यो परमानंद पडूर. गोडीराय दिन दिन चढता नूर ॥ जय० ॥ ११ ॥ संपूर्ण ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

(जन्म कल्याणक.)

आज महोच्छव रंग रलीरी, जायो सुत त्रीसलादे राणी ॥ कामित पूरण काम कलीरी, आज महोच्छव रंग रलीरी ॥ सझि सिनगार सकलसुर वनिता, आपन आपन मेल चलिरी ॥ आवत सिद्धारथके आंगण, पूरत मोतीयन चोक मलिरी ॥ आज० ॥ १ ॥ इन्द्र हुकुम कर धनद पठायो, सब वसुधा धन धान्य भरिरी ॥ कनक रत्नमणि पंच वरणके, कुसुम बिखेरत गलीय गलीरी ॥ आज० ॥ २ ॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावत, नाचत नाटक सुर कुमरीरी ॥ बाजत गहन शब्द कर दुन्दभी, विणा वेणुं मृदंग भलीरी ॥ आज० ॥ ३ ॥ जय जयकार भयो तिहुं जगमें, व्याधि व्यथा सब दूर टलीरी ॥ हरखचंद्र जनमें प्रभु मेरे, मनकी आशा सफल फलीरी ॥ आज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री पज्जोसण (महावीरस्वामीनुं) स्तवन ॥

(प्रथम जिनेश्वर पूजो.-ए राग.)

श्री वीरजिनेश्वर वंदो, सिधारथ नृप कुळ चंदो हो ॥ साजन सेवोए ॥ एक दिन वीर उपगारी, भाख्यो पर्व पजुषण भारी हो ॥ साजन० ॥ १ ॥ दिन आठे अट्ठाइ, पंचमी लगी कीजे भाइ हो ॥ साजन० ॥ निर्मळ शील आराधो, ए दुश्कर नरभव साधो हो ॥ साजन० ॥ २ ॥ घटी चार निशा लेइने, परमेष्ठी जाप जपीने हो ॥ साजन० ॥ अशुभ करम आलोयवा, पडिकमणुं कीजे शुभ जीवा हो ॥ साजन० ॥ ३ ॥ करी जिनमंदीर जावो, अंग अग्र भाव पूज बनावो हो ॥ साजन० ॥ पुजा करी श्री गुरु वंदो, कल्प वाचना मुणी आणंदो हो ॥ साजन० ॥ ४ ॥ वाचना सुणी हितकारी, परभावना कीजे सारी हो ॥ साजन० ॥ आरंभ करम सवि टाळो, पात्रदान दीजे सुविशाळो हो ॥ साजन० ॥ ५ ॥ तप तेलानो कीजे, नागकेतु जिम सुख लीजे हो ॥ साणन० ॥ इण विध पर्व आराधे, ते शिवरमणी सुख साधे हो ॥ साजन० ॥ ६ ॥ जिनराज महोत्सव आख्यो, सवि जीवने हित करी भाख्यो हो ॥ साजन० ॥ भावसहित उत्सव जे करशे, ते हर्षथकी फल लहेशे हो ॥ साजन० ॥७॥

॥ श्री दीवाळी (महावीरस्वामीनुं) स्तवन॥

(सनेहि संत ए गिरी सेवो.-ए राग.)

श्री सीद्धारथ नंदन देवा, प्रभु सेव करुं नित्य मेवा ॥ देजो मुज भव भव सेवा, जगत गुरु वीर परम उपगारी ॥ प्रभु करुणानिधि दातारी ॥ जगत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शोल पहोर प्रभु देशना वरसे, सांभळी भवि हृदयमां धरशे ॥ तोरा चरणकमल नित्य फरसे ॥ जगत० ॥ २ ॥ ब्राह्मण देवशर्मा जाणे, प्रतिबोधवा मोकल्या ते टाणे ॥ गौतम चाल्या गुणखाणे ॥ जगत० ॥ ३ ॥ प्रति-

बोधिने पाछा वळिया, मारगमांहे श्रवणे सांभलिया ॥ प्रभु मोक्षपारग संचरिया ॥ जगत० ॥ ४ ॥ ते सांभळी दिलमां वात, गौतमने थाय वज्रघात ॥ विवेके गुणमणि ख्यात ॥ जगत० ॥ ५ ॥ हवे कहेने हुं कहीश वीर, गौतम चिंतवे साहस धीर ॥ कर्म शत्रुना त्रोड्या ज़ंजीर ॥ जगत० ॥ ६ ॥ काती कृष्ण हुआ निर्वाण, प्रभाते इंद्रभूति केवलनाण ॥ जयो जयो भणे गुणखाण ॥ जगत० ॥ ७ ॥ अढार देशना राजा मळिया, भावदीपक मोक्षमां भळिया ॥ द्रव्य दीपक गुणमणि भरिया ॥ जगत० ॥ ८ ॥ प्रभु वरिया शिव लटकाळी, थयुं ध्यान पद्मासन वाळी ॥ तिहां प्रगटी लोक दिवाळी ॥ जगत० ॥ ९ ॥ मुज मंदिर सुरतरु फळियो, परमातम गौतम मळीयो ॥ गइ भावठ शुभ दिन वळियो ॥ जगत० ॥ १० ॥ संवत ओगणीश पंचलोतेरा वरशे, दीवाळी दिन मन हर्षे ॥ प्रभु मोक्ष वर्या शुभ दिवशे ॥ जगत० ॥ ११ ॥ इति.

॥ श्री जिनेश्वरनुं स्तवन ॥

(हिरज्ञाकी चाल.)

अरज हमारी सुन लिजीये, जिनमतके राजा ॥ अरज० ॥ दुश्मन क्रोधादिक लगारे, पंच प्रमाद ठगेरा, तेरे काठिया केड न मुके ॥ विषयादिक रहे घेरारे, जिनमतके राजा ॥ अरज० ॥ १ ॥ अठ करम मोहे नाच नचावै, जोनी लाख चौरासी ॥ निज गुण बिण कछु काम न सरियो, तुमसे कहुं अविनाशी रे ॥ अरज०॥२॥ धरम धरम करतो जग ढुंढे, धरम मरम नही जाने ॥ साचे धरम बिना लहे कैसे, तत्त्व वात पेहेचानेरे ॥ अरज० ॥ ३ ॥ भव वनमांहे चेतन भमतां, समकितकुं नहि पायो ॥ गिलगिचीया जिम गुडता, गुडता अबके नरभव आयोरे ॥ अरज० ॥४॥ समरथ साहिब जान प्रभुजी, तुम दरसन मन भायो ॥ मुगति नगरकी डीगरी दीजे, अ-

वीरचन्द गुण गायोरे ॥ अरज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

(रुडुं चारित्रपद शुभ चित्त वश्युं - ए राग.)

श्री वीर जिणेश्वर उपदेशे, सुणो परखदा हो, सवि मनने रंगके । गणधर मुनिवर नरवरा, सुरनायक हो, भले भावे अभंगके ॥ भविका ज्ञान अभ्यासीयें ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सोभागी हो, तुम्हे सुगुण सुजाणके । रागी प्रभुवाणीतणा, आतमजी हो, कांइ थावो अजाणके ॥ भविका० ॥ २ ॥ अनादि मिथ्यात तमें करी, मुंझाणा हो, जगवासी जीवकें । ते सवि ज्ञान भण्यें सुण्यें, लहे तत्त्वनी हो, परतीत सदैवकें ॥ भविका० ॥ ३ ॥ भवन पदारथनी भली, शुद्धि थाये हो, एह ज्ञानथी सारकें । स्वपर प्रकाशक दिनमणी, ते भासक हो, लोकालोक विचारकें ॥ भविका० ॥ ४ ॥ विनयसहित गुण ज्ञानथी, दरिशननी हो, प्राप्तिनो दावके । ते दरिशन श्रद्धा करी, चेतनजी हो, ग्रहो चारित्र भावके ॥ भविका० ॥ ५ ॥ चरणथी मुक्तिनी संपदा, पामीजे हो, शिवसुख भरपूरकें । अव्याबाध अनंतनी, लीलाए हो, लहो निरमळ नूरकें ॥ भविका० ॥ ६ ॥ ते सुख कारण ज्ञान छे, दुःखवारण हो, भवतारण हेतुके । ज्ञान समो त्रिभुवन नहि, भविजनने हो, भवसायर सेतुकें ॥ भविका० ॥ ७ ॥ गुण अनंत चेतनतणा, तेहमांहि हो, गुणचरित्र प्रधानके । तेहमां ज्ञान अधिक कह्युं, सहि जाणे हो, तुम्हे सुगुण निधानकें ॥ भविका० ॥ ८ ॥ श्रुत अभ्यास करो सदा, तन मन वच हो, करो यत्न अनेककें । आराधो अविहडपणे, गुरु संगे हो, धरी आत्म विवेककें ॥ भविका० ॥ ९ ॥ इम देशना सुणी श्री वीरनी, श्री गणधर हो, पूछे सोहमस्वामीकें ; किम ते प्रभुजी आराधीए, जे दाननो हो, विधि कहो हित कामकें ॥ भविका० ॥ १० ॥ प्रभु

कहे कार्तिक मासनी, अजुआली हो, पंचमी अधिकारकें । पवित्र वाजोठे थापीने, श्रुत पुस्तक हो, बहुमाने सारकें ॥ भविका० ॥ ११ ॥ स्वस्तिक पंचक भरी भला, दीपावो हो, पंच दीपक ज्योत कें । धूप उखेवो श्रुत आगलं, फल ढोकता हो, होए ज्ञान उद्योतकें ॥ भविका० ॥ १२ ॥ पंचवरणना धानसु, पकवानें हो, वळी पंच प्रकारकें । इम विधि साचवी गुरु मुखे, पचखो भवि हो, उपवास चोविहारकें ॥ भविका० ॥ १३ ॥ पोषधस्युं गुणनुं गुणो, ज्ञानपदनुं हो, रसीआ गुण रंगकें । उत्तरदिशि साहमुं ठवी, सहस्र संख्ये हो, लहो गुरुने संगकें ॥ भविका० ॥ १४ ॥ पारण दिने बहु नेहस्युं, उजमणो हो, करो अधिके प्रेमके । साधरमी संतोषीने, ज्ञान पंचमी हो, आराधो एमकें ॥ भविका० ॥ १५ ॥ पांच वरस पांच मासनी, मरियादे हो, तपने परिणामकें । आगम विधिस्युं सेवतां, भव पंचम हो, लहो पंचम नाणकें ॥ भविका० ॥ १६ ॥ जिम वरदत्त विवेकीए, गुणमंजरी हो, करी ज्ञानकी सेवकें । तिम भवियण करो धारणा, वळी मुको हो, सवि विषयनी टेवकें ॥ भविका० ॥ १७ ॥ ते जेम भवजल निस्तर्या, तेम तरस्यो हो, तुम्हे सुभग दयालकें । ललित त्रिभंगी नाथजी, मुख भाखे हो, श्रीवीर विशाळके ॥ भविका० ॥ १८ ॥ ते निसुणी तप आचरो, नर नारी हो, तुम्हें चढते भावके । एहथी ज्ञान अनंतनी, लीलाए हो, होइ पुरण जमावकें ॥ भविका० ॥ १९ ॥ धन धन जिनशासन वरा, धन धन हो, श्री वीरजिणंदके । धन जे ए व्रत आदरे, ते पामे हो, गुण ज्ञान अनंदकें ॥ भविका० ॥ २० ॥ (कलश) इम वीर वाणी सुणी प्राणी, ज्ञानपंचमी तप करो ॥ संवेग रंगे साधु संगे, मुक्तिरमणीने वरो ॥ श्री श्यामजीगणि चरण सेवक, गुलालचंद्र जयंकरो ॥ तसु शिष्य गुणचंद्र कहे, भवियण भाव मंगल आदरो ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धचक्रजी नवपदजीनुं स्तवन ॥

(हो साहेबजी नेकनजर करी नाथ सेवकने तारो.–ए राग.)

भवि प्रिनी करी नवपद गुणनिधि, दायक लायक सेवियें ॥ तिहां प्रथम देव अरिहंत भाख्या, दूजा श्री सिद्धगुणी दाख्या ॥ त्रीजा आचारज गुरु आख्या ॥ भवि० ॥ १ ॥ चउथे पद उपाध्याय रुडा, पंचम गुरु साधु नहि कूडा ॥ छठ्ठो दंसण धरमे चूडा ॥ भवि० ॥ २ ॥ सप्तम पद ज्ञान सुंदर दिसे, अट्ठम चारित्र कर्म पीसे ॥ नवमे तप उत्तम जन कीसे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ राग द्वेष मोह दूर करी, आज्ञा संवेग संतोष धरी ॥ ध्यावो तो एह छे धर्म तरी ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सागरनिधि वसु इंदु समे, (१८९७) आश्विनसित पुरण ज्ञान रमे ॥ हर्षे जग जस परताप नमे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ श्री ऋषभदेवस्वामीनुं स्तवन ॥

पढम जिणेसर प्रणत सुरेसर केसर समवळी देह, एह सम सुख कर अवर कोइ नहि, महियल गुणमणी गेह हो स्वामी, तुंहि सदा सुखकार, तुं जग जीव आधार हो स्वामी, तुंहि सदा सुखकार ॥ आंकणी ॥ १ ॥ पार संसार सागरतणो ते लहे, जे वहे शीर प्रभु आण ॥ पाण पातक सम अन्य देवो तजी, भजी ल्यो त्रिभुवन भाण हो ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ ज्ञान पूरण तुज रवी सम जलहले, खलहले वचन पाथोधि ॥ बोध लहीवा पिये जे भवि श्रुत सुधा, ते सुधा करें निज सोधि हो ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ योध जिम मोह रिपु दुर करी तुं जयो, थयो शिवसुंदरी कंत ॥ अंत नहि जेनो तेहवा सुख लह्यो, में ग्रह्यो तुं भगवंत हो ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ संत सुधारस असरीस सागर, जगत दिवाकर देव ॥ सेवक भाण कहे मुनि वाघनो, भव भव ताहरी सेव हो ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री अभिनंदनस्वामीनुं स्तवन ॥

(फतमल पाणीडां गइती तळाव कांटो भाग्यो पमनी लांकमां.–ए देशी.)

प्रभुजी अभिनंदन जगनाथ, शिवपुर साथ भलो मल्यो॥ प्रभुजी तस्कर पति रागादि, तेहनो भय दूरे टल्यो ॥ प्रभुजी अभि० ॥१॥ प्रभुजी तुज सरिखो सथवाह, बांह्य ग्रहीने उद्धरे ॥ प्रभुजी दुःखदायक जग जेह, ते वैरी तिहां स्युं करे ॥ प्रभुजी०॥ २ ॥ प्रभुजी भव भमतां बहु काळ, चक्र अनंता वहि गयां ॥ प्रभुजी इहां मिल्या जिनराज, काज सवे मुज सिद्ध थया ॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥ प्रभुजी स्यो हवे सिद्धि विलंब, प्राप्तिनो अवसर भावियो ॥ प्रभुजी महिर करो महाराज, तुम चरणे हुं आवियो ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥ प्रभुजी तारण तरण जहाज, आज भले प्रभु भेटीया ॥ प्रभुजी वाघजी मुनिनो भाण, कहे भवदुःख सवि मेटीया ॥ प्रभुजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री धर्मनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(दीठी हो प्रभु दीठी सूरत तुज.–ए देशी.)

फळियाहो प्रभु फळिया मनोरथ मुज, मळिया हो प्रभु मळिय धर्मजिनेश्वरुजी ॥ उरणहो प्रभु पृथ्वी उरण कीध, पूरणहो प्रभु आशा पूरण सुरतरुजी ॥ १ ॥ आपेहो प्रभु आपे सवि सुख रिद्धि, थापेहो प्रभु थापे निज पद लोकनेजी ॥ व्यापेहो प्रभु व्यापे प्रभुगुण जेह, कापेहो प्रभु कापे तेहना शोकनेजी ॥ २ ॥ धन धन हो प्रभु धन धन तुं जगमांहि, मुज मन हो प्रभु मुज मनमें तुंहि वस्योजी ॥ निरखी हो प्रभु निरखी ताहरुं रुप, हरखी हो प्रभु हरखी तन मन उलस्योजी ॥३॥ समता हो प्रभु समता अमृत सिंधु, गमता हो प्रभु मन गमता स्वामी मल्याजी ॥ तेहवा हो प्रभु तेहवा दीठा आज, जेहवा हो प्रभु जेहवा काने सांभल्याजी ॥ ४ ॥ माहरी हो प्रभु मा-

हरी पुगी आश ॥ ताहरी हो प्रभु ताहरी द्रष्टी हुइ हवेजी ॥ वाघजी हो प्रभु वाघजी मुनिनो भाण, पनरमा हो प्रभु पनरमा जिनने विनवेजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रभुस्वामीनुं स्तवन ॥

(देशी आछिलालनी.)

चंद्रप्रभु जिनचंद्र, आठमे पूरणानंद, आछिलाल दीठो अतिशय शोभतोजी ॥ मंदर महिधर धीर, प्राप्त भवोदधि तीर, आछिलाल भव पडताने थोभतोजी ॥ १ ॥ रागादिक जे अपाय, जेहथी भव वृद्धि थाय, आछिलाल दुर कर्या ते दोषनेजी ॥ वार्यो मोह जंजाळ, संतत कर्म वाळ, आछिलाल पाम्या सर्व गुण पोषनेजी ॥ ॥ २ ॥ करता जग उपकार, धर्मदेशना जळधार, आछिलाल शार वचने भवि वृझवेजी ॥ संयम सत्तर प्रकार, भव आमय प्रतिकार, आछिलाल अतिचार व्रण रुंझवेजी ॥ ३ ॥ केवळज्ञान प्रकाश, भविजन कमळ विकाश, आछिलाल करतो दिन मणीनी परेजी ॥ महियल करे विहार, सकल लोक सुखकार, आछिलाल जिहां आदर तिहां संचरेजी ॥ ४ ॥ एहवो तीरथ नाह, भेट्यो अधिक उच्छाह, आछिलाल हर्ष अथाग हैये थयोजी ॥ वाघजी मुनिनो भण, कहे प्रभु अनंत विनाण, आछिलाल समता सागर तुं जयोजी ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(देशी बिंदलानी.)

वावीसमा श्री नेमि जिणंदा, सुख दीठे परम आणंदाहो ॥ जिनवर सुखकंदा ॥ भवि कुमुद चकोरी चंदा, सेवे वृंदारक वृंदाहो ॥ जि० ॥ १ ॥ परमातम पूरण आनंदा, पुरुषोत्तम परम मुणिंदाहो ॥ जि० ॥ जयजय जिन जगत दिणंदा, गुण गावे त्रिभुवन वृंदाहो ॥ जि० ॥ २ ॥ धीरीम जित मेरु गिरिंदा, गंभीरम शयन मुकुंदाहो ॥

जि० ॥ ३ ॥ श्री समुद्रविजय नरिंदा, माता शिवादेवीना नंदाहो ॥ जि० ॥ वारता प्रभु भव भय फंदा, सवि दूरे कर्या दुःखकंदाहो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जेणे जीत्या मोह मृगेंदा, शिवसुख भोगी चिदानंदाहो ॥ जि० ॥ वाघजी मुनि शिष्य भाणचंदा, इम विनवे हर्ष अमंदाहो ॥ जिनवर मुखकंदा ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

(मनोहर मीत ए प्रभु सेवो.-ए देशी.)

श्री वीरजिन केवळनाणी, लोकोत्तर गुणगण खाणी ॥ जसु पांत्रीस गुणयुत वाणी, गणधर मतिजळधि समाणी ॥ सुहंकर देव ए जगदीवो, सासननायक चीरंजीवो ॥ १ ॥ धन्य सिद्धारथ नृपवंश, त्रिमला कुखे राजहंस ॥ जेहमां नहि पापनो अंश, जश त्रिभुवन करे प्रशंस ॥ सुहं० ॥ २ ॥ जश मूळ अतिशय च्यार, उत्तर चोत्रीस प्रकार ॥ त्रिभुवन सुखकारी विहार, सवि भव्यतणा आधार ॥ सुहं० ॥ ३ ॥ जस निर्मळ भासुर अंग, चामीकर समवड रंग ॥ नितु तेज प्रताप अभंग, जोतां वाधे उछरंग ॥ सुहं० ॥ ४ ॥ जय चोवीसमा जगभाण, शिर छत्र धरी प्रभु आण ॥ वाघजी मुनि सेवक भाण, लहे दिन दिन कोडी कल्याण ॥ सुहं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पर्युषणपर्वनुं स्तवन ॥

(देशी आछिलालनी.)

सखि आव्यो श्रावण मास, प्रगट्यो पुन्य प्रकाश, आछिलाल, पर्व पजुषण आवियांजी ॥ मोटुं मंगळ जेह, उत्तम गुणनिधि तेह, आ०, भविजनने मन भावियांजी ॥ १ ॥ शत्रुंजय तीरथ सार, मंत्रमांही नवकार, आ० व्रतमां शीलव्रत जाणीयेजी ॥ नीरमां गजपद नीर, वस्त्रमांहि जेम चीर, आ० तिम ए पर्व वखाणिएजी ॥ २ ॥ जे परवे सुरराय, अष्टमे दीपे जाय, आ० अट्ठाइ ओच्छव तिहां करे

जी ॥ तिहां वृंदारकवृंद, वंदे श्रीजिन चंद, आ० अंग उच्छाह घणो धरेजी ॥ ३ ॥ जगमां ते धन धन्न, आराधे कृत पुन्य, आ० पर्युषण विधि सदाजी ॥ तस घर मंगलमाळ, पामे भोग रसाल, आ० दुःख दोहग नावे कदाजी ॥ ४ ॥ त्रीजे भव मनोहार, आठमेतो निरधार, आ० शिवरमणी लीला वरेजी ॥ तसु गुण गाइ जगीश, वाघजी मुनिनो शीश, आ० भाण इच्छा पुरण करेजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री संजातस्वामीनुं स्तवन ॥

(ढाळ पंथीडानी.)

मनडा जिनजीने जाजे मंडळेरे, जिहां जगदीसर श्री संजातरे ॥ चित्त चपळ परिहरी दिल थीर करीरे, पूछे भव पंक्तिकेरी बातरे ॥ मनडा० ॥ १ ॥ वळतो जे जिनवर उत्तर दीयेरे, ते तुं कहेजे वेगे आवरे ॥ आतम सुख पामे जिम अभिनवोरे, वाधे प्रेम बळी परभाव रे ॥ मनडा० ॥ २ ॥ देवसेन नंदन परउपगारीओरे, जननी देवसेना जायो नंदरे ॥ जयसेना गृहिणी हुइ जेहनीरे, सेवे सुरनर वृंदरे ॥ मनडा० ॥ ३ ॥ लोकांतिक वचने अवसर लहीरे, संयम पामी केवळ साररे ॥ एणे अहिनाणे मनडा ओळखेरे, साथे मुनि सुरवरनो परिवाररे ॥ मनडा० ॥ ४ ॥ शीख सुंदर देइ मन मुकीयुंरे, सुणजो माहरी ए अरदासरे ॥ श्री पद्मचंद्रसूरि इम विनवेरे, पूरजो पुरी मारी आशरे ॥ मनडा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री चिन्तामणीपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(वीरजी आयारे विमलाचळके मेदान.–ए राग.)

पासजी भेट्यारे चिन्तामणी महाराज, भवदुःख मेट्यारे, सफळ थयां सवि काज ॥ टेक ॥ दक्षण भरते गुर्जरदेश, राजनगर अलकापुरी वेश, राजे राजपुरे विश्वेश, सुणी जस महिमारे, दर्शन करवाने काज, प्रति रविवारेरे, आवे जैनसमाज ॥ पासजी० ॥ १ ॥ प्रभुजी

वामादेवीना नंद, जनकश्री अश्वसेन नरिंद, अहीलंछन नीलवरणो पिंड, पद्मावती देवी रे, पास करे संघ साज, भव भीड भागेरे, जिनवर भवोदधिझाझ ॥ पासजी० ॥ २ ॥ प्रभु ध्याने दुःखदोहग जाय, शुन्य नेत्र नवपल्लव थाय, आस्या पुर्ण पुत्रनी माय, दीन घर लक्ष्मीरे, महाले होय रंक राज, शत्रु मित्रभावेरे, थावे पावे सुख साज ॥ पासजी० ॥ ३ ॥ रोग ज्वलन जल विषधर चोर, न रहे रण अरि गयनुं जोर, नासे अष्ट महा भय शोर, मंगलमाळारे, प्रभु नामे रुपराज, नवनिद्धि सिद्धिरे, प्रगटे पुण्य प्रभाज ॥ पासजी० ॥ ४ ॥ समतशिखरपर प्रभु निरवाण, पाम्या अक्षयपद भगवान, ज्योतशुं ज्योत मली एक तान, अज अविनाशीरे, चउदराज शिरताज, पदकज वंदेरे, भ्रातृचंद्र सूरि आज ॥ पासजी० ॥ ५ ॥

॥ आत्मनिन्दागर्भित श्री पार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(मन मंदिर आवो रे, कहुं एक वातलडी.–ए राग.

प्रभु पार्श्वजिनेश्वर हो के आगळ अरज करुं, पाप आलोइहोके मिच्छत दूर हरुं । श्री जिनआणा हो के भव भव शीश धरुं, तास पसाये हो के भवजल वेगे तरु ॥ प्रभु पार्श्वजिनेश्वर हो के आगल अरज करुं, ए आंकणी ॥१॥ में तो बालपणामे हो के बहु विधि पाप कर्यां, वगर विवेके हो के अविरति कूप भर्यां । में तो संवर छंडी हो के आश्रव चित्त धर्यां, पशुअ बराबर होके अन्न जल जठर भर्यां ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ बारह वरसलो हो के बाळक विरुद वह्यो, तिहां पुन्य न पाप न हो के कांइ भेद ग्रह्यो । निज कृत कर्मे हो के बहु विधि दुःख सह्यो, फंदल मृग जीम हो के परवश होय रह्यो ॥प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुक्रमे दिन दिन हो के यौवन वेश लह्यो, पंच प्रमादज हो के सेवण हुं उमह्यो । चार कषाये हो के पूरित गर्व गह्यो, तिहां मद आठे होके पापे आप दह्यो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ नारी देखी हो के का-

मंध होय फर्यो, तिहां विषये वाह्यो हो के केथी नाहि डर्यो। मदी-रागस मातो हो के भक्षण मांस कर्यो, गणिका गुण गीधो हो के कार्तिक श्वान सर्यो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ चाडी चुगली हो के चोरी में ज्युं करी, परतिय (परस्त्री) देखी हो के आंखो मुज ठरी। जुगटे खेल्या हो के मृगयामांज फरी, धर्मनी वाटे हो के मुज मति रहत डरी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ लोभे लाग्यो हो के बोल्यो जुठ घणो, कर्मादानज हो के पनरह भेदतणो। में कुव्यापारे हो के संचय द्रव्य तणो, करी करी कीधो हो के बहु विधि कृपणपणो ॥ प्रभु० ॥७॥ जीव पंचेंद्री हो के निफल बहुल हण्या, कूड कलंके हो के अवगुण परह भण्या। कुमित्र कुसंगति हो के ते में सुमित्र गण्या, कुगुरु कुदेवज हो के खळ उपदेश सुण्या ॥ प्रभु० ॥ ८ ॥ वात उघाडी हो के वीजी केम कहुं, तुं छे अंतरजामी हो के सर्वज्ञ जाणी रहुं। कुगति उपावी हो के भावी मुगति चहुं, श्री जिन भगते हो के युगते पाप दहुं ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥ जीम जग गलधर हो के एक क्षण दृष्टि करे, तापज टाळी हो के नद सर कूप भरे। प्रभुनी सुनजरे हो के होवे पुन्य भरे, तो भवसत संचित हो के पापनिकंद करे ॥ प्रभु० ॥ १० ॥ श्री जिनआणा हो के मांही ज्युं भगति मळी, दूधजमांहे हो के साकर जाणी भली। मुज वंछित फळिया हो के भावठ सर्व टळी, सूरि अखयचंद्रा हो के पभणे चित्त रली ॥ प्रभु० ॥ ११ ॥

॥ श्री चिन्तामणीपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(कीजे मंगळ चार.–ए राग.)

मेरे दिल पास वस्यो हे, ज्यों चातक जलधार ॥ मेरे० ॥ ए आंकणी ॥ जयों राजहंस मानस मंदिरमे, वसी रह्या मानस सार ॥ मेरे० ॥ १ ॥ गज मन रेवा मधुप मन मालती, ज्यों कोकिल सहकार ॥ मेरे० ॥ २ ॥ कुमुद ज्युं चंद चंदन ज्युं भोगी, ज्युं अरविंद

दिनकार ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ गिरितनयाके दील ज्यों शंकर, कमलाके गीरधार ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ त्यों मेरे मन तुंही तुंही, तुज समरन करुं सार ॥ मेरे० ॥ ५ ॥ जय जय जगत दिवाकर ठाकुर, त्रिभुवनजन सुखकार ॥ मेरे० ॥ ६ ॥ श्रीपासचिंतामणी भानके साहेब, संघ सकल जयकार ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री चिन्तामणीपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग गोडी.)

प्रभुजी कौन कहै तुंही तारुं, मोए तारौ तौ वारु ॥ प्रभुजी० ॥ तारक नाम धरायकै मोकुं, क्यौ न करौ भव पारु ॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ तुं त्रिभुवन नायक बहु लायक, शिवसुख कौ दातारु ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ यारकौ विरुद संभारकै तारौ, मै हुं रह्यो तुम सारु ॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥ तरतेकुं तारे कहां अचरिज, तारौ हुं बहुल संसारु ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥ भान कहै प्रभु पास चिन्तामणी, दीजै सुख निरधारु ॥ प्रभुजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

(हो साहेब बाहु जिनेसर विनवुं.-ए राग.)

हो सज्जन वीर जिणेश्वर वंदिये, आणी अधिक आणंद हो ॥ हो स० विमलगुणे करी शोभतां, दीपे जेम दिणंद हो ॥ हो स० ॥ १ ॥ हो स० मुरति मोहनवेलडी, सुख संपत्ति दातार हो ॥ हो स० मुज मन मधुकर उमह्यो, देखण प्रभु दीदार हो ॥ हो स० ॥ २ ॥ हो स० सुरनर किन्नर भावस्युं, आवे जिनवर जात्र हो ॥ हो स० मृगमद केसर चंदने, पुजे जिनवर गात्र हो ॥ हो स० ॥ ३ ॥ हो स० गावे किन्नर शब्दथी, वंदे बे करजोड हो ॥ हो स० नृत्य करे प्रभु आगळे, पामे वंछित कोड हो ॥ हो स० ॥ ४ ॥ हो स० गुण उज्वल करी शोभतां, मुनिवर सागरचंद हो ॥ हो स० लाभ कहे

तुज ध्यानथी, पामे परमाणंद हो ॥ हो सज्जन० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन ॥

(नाथ केसे जंबुको मेरु कंपायो.—ए राग.)

शिखरजीका आज में दरशन पाया, भवभवना पाप गमाया ॥ शिखरजीका० ॥ इन गिरि उपर वीस जिनेश्वर, बहुत मुनि संग आया ॥ अनशन करी शिव शहेर पधारे, जोतसुं जोत मिलाया ॥ शि० ॥ १ ॥ वामानन्दन पास जिनेश्वर, मुळनायक सुखदाया ॥ सामली सूरत मे हनी मूरत, देखत चित्त हरखाया ॥ शि० ॥ २ ॥ केसर चंदन भरी कटोरा, प्रभुजीकी अंगिया रचाया ॥ अष्टप्रकारी पूजा करकें, आनंद रंग सवाया ॥ शि० ॥ ३ ॥ शुद्ध मन सेती जात्रा कीनी, संघ सकल हुलसाया ॥ सुनि तीरथकी महिमा मोटी, भविजन भाव वधाया ॥ शि० ॥ ४ ॥ उगनीसे उनतीस वरसमै, मिगसर वद मन भाया ॥ दुतीया दिन प्रभु महिर करीने, अबीरचन्द गुण गाया ॥ शिखरजीका० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

(कीजे मंगल चार आज घेर प्रभुजी पधार्या.—ए राग.)

हो जिनजी दरिसण दीजे, सेवक मुजरो लीजेरे ॥ जिनजी० ॥ दरिसण देइ मुजरो लेइ, सेवक अपनो कीजेरे ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ दरिसण दीठे पातक नोठे, भीम भवोदधि छीजेरे ॥ जिनजी० ॥ दरिसणथी सुखसंपत्ति घटमें, रिद्धि वृद्धि लहीजेरे ॥ जिनजी० ॥२॥ कुमति कदाग्रह दूर निवारी, ज्ञान अमृतरस पीजेरे ॥ जिनजी० ॥ परगुण भोग विभावस्युं न्यारो, आतम रुप कलीजेरे ॥ जिनजी० ॥ ३ ॥ पर परिणतीसु होय के न्यारे, निज परिणतिमें भळीजेरे ॥ जिनजी० ॥ अनुभव मानस सरमे झीली, तत्त्व रमणता कीजेरे ॥ जिनजी० ॥४॥ सिद्धाचल शिर शिखर प्रभुजी, विनती चित्तमें ध-

रीजेरे ॥ जिनजी० ॥ भानुचंद्र प्रभु दरस पसाये, सुख संपत्ति वि-लसीजेरे ॥ जिनजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री केसरीआजीनुं स्तवन ॥

(राग वसंत.-वीरकुमरनी वातडी केने कहीये.-ए देशी.)

केशरीयाजीनी मूरती मनोहारी, हां रे मनोहारी रे मनोहारी ॥ हां रे एतो सेवकने सुखकारी, हां रे ए सम नवि कोय ॥ केशरी०॥ १ ॥ राजराजेश्वर राजतो प्रभु आजे, हां रे महिमा जस जगमांहि गाजे ॥ हां रे अन्य देवो ते सवि लाजे, हां रे प्रभुनी करे सेव ॥ केशरी० ॥ २ ॥ श्याम सुंदर छबी नाथनी अति दीपें, हां रे रुपें कामदेवनें जीपें ॥ हां रे भविने करे मोक्ष समीपें, हां रे उपगारी एह ॥ केशरी० ॥ ३ ॥ सेवक सरणे आवीओ नाथ तारो, हां रे अज्ञान अबुद्धि निवारो, हां रे भवजळथी पार उतारो, हां रे आपो सुख अनंत ॥ केशरी० ॥ ४ ॥ उगणीश चोसठ फागण वदि आयो, हां रे प्रभु पेखी आनंद पायो ॥ हां रे गुरु भ्रातृचंद्र सूरि रायो, हां रे गायो सागरचंद्र ॥ केशरी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री सुमतिनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(अंतरजामी सुण अलवेसर.-ए राग.)

श्री सुमति जिनेश्वर साहिब तोरी, मूरति मोहनगारी रे ॥ निरखंता मोहे आनंदकारी, सेवकने सुखकारी ॥ साहिब मूरति तारी हो राज, अमने भवजल तारी ॥ तारी तारी हो महाराज, अमने शिव सुखकारी ॥ ए आंकणी ॥१॥ अद्भूत आकृतिने ए धरती, हरती मन मनोहारीरे ॥ शान्त स्वरुपी चिद्घनरुपी, करुणा रसनी एक्यारी ॥ साहिब० ॥ २ ॥ पंचमकाळे भव्यजीवोने, समकित दरसणकारी रे ॥ उपगारी ए सम नहि कोइ, पाप पंक हरनारी ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ बहु रे दिवसनो हुं आशा भरियो, आव्यो छुं जयकारी रे ॥ दरिसण दीजे

दीन कृपाळु, आप विरुद मन धारी ॥ साहिब० ॥ ४ ॥ नागपूरि तपगच्छ गगनमें, प्रगट्यो पार्श्वचंदसूरी रे ॥ श्रीभ्रातृचंद्रसूरींद्रनो शिष्य, सागरचंद्रने प्यारी ॥ साहिब० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री संभवनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(भले विराजो २ जी सामलिया महाराज शिखर०-ए देशी.)

म्हेंतो दरसन पायाजी, म्हेंतो दरशन पायाजी संभवदेव तुमारा म्हेंतो दरसन पायाजी ॥ तारुं रुप अनोपम दीसे, देखत काम लजायो ॥ अदृष्यतातो तेथी सेवे, मनमां जइ संतायो ॥ म्हेंतो० ॥१॥ शान्ति मुद्रा प्रभुनी निरखत, शान्ति घरमां आयो ॥ विंव प्रतिबिंब भावथी रे, भाव स्वरुप मन भायो ॥ म्हेतो० ॥ २ ॥ कोडी भवकंद फंद निवार्या, समकित मारग पाया ॥ भ्रातृचंद्रसूरि गुरुको सेवक, सागर प्रभु गुण गाया ॥ म्हेंतो दरसन पायाजो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

(मारग देशक मोक्षनो रे.-ए राग.)

प्रेमे प्रणमुं प्रह समेरे, चरम जिनेश्वर ईश ॥ जेहनुं शासन झग मगेरे, वरस सहस इकवीश-(रे वीरप्रभु विनती, अवधारो महाराज रे धर्म शासनपति) ए आंकणी ॥ १ ॥ सत्य प्ररुपक थोडलारे, तुज शासन रखवाळ ॥ गडरी मारग अनुसर्या रे, ग्रही मति आळपंपाळ ॥ रे वीरप्रभु विनती०॥२॥ निज निज मत आगळ करी रे, छंदि सूत्र विचार॥ जिनवाणी मन जाणीनेरे, विरला पाळे आचार ॥ रे वीर० ॥ ३ ॥ आगम अर्थने ओलवी रे, छउमथ भाषित जेह ॥ तेहनी पुंठे जेह पड्यारे, किम करशे भव छेह ॥ रे वीर० ॥ ४ ॥ तुज मारग दरसावतां रे, द्वेष धरे दीलमांय ॥ जगतारक जिनराजजी रे, किणविध कारज थाय ॥ रे वीर० ॥ ५ ॥ हितकारक नवि ओळखेरे, मिथ्या करेरे विवाद ॥ गच्छ कदाग्रहमां फस्यारे, धरे मांहोमांहे विषाद ॥

रे वीर० ॥ ६ ॥ एवा आ दुषम समेरे, श्री जिनचरण आधार ॥ शरणागत वच्छल धणी रे, कर प्रभु मोरी साररे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ जंगम सुर पादप समो रे, सुविहित पार्श्वसूरीश ॥ श्री सहज कलानिधि तारजो रे, कहे सागर जगदीशरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ श्री शान्तिनाथजिननुं स्तवन ॥

(मनडुं कीमहिन वाजे हो कुंथुंजिन मनडुं०–ए देशी.)

भवसायरथी उतारो हो शान्ति प्रभु, भवसायरथी उतारो ॥ शान्ति करण प्रभु विघ्न निवारण, सेवक कारज सारो हो ॥ शान्तिप्रभु भवसायरथी उतारो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कल्पातीत स्वरुपी छो तमे, अवर नही तुज ठामे ॥ ध्येय स्वरुपे हो तुजने ध्यावे, ध्यातां ध्येयतां पामे हो ॥ शान्ति० ॥ २ ॥ निगोदपणे एक श्वास उश्वासमे, साडासत्तर भव लाधे ॥ काल अनंत अव्यक्त महादुःख, तिर्यंच अनंत गुण बाधे हो ॥ शान्ति० ॥ ३ ॥ वलि वलि ए जीव नरक निगोदे, भ्रमण करी दुःख वेदे ॥ ए रीते हो ए जीव संसारमें, तुज दरशण विण खेदे हो ॥ शान्ति० ॥४॥ नदी उपल गोल न्याए जीवडो, कर्मजोगे उर्ध आवे ॥ त्यां पण नारक उत्कृष्टी वेदन, तेत्रीस सागर पावे हो ॥ शान्ति० ॥ ५ ॥ शुभ कर्मोदय तुम दरशण योगे, एकवार समकित लाधे ॥ अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त शुद्धि, संसारमांहि जीव रहे हो ॥ शान्ति० ॥ ६ ॥ हवे हुं भवोभव भटकत पायो, प्रभु दरशण पण आपो, शेवक उपर महेर करीने अखय अमर पद थापो हो ॥ शान्ति० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

दशयदसार छपन कुल कोडी, यादव रमीया जिहां प्रीति जोडी ॥ १ ॥ उजलगिरि नमु नेमिजिणंदा, मन जीव जीवक पुनिमचंदा ॥ उजल० ॥ २ ॥ बहु विध कुसुम जिहां बहु तरुवर, सफल

सजल जिहां वावी सरोवर ॥ उजल० ॥३॥ वाटें घाटें दुष्ट न लागे, जिहां महिमा जिनजीनो जागे ॥ उजल० ॥ ४ ॥ मनमथमांनमथी गिरि चडीया, मंडीनारिमपास न पडीया ॥ उजल० ॥ ५ ॥ जलचर थलचर खेचर ज्योड्या, हेले तेहना बंधन छोड्या ॥ उजल० ॥ ६ ॥ राजमति रागमति परहरिया, राज्यतणी मति मन नहु धरिया ॥ उजल० ॥ ७ ॥ समुद्रविजय शिवादेवी नंदन, शिवनगरी मारग सवि स्यंदन ॥ उजल० ॥ ८ ॥ शंख लंछन दश धनुतनु मान, प्रणमतां घर नवे निधान ॥ उजल० ॥ ९ ॥ कज्जल सज्जल सुंदर देहा, छंड्या नव भव रमणी सनेहा ॥ उजल० ॥ १० ॥ दीक्षा केवल नाण निर्वाण, त्रिण कल्याणकनो ए ठाण ॥ उजल० ॥ ११ ॥ हरिवर वंशें श्री अवतंस, श्री जिन शासन मानस हंस ॥ उजल० ॥ १२ ॥ असरण सरण बाल ब्रह्मचारी, त्रिभुवन जनने प्रभु हितकारी ॥ उजल० ॥ १३ ॥ तेजे दिनकर मंधर धीर, हेले पहुता भवजल तीर ॥ उजल० ॥ १४ ॥ श्रीनेमिसर भव भयहरण, श्री पार्श्वचंद्रसूरि तुम्ह पाय सरण ॥ उजल० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ श्री सुविधिनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

(राग कालेरो.)

तुंहि जगतपति जीवका प्यारा, सुविधि जिनेसर जगहीतकारा ॥ साहिबा मुने तारो जिणंदा, मुने पार उतारो ॥ साहिब० ॥ १ ॥ निस वासर तेरे गुन गाउं, तुज दरिसण देखे सुख पाउं ॥ साहिब० ॥ २ ॥ तेरी सुरतपर वारु चंदा, कोडिकरु कुरवाण दिणंदा ॥ साहिब० ॥ ३ ॥ तुं अपरंपर जिणे जिणे ध्यायो, अलख अगोचर सोइ कहायो ॥ साहिब० ॥ ४ ॥ नवम जिणंद चरण अरविंदा, बीर वंदत नित परमाणंदा ॥ साहिब० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सज्झायो प्रारंभ ॥

॥ जीवदयानी सझाय ॥

(अंग छे चार जग दोहिलारे जीव० ए देशी.)

दुलहो नरभव भवि भव भमतां, दुलहो श्रावककुळ सार ॥ गुणवंत गुरुनो संघ दोहिलो, पामी आळे म हाररे ॥ १ ॥ प्राणी जीव दया व्रत पाळो, गुरुगम सांभळी आगम वाणी, परमारथ संभाळो रे ॥ प्राणी जीवदया व्रत पाळो ॥ २ ॥ टुंक ॥ आश्रव भव सिव संबर बोल्या, तेहनो रहस्य विचारो ॥ आरंभ आश्रव संयम संवर, इम गणी आप उगारोरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ सहुए जीव जीववो वांछे, मरण न वांछे कोइ ॥ आपणने दुःख जिम छे तिम पर, हीये विमासो जोइरे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ शस्त्रधार जे अंग उवंगे, नखसीख लगे कोइ छेदे ॥ जेहवी पीडा नरने होवे, तेवी एकेंद्रिय वेदेरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ जरजज्झर नर बलवंत तरुणे, मुष्टि प्रहारे हणिये ॥ जे दुःख होवे तेहिज थावर, जीव संघटे भणीयेरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ समकित पाले गज भव जोवो, जीवदया व्रत पाळी ॥ तेणे श्रेणिक घर अवतरीयो, मेघकुमार दुःख टाळी रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ पूरव भव श्री शान्तिजिनेश्वर, सरण पारेवडो राख्यो ॥ ज्ञान प्रमाणे जाणी जिनमत, मूळ दयाधर्म भाख्यो रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ लोह सिल्ला जो तरे महोदधि, पश्चिम उगे भाण ॥ सहेज अनल जो शीतल थाये, तो हिंसा धर्म जाणो रे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥ रवि आथमे दिवस विमासे, अमृत ऊरग मुख (रहे) हुवे ॥ साधु कहावे कलह करंतो, विष भक्षे मरण नवि होवे रे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ सींचि अगनने कमल वधारे, मलीन चिर पंके धोवे ॥ जे नर मूरख कुगुरु कुसंगे,

प्राण हणी धर्म जोवे रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ आगम वेद पूराण कुराणे, सहुए दया मुख भाखे ॥ जिनवर वचन साचो ओळखी, छ जीव विरलो राखे रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ अर्थ काम ने धर्मे जयणा, निद्धंधस मंद बुद्धि ॥ श्रुत सांभळी जे इणिपरे बोले, तसु विवेक फल सिद्धि रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि आण सहित जे, निरती करुणा पाळे ॥ ते नर टाळे दूर दुरित तम, ज्ञान क्रिया अजुआळे रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरजिन कल्याणक सज्झाय ॥

(आदि अजित श्री शांतिनो, दिठो० ए देशी.)

तिरथ नायक वंदिये, जिनवर श्री वर्धमान ॥ तेहतणा गुण गाइये, वहियें आण प्रमाण ॥ कल्याणक दिन आवियो ॥ १ ॥ गहिगहे भवियण जाण, वीर शिवपद पामीयो ॥ गोयम केवळनाण, कल्याणक दिन आवियो ॥ २ ॥ भोळा दीवाळी भणे, पडिया लोक प्रवाह ॥ समकित नेहनुं किम रहे, मिथ्या पर्व उच्छाह ॥ क०॥३॥ केइ कहे कोडे सरी, मूढ न जाणे भेव ॥ वळी विशेषे आदरे, कुगुरू कुधर्म कुदेव ॥ क० ॥ ४ ॥ दुर्लभ माणसभव लही, दुर्लभ श्रावक कुळ जाण ॥ लौकिक पर्वे गविया. कांइ करो समकित हाण ॥ क० ॥ ५ ॥ चाचर चौपट चोहटे, जुवटुं मांडे रमत ॥ चतुर कहावे ने वळी, चउगति मांहि भमंत ॥ क० ॥ ६ ॥ लींपण मंडण घरतणा, आरंभे षट् काय ॥ उंचे नीचे दीवडे, जिनधर्म हेला थाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सेव सुंवाली लाडवा, घर घर करे अनेक ॥ सपरव दिन जाणी करी, जुवो एह विवेक ॥ क० ॥ ८ ॥ लोकोत्तर मिथ्या मते, केइ जिन भवण निवेस ॥ सोळ प्रहर दिवा करे, कुगुरुतणो उपदेश ॥ क० ॥ ९ ॥ घर घर कल्पे कोडीया, प्रह समे कूटे सूप ॥ चउळे नीले सालणे, एहस्युं परव शरूप ॥ क० ॥ १०॥ थाळ भरी भरी,

मोकले, जिनवर भोजन काज ।। जिनवर जाण कहावता, इम नहिं जिनमत राज ।। क० ।। ११ ।। पूजावे ते गुरु भणी, यंत्र मंत्र बहु जाप ।। करी भोळाने भोळवे, सहसे ते संताप ।। क० ।। १२ ।। वनस्पति मन नहु गणे, साधारण प्रत्येक ।। छेदी करे ते मेरीया, श्रावक नाम अनेक ।। क० ।। १३ ।। धनतेरम ते रसीं पडया, नांणे जयणा लगार ।। वस्त्र धोवे कारण भणी, व्रत वाळी करे अंगार ।। क० ।। १४ ।। जुहार भटारे धसमसे, बहुला पान तंबोळ ।। श्रावक कुळ प्रवाहनो, ए कह्यो हलबोळ ।। क० ।। १५ ।। धन धन इण दिन आवियो, जे श्रावक सुविचार ।। सोल पहोर पोसा करी, टाळो तसु अतिचार ।। क० ।। १६ ।। आगम दीप अजुवाळीए, गणीए मंत्र नवकार ।। ब्रह्मचर्य जळे नाइये, जुहार गुरु दर्शन सार ।। क० ।।१७।। जिनवरनी भावे भावना, मन आणी जिन आण ।। गुण गावे जिनवरतणा, तेहनो जन्म प्रमाण ।। क० ।। १८ ।। मिथ्या मत जुवा करी, समकित रमे सुजाण ।। नवतत्त्व नव रस रसवती, सील ते करे मंडाण ।। क० ।। १९ ।। निर्मल मति वर कापडा, सत्य वचन तंबोळ ।। सुखसागर झीले सदा, करता मन कलोल ।। क० ।। २० ।। हिवडां सासननो धणी, वीर जिणेसर देव ।। गोयम गणधर तेहना, सुरनर सारे सेव ।। क० ।। २१ ।। नाम मात्र तिणने समरतां, अहनिस होइ आणंद ।। साधु रत्न शिष्य विनवे, सूरि श्रीपार्श्वचंद्र ।। कल्याणक दिन आवियो ।। २२ ।। इति ।।

।। अथ श्री जिन प्रतिमा वंदन सज्झाय ।।

(इणीपरे रीषभ अजित संभव जिन, अभिनंदन० ए देशी.)

जिनवर जिन प्रतिमा वंदन फल, समवड हियणे आणोजी ।। रायपसेणी सूत्रे वखाण्यो, चतुर विचारी जाणोजी ।। १ ।। सांभलो भविकजन चित्त चेतन धरी, जिनवर आगम वाणीजी ।। भवसायर

तरवा तरणी जिम, लहिज्यो उत्तम प्राणीजी ॥ सांभळो० ॥ २ ॥ छेद ग्रंथे जिनवर विधि वादे, प्रतिमा भक्ति प्रकाशीजी ॥ व्रतधारक श्रावकने कारणे, जोजो हृदय विमासीजी ॥ सांभळो० ॥ ३ ॥ सप्तम अंग लीयो विचारी, आणंदने अधिकारेजी ॥ प्रतिमा नमे कदाग्रह वारी, धन धन ते नर नारीजी ॥ सांभळो० ॥ ४ ॥ पच्या पछी सहु कोइ प्रतीजे, पहिलुं आप संवाहोजी ॥ प्रतिमा वंदो उववाइ उवंगे, अंबड जिम ल्यो लाहोजी ॥ सांभळो० ॥ ५ ॥ अवधि असाधुतणी बहु देखी, डाह्या तमे कांइ डोलोजी ॥ किणहि कुसंगे कनक मल लाग्यो, पीतल तोल म तोलोजी ॥ सांभळो० ॥ ६ ॥ सोना जिम निरमल करी लीजे, दोष प्रवाहे न दीजेजी ॥ वीतराग प्रतिमा वंदीजे, राउ राखी खेलीजेजी ॥ सांभळो० ॥ ७ ॥ मिथ्या मतशुं मकरो सगाइ, प्रभुस्युं केसी सबळाइजी ॥ जिन प्रतिमा निंदो नहीं भाइ, स्वामी द्रोह इम थायजी ॥ सांभळो० ॥ ८ ॥ आसातना अजीव पदारथ, जिनवर नाम प्रसंगेजी ॥ गौतम आगळ वीर जिनेश्वर, बोल्या पंचम अंगेजी ॥ सांभळो० ॥ ९ ॥ इम जाणी जिन प्रतिमा वंदो, सूत्र तहत्ति करी जाणोजी ॥ श्रीपार्श्वचंद्र सूरीश्वर जंपे, मुक्ति रमणी वश आणोजी ॥ सांभळो० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ हितशिक्षा स्वाध्याय प्रारंभ ॥

(विषयतणां फल पाडुआ. ए देशी.)

वळि वळि नरभव दोहिलो, लाधो एळे म हारो रे ॥ मात पिता सुत कारमां, कारमो आ संसारो रे ॥ वळि० ॥ १ ॥ वळि गरभ तणी तें वेदना, निकसी सर्व विसारी रे ॥ बाल्य अवस्थामें रम्यो, भलिय बुरीय न विचारी रे ॥ वळि० ॥ २ ॥ कांइक जे रस ना छिपे, हुंतो बाल्य दशामें रे ॥ चढती वय आई यदा, मगन भयो बहु तामे रे ॥ वळि० ॥३॥ योवनवय तुजने भइ, इंद्रितणो विस्तारो

रे ॥ नव विषयारसमें रम्यो, किणिपरे होवे निस्तारो ॥ वळि० ॥ ४ ॥ धनही धन रामाही रामा, मनमें एह विचारो रे ॥ इम करतां किम पामीए, भवसमुद्रनो पारो रे ॥ वळि० ॥ ५ ॥ धनने लेवा कारणे, कुड कपट बहु कीधा रे ॥ परवचन थापणमोसो, परधन चोरी लीधां रे ॥ वळि० ॥ ६ ॥ यौवनवय लीला वशे, प्रीत रमणशुं मंडी रे ॥ मगन भयो विषयारसे, खिण नहुं संगति छंडी रे ॥ वळि० ॥ ७ ॥ इत उत दोडत दिन गमे, सुतां रयणी गमावे रे ॥ अंजलिना जळनी परे, आयु गये पछतावे रे ॥ वळि० ॥ ८ ॥ शक्तिवंत जीवित दशा ते तुं वृथा गमावे रे ॥ आपणो बळ फोर्यो नही, नहुं कीधी सुकृत कमाइ रे ॥ वळि० ॥ ९ ॥ त्रिजी वय तुजने भइ, नामे वृद्धिपणाइ रे ॥ तोपण ममता नहुं गइ, समता अजहू न आइ रे ॥ वळि० ॥ १० ॥ घर आरंभ कीया घणा, वडपण मान वडाइ रे ॥ चेतन तें अणजाणते, मेली कुगति सगाइ रे ॥ वळि० ॥ ११ ॥ रे जीव कांइ भूलो भमे, ओर देवळ ओर ठामे रे ॥ देह रूप देवल विषे, देव निरंजन नामे रे ॥ वळि० ॥ १२ ॥ चेतन कर तसु सेवना, साचे दिल तिहां राची रे ॥ साची आज्ञा जिनतणी ओर वात सब काची रे ॥ वळि० ॥१३॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, श्रोताजन चित्त चेतो रे ॥ धर्म करो साचे मने, मनुष्य जन्म फळ एतो रे ॥ वळि० ॥१४॥ हितशिक्षा एहवी कही, श्रीपार्श्वचंद्रसूरि प्रतापे रे ॥ कहत कर्मचंद्र आतमा, आपोआप सुणावेरे ॥ वळि० ॥ १५ ॥

॥ अथ मानपरीहार सज्झाय ॥

सांभळजो मुनि संजम रागी, उपसमश्रेणी० ए देशी.)

मान महा विषधर अति मोटो, तसु प्रमाण न कहावे रे ॥ तेणे डंक्यो नर काळो थाये, मुख छांया पलटाय रे ॥ १ ॥ इम जाणी

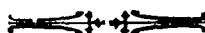
आणी कोमळपणु, परहरिये अभिमान रे ॥ मान तजी बाहुबळ पाम्यो, ततखीण केवळज्ञान रे ॥ ए आंकणी ॥ इम० ॥ २ ॥ जाति अने कुळ बळ ठकुराइ, लाभरूप तप जोय रे ॥ सुश्रुतनें मद नर जे होय मातो, हीणपणुं लहे सोय रे ॥ इम० ॥ ३ ॥ ए आठे फणधर अति वांका, विष संपूरे पूरा रे ॥ जेणे डंक्यो नर जड थाये, दीसे विषअंकुरा रे ॥ इम० ॥ ४ ॥ देव अने गुरु मात पिताने, विनये कोट न नामे रे ॥ जीम दीवडो होय वाये पुरो, पण ठालो परिणामे रे ॥ इम० ॥ ५ ॥ जाति मदे हरीकेसी हीणो, कुळमद मरिचि नडियो रे ॥ वळमदे शिवभूति वीरतणो जीव, घणो काल रडवडीयो रे ॥ इम० ॥ ६ ॥ सनंतकुमार सरुप मदे ते, कुष्ठतणुं दुःख पामे रे ॥ राजतणे मद लहि पराभव, दसारणभद्र रिद्धि वामे रे ॥ इम० ॥ ७ ॥ लोभे सुभूम नरकगति पोहोत्यो, थूलभद्र श्रुत खीणो रे चारे तपसी देव न वंद्या, तपमदे तप थयो होणो रे ॥ इम० ॥ ८ ॥ वेत्र लता तरु अस्थि पहाणे, थंभ समानो मान रे ॥ सुरनर तिर्यंच नरकगति ते, आपे ठाम निदान रे ॥ इम० ॥ ९ ॥ पख चउमासी वरस जावजीवे, अनुक्रमे ए थिति थाय रे ॥ नीरागपणे चारित्र श्रावक धर्म, समकितनो अंतराय रे ॥ इम० ॥ १० ॥ आपणने अति घणुं वखाणे, परने हसी हसी निंदे रे ॥ ते नर चारित्र तप जप संजम, मूलथकी निःकंदे रे ॥ इम० ॥ ११ ॥ मदमाता मयगलसुं खेले, तेहथी ते दुःख पामे रे ॥ ते अभिमानी मान करंतो, विणसें घणे विरामे रे ॥ इम० ॥ १२ ॥ मान करे मच्छर जे आणे, घणी प्रशंसा वंछे रे ॥ पीठ महापीठ साधुतणी परे, करम घणा ते संचे रे ॥ इम० ॥ १३ ॥ मान तजी संजम जे पाळे, विनय विवेक न चूके रे ॥ ते नरनी संगति खिण ब्रह्मो, भावथकी नवि मूके रे ॥ इम० ॥ १४ ॥

॥ अथ क्रोधपरीहार सज्झाय ॥

(अंग छे चार जग दोहिलारे जिव. ए देशी.)

आगम वचन विचारी रूडा, क्रोध म करीश लगार ॥ क्रोध वसे आठे कर्म बांधे, भमे अनंत संसार रे ॥ प्राणी समताने रस राचो ॥ १ ॥ क्रोध सरपनी संगत मुको, धर्म आराधो साचो रे ॥ प्राणी समताने रस राचो ॥ ए आंकणी ॥ क्रोध महा फणधर अति मोटो, नयण रातडा रीसे ॥धमणतणी परे ते धमधमतो, विष संपूरण दीसे रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ जेहतणे विष नर होय रातो, न लहे वि रवुं रुडुं ॥ मंत्र न तंत्रे ते वस थाय, प्राये बोले कूडुं रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ अगनि दाघ ज्वरनी परे अंगे, दाह अनंतो व्यापे ॥ परने पण क्रोधे नर चडीयो, जिम तिम अति संतापे रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ वचन कठोर दिवस तप जाय, गाळे मास तप खोये ॥ देतो श्राप वरस तप हारे, सुकृत कर्युं सवि धोय रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ रीस चड्यो जो घा मुके तो, देसुण पूरव कोडे ॥ जे संच्यो ते चारित्र हारे, क्रोध अगनीने जोडे रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ धर्म करंतो क्रोध न छंडे, तो धर्म निस्फल थाय ॥ कास कुसुम सेलडी कुसुम जिम, कांइ फळ न कहाय रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ संजलनो क्रोध जलरेखा सम, वीतरागपणुं वारे ॥ पनर दिवस लग तसु थिति बोली, देवगते अ-वतार रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ रजरेपा सम प्रत्याख्यानो, चार मास थिति जोइ ॥ साधुपणुं तसु उदय न आवे, मानवगति लहे सोइ रे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥ सुका कादव राइसमाणो, क्रोध अप्रत्याख्यानो ॥ श्रावकपणुं न लहे तिरि थाये, वरस दिवस थिति मान्यो रे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ जावजीव रहे नरकवासग्रे, पर्वत राइ समाणो ॥ एहने उदय न समकित आवे, ए सवि सूत्रे जाणो रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ लागे क्रोध पलेवण पूरे, दाझे सुगुण रतन्न ॥ क्षमा नीरें ओल्हावे

जे कोइ, ते मानव धन धन्न रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ चंडकोसियो क्षमातणे बळ, देवगते अवतरीयो ॥ कूरगडुऋषि केवळ पाम्यो, उपसमने गुण-भरियो रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ गजसुकुमाळ ने खंडक शीष, अर्जुनमाळा गार ॥ क्षमा प्रमाणे केवल पाम्या, टाल्यो भव अवतार रे ॥ प्राणी० ॥१४॥ एहवुं जाणी जे नर नारी, क्रोध न करे लगार ॥ श्री ब्रह्म कहे तसु चरणे लागु, करु सफळ अवतार रे ॥ प्राणी समताने रस राचो ॥ १५ ॥ इति ॥



॥ अथ तेर काठिया परिहार सज्झायो ॥

॥ अथ आलस परिहार सझाय ॥

(पांचे इंद्री रे अहनिश वस करें.–ए देशी.)

पुन्यतणे बळ नरभव पामीओ, चिहुंगति भमतांरे जोइ ॥ आरजदेशें जनम उत्तम कुळे, भागतणे वश होइ ॥ १ ॥ आळस परहर प्राणी अंगथी ॥ ए आंकणी ॥ मोहमद मच्छर छांड, जिनधर्म रूडोरे जगमांही सार छे, तिहां तुं उद्यम मांड ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्रि पांचेरे पूरी पामीयो, सांभल्या सूत्र सिद्धांत ॥ मोटे भागेरे देवगुरु ओळख्या, सेवो मन एकांत ॥ आ० ॥ ३ ॥ विषय कषायेंरे बांध्यो प्राणीयो, न करे धर्म व्यापार ॥ चिन्तामणी कर पाम्यो नाखीने, ते ग्रही काच गमार ॥ आ० ॥ ४ ॥ लौकीक ग्रंथे पण इम भाखियो, उद्यमे दारिद्र जाय ॥ विद्या लक्ष्मी करसण चाकरी, एह सहु सफळं रे थाय ॥ आ० ॥ ५ ॥ आळस उदय जे नर पीडीया, इहलोके सीदाय ॥ तो धर्मेस्युं तेहनुं पूछवुं, भवभव दुःखिया रे थाय ॥ आ०॥ ६ ॥ पापी नरनेरे आळस तिम भलुं, धर्मी उद्यमवंत ॥ पंचम अंगेरे पूछे जयंती, भाखे श्री भगवंत ॥ आ० ॥७॥ आळस वयरीरे घट-

मांही जाणवो, उद्यम बंधू समान ॥ देश विदेशेरे जास पसाउलें, पामे सघळे रे मान ॥ आ० ॥ ८ ॥ उपक्रम साथेरे नीयत मिली थकीरे, फळदायक मन धार ॥ पंच समवायेरे कारज निपजे, बीजा अंग मझार ॥ आ० ॥ ९ ॥ बहु जन दीसेरे धर्म आळसु, कर्मे नो सावधान ॥ जो आतमहित इच्छो प्राणीया, कर धर्मनो बहुमान ॥ आ० ॥ १० ॥ एवुं जाणीरे धर्म उद्यम करो, साधो वंछित काज ॥ इहलोकेनेरे परलोके वळी, प्रभणे मुनि मेघराज ॥ आ० ॥ ११ ॥इति॥

॥ अथ श्री मोहपरिहार सज्झाय २ ॥

(जेहने जेहशुं रंग.–ए देशी. वा, जेम नरुपा० नो राग.)

मोहे वाह्यो प्राणीयो रे, न करे धर्म सुरंग ॥ देव गुरु जण नवि ओळखे रे, न करे उत्तम संग ॥ सुणो नर, मोह महावड वारो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जिन प्रवचन हियडले धारो ॥ सवि आरति मनथी वारो, भवजळथी पार उतारो ॥ सुणो० ॥ २ ॥ घर घरणी छोरु मोहियो रे, प्राणी पामे दुःख ॥ हाहुत फरे सर्वदा रे, कांइ न पामे सुख ॥ सुणो० ॥३॥ मतवाळो जिम मद धारियोरे, न गणे परने आप ॥ तिम मोह मोह्यो प्राणीयो रे, न गणे पुण्य के पाप ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ रागी नर बहु दुःख सहे रे, जिम जग चोळ मजीठ ॥ तिल सरसवने पीलीये रे, वेलु केणे न दीठ ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पापनुं मूळ लोभ जाणीए रे, रसनुं मूळ छे व्याधि ॥ सनेह दुःखनुं मूळ छे रे, छांडे परम समाधि ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ बीजां साते कर्म लागीया रे, मोहराजा शिरदार ॥ तेहने जे जग जीपशे रे, ते तरशे भव पार ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ सूरि सिज्जंभव सारिखा रे, आर्द्रकुमर जस पात्र एहवा पण मोहे छल्या रे, बीजा नर कोण मात्र ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ मोहे नवि जाणे प्राणियो रे, कुटुंब सहु परिवार ॥ ए मूकी जीव जायशे रे, करणीने अनुसार ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ इम जाणी मोह जी-

पवा रे, मांडे किमपि उपाय ॥ सूत्र वचन सुणो निर्मळां रे, सेवो सहि गुरु पाय ॥ मुणो० ॥ १० ॥ आठे कर्ममां मूळगो रे, मोह महा रिपु वाग॥ मुनि मेघराज कहे मुदा रे, आपणपुं इम तार ॥मु०॥११

॥ अथ श्री अवज्ञापरिहार सझाय ३ ॥

(सुंदर, रुप विचार चतुरपणुं.-ए देशी.)

कर्म पोते हुए जे नरने घणा, साधु संगतथकी दूर ॥ जिम खर लोटे राख हगला लही, छंडीय गंग जळपूर ॥ चतुर नर, सहि गुरु अनादर टाळ ॥ जिनवर वचन संभाळ ॥ चतुर० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए मुनि मुंडितधर्म जाणे किशुं, हुं अति चतुर सुजाण ॥ एम अनादर दाखतो मूरख, भव भ्रम भमे अजाण ॥ च० ॥ ३ ॥ भलुं करे भलुं पाइए पाडुओ, हुं पण जाणुं छुं एम ॥ तो हवे साधुपणुं किशुं भांखशे, घर बेठां हुश खेम ॥ च० ॥ ३ ॥ एम अनादर मूरख बहु करे, नवि गणे आतम दोष ॥ सगरतणे सुते नागमुर अवगण्या, राख कीधा भर रोष ॥ च० ॥ ४ ॥ विमळवाहन नररायने बाळशे, साधुशुं मंगळ तेह ॥ ए फळ जाणे अनादर केरडां देशथी उपमा एह ॥ चतुर० ॥ इहलोके जो एहवां फळ हुवे, परभव कोण लहे पार ॥ साधु संग करो अवगुण परिहरो, जिम लहो दुस्तर पार ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ यद्यपि संबर घरमां नर करे, तो पण आश्रव ठाम ॥ जे गुण उपजे साधु संग करे, ते गुण आणने ठाम ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ इम जाणी अनादर टाळीए, साधु सेवो मन भाय ॥ मुनि मेघराज कहे नर उत्तम, शिव सुख एह उपाय ॥ चतुर नर, सहि गुरु अनादर टाळो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिमानपरिहार सझाय ४ ॥

(वचन विचार खमो रे भाइ.-ए देशी.)

मन अहंकारे बांध्यो प्राणी, न नमे देव गुरु पाय ॥ हुंहुंकार

करे खरनी परे, साधु संगते नवि जाय रे ॥ गर्वपणुं नर उत्तम परिहरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गर्वपणे गुण जाय ॥ अति अभिमानी आदर नवि लहे, लघुता सघळे थाय रे ॥ गर्व० ॥ २ ॥ वंदन काजे हुं आजे गयोतो, इणे गुरुये न बोलाव्यो ॥ संघे उठी आदर न कर्यो, वडो करी न तेडाव्यो रे ॥ गर्व० ॥ ३ ॥ तो कुण इण उपासरे जाये, मनमां मान धरंतो ॥ धर्म पोतानो छांडे कुमति, क्रोध कषाय करंतो रे ॥ गर्व० ॥ ४ ॥ इम मनमांही न जाणे मानी, जो तुजमां गुण होशे ॥ सघळे बेठो आदर पामीश, सहुए तुज मुख जोशे रे ॥ गर्व० ॥ ५ ॥ पंच स्थानके शिक्षा न लहे, क्रोधी मानी रागी ॥ अति परमादी जे नर होये, आळस साखी संयोगी रे ॥ गर्व० ॥ ६ ॥ वरस दहाडा लगे ताढ तडको, बाहुबळी मुनिवरे सह्यो ॥ चित्तथकी जो मान निवार्यो, तो केवळ लहियो रे ॥ गर्व० ॥ ७ ॥ भगवंत शिष्य जमाली नामे, अति अभिमाने पेठो ॥ किल्विषी देवतणी गति लाधी, जिनवर वचने दीठो रे ॥ गर्व० ॥ ८ ॥ इम जाणी सहि गुरु पाय सेवो, स्तब्धपणुं दूर वारो ॥ मुनि मेघराज कहे रे उत्तम, आपण पार उतारो रे ॥ गर्व० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री क्रोधपरिहार सज्झाय ९ ॥

(ब्रह्मदत्त कंपिलपुरनो राजीयो रे.—ए देशी.)

क्रोध कषाये बांध्यो प्राणीयोजी, ते केम पामे धर्म ॥ कलह करे संघ साथे थोडे मसेजी, बांधे बहुळां कर्म ॥ क्रोध सबळ अंग ताप निवारीएजी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सूधी समी जिनवाण ॥ आतम ठारो जिनवचने करीजी, जिम न होय गुणनी हाण ॥ क्रोध० ॥ २ ॥ जिण तिण साथे नित वढतो फिरेजी, पछी आणे मन रोष ॥ आगळ आव्यो देखी उपासरेजी, मूरख काढे दोष ॥ क्रोध० ॥ ३ ॥ ए जो आवशे एणे उपासरेजी, तो मुज आववा नीम ॥ इणिपरे आ-

तमने भारे करंजी, सदगति पामे केम ॥ क्रोध० ॥ ४ ॥ क्रोधतणां फळ नवि लहे बापडोजी, क्रोधी नाम धराय ॥ मासखमण करे क्षपक महामुनिजी, क्रोधे विषधर थाय ॥ क्रोध० ॥ ५ ॥ पूर्व कोडी लगे चारित्र पाळीयुंजी अंतरमुहूर्त्त जाय ॥ वादळ खेरु जिम ततक्षण हुवेजी, बहुळों वाये वाय ॥ क्रोध० ॥ ६ ॥ भगवंत श्रावक अणसण आदरीजी, अभिच नाम कुमार ॥ न कर्या बाप संगाथे खामणांजी, तो थयो असुरकुमार ॥ क्रोध० ॥ ७ ॥ रौद्रध्याने वर्त्ते नर क्रोधी सदायजी, ते तो नरके जाय ॥ अनुक्रमे बेहु गतिमांहे ते फिरेजी, समकित दोहिलुं थाय ॥ क्रोध० ॥ ८ ॥ एहवुं जाणी क्रोध परहो तजोजी, सेवो समता पूर ॥ मुनि मेघराज कहे मन उलटेजी, पामो सुख भरपूर ॥ क्रोध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री प्रमादपरिहार सझाय ६॥

(शीळ सुहावो रे साजन सेवीए.-ए देशी.)

आठ मद वाह्यो केहने न लेखवे, जिम मतवाळो अजाण्यो रे ॥ लहुड वडाने कांइ न ओळखे, अंध जिम शशिहर भाणो रे ॥ १ ॥ प्रमाद पांचे रे चतुर निवारीए ॥ ए आंकणी ॥ धरीए मनमां धर्म रे ॥ समता आणी रे सद्गुरु सेवीए, जिम छूटे सवि कर्म रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ यादवकुमरे मद वाह्या थकां, तापस दुहव्यो अपारो रे ॥ ते फळ पाम्या रे इहलोके घणा, परभव कुण लहे पारो रे ॥ प्र० ॥३॥ नाक जीभ आंखे रे फरस काने करी, दुहवे जीव अनेका रे ॥ विषयरस वाह्यो रे रस लंपटपणे, न गणे मनमां विवेको रे ॥ प्र०॥४॥ ललितांग सरिखो रे संखारे वह्यो, नंदिषेण ते घरवासो रे ॥ चंदमद्योते रे चरित्र कर्यां घणां, ए सवि विषयविलासो रे ॥ प्र० ॥५॥ क्रोध कषाये रे कर्म करे घणां, न गणे पुण्य ने पापो रे ॥ घेवरमुनि ते क्रोधे नारकी, भोगवे बहुल संतापो रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ निंदा नि-

गुण परनी जे करे, निंदक कहीए चंडालो रे ॥ पंच प्रकारे रे चारित्र निगमे, बोले उपदेश मालो रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ विकथा भूपति स्त्री देश भातनी, जे करे ते नर बालो रे ॥ जूठुं लागे रे परघर वातडी, करतां पडे जंजालो रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ प्रमाद पांचे एहवा जाणीने, टाळो जिम सरे काजो रे ॥ ध्यान सज्झाये रे समता कीजीए, इम भणे मुनि मेघराजो रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री भयपरिहार सज्झाय ७ ॥

(हवे दुल्लह नरभव पामी रे.–ए देशी.)

सिद्धांत सुणवा काजे रे, गुरुवंदन पहोत्यो आजे ॥ नरकादिक तिहां दुःख कहिए रे, ते केणीपरे जीव सहीए ॥ १ ॥ वेतरणीने वळी कुंभी रे, मारे तिहां असुर निरुंभी ॥ सामली तरु पाने छेदे रे, वळि कुंत त्रिशूले भेदे ॥ २ ॥ बहु भूख तृषा तिहां वेठे रे, हैयुं कंपे ते दुःख दीठे ॥ तिर्यंच पणां दुःख वेदे रे, ताढ तडको भूख संवेदे ॥ ३ ॥ एहवी वेदन गुरु दाखे रे, नित उठी तेहज भाखे ॥ तिण कारण सूत्रने हुं रे, इण सांभळे हुं तो बीहुं ॥ ४ ॥ एहवी भयनी मति थाये रे, गुरुवंदन तेणे न जाय ॥ डहापणपणुं मनमां नाणे रे, भोळमपणे एहने जाणे ॥५॥ सिद्धांत सुणे टळे पाप रे, जाय दुःख दारिद्र संताप ॥ परदेशी सुरगति पावे रे, सिद्धांत सुण्यो जो भावे ॥ ६ ॥ धर्माधर्म तेहिज जाणे रे, सूत्र सुणवानी मति आणे ॥ भय टाळीने सूत्र सुणीए रे, मुनि मेघराज इणिपेरे भणीए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कृपणतापरिहार सज्झाय ८ ॥

(असत्य निवारीए.–ए देशी.)

कृपणपणाथी बीहतो, न जाय धर्म ठामेरे ॥ तेड्योथको उपाश्रे, उठी जाये कामे रे ॥ १ ॥ कृपणपणुं तजो ॥ ए आंकणी ॥ कीजे उत्तम कामो रे ॥ कृपण माणस हुवे तेहनुं, को न लिये नामो रे ॥

कृ० ॥२॥ बेटा बेटी पोखतां, झघडे घर घर हाटेरे ॥ छोरुने परणावतां, राउली विणसे वाटे रे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ एहवे ठामे प्राणियो हरखे खरचे लाखोरे ॥ धर्म ठामे माग्यो थको, बोले दिनमुख भाखो रे ॥ कृ० ॥ ४ ॥ एहवुं नर जाणे नही, दाने दारिद्र जायरे ॥ वडपण पळीए नवि लहे, वडपण दाने थाय रे ॥ कृ० ॥ ५ ॥ धन्नो शालिभद्र महासुखी, दानतणां फळ जोयरे॥ श्रेणिक सरिखा भूपति, जोवा आव्या सोइ रे ॥ कृ० ॥ ६ ॥ दाने अपजस सवि टळे, दाने टळे संतापोरे ॥ इहलोके जस विस्तरे, परभव मुगति निःपापो रे ॥कृ० ॥ ७ ॥ त्रण दान लौकिक जाणीए, बे दान मोक्ष निदानोरे ॥ विण वाव्ये उगे नही, न लणे वंछित धानो रे ॥ कृ० ॥ ८ ॥ इम जाणी उद्यम करे, दानतणे अधिकार ॥ मुनि मेघराज कहे मुदा, ते लहे सुख विस्तारो रे ॥ कृ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शोकपरिहार सज्झाय ए ॥

(तुंगिया गिरि.–ए देशी.)

मोहनीकर्म उदे कारणे, करे शोक संताप रे ॥ शोक करतो कर्म आठे, बांधे तेणे हुवे पाप रे ॥ १ ॥ इम जाणी भवियण शोक टालो ॥ ए आंकणी ॥ पाळो जिनवर आण रे ॥ जेहथकी भवि मुगति लहिए, नहितर अमर विमान रे ॥ इम० ॥ २ ॥ कुटुंबमांहि कोइक मुओ, तेहने शोक कलीवरे ॥ धर्म वेळा वांक काढे, कर्म मांडे जीव रे ॥ इम० ॥ ३ ॥ जमण पाणी क्षेत्र वाडी, वणज करवा आंक रे ॥ विषय विलसे वस्त्र पहेरे, धर्म वेळा वांक रे ॥ इम० ॥ ४ ॥ भोळा नर मनमां न जाणे, ए संसार सरुप रे ॥ आभ वादळ उदक बुद बुद, सुपन विजळी सरुप रे ॥ इम० ॥ ५ ॥ एक तरुवर सांझ वेळा, पंखी लिये विश्राम रे ॥ थये प्रभाते तेहज पंखी, हुवे निज निज ठाम रे ॥ इम० ॥ ६ ॥ तिणे न्याये सयण परियण, मल्यो

ए परिवार रे ॥ सहु पोतानी गतिये जाशे, करणीने अनुसार रे ॥ इम० ॥ ७ ॥ प्रतिबंध केहो तिणे साथे, कोण आतम वर्ग रे ॥ कर्म सारु जीव जाशे, कोइ नरके कोइ स्वर्ग रे ॥ इम० ॥ ८ ॥ केइ गतिनो शोक करीए, किहां समरीश काज रे ॥ शोक टळो धर्म पाळो, पभणे मुनि मेघराज रे ॥ इम० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अज्ञानपरिहार सज्झाय १० ॥

(सुरतरुनी परे दोहिलो रे.-ए देशी.)

मूरख भावे न हु करे रे, धर्मतणो व्यापार ॥ साधु संगत कहीए नही रे, न सुणे सूत्र विचार ॥ १ ॥ रे जीवडा टाळो मनथी अज्ञान ॥ ए आंकणी ॥ ए तो पाळो जिनवर आण ॥ तु इम कांइ थाये अजाण ॥ रे जी० ॥ २ ॥ सागर पल्यतणी रुवा रे, को माने नर एह ॥ असंख्य जीवजळ बिंदुए रे, समुद्रे पण तेह ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ जीव अनंता वात अणी रे, निगोद राशि गति जाण ॥ घोहर पण इम जाणवी रे, एहवी जिनवर वाण ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ नरक सरग दीठां किणे रे, पुण्य पाप कोण होय ॥ ए लोकनी समजावणी, पोथी वेंगण जोय ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ गुरु मुख बहुपरे शास्त्र सुणी रे, जे नर पाप करंत ॥ ते नर किम छूटे नही रे, इम बहु बहु भाखंत ॥ रे जी० ॥ ६ ॥ ते माटे अण सांभल्यां रे, भोळा भोळी सिद्धि ॥ अणजाण्या शीखे नही रे, इम नर बोले कुबुद्धि ॥रे जी० ॥ ७ ॥ छद्मस्थ नर जाणे नही रे, जीव जिके सूक्ष्म ॥ सूर्य प्रकाशे भूपीठे रे, ते किम खजुआ गम्य ॥ रे जी० ॥ ८ ॥ पुण्य पाप बे वइअछे रे, पुण्यतणां फळ जोय ॥ एक नर बेसे पालखी रे, बीजा पण हीन होय ॥ रे जी० ॥ ९ ॥ अंधो नर खाडे पडे रे, देखीतो लहे ताम ॥ अज्ञानी नर नहु तरे रे, ज्ञानी लहे गुण ग्राम ॥ रे जी० ॥ १० ॥ इम जाणी अज्ञानपणुंरे, टाळो नर गुणवंत ॥ मुनि मेघराज

कहे मुदा रे, समरो श्री भगवंत ॥ रे जी० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विक्षेपपरिहार सज्झाय ११ ॥

(ससनेहा गौतम.—ए देशी.)

घर घरणी चिंता रसेजी, आरति न करे संक्षेप ॥ दीवानीपरे झळफळेजी, ते कहीए विक्षेप ॥ १ ॥ ससनेही प्राणी, टाळो आरति दूर ॥ ए आंकणी ॥ समतारस झीलो सदाजी, पामो सुख भरपूर ॥ स० ॥ २ ॥ चिंता करे घर हाटनीजी, वाडी क्षेत्र प्रकार ॥ छोरुने परणाववाजी, वस्त्र अने शणगार ॥ स० ॥ ३ ॥ कीधां ने कराव्यां घणांजी, कारज एम अनेक ॥ दाहुतो अहनिशि फरेजी, न गणे चित्त विवेक ॥ स० ॥ ४ ॥ व्यापारे देशांतरेजी, जाये लोभ विकार ॥ सागर सरिखा आगमीजी, हाथे वही हथियार ॥ स० ॥ ५ ॥ इम भोळा जाणे नहीजी, कुटुंब सवे परिवार ॥ जेहने अरथे तुं तपेजी, ते तुज नही आधार ॥ स० ॥ ६ ॥ पाप पुण्य साथे हुशेजी, बोजुं रहेशे ठाम ॥ मुनि मेघराज कहे मुदाजी, छूटशे जिनवर नाम ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुतुहलपरिहार सज्झाय १२ ॥

(सिद्धि साधु नमु मुनि भावे.—ए देशी०)

हास्य कुतूहल वाह्यो जीवडो, चौवट चाचर रंग ॥ प्राणीजी हुबटनाटे अति रळियायत, न रुचे धर्म सुचंग ॥ १ ॥ प्राणीजी हास्य कुतूहळ परिहरो, सेवो सदगुरु पाय ॥ प्रा० ॥ सूत्र वचन सुणो निर्मळां ॥ ए आंकणी ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ २ ॥ अहनिश हास्य कुतूहल करतो, लघुता पामे एह ॥ प्रा० ॥ आठे कर्मतणी थिति बांधे, परभव दुःख लहे तेह ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ३ ॥ जूवट रमतां लक्षण जाये. तस्कर नाम धराय ॥ प्रा० ॥ तास विश्वास न कोइ आणे, वासो देवळ थाय ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ४ ॥ चोर चूट वट पाडा साथे,

प्रीति हुवे निर्वाण ॥ प्रा० ॥ नळराजाए राज गमाव्युं, जुवटाने प-रमाण ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ५ ॥ रांय युधिष्ठिर जूवट रमिया, भोग-वियो वनवास ॥ प्रा० ॥ रुपखरो राजा वश पडीयो, जूवट जूठी भास ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ६ ॥ रमत बीजी जोतां पामे, लघुपणो मन जाण ॥ प्रा० ॥ भाड भवाइ नटविट साथे, संगत करतां हाण ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ७ ॥ बीजी हास्य करे जे मानव, लोके भांड कहे-वाय ॥ प्रा० ॥ इहलोके आदर नहु पामे, परभवे दुर्गति थाय ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ८ ॥ जूवट नाटक तुदळनां फळ, भूंडां जाणी: जीव ॥ प्रा० ॥ मुनि मेघराज कहे नर गुणीयण, ध्यावो धर्म सदैव ॥ प्रा० ॥ सू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रमतपरिहार सज्झाय १३ ॥

(सोरीपुरी वसुदेवराजा.—ए देशी.)

रमणी रमत रमतो प्राणी, मोह्यो हींडे हींडे गणे विचार ॥ रात दिवस एक ध्याने विचरे, न करे प्राणी धर्म लगार ॥ रमत रमणी राग निवारवो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सेवो अहनिशि जिनवर पाय ॥ सहि गुरु वांदो मन शुद्ध भावे, जिम प्राणी तुज सवि सुख ए उपाय ॥ रमत० ॥ २ ॥ घरणी कारण घाट घडावे, पहिरावे भला सवि शणगार ॥ बेटा बेटीने तेह रमाडे, मोहे बांध्यो सबळ अपार॥ रमत० ॥ ३ ॥ इम मनमांही न जाणे भोळो, केता दिन लगे राखी-श राग ॥ जे साथे हुइ प्रीत घणेरी, तेहज साथे होय विराग ॥ रमत० ॥ ४ ॥ शेठ संघरे सूतो तेहवे, रमणी उपर अति प्रेम थाय ॥ ते नारीने मस्तक कीडो, थइने तेहने फोली खाय ॥ रमत०॥५॥ पुत्र पोताने मोहे मुइ, सहि देवी वन वाघणी थाय ॥ मारग पुत्र सु-कोसळ मुनिने, आवी विल्रुरे तेहज माय ॥ रमत० ॥ ६ ॥ प्रीय पटराणी सूरीकंता, परदेशी नृप मारे तेह ॥ स्वारथ अणसरते सहु

विहरे, धर्म न विहरे मकर संदेह ॥ रमत० ॥ ७ ॥ इम जाणी मन राग निवारो, रमणी रमत छांडो दूर ॥ मुनि मेघराज कहे सुणो भवियण, जिम पामो तुम सुख भरपूर ॥ रमत० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संग्रह सज्झाय १४ ॥

(धर्मवंत नर सांभळो.–ए देशी.)

आळस मोह निवारीए, अवज्ञा ने अभिमान ॥ क्रोध प्रमाद परहा करो, जिम पामो रे तुमे जग बहु मान ॥ १ ॥ परिहर रे प्राणी तेर काठीया रे ॥ ए आंकणी ॥ करो उद्यम रे जीव धर्म अपार ॥ नरभव रे, लहेतां दोहिलो रे ॥ प० ॥ २ ॥ कृपणपणुं भवि टाळिये, शोक अने अज्ञान ॥ विक्षेप कुतूहल नहु भलो, रमणी रमत रे छांडो दूरे जाण ॥ प० ॥ ३ ॥ एवं तेर काठीया, छांडे ते नर धन्य धन्य ॥ विहुं भवे पूजा ने लहे, जग गणीए रे ते पुरुष रतन ॥ प० ॥ ४ ॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरी शिरोमणी, पाट प्रभाकर जाण ॥ श्री रायचंद्रसूरी जग दीपता, अति मधुरी रे जस अमृत वाण ॥ प० ॥ ५ ॥ शरवण मुनि महोटो यति, जेणें पाटण साध्युं काज ॥ ते गुरु पयप्रणमी करी, इम पभणे रे मुनिश्री मेघराज ॥ प० ॥ ६ ॥ ए सज्झाय तेरे करी, भणजो चतुर सुजाण ॥ आळस अंग निवारीजो, जिम पामो रे तुमे कोडि कल्याण ॥ प० ॥ ७॥ इति ॥

॥ अथ श्री मन शिखामण सज्झाय १४ ॥

क्या करुं मन थिर नहि रेता, अधर फिरे मन मेरारे ॥ में क्या करुं मन थीर० ॥ यह मनकुं वेर वेर समजाया, समज समज मन मेरा रे ॥ में क्या० ॥ १ ॥ वेठ कहुं तो मन उठ चलतहे, मन दोरे मन धीरा रे ॥ पाउ पलक मन थिर नहि रहेता, कुण पतिआरा मन तेरा रे ॥ क्या० ॥ २ ॥ कूड कपट महा विष भरीयो, परनारी संग हेरा रे ॥ भवनो भव जीव हाल भटकतो, फोगट फेरा

फरीयो रे ॥ में क्या० ॥ ३ ॥ कुटंब कबीला माल खजीना इसमे नहि कछु तेरा रे ॥ सांज भइ जब उठ चलेगो, जंगल होयगा डेरा रे ॥ में क्या० ॥ ४ ॥ कहेत आनंदघन मन समझाया, मन कायर मन सूरा रे ॥ मनका खेल अजरका प्याला, पीवेसो पीवणहारा रे ॥ में क्या० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विनती सज्झाय ॥.

अरज हमारी सुनो हो दीनपति, कोन भांत तरना ॥ में दुःखीयो संसार चतुरगति, सो तुमसें सरना ॥ अरज० ॥ ए आंकणी ॥ घोराघोर नरकके भीतर, नाना दुःख भरना ॥ ताडन मारन छेदन भेदन, अवर देह धरना ॥ अरज० ॥ १ ॥ कबहुंक तीर्यच योनी पायके, गले फांस धरना ॥ भूख तृषा अति सीत उष्णता, मार मार करना ॥ अरज० ॥ २ ॥ मनुष्य देह पायके सुंदर, विषयभोग चरना ॥ राऊ रंक छिनमांहे दीसे, काऊ नही सरना ॥ अरज० ॥ ३ ॥ देव विभूती पायके सुंदर, अधिक देख जुरना ॥ जब माला मूर्छावन लागी, सोच कीए मरना ॥ अरज० ॥ ४ ॥ एम अनंत काल हुं भटक्यो, नही पाया सरना ॥ जन्म मरणका दुःख निवारो, स्वामी विनती सफळ करना ॥ अरज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री काया जीव संवाद सज्झाय ॥

काय अब चल संग हमारी, तोय बहोत जतन कर राखी रे ॥ काया० ॥ १ ॥ पट आभूषण सुंघेइ चोवा, असन पान नित त्यागी रे ॥ काया० ॥ २ ॥ तेरे कारण जीव संहारी, बोल्ले जूठ अपारी ॥ चोरी कर परनारी सेवी, जूठ परिग्रह धारी रे ॥ काया० ॥ ३ ॥ तोय बहोत उद्यम कर पोषी, अब कहा देन दगारी ॥ इतिपररीजी तु नाही, कृतधन लख उपगारी रे ॥ काया० ॥ ४ ॥ काया कहे सुणो जीव पीयाजी, तुं कहा कहत वारंवारी ॥ में न चलुंगी संग

तीहारी, पून्य पाप दोय लारी ॥ काया० ॥ ५ ॥ जिनवर नाम सार भज आतम, काया भरम संसारी ॥ सुगुरु परतीत धरत शुभ, आनंद भयारी हमारी रे ॥ काया० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ अभक्ष अनंतकायनी सझाय ॥

॥ दुहा ॥ गोयम गणहर पय नमी, कहिस्युं मनह जगीश ॥ वर्जनीय बावीश वळी, अनंतकाय बत्रीश ॥ ढाळ ॥ श्री जिनशासन एह, दुलह नरभव, भमतां लाधो प्राणीयो ए ॥ ए निरूपम निकलंक, सुरतरु सुर कुंभ; सुरमणी अधिक वखाणीये ए ॥ श्रावकने कुल कर्म, बावीस अभक्ष; बत्रीस अनंतकाय छंडीये ए ॥ १ ॥ यद्यपि ए आचार, तह विह अविरत; छंडिये विरतति मंडिये ए ॥ वड पीपल पीलक्ष, उंबर कठुंबर; एहना फळ ते टाळीये ए ॥ मधु मद्य मांखण मांस, चार विगय एह; टाळी जिनधर्म पाळीये ए ॥ हिम विस भक्षण सर्व, अहि फण आदए, करा माटी निवारीये ए ॥ रात्रीभोजन सर्व, टाल्यो जोइए; असण खादम पिण वारीये ए ॥ २ ॥ बेंगण फल विण जाण्यो, खाता इहभव; परभव आपद देखीये ए ॥ घणा दिवसनो अथाणो, अने वळी संधाणो; तेल मल्यो ते उवेखिये ए ॥ कोमल फळ बहु बीज, विदलती घोलवडा; चलित रसथी मन वारीये ए ॥ ए अभक्ष बहु दोष, त्रसनी उतपत; केवली वचन संभाळीये ए ॥ ३ ॥ हवेबत्रीस अनंतकाय, तेहीज सांभळी; पचखो भवियण मनरली ए ॥ सूरण ने वज्र कंद, सूची अग्ग ए; अनंत जीव आगम भणे ए ॥ आदु अल्लु हलद, थोहर दुविय; अल्लकचूर सतावरी ए ॥ लसण गिलो लुणी कंद, मूळा गाजर; श्रावक ए नहु बावरे ए ॥ ४ ॥ गिरिणें वंस करल्लु, लोढा कंद ते; थेग अडिल्ला मुढला ए ॥ लूण वृक्षनी छाल, आलु खेढला; ढक साक दुषण वडा ए ॥ विराली कंद विथल्ल, साग अमृतवल्ली; पिंडालु कुंणी आंबली

ए ॥ सूर वाल पल्लंक, विरहा खरसूआ; कुमारिका ए नहु भली ए ॥ ५ ॥ भूमिफोडा आली मोथ, एव मादि वळी; अनंतकाय जे परिहरे ए ॥ ते श्रावक व्रत योग्य. पत्तेय वणस्सइ; तेहनी बिरती हिये धरे ए ॥ संख असंख अनंत, जीव वणस्सइ; सद्दही मन संवर करे ए ॥ देवलोक शिवमुख्य, अनुक्रम पाम ए; श्री समरचंद्रसूरि इम उच्चरे ए ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चतुरंग सज्झाय ॥

अंग छे च्यार जग दोहिला रे जीव, नरभव श्रवण विचार ॥ सद्दहणा तप संयम जोग ए, पामी आलि म हार रे ॥ १ ॥ प्राणी दोहिलो नरभव सार, लही पाळीये धर्म आचार रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशी जीव योनि भमियो, चडत पडत अवतार ॥ विप्र मातंग करी कुंथु नरपति, कृपण सदन संभार रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ दस दृष्टांते दोहिलो जो इम, मानवनो भव लाध ॥ सांभळवुं गुरु जोग जिनधर्मतणुं, दोहिलुं ते अगाध रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ कर्म संयोगे जइ ते पाम्यो, किमे, सद्दहणा ते दुर्लभ ॥ वासित जेण मिथ्यामति जीवडो, काल अनादि मन दंभ रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ सांभळी जिन मत सात निन्हव थया, सद्दहणाथकी भ्रष्ट ॥ नाम जमाली प्रमुख ते जाणज्यो, सहस्यें अति घणा कष्ट रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ मास तप पारणुं डाभ अणी करे, पूजे देव त्रिकाल ॥ चारित्र पाळे अभव्यतणी परे, आण विण भमे चिर काल रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ पामीय सद्दहणा साच जे जिन कह्युं, दोहिलो चारित्र पंथ॥ खडगधार जिम व्रत तप आचरे, धन्य ते जाणो निर्ग्रंथ रे ॥ प्राणी० ॥७॥ श्रेणिक प्रमुख बहु जीव संयम विना, आज लगें सहे दुःख ॥ चारित्र आदरी काल आगामी, पामशे मुगतिना सुख रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ अंग ए च्यार जग दोहिलां पामी, धर्म करो मन रंग

ब्रह्म कहे उपदेश ए सांभळी, म करो आळस अंग रे ॥ प्राणी० ॥९॥

॥ अथ श्री द्रुमपत्र सझाय ॥

जिम तरु पाकुं पानडुंजी पडतां न लागे वार ॥ जीवित तिम माणसतणुंजी, जाणो हृदय मुझार ॥१॥ ससनेहा गोयम समय म करीश प्रमाद, क्षमतासुं मन रीझवुंजी ॥ ए जिननो विधि वाद ॥ ससनेहा० ॥ ए आंकणी ॥ डाभ अणी जल कण जिस्योजी, चंचल चतुर विचार ॥ आयु अथिर इम नरतणोजी, जिम वळी अंजली वार ॥ ससनेहा० ॥ २ ॥ आयु उपद्रव अति घणाजी, नरभव दुर्लभ जाण ॥ कायथिति भवथिति रह्योजी, करमतणे परिमाण ॥ ससनेहा० ॥ ३ ॥ आरजदेशे दोहिलुंजी, उत्तम कुल अवतार ॥ सांभळवुं जिनधर्मतणुंजी, सद्दहणा आचार ॥ ससने० ॥ ४ ॥ सहज प्रमादी जीवडोजी, काम सुखे अति लीण ॥ सयल जोग निरबल हुवेजी, इंद्री थाये क्षीण ॥ ससने० ॥ ६ ॥ कामभोग बे परिहरोजी, मकरो तसु अभिलाष ॥ पाछुं कीम लीजे वम्युंजी, ए पंडित जन भाष ॥ ससने० ॥ ७ ॥ नेह तजो अम उपरेजी, कमल तजे जिम नीर ॥ इम करतां केवल हुस्येजी, लहिसो भवजल तीर ॥ ससने० ॥ ८ ॥ जीव एक एहवा हुस्येजी, सद्दहस्ये जिन धर्म ॥ विरहे केवळज्ञाननेजी, लहिस्ये ते जिन मत मर्म ॥ ससने० ॥ ९ ॥ तो हिवणा हुं केवळीजी, मनना हरुं संदेह ॥ तुं कां डमडोले पड्योजी, निरमल मारग एह ॥ ससने० ॥ १० ॥ भव अनादि दुस्तर तर्याजी, कर्म खप्या अति भूर ॥ समुद्र तरी कुण गोपयेजी, बुडे ओछे पूर ॥ ससने० ॥ ११ ॥ राग रोष बे परिहरीजी, सांभळी ए उपदेश ॥ गौतम मुक्ति पधारियाजी, ब्रह्म नमे सुविशेष ॥ससने०॥१२॥

॥ अथ श्री साधुगुण सझाय ॥

(ज्ञानपद भजियेरे, जगत सुहंकरु. ए देशी.)

पांचे इंद्री रे अहनिस वस करे, पाले नवविधि सीलोजी ॥ च्यार कषाय न सेवे संयती, लक्षण सहुये सलीलोजी ॥ १ ॥ कहिये मिलस्येरे मुनिवर एहवा, जसु मुख पंकज पेखोजी ॥ तनु रोमंची रे हियडो उल्लसे, विकसे नयण विशेखोजी ॥ क० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत पूरा जे धरे, पाले पंचाचारोजी ॥ सुमति गुपतिनी बहुली खप करे, गुण छत्तीसे भंडारोजी ॥ क० ॥ ३ ॥ मास सियालेजी बहुलो सी पडे, वाये वाये सीतल वायोजी ॥ नपकर पोढेजी सुभमत सेजडी, संयम सरिखो भावोजी ॥ क० ॥ ४ ॥ ग्रीषम कालेजी तरुणो रवि तपे, जीव सवि वंछे छांहोजी ॥ सूरज सामी जीले आतापना, उंची कर बे वांहोजी ॥ क० ॥ ५ ॥ वरषाकालेजी मेलां कापडा, जिरमिर वरसे नीरोजी ॥ डांस मसादिक परिसह अति घणा, सहे ते साधु सधीरोजी ॥ क० ॥ ६ ॥ समकित मान सरोवर जीलतां, चारित्र वनखंड वासोजी ॥ तप जप संयम स्वामी निरमला, पाले पाले मनने उल्लासोजी ॥ क० ॥ ७ ॥ बावीस परिसह विसमा जे सहे, महीयल करे विहारोजी ॥ खिमाखडग लेइ मुनिवर कर धरे, उपसम रस भंडारोजी ॥ क० ॥८॥ मधुकरनी परे मुनिवर गौचरी, विहरे विहरे सुझतो आहारोजी ॥ नेपण नीरस ने वळी थोडलो, दीये दीयें देह आधारोजी ॥ क० ॥ ९ ॥ तीन प्रदक्षिणा देइ वांदस्युं, हियडे आनंद पूरोजी ॥ श्रवणे सुणस्युं जीयणी तसु तणी, चतुर करमदल चूरोजी ॥ क० ॥ १० ॥ करजोडी वीनवस्युं वळी, स्वामी शरणे राखोजी ॥ हियडे सालेरे पापजिके किया, आलोयसुं तुम साखोजी ॥ क० ॥ ११ ॥ तप पडिवजस्युंजी निरतो निरमलो, दुरित करस्युं दूरोजी ॥ मनह मनोरथ सहुये पूरस्युं इम

भणे जी विजयदेवसूरीजी ॥ क० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिगुण सज्झाय ॥

पंच महाव्रत जे धरे, टाले पाप अढारो रे ॥ विविध परिसह जे सहे, नव कल्प करे विहारो रे ॥ एहवा मुनिवर वंदिये, जिम लहिये भवनो पारो रे ॥ केसीगुरु परदेशी जिम, भव पडतां दिये आधारो रे ॥ ए आंकणी ॥ एहवां० ॥ १ ॥ बारे भेदे तप तपे, पाळे पंचाचारो रे ॥ निंदक पूजक सम गिणे. जोस न कहे लिगारो रे ॥ एहवा० ॥ २ ॥ कोइ छेदे वांसले, चंदन कोइ लगावेरे ॥ बिहुपर समता मन धरे, भावना बारे भावे रे ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ चालीस बिहु करी आगळा, दोष तजी ले आहारो रे ॥ संविभाग मुनिने करे, सुमति गुपति नित धारो रे ॥ एहवा० ॥ ४ ॥ करम बंध जेहथी हुवे, न करे तिसो विवाद रे ॥ नव विधि सीले नितु रमे, ए पुरो विधि वादरे ॥ एहवा० ॥ ५ ॥ अंग अगिआर जे भणे, पुरव चउद विचारे रे ॥ संयमना गुण साधतां, भवियण पार उतारे रे ॥ एहवा० ॥ ६ ॥ इम अध्ययन पनरमे, साधुतणा गुण दीसे रे ॥ चरणकमल नितु तेहना, श्री ब्रह्मो नमे मुजगीसे रे ॥ एहवा० ॥७॥

॥ अथ श्री अयवंतीसुकुमालनी सज्झाय ॥

वंदो अयवंती सुकुमालने रे, नयरी उज्जेणीमांही कहाय रे ॥ भद्रा सुत सुख विलसे नवनवा रे, घरणी वत्तीससासुं मन भाय रे ॥ वंदो० ॥ १ ॥ न चल्यो ध्यानथकी तिलमात रे, एकण सामायक पाम्यो भलुं रे ॥ नलिनीगुलम विमान विख्यात रे ॥ वंदो० ॥ २॥ सुहगुरु निज घर आवी समोसर्या रे, सांभळी नलिनीगुलम विमान रे ॥ जाति समरण तेहनें ऊपनो रे, दीख ग्रही धरी मनमें ध्यान रे ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ गुरुने पूछी कांननमें रह्यो रे, काउस्सग्ग वोसरावी निज काय रे ॥ पूरव भवनी नारी सियालणी रे, अंग विलूर्यो तेणे

आय रे ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ अमर विमाने जइने उपनो रे, लाधा ततखिण भोग रसाल रे ॥ वाचक श्री हीरचंदना पाये नमी रे, जगचंद्र प्रणमे तेह त्रिकाल रे ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विषयनी सज्झाय ॥

(भेखरे उतारो राजा भरथरी. ए देशीमां.)

विषयतणां फळ पाडुआ, भांखे श्री जिनराय रे ॥ सांभळतां सुख उपजे, हियडे हरख न माय रे ॥ विषय० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ विषय विलुध्यो प्राणियो, नवि बोले साच रे ॥ माय ने बाप गुरु आगले, हारे निज वाच रे ॥ विषय० ॥ २ ॥ करण रसे अति रातडो, मृगलो वनमांही रे ॥ पारधीने पाने पड्यो, दीधो करमे साही रे ॥ विषय० ॥ ३ ॥ देखोरे रुपे आकुलो, दीवे पडीयो पतंग रे प्राण तजी परभव गयो, तजीयो निज अंग रे ॥ विषय० ॥ ४ ॥ नासिका गंधे ग्राहियो, भमरो अरविंद रे ॥ कमळ संध्याये संकोचतां, पाये हणीयो गयंद रे ॥ विषय० ॥ ५ ॥ रसना रस रातो घणो, जळमें रह्यो मीन रे ॥ कंठे कांटो खूचीओ, दुःखीयो थयो दीन रे ॥ विषय० ॥ ६ ॥ फरस विषय अति लोभीयो, वनमें गजराय रे ॥ कूड करिणी खाडमे, लोह सांकले जडाय रे ॥ विषय०॥ ७ ॥ एक एक इंद्रि वश पड्या, दुःख देखे लोक रे ॥ पांचे मूके मोकली, थाये जनमनु फोक रे ॥ विषय० ॥ विषय तज्यां सुख उपजे, सुणज्यो सवि जीव रे ॥ श्री पद्मचंद्रसूरि प्राणीने, पडिबोहे सदीव रे ॥ विषय० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ सचित्ताचित्त भूमि सज्झाय ॥

प्रणमी सरसति सामिणी माय, पामी सद्गुरुतणो पसाय ॥ प्रासुक पृथ्वीतणो विचार, कहुं सूयगडांग वृत्ति अनुसार ॥ १ ॥ अंगुल चार अचित्त भूमिका, अव्यापार क्षेत्रनी जिका ॥ राजपंथ-

थकी पंच प्रधान, शेरडी ए सत अंगुल मान ॥ २ ॥ घर भूमि दश अंगुल संच, मळमूत्र भूमि अंगुल दश पंच ॥ चौपद बांधवाकेरे ठाम एकवीश अंगुल अचित्त कहे स्वाम ॥ ३ ॥ चूला हेठे बत्रीश आंगुला, निभा हेठे बहोतेर भला ॥ एकसोवे अंगुल परिमाण, इटवाह थानकथी जाण ॥ ४ ॥ एहवी अचित्त भूमिका कही, अवर सचित्त जाणो सद्दही ॥ वांचक श्रीभानुचंद्र सार, शिष्य देवचंद्र कहे सुखकार

॥ अथ श्री मुनिगुणनी सझाय ॥

(धर्मवंत नर सांभळो ए देशीमां.)

आरति सब दूरे करी, घर छोडी लीधो संयम भार ॥ वह मुस चोरी मैथुन, मुनि कीधोरे परिग्रह परिहार ॥ १ ॥ एसा साधुके वारणे ॥ ए आंकणी ॥ कब देखु मेरे नयण नजीक ॥ कुटुंब नीको अणगारनो, सवि सुणज्योरे तुमे सुगुण भविक ॥ एसा० ॥२ ॥ धरम पिता माता क्षमा, ए बे कीधा आगेवान ॥ संयम बंधु सखाइयो, सुधी पाळेरे जिनवरनी आण ॥ एसा० ॥ ३ ॥ ध्यान भलो सुत आदरी, भगिनी साथे दया विशाळ ॥ शान्ति सदा वर गेहिनी, चित्त चोखेरे सुतहे सुकुमाळ ॥ एसा० ॥४॥ मंदिर सुदृढ संतोषनो, ज्ञानामृत लहे भोजन सार ॥ निवृत्ति धुआ घर सुंदरी, ए साथेरे सघळो परिवार ॥ एसा० ॥ ५ ॥ भूमि सज्जा सोहामणी, नवदु दिस ओढण ओग ॥ सुख विलसे सुख निरमळो, सुखियोरे हो साधे परलोग ॥ एसा० ॥ ६ ॥ गारव मद गरवे नहि, भय साते जिणे कीधा दूर ॥ हरखचंद्र वाचक भणे, ते प्रणमुंरे उगमते सूर ॥ एसा० ॥७॥

॥ अथ श्री मनने शिखामणनी सझाय ॥

मन मते जीव इम भणे, रहे तुं रहे मोरी पासे रे ॥ युवति देखी जिण फूले, पीछे तुं पसतासी रे ॥ १ ॥ रहे रहे मणुआ वरजीओ ॥ ए आंकणी ॥ प्रमदा देखी म भूले रे ॥ आगे मायां वश पड्यो,

नारी परिहरो दूरे रे ॥ रहे० ॥ २ ॥ मन पसरंत निवारीयो, मुनिवर मेघकुमारो रे ॥ प्रसन्नचंद्र ऋषि राजीयो, अईमंक आर्द्रकुमारोरे ॥ रहे० ॥ ३ ॥ कुमर अइमुत्तो लहुअडो, धन्य धन्नो अणगारो रे ॥ थूळभद्र जिम थोभव्यो, गिरुओ नेमकुमारो रे ॥ रहे०॥४ ॥ जीव ने मणुओ बे मिली, सेवो जिनके पाय रे ॥ ए संसार जंजाळ छे, बेठां सिद्धमां जाय रे ॥ रहे० ॥ ५ ॥ अनंत सुख सिद्धमां अछे, छुनि द्वापें कह्युं न जाय रे ॥ कवण उपम देउं तेहने, लहिये मन सुपसाय रे ॥ रहे० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धन्नामुनिनी सझाय ॥

(कोयलो परवत धुंधलोरे लाल. ए रागमां.)

धन्य धन्नो मुनि वंदीये रे लाल, श्री वीरतणो अणगार रे ॥ महामुनि ॥ तृण जेम छोडी संपदारे लाल, लीधो संजमभाररे महामुनि ॥ १ ॥ काकंदीपुरीमां वसे रे लाल, भद्रा मात मलार रे ॥ महा० ॥ तप करी काया सोसवी रे लाल, कीधो उग्र विहार रे ॥ महा० ॥ धन० ॥ २ ॥ शुद्ध क्रिया पाळे सदा रे लाल छांडे सकल प्रमाद रे ॥ महा० ॥ वीर वखाणे एकदा रे लल, सुणी तजे संवाद रे ॥ महा० ॥ धन० ॥ ३ ॥ चौदसहसमां कोइ नही रे लाल, धन्ना समो निर्ग्रंथ रे ॥ महा० ॥ तप जप संयम आगळे रे लाल, चाले शुची पंथ रे ॥ महा० ॥ धन० ॥ ४ ॥ षटमासी सुख पामशे रे लाल, जिहां छे सुख अनंत रे ॥ महा० ॥ एहनो भजन किहां थकी रे लाल, भवभव दुःखनो अंत रे ॥ महा० ॥ धन० ॥ ५ ॥ सुरनर सुणी हरख्या घणुं रे लाल, वंदे मुनिना पाय रे ॥ महा० ॥ वैरागी महिमा नीलो रे लाल, दीठां आवे दाय रे ॥महा० ॥ धन० ॥ ६ ॥ अनुत्तरो ववाइमें कह्यो रे लाळ, धन्नातणो अधिकार रे ॥ महा० ॥ विद्याकीर्त्ति कहे साधुने रे लाल, नामथकी नि-

स्तार रे ॥ महामुनि ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री भरतेश्वरनी सज्झाय ॥

(क्यांथी आ संभळायं मधुर स्वर० धन्याश्री रागमां.)

मनमेंही वैरागी भरतजी, मनमेंही वैरागी ॥ सहसबत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडभागी ॥ चोसठसहस अंतेउरी जाके, तो तेहि न हुआ अनुरागी ॥ भरतजी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नुकोड हे पागी ॥ लाख चोराशी गजरथ सोहीये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ भ० ॥ २ ॥ चारकरोड मण अन्नज सीझे, लूण दशलाख मण लागी ॥ तीनकोड गोकुळ घर दूझे, एक कोड हळसागी ॥ भ० ॥ ३ ॥ सहसबत्रीश देश वडभागी, भये सरवके त्यागी ॥ छन्नुकोड गामके अधिपति, तो ही न हुआ अनुरागी ॥ भ० ॥ ४ ॥ नवनिधि रतन चोवडां वाजे, मन चिंता सब भागी ॥ कनक किरती मुनिवर वंदत हे, देख्यो मुगति में मागी ॥ भरतजी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री चेतनजीनी सज्झाय ॥

(अहो अहो पासजी मुज मळीयारे. ए देशीमां.)

हुं तो प्रणमुं सदगुरु पाया रे ॥ माता सरस्वतीना वंदु पाया रे ॥ हुं तो ध्यावुं आतमराया ॥ जीवणजी वारणे मत जाओ रे ॥ तमे घेर बेठाने कमाओ ॥ चेतनजी वारणे मत जाओ रे ॥१॥ तारा घरमां छे दुरमती नारी रे ॥ कहेतां कुमति कहेवाणी रे ॥ तमने भोळवी बांधशे ताणी ॥ जीवणजी वा० ॥२॥ तारा घरमां छे चार धुतारारे, तेने काढोने प्रीतम प्यारारे ॥ तमे तेहथी रहोने न्यारा, जीवणजी वारणे० ॥ ३ ॥ तारा घरमां छे त्रण रतनरे ॥ तेनां तमे करो जतन रे ॥ एतो अखुट खजानो छे धन ॥ जीवणजी वा० ॥४॥ चारने करो चकचूररे, पांचमीथी थाओ हजुररे ॥ जेम पामो

सुख भरपूर, जीवणजी बा० ॥५॥ शोल कपायने घो शीखरे, अढा-रने मंगावो भीख रे ॥ पछे राठ कर्मनी शी बीक ॥ जीवणजी बा० ॥ ६ ॥ सत्तावनने काढो घरथी रे ॥ तेवीसने कहो जाय अहींथी रे ॥ पछे अनुभव जागशे मांहेथी ॥ जीवणजी बा० ॥ ७ ॥ विवेक दीवो करी अजुवालो रे ॥ मिथ्या अंधकारने टालो रे ॥ पछे अनुभव साथे मालो ॥ जीवणजी बा० ॥ ८ ॥ समता साहेलीशुं खेलो रे ॥ दुरमतिनो छेडो मेलो रे ॥ जीम पामो मुक्तिगढ वेलो रे ॥जीवणजी बा० ॥ ९ ॥ ममताने कांइ न मारो रे ॥ जीवजीव सुंबाजी हारो रे ॥ जीम पामो भवनो पारो ॥ जीवणजी बा० ॥ १० ॥ शुद्धदेव गुरु पसाय रे ॥ मारुं मन ते आवे ठाय रे ॥ पछे नित्य आनंदघन थाय रे ॥ जीवणजी बारणे मत जाओ रे ॥ ११॥ इति॥

॥ अथ बीजनी सझाय ॥

(राग वीहाग)

(आज मारे एकादशी रे, नणदल मौन धरी मुख रहीए–ए राग.

सखी मारा चोकमां रे, उगतो बीजनो चंद्र निरखीए ॥ टेक ॥ चंद्र विमाने शाश्वत जिनवर, प्रणमी पातक हरीए ॥ मन वच काया थीर करोए तो, भव दरीए झट तरीए ॥ सखी० ॥१ ॥ मात पिता सुत सासु ससरो, नावलीयो रुप रेलो ॥ कारमो ए कुटुंब कबीलो, मळीयो पंखी मेळो ॥ सखी० ॥ २ ॥ अभिनंदन सुमति शितलजीन, वासुपूज्य अरस्वामी ॥ जन्म च्यवन शीवनाण च्यवननां, कल्याणक गुणग्रामी ॥ सखी० ॥ ३ ॥ वर्त्तमान चोवीशीए ए दिन, कल्याणक जिनकेरां ॥ अनंत चोवीशीए अनंत कल्याणक, थाशे एम भलेरां ॥ सखी० ॥ ४ ॥ दुविध धर्म प्रकाश्यो बीजे, कहे प्रभु भवि आदरज्यो ॥ ध्यान दोय तजी दोय आदरज्यो, राग द्वेष दोय हरज्यो ॥ सखी० ॥ ५ ॥ नय निश्चय व्यवहार उभयथी, तत्त्वातत्त्व प्रकाशे ॥

बीज दिवस भवि उभय प्रकारे, आराधो उल्लासे ॥ सखी० ॥ ६ ॥ ए दिन तप जप करतां भावे, नरक तिर्यंच गति वारे ॥ देव मनुष्य गति पुण्य महोदय, अनुक्रमे शिवसुख सार ॥ सखी० ॥ ७ ॥ कर्म बीज बीज दिन तप तपतां, जडमुळथी बळी जावे ॥ सहजकलानिधि सूरि उदये, जगदानंद सुख पावे ॥ सखी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी सझाय ॥

(भवि तमे वंदो रे सूरीश्वर गच्छराया.-ए राग.)

भवि भवदरीए रे, पंचमी तप करी तरीए ॥ चौगति चुरी रे, पंचमी गति पग्वरीए ॥ टेक ॥ देशना दे वीर त्रिगडे बेशी, ते समये ते काळे ॥ अजवाळी पांचम आराधो, ज्ञानावरणने टाळे ॥ भवि० ॥ १ ॥ निंद्रा भय मैथुन अशनादिक, गुण पशु नरमां सरखो ॥ ज्ञाननो गुण मानवमां अधिको, ते विण नर पशु परखो ॥ भवि० ॥ २ ॥ क्रोड वरस तप करी अज्ञानी, कर्मविपाकने टाळे ॥ ज्ञानी कठण करम इंधन ने, श्वासोश्वासमां बाळे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया बे बीज धर्मनां, ज्ञान प्रथम पछी कीरिया ॥ ज्ञानी गुण जाणे कीरियानो, करे कीरिया आचरीया ॥ भवि० ॥ ४ ॥ नंदीसूत्रमां भेद ज्ञाननां, पांच कह्या उच्छरंगे ॥ मति श्रुत अवधि मनपर्यव केवळ, आराधो भवि रंगे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ मति अठ्ठावीश श्रुतना चउद वीशे, अवधि छ असंख्य प्रकारो ॥ मनपर्यवना भेद उभय छे, केवळ एक उदारो ॥ भवि० ॥ ६ ॥ ज्ञाने तत्त्वातत्त्व पिछाणे, वस्तु स्वभाव विकाशे ॥ अभिनव अंतर लोचन केवळ, लोकालोक प्रकाशे ॥ भवि० ॥ ७ ॥ ज्ञान विराधक अंधा बेहेरा, मुंगा पंगु रोगी ॥ आराधक आ भव सुखसंगी, परभव सुरशिवभोगी ॥ भवि० ॥ ८ ॥ पंच वरस पंच मास जावजीव, जघन्य उत्कृष्टि पाळे ॥ चोवीहारो उपवास करीने, पंचमी तप अजवाळे ॥ भवि० ॥ ९ ॥ अथवा सौ-

भाग्यपंचमी उज्वळ, कारतक मासे करीए ॥ उजमणा विधि तप आराधी, मानव भव उद्धरीए ॥ भवि० ॥ १० ॥ सहस दोय नमो नाणस गुणणुं, पुर्व उत्तरदीशी करीए ॥ पुस्तक आगळ धान्य फळादिक, दीपक घृतनो धरीए ॥ भवि० ॥ ११ ॥ गुणमंजरी वरदत्त विराधी, आपत वहोरी लीधी ॥ ज्ञान भवान्तरमां आराधी, पाम्या शिवसुख सिद्धि ॥ भवि० ॥ १२ ॥ कळश ॥ एम भविक भावे निज स्वभावे, तप उजमणा आदरे ॥ तरुमुलमां जळ सींचीए, ते उर्ध्व जइ फळ उद्धरे ॥ एम पंचमी तप वृक्ष सींचीये, पंचमी गतिने वरे श्री कुशल भ्रातृचंद्रसूरिनी सेव दीप सदा करे ॥ १३ ॥

॥ अथ अष्टमीनी सज्झाय ॥

(कपुर होय अति उजळो रे, काजळ होय अति श्याम.–ए राग.)

वीरजिणंद समोसर्या रे, गुणशील वनमोझार ॥ देवे समवसरण रच्युं रे, भाखे जगदाधार रे ॥ प्राणी धरीए विरती अंग, पामो मुख अभंग रे ॥ प्राणी० ॥ टेक० ॥ १ ॥ श्रेणीक देइ प्रदक्षणा रे, वंदी बेठो त्यांय ॥ बार परखदा सांभळे रे, देशना दे जिनराय रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ विषय कषाय प्रमादथी रे, रझले जीव संसार ॥ व्रत पच्चख्खाण विना मुधा रे, एळे करे अवतार रे ॥ प्राणी० ॥३॥ प्रतिदिन तप नव करी शको रे, पर्वे करीए सुजाण ॥ निज शक्ति अनुसारथी रे, व्रत नियमादि प्रमाण रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ आयुनो बंध परभवतणो रे, तिथि दिवस होय प्राय ॥ तेथी तिथि आराधतां रे, प्राणीओ सद्गति जाय रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ ते समे अष्टमी फळ विशे रे, पुछे गोयम स्वाम ॥ भविक प्रबोधक कारणे रे, भाखे श्री वीर ताम रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि एहथी रे, आठ संपदा होय ॥ बुद्धिनां अड गुण संपजे रे, अड दृष्टि फळ जोय रे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ प्रवचन अड फळ एहथी रे, लाभ अष्ट प्रतिहार

॥ आठ करम चकचुर हुवे रे, अष्टमी तप फळधार रे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ जन्म दीक्षा आदिनाथनी रे, अजीतनुं जन्म कल्याण ॥ च्यवन तिथि संभवतणी रे, अभिनंदन निरवाण रे ॥ प्राणी० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया रे, नेम ए तिथि निरवाण ॥ पार्श्व जिनेश्वर ए तिथि रे, पाम्या मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ ए तिथि आराधी वर्यो रे, दंडवीरज भुप मुक्ति ॥ कठण करम हणवा कही रे, अष्टमी श्रुत निरयुक्ति रे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ अतित अनागत काळना रे, जिननां बहु कल्याण ॥ एह तिथि बहु संजमी रे, पामशे पद निरवाण रे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ धर्मवासीत पशु पंखीया रे, ए तिथि करे उपवास ॥ व्रतधारी पोसो करे रे, जेहने धर्म अभ्यास रे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ एह तिथि आराधतां रे, सुख संपत्तिनो न पार ॥ आराधो तिथि अष्टमी रे, भ्रातृचंद्रसूरि सार रे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी सझाय ॥

पुर द्वारिकां रे नेमीजिणंद समोसर्या,
देवरचित रे समवसरणमां अलंकर्या;
बार परखदा रे सुरपति नरपति सौ मळ्या,
नमी केशव रे कहे मुज मन मनोरथ फल्या.
(झुल.)–दे देशना जिनराज अंते कान नमी पुछे यथा,
मुज शिर समरथ छतां साहिब कर्म शुं करशे व्यथा;
चरण धर्म अशक्त छुं, वळी रक्त अतिशय परिग्रहे,
उपाय कोक बताव प्रभु मम सहेज कर्म इंधन दहे. ॥१॥
(ढाळ.)–प्रभु भाखे रे मागशर शुद एकादशी,
माधे एकशत रे कल्याणक तिथि उल्लसी;
दश क्षेत्रे रे पांच पांच त्रण काळना,

नेवुं जिनना रे कल्याणक गुण माळना.

(झुल.)–अरनाथ दीक्षा नाण नमी जिन मल्ली जन्म दीख केवली,
आ वर्तमान चोवीशी मध्ये जिन कल्याणक आ वळी;
रही मौन करी उपवास माला दोढसो गुणणुं गणे,
सुव्रत सम द्रढ काय मन वच कर्म रिपुदळने हंणे. ॥२॥

(ढाळ.)–सुण माधव रे सुव्रतशेठ पोषध करे,
तव तस्कर रे चोरी करवा संचरे;
शाशनदेवे रे चोरने स्तंभाव्या तदा,
राय दंडे रे शेठे छोडाव्या मुदा.

(झुल.)–एक दिन पौषधशाळमां पोसह करी बेठा जदा,
पुर पावके प्रजल्युं बधुं पण शेठनुं न दह्युं तदा;
तप पारणुं करी शेठ उजमणुं करे अति आदरे,
राजा प्रजा तपनी प्रशंसा शेठनी स्तुति उच्चरे. ॥ ३ ॥

(ढाळ.)–लेइ दीक्षा रे ज्ञानी शिक्षा मन वशी,
तप तपीया रे बहु विध मौन एकादशी;
लेइ केवळ रे शिववधु वरीया उल्लसी,
कहे जदुपति रे कान आराधो एकादशी.

(झुल.)–अगीआर अंग लखावीए अगीआर पाठा कीजीए,
ज्ञान दर्शन चरण साधन पुण्य अमृत पीजीए,
चर्वळा मुहपत्ति नोकारवाळी पुजणी ठवणी वळी,
थापना अगीआर आदिक सर्व शुभ वस्तु मळी. ॥ ४ ॥

(ढाळ.)–एम तप विधि रे उजमणानी जे कही,
ते रीते रे करीए पोषधव्रत ग्रही;
मास अगीआर रे जघन्य ए तिथि आराहशी,
वरस अगीआर रे उत्कृष्टि जीवीत एकादशी.

(मूल.)–जगनाथ कहे केशव प्रत्ये आराध्य तुं एकादशी,
मन वचन काया योगथी करे निर्मळुं समकित कशी;
तुं थइश भावी बारमो जिन पर्व आराधी भलो,
सुणी वचन जिनना मोद वासुदेव पाम्यो निर्मलो. ॥ ५ ॥
(ढाळ.)–जगबांधव रे तरण तारण प्रभु तुं वडो,
शरणांगत रे कोण करे पामर धडो;
धन्य नगरी रे ज्यां जिनवर तमे अवतर्या,
पितु माता रे धन्य धरणी ज्यां पद धर्या.
(मूल.)–करी अंजली शीर नमि जिनने कृष्ण निज घर संचर्या,
पावन करे प्रभु चरणकजथी पुण्य भुमिमां परवर्या;
एम त्रिजग नायक मुक्तिदायक नेम जिन बावीसमो,
एकादशीनो कथित महिमा 'श्री' भ्रातृचंद्रसूरि मन रम्यो.॥६॥

॥ अथ शीलनी सज्झाय ॥

(ससनेहा गोयम समय म करीश प्रमाद–ए देशी.)

सद्गुरु देशण सांभळीजी, आणी हिये विचार ॥ वाडसहित व्रत आदरोजी, शील रयण सिणगार ॥ धन ते मानवीजी, पाळे शील अभंग ॥१॥ वाड नवे जिनवर कहीजी, उत्तराध्ययन मझार॥ ते मुनिवर आराधतांजी, सेवो तेहिज सार ॥ धन० ॥ २ ॥ त्रिहुं थानक सेवो नहीजी, स्त्री पशु पंडक नार ॥ कथा कहण रागे सुणोजी, एकठ रहण निवार ॥ धन० ॥ ३ ॥ जोतां रुप निहाळतांजी, राग अधिको चित्त थाय ॥ पटंतर छाना रह्याजी, वयण सुण्यां व्रत जाय ॥ धन० ॥ ४ ॥ पूरव भोग न संभरोजी, सरस न सेवो आहार ॥ बहु भोजन दूरे तजोजी, तन भूषण सउ वार ॥ धन० ॥५॥ मणुस जनम दोहिलो अछेजी, दोहिली जिणवर आण ॥ ते मुनिवर मन मुध धरोजी, दुरिय पलासे जाण! ॥ धन० ॥ ६ ॥ कर

पंकज जोडी करीजी, श्री पार्श्वचंद्र सूरी शिष्य ॥ चरण कमल तेना नमुंजी, नव वाड पाले निशदिश ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री राजीमतिनी सज्झाय ॥

रत्नगुरु गुण मीठडारे–ए देशी.

उगरसेननी अंगजा रे, हुं छुं तुम्हारी दासी ॥ नेह भरी नवयौवना रे, नारी न मेलो निराशी ॥ स्वामी माहरा साभलो रे ॥१॥ प्रीति करी नव श्रोडीये रे, कामणगारा कंत ॥ योवन लाहो लीजीये रे, खेलीजे मन खंत ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ चोसठ सहस अंतेउरी रे, भोगवी जिणे अरिहंत ॥ ते पण मुनि मुगति गया रे, शान्ति कुंथुं अर गुणवंत ॥ स्वामी० ॥३॥ प्रीतम तें मुज परिहरी रे, हुं न तजुं तुज संग ॥ जीव जिहां तिहां चेतना रे, अटकी रहुं तुम अंग ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ राजुल उज्जलगिरि चढी रे, नेमी सरकी लार ॥ संयम ग्रही मुगति गड रे, वीर सफल अवतार ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ कायापिंजर कारमानी सज्झाय ॥

(सहजानंदीनी देशीमां.)

राय राणा सवि मंडले, किण न कीधो थिर वास रे ॥ हाथ घसंतारे ते गया, धरम विहुणा निराशरे ॥ काया पिंजर कारमुं, भोलीडा हंसा म राच रे ॥ ए आंकणी ॥१॥ क्रोध निकट दुर्द्धर अहि, माया सापणि नार रे ॥ ए बिहुं रासेरे जालव्या, ग्रहि लेसे गमार रे ॥ काया० ॥ २ ॥ योवन वन विहामणो, मयण पाराधिनो वास रे ॥ मुगति सरोवर जायतां. नांखी लेसे तुज पास रे ॥ काया० ॥ ३ ॥ मानव भव पंकज लही, विषयकादव म सेव रे ॥ ममता सेवाल परिहरो, इम कहे जिनवर देव रे ॥ काया० ॥४॥ उपसम अमृतकुंडमां झीले धरी निज ज्ञान रे ॥ परमानंद सुख पाइये, इम कहे मुनि प्रधमान रे ॥ काया० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वैराग्यनी सझाय ॥

(राग धनाश्री.)

कांही करो जंजाल जगतमें, कांहि करो जंजाल ॥ एक दिन सबहि कोंहे चलनां, कहां बुढे कहां बाळ ॥ जगतमें० ॥ देहकी छांह मीसें दिन रेनीं, दाओ देखत हे काळ ॥ जगतमें० ॥ १ ॥ दुनिया दोलत खेल खजाना, ए सब आळ पंपाळ ॥ जगतमें० ॥ २ ॥ अवधि भइ सब छोंड चलेंगें, महिल रहेगो माल ॥ जगतमें० ॥ एह लेखी धर्म करो सब कोइ, जोहे परम ते पाल ॥ जगतमें० ॥ ३ ॥ अजर अमर अविनाशी अदभुत, महा सुख लहो तत्काळ ॥ जगतमें० वाघजी मुनिको भाण कहे ज्युं, धम्म करत हो निआल ॥जगतमें०॥

॥ अथ चेतननी सझाय ॥

(राग धनाश्री.)

अपनो काज सुधारो रे चेतन, अपनो काज सुधारो रे ॥ १ ॥ सुरपादप सुर घट सुरमणि सम, मानवभव मत हारो रे ॥ चेतन०॥ २॥ विषय पिपासा पिशाचीशी आशा, मोहकी निंद विदारो रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ असरन सरन जग ज्युं वत्सल, धम्म हिएमें धारो रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ज्युं निजरुप स्वभावमे देखो, पाओ भवको पारो रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ वाघजी मुनिको भाण कहत हे, धरमीसो मित्त हमारो रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ षट् मुनि सझाय ॥

(आदि अजित श्री शांतिनो.)

वीर जिनेश्वर पय नमी, आणी मन परमाणंद ॥ साधुतणा गुण जपसुं, नमतां सुख लहे अमंद ॥ १ ॥ ते धन मुनिवर वंदिये, छंड्या जेणे भवना दंड ॥ सुधी विधि खप जे करे, पाळे जिन आण अखंड ॥ ते० ॥ २ ॥ गजसुकुमाल सदा नमुं, लीधो समशाने जाइ ॥ का-

उस्सग्ग निरती विधे, सोमिल आयो तेणे ठाइ ॥ ते० ॥३॥ मस्तके अंगारा दहे, डोल्यो नही ते व्रतधार.॥ केवळनाण उपार्ज्यो, पहुतो सीवपुर पंथ सार ॥ ते० ॥ ४ ॥ काकंडी नगरी भली, भद्रानुं अंगज जोइ ॥ धन धन्नो व्रत आदरे, छठें आहारे सोइ ॥ ते० ॥५॥ पारण दिन आंबिल करे, लेतो वळी उंच्छ अहार ॥ चउद सहसमांही कंह्यो, ए छे गुणनो भंडार ॥ ते० ॥ ६ ॥ दृढप्रहारि जग जाणीए, प्रणमु अईनग पाय ॥ बार वर्ष मुख भोगवी, कीधी पछे निर्मल काय ॥ ते० ॥ ७ ॥ उपसम रस भरी जीलतो, गिरुवो अवंतीसुकुमाल ॥ शिवातणे भक्षण थकी, लाधो मुख अति मुविशाल ॥ ते० ॥ ८ ॥ सुकोसल रिषि वंदीये, वाघण विलोहित खाय ॥ अणसण शुभमति आदरी, कीधो सुरनो तेणे ठाय ॥ ते० ॥ ९ ॥ एणिपेरे मुनिवर जे हुवा, वरते जे साधु प्रधान ॥ रयण कीरती तसु पय नमे, वंछुं चित्ते तेहनो ध्यान ॥ ते० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ पद ॥

॥ राग आशाऊरी ॥

अध्यातम विनु वाउ रे, निज तरण न होगा ॥ निज संपत्ति छांडी करी, परवित्तको भोगा ॥ अ० ॥ १ ॥ देवी देव संसारमें, एह नही तारे अभागा ॥ रटत रटत जनम गये, तबही ग्यान न जागा ॥ अ० ॥ २ ॥ प्रवर्त्ति नारीको त्यागकें, निवर्त्ति संग लागे ॥ ममता मोह विनासिकें, आतम ग्यानही जागे ॥ अ० ॥ ३ ॥ जीवातम पद साधिके, ब्रह्म अंशमे ल्यावे ॥ सप्त भय निवारिकें, मनवांछित पावे ॥ अ० ॥ ४॥ त्रैसट पुरुष जे होवे, निज पदकुं ध्यावे ॥ ज्ञान शक्ति निज साधके, मुक्तिपद पावे ॥ अ० ॥५॥ केतेक काल संसारमें, सरवेसर कहावे ॥ तीन मुक्ति मुख भोगके, निरवाणको जावे ॥ अ० ॥ ७ ॥ खोजत खोजत मरी गए, पुरुष

मरम न पावे ॥ पूरण कृपा गुरुकी भई, ब्रह्मरुप ही गावे ॥अ०॥७॥

॥ अथ पद ॥

॥ झुलिना ॥

फकीरी खुबही करना, साहिबकी वेठके धरना ॥ फकीरी० ॥ मायाके फंद ते डरना, दिल बीच शंक नहि भरना ॥ प्रभुसें राखजे हुरना, करमके बंध कौ चुरना ॥ फकीरी० ॥ १ ॥ रही जो ग्यानमे मगना, करी जो धाम सौ लगना ॥ जवें काल पाडकें लरना, बिच जु ध्यान सौ धरना ॥ फकीरी० ॥ २ ॥ उपाधिरहित सो रहिना, सत्यासत्य भेह जु लेहिना ॥ मरमकी वाक्य नहि कहिना, जुग्मजु अग्निताहि दहिना ॥ फकीरी० ॥३॥ विषयके वास नहि वसना, सेजही पंचकौ कसना ॥ सिद्धौका लीजीयो सरना, ब्रह्मके रुपको धरना ॥ फकीरी० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कलियुग विषे ॥

यारो कुडो कलियुग आयो, यारो कुडो कलियुग आयो ॥ बाप कहे मुज नांहनी बेटी, दिन दिन मूल सवायो ॥ यारो० ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुंण ए काम भलायो ॥ बोल्ये बंध नही मंत्रीने, गोचर खेत्र खेडायो ॥ यारो० ॥२॥ गुरुने गाली दीए निज चेला, वेद पुराण पढायो ॥ सासु पाट वहु खाटे बेठी, खुखारे नाद सुणायो ॥ यारो० ॥ ३ ॥ एंसी वरसनो हिंडे हुंसे, मुछे हाथ घलायो ॥ पंचतणी साखे परणीने, अबला अरथ गमायो ॥ यारो०॥४॥ योगी जंगम ने मठवासी, भांग्य भखे मदवायो ॥ चोर चरड ने परधन खाइ, साधु जन सीदायो ॥ यारो० ॥ ५ ॥ नीचतणे घर लक्ष्मी लीला, उत्तम कर उडायो ॥ निरधनने बहु बेटाबेटी, धनवंत एके न पायो ॥ यारो० ॥ ६ ॥ न मले बाप संघाते बेटो, घणे मनोरथ जायो ॥ हाथ उपाडे माने ताडे, परणीशुं तेह रमायो॥ यारो०

॥ ७ ॥ हल खेडे ब्राह्मण गो जोडी, निरदय नाक फडायो ॥ मा-बापे बेटी वेचीने, बेटाने परणायो ॥ यारो० ॥ ८ ॥ परहाने घेला कहे बेटा, आपतणे मद वायो ॥ वहूअर सूतां होय हिंडोले, ससरो मूवा धायो ॥ यारो० ॥ ९ ॥ रागतणे वश गुरुने गुरुणी, कामज करे परायो ॥ कांगानीपरे कलहो मांडे, कुलगर नाम धरायो ॥ यारो ॥१०॥ वइयर बार वरसनी बेटो, देखी गोद खेलायो ॥ मा-ग्या मेह न वरसे जेमां, साजन सालो कहायो ॥ यारो० ॥ ११ ॥ कूडा कलियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो ॥ करमचंद्र मुनि कहे जिनवचने रातो, ते दीपे सदाये सवायो ॥ यारो० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ श्री क्षमा उपर सज्झाय ॥

भय भंजण रंजण जगदेव, अरिहंत सेव करो नित मेव ॥ भय नही उपसम पोते जेहने, दुःख केडो न मुंके तेहने ॥ १ ॥ उपसम प-हिरिसनाह शरीर, दुर्जन वचन न लागे तीर ॥ जोइए एक क्षमा मनमांहि, धर्म नहीं गाडरीए प्रवाहि ॥ २ ॥ तप जप संजम पाळे सार, उपसम विणु ते सहुए ठार ॥ कोडी भवे जे तपतपे, ते कर्म उपशम घडी मांही खपे ॥ ३ ॥ जे आपणने गाळज दीए, तेहस्युं पराणे जइ बोळीए ॥ ठोकर साकर सम करी जाण, बुरे बोले तुं रोस म आण ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य न कीधां बहु, न्याय लोक मुज बोले सहु, मारे बांधे मेले घाय, मघले थापे आपणो न्याय ॥५॥ कोइ किवारे कहे कुबोल, वीसारी मुंकीए निटोल ॥ ते वळतो म सं-भारो एक, उपसम संवर धरो विवेक ॥ ६ ॥ आगल दीसे जलती आग, तो तुं पाणी थइ रगे लाग ॥ मननी गांठो छोडी खामीये, मुक्ति तणातो सुख पामीये ॥ ७ ॥ महुडे मिच्छा दुक्कड दीये, मरो फिटो इम चिंते हिये ॥ मर्मने मूषा बोले मूल, खम्यो खमाव्यो हूवे तसु धूळ ॥ ८ ॥ पृथवीनी परे परिसह खमे, रात्रदिवस जिनवचने

रमे ॥ सघला धर्म मांहि उपसम सार, ते भवियण धरजो वारंवार ॥ ९ ॥ एस राखे जेटलो मनमांय, तेटलो धर्म तेहनो जाय ॥ अणखाम्यो जो अलगो रहे, कर्म जोगे ते अतिदुख सहे ॥ १० ॥ मुक्ति तणो जो छे अभिलाख, पारका बोल खमो तुमे लाख ॥ कुगति थकी जे छे उभगो, अंतरंग उपसम करी सगो ॥ ११ ॥ क्षमाएक जो जीवधरे, तो पहिलो मुक्ति अवतरे ॥ विजय भद्र कवियण उच्चरे, गर्भावास ते नहीं अवतरे ॥ १२ ॥ इति.

श्री गजसुकुमालनी सझाय.

(ससनेहा गोयम समय म करिश प्रमाद–ए देशी.)

श्री जगनायक वंदीएरे, बावीसमो जिनराय ॥ द्वारिका नयरी समोसर्यारे, सुरनर सेवे पाय ॥ गुणवंता भवियां वंदो गजसुकुमाळ॥ (ए आंकणी ॥१॥ श्रीजिनवर चरणे नमीरे, गजसुकुमाल कुमार॥भवसायर उतारणीरे, वाणी सुणीरे अपार, गुणवंता०॥२॥ मातपिताने वीनवेरे ॥ लेश्युं संजम भार ॥ माय कहे वछ सांभलोरे, भोगवी ऋद्धिविस्तार ॥ गुणवंतां० ॥३॥ कुंवर कहे मुज मातजीरे, वीनतडी मुज एक ॥ राज रमणी भोग नवनवारे, पाम्या वार अनेक ॥ गुणवंतां० ॥४॥ धन यौवन छे कारमुंरे, कुटुंब सहु परिवार ॥ अनितपणे ए जाणीयेरे, ए संसार असार गुणवंता० ॥ ५ ॥ श्री नेमीश्वर तिर्थंकरुरे, सयल सुख दातार ॥ जन्ममरण दुख छोडवारे, सेव्युं जंगम आधार ॥ गुणवंतां० ॥ ६ ॥ बोले कुंवर चतुर नरुरे, मया करो अमआज ॥ चारित्र लीजे मातजीरे, सीजे सघलां काज ॥ गुणवंतां ॥ ७ ॥ जननी पिता बहु विनवेरे, पहोंत्या जगगुरु पास ॥ सर्व विरति अति आदरीरे, कुंवर अमने उल्लास ॥ गुणवंतां ॥ ८ ॥ आदेश पामी गुरु तणोरे, मुनिवर काउसग्ग लेइ ॥ सोमिल ससरो आवीयोरे, निज नयणे निरखेय ॥ गुणवंतां ॥ ९ ॥ मस्तकः पाल माटी तणीरे,

बांधी अगनि भरेइ ॥ कोपे चडयो, विप्र अतिघणोरे, उपसर्ग घोर करेइ ॥ गुणवंतां ॥ १० ॥ महा मुनिश्वर चिंतवेरे, समतारस भंडार॥ चिहुं गतिमां हुं भम्योरे, एकलडो निरधार ॥ गुणवंतां ॥ ११ ॥ शुक्लध्याने हुवा केवलीरे, पहुंत्या शिवपुर ठाम ॥ सास्वता सुखने अनुभव्यांरे, वीरमुनि करेरे प्रणाम ॥ गुणवंतां ॥ १२ ॥ इति.

दसविध यतिधर्मनी सज्झाय.

(अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी,–ए देशी.)

वीर जिणंदे विधिस्युं भाखियो, दशविध यतिधर्म चंगोजी ॥ उत्तम साधे ते नहु खंडियो, आदरीयो मन रंगोजी ॥ १ ॥ दशविध यति धर्म सुधो पालीए, जे छे जगमांही सारोजी॥ जिनवर भाषित हियडे धारीये, जिम लहीये भवपारोजी ॥ दस० (ए आंकणी) ॥२॥ प्रथम क्षमा जे इणीपेरे आचरो, जेहवी गजसुकुमालोजी ॥ सीस जलंते कोप न आवीयो, ते मुनि नमिये त्रिकालोजी ॥ दस० ॥३॥ मानथकी पुण ज्ञान न नीपजे, जीम बाहुबलरायोजी ॥ मान मुकी जब चाल्यो वांदवा, तब केवलश्री पायोजी ॥ दस० ॥ ४ ॥ माया परिहरी आगम चित्त धरी, मायाथकी जीव दूरोजी ॥ लखणा रुपी ते नहुं परिहरी, रुल्यां संसारमां पूरोजी ॥ दस० ॥ ५ ॥ चउथो लोभ जे मूल संसारनो, तेहने करो परिहारोजी ॥ अष्टम नरपति चाल्यो सातमी, उत्तम गति तेणे हार्योजी ॥ दस० ॥ ६ ॥ तप करीकीजे काया निर्मली, जिम तरिये संसारोजी ॥ वीर जिनेश्वर श्रीमुख उच्चरे, धन्य धन्नो अणगारोजी ॥ दस० ॥७॥ संजम सत्तर भेदे जाणवो, साधु सरव आचारोजी ॥ तेहनो विस्तार बहुलो जाणीये, आदरी लहिये पारोजी ॥ दस० ॥ ८ ॥ सत्य वचन जे मवि जीव हितकारी, तेपर जुवो विचारोजी ॥ वसुराजा छली पडीयो देखतां, उत्तम नही आचारोजी ॥ दस० ॥ ९ ॥ सौचपणे जे स्थानक

आठमो, कर्म न लागे लगारोजी ॥ नव विधि परिग्रह नवमे परिहरि, आदरियो अणगारोजी ॥ दस० ॥ १० ॥ धर्म सर्व मांही ब्रह्म वखाणीये, उत्तम तरुवर होयेजी ॥ नव वाडे जे दृढ करी राखशे, साधु शिरोमणी शोयेजी ॥ दस० ॥ ११ ॥ जीवडा संसारे मनोबल थोडलो, महिला मोहनवेलोजी ॥ यत्न करवारे जिनवर दाखवे, कुसंग विचारी मेलोजी ॥ दस० ॥१२॥ ए विधि भवियण मन शुद्धे धरो, सारो सघळा काजोजी ॥ शीवपुर मारग कीजे ढूकडो, लहीये अनंता राजोजी ॥ दस० ॥ १३ ॥ कलश ॥ दस भेद मुनिना दसमे अंगे, नाम मात्रे उच्चरो ॥ भवोदधि प्रवहण एह अनोपम, पाली करी दुस्तर तरो ॥ श्रीसमरचंद्रसूरीश शीसो, क्षेमराज सदा कहे ॥ जे करे करावे मनम्युं भावे, हेले शीवरमणी लहे ॥ १४ ॥ इति ॥

चेतनाराणीनी सज्झाय.

(भोलीडा हंसारे विषय न राचिये.–ए देशी.)

चेतनाराणीरे रायजीने विनवे, गुणजीव लील विलास ॥ आवा गमणारे नितु नितु मंडिये, केम रहिस्ये घरवास ॥ चेतनाराणीरे रायजीने विनवे, (ए आंकणी ॥१॥ भुली म जाजेरे भमरा तुंबडी, तुंबडी कडवीरे होय ॥ रुपे म राचेरे भमरा भोलिडा, गुणराचे सविकोय ॥ चेतना० ॥ २ ॥ जग आवेरे जोवन गल पडे, नीत उगमतेरे भाण ॥ कलाकुशलेरे कहो केम पुछिये, हाण विहाणेरे हाण ॥ चेतना० ॥३॥ सांजे वसेरे तरुवर पंखिआ, जेहनो जुजुआ वास ॥ कुटंब मिलावोरे सहु ते इम मिल्यो, कांइ करो कुडो अभ्यास ॥ चेतना० ॥ ४ ॥ समता समतारे जैनधर्म पामिओ, पाम्यो (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि सार ॥ समकित रयणरे मांहरे कर चडयो, तो हुं तर्योरे संसार ॥ चेतना० ॥५॥ इति ॥

॥ सज्झाय ॥

(रंगरसिया रंगरसे बन्यो मन० ए देशी.)

काया माया दोनु कारमी, परदेशीरे, कबहु न अपनि होय ॥ मित्र परदेशीरे, इणको गरव न कीजिये । प० । छिनमे दिखावे छेह ॥ मित्र प० ॥ १ ॥ जैसे रंग पतंगको । प० । छिनमें फीको होय, मि० प० । मणि माणक मोति हीरला, प० । त्राण शरण नहो कोय ॥ मि० प० ॥ २ ॥ जिस घर हय गय घूमते । प० । हुंता छत्रीस राग । मि० प० । सोभी घर सुना पड्या । प० । बेसणलाग्या काग ॥ मित्र प० ॥ ३ ॥ मणि माणक मोति पहेरती । प० राजा हरचंद घर नार । मि० प० । एक दिन ऐसा हो गया । प० । परघरकी पनिहार ॥ मित्र प० ॥ ४ ॥ हाथे पर्वत तोडते । प० । करते नरपति सेव । मि० प० । सोभी नर सब चल गये । प० । तेरी क्या गिणती अबेर ॥ मित्र प० ॥ ५ ॥ छोडके मंदिर मालिया । प० । करले जिन मुं राग । मि० प० । वो दिनकी कर सोचना । प० । लगसी इन तन आग । मि० प० ॥ ६ ॥ जुठो सब संसार हे । प० । सुपनाका सो खेल । मि०प० । नगके तास समजके । प० । करले प्रभु मुं मेल ॥ मित्र परदेशीर ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्ट प्रवचन माता सज्झाय ॥

चाले जयणा जोवतां रे, पाले जीव छ काय ॥ निरवद्य वचन मधुर कहे, नितु जाणे धर्म उपाय ॥ १ ॥ नमुं गुरु पाय! रे, जसु सीले निरमल सार, सुहावे काया रे ॥ सुमिति गुप्ति धर्म प्रकार, कहे जिनराया रे ॥ तिण कारण हर्ष अपार ॥ नमुं० ॥ १ ॥ दोष बेंतालीस टालतां रे, सूधो ले आहार ॥ नयणे निरखी पूजतां, लेवे उपगरण प्रकार ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ जल मल्लादिक परठवे रे, सूधो स्थंडिल जोई ॥ शुभ ध्याने मन राखतां, जसु चारित्र निर्मल होइ ॥ नमुं० ॥ ४ ॥ प्रवचन सावद्य न उचरे रे, वचन गुप्ति संभार ॥

काया करणी ते करे, जेहथी हुवे जीव उपगार ॥ नमुं० ॥ ५ ॥ प्रवचन माता आठ ए रे, जे पाले अनुदिन सार ॥ ब्रह्म कहे ते मुनि नमुं, जिम पामुं जैनधर्म सार ॥ नमुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ स्थूलिभद्रनी सज्झाय ॥

बोलोनाजी बोलोनांजी, स्थूलभद्र वालम प्रीतलडो खटके छे बोलो०॥ ए आंकणी ॥ जोगध्यानमें जोडी ताली, हाथ ग्रही जप माली॥ स्थूलभद्र योगीसर आगे, बोले कोस्या बोली ॥ बोलोनांजी० ॥१॥ अणबोले इहां किम सरस्ये, प्रेमनो कांटो खूंचे ॥ आंमण दूमणी देखी मुजने, पाडोसी सहु पूछे ॥ बोलोनांजी० ॥२॥ मा आगळ मोसाळ वखाणो, हुं गुण जाणुं तोहिला ॥ एक घडी रीसावी रहेती, त्यारे थाता दोहिला ॥ बोलोनांजी० ॥ ३ ॥ एक बांभणीने बेटो मोटो, ए साचो किम मीठो ॥ तिम वेस्याने संगे आवी, संजम राखण इठो ॥ बोलोनांजी० ॥ ४ ॥ वाय झकोले डोले दीवो, अगनि ग्री विघराय ॥ तिम नारी संगे व्रत न रहे, आखर हांसी थाय ॥ बोलोनांजो० ॥ ५ ॥ सूका पान सेवाळने खातां, वनवासीया जे योगी ॥ ते पण नारी दर्शन देखी, कामतणा थया भोगी ॥ बोलोनांजो० ॥ ६ ॥ मुनिवरनी मुद्रा लेइ बेठा, वळी खटरस पण खावा ॥ कोळीना टोळामां कुशळे, रतन वांछे लेइ जावा ॥ बोलोनांजी० ॥ ७ ॥ स्थूळभद्र कहे सुणरे कोस्या, कही साची तें वाणी ॥ मा मोसाळ ए पटने अर्थ, तुं मुज मात समाणी ॥ बोलोनांजी० ॥ ८ ॥ कोस्याजी विषयनां वयणां विरूवा, छोडोनांजी छोडोनांजी ॥ आंकणी ॥ घटता बोल कह्या ते सघळा, उथाप्या नवि जाय ॥ नव विधि वाड राखे ते मुनिवर, आगमे कहेवाय ॥ छोडोनांजी० ॥ ९ ॥ चित्र लखित पुतलडी पण, निरखे नही सोभागी ॥ तो किम तिस दिन नारी संगे, राचे वड वैरागी । छोडोनांजी० ॥ १० ॥ स-

रस आहार नवि खाय मुनिवर, तप जप किरिया धारी॥ वन मृगनी परे ममता मुकी, विचरे मुनि ब्रह्मचारी ॥ छोडोनांजी० ॥ ११ ॥ कोइक भावी पदारथथी हुं, गुरु आज्ञा लेइ आव्यो ॥ पण इम न रहेवुं घटे मुनिने, मो मन अरथ ए भाव्यो ॥ छोडोनांजी० ॥ १२ ॥ विषय विपाकतणा फळ जाणी, वेश्या करीए दूरे ॥ सरल स्वभाव सही गण आवे, तरिये भवजळ पूरे ॥ छोडोनांजी० ॥ १३ ॥ मीठी वाणी मुनिवरजीनी, कोस्या ने मने भेदी ॥ शीलव्रत गंगे अजुवाळे, विषयनी वेली छेदी ॥ छोडोनांजी० ॥ १४ ॥ धन्य सकडाळतणो ए नंदन, धन्य लाछलदे माय ॥ श्री श्री महिमा प्रभसूरिनो, भाव नमे मुनि पाय ॥ छोडोनांजी० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ भावना सज्झाय ॥

खलक एक रयणका सुपना, समज देखो कोइ नहि अपना ॥ कठीन एक लोभकी धारा, वस्या सब जात संसारा ॥ खलक० ॥ १ ॥ घडा एक नीरका फुटा, पत्र जेसें डाळसें तुटा ॥ एसी नर जान जिंदगानी, हजु तुं चेत अभिमानी ॥ खलक० ॥ २ ॥ भुल मत देख तन गोरा, आ जगमें जीवना थोरा ॥ सजन सुत मात परिवारा, सबहि उस रोजसे न्यारा ॥ खलक० ॥ ३ ॥ निकल जब जान जावेगा, नहि कोइ काम आवेगा ॥ सदा मत जाण या देहा, लगा जिनराजसें नेहा ॥ खलक० ॥ ४ ॥ तजो मन लोभ चतुराइ, रहो निसंक जगमांहि ॥ कटे या जन्मकी धारा, कहत मुनि वीर मोहे तारा ॥ खलक० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ आत्मोत्कर्षता सज्झाय ॥

(अबधु निरपख विरला कोइ.–ए देशी.)

अबधु आतमशुं लय लागी, मोरी भाग्यदशा अब जागी ॥ अबधु० ॥ ए आंकणी ॥ पूरव पुन्य संयोगे नरभव, पामीने वडभा-

गी ॥ गुरु उपदेश हृदयमें धरके, हठ विवादकुं त्यागी ॥ अवधु० ॥ १ ॥ चरम करण गुण बलवत पामी, मिथ्यात्व ग्रंथी भागी ॥ अपूरव आतम रस हुओ तब, आनंद लहरा लागी ॥ अवधु० ॥२॥ चिदघन आतम असंख्य प्रदेशी, स्वगुणको अनुरागी ॥ नित्यानित्य पर्यव धरमें, जाने सोहे वैरागी ॥ अवधु० ॥ ३ ॥ विभावदशाको त्याग ही करके, स्वभाव दशा मोहे जागी ॥ संवर निर्जरा तत्त्वको भेटत, मुक्तिपुरी हुओ मार्गी ॥ अवधु० ॥ ४ ॥ सम्यक् ज्ञानदशामें आतम, गुरु अनुभवको सागी ॥ सहजकलानिधि रवि उदयो तब मुनिसागर वडभागी ॥ अवधु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जीव शिखामणनी सज्झाय ॥

(समकित ना लयो रे तां ते रुल्यो०—ए देशी.)

हां रे जीव निश्चे हे चवना, तां ते भजले श्री गुरु चरना ॥ ए आंकणी ॥ पंच प्रमादकुं दूरही करके, ज्ञानादिक गुण धरना ॥ तेर काठिया केडे लागा, उसको तो तुं हरना ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ विनय विवेक हृदयमें धरके, अविनयसें तुं डरना ॥ देवगुरु वृद्ध ज्ञानि भक्ति, यथोचित सेवन करना ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ राग द्वेष क्रोधादिक तज कर, भवजलधिसे तिरना ॥ सागरचंद कहे जीव इणविध, शिवसुख वेगे वरना ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ महावीरस्वामिना गणधरोनी मंगलिक सज्झाय ॥

आदि जिणेसर श्री महावीर, अंतराल वळी जे जिन धीर ॥ चउवीशे वंदु निशदीश, त्रिकरण शुद्ध नामी शीश ॥ १ ॥ गौतम गणधर वंदु सदा, सेवकजन टाळे आपदा, अगनिभूति गणधर गुण ठाम, वायुभूति निर्मळ नाण ॥ २ ॥ व्यक्त सुधर्मा गणधर बेव, सुरनर सारे जेहनी सेव ॥ मंडिय मोरियपुत्र वखाण, गुण रयणायर बे बे वखाण ॥ ३ ॥ अकंपित अठम मुनि जपुं, अष्ट कर्म जिम हे-

लां खपुं, अचलभाव अविचळ मन करुं, मेतारज गुण हियडे धरुं ॥ ४ ॥ गणधर अगीयारमो प्रभास, आगम अर्थतणो संवास ॥ चरण करण गुणमणी भंडार, ते मुनिवर त्रिभुवन आधार ॥ ५ ॥ ए श्री वीरतणा गणधार, नितु समरंतां जय जयकार ॥ गणधर गुण जे हियडे वहे, मनवंछित फल सहेजे लहे ॥ ६ ॥ अहनिश गणधरना गुण थुणो, जेहनो महिमा त्रिभुवन घणो ॥ नाम मात्र गणधर ए कह्या, क्षेमराज गुरु वचने लह्या ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमारमुनिनी सज्झाय ॥

वीरजिणंद समोसर्याजी, वंदे मेघकुमार ॥ सुणी देशण वैरागी थयो, ए संसार असार हे माडी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ १ ॥ वच्छ कोणे तुज भोलव्योजी रे, श्रेणिक तात नरेश ॥ कांइ उणोकिण दूहव्योजी रे, हु नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विषम अपार ॥ २ ॥ आदि निगोदें जिहां रुल्योजी, सहीआ दुःख अनंत ॥ सासोश्वास भव पूरीयाजी, ते नवि जाणुं अंत हे माडी ॥ अनु० ॥३ ॥ हवडां तुं बालक अछेजी रे, जोबनभर्यो कुमार ॥ आठ रमणी परणावीयोजी रे, भोगवी सुख अपार रे जाया ॥ संयम० ॥ ४ ॥ जनम मरण नरकांतणाजी, दुःख सह्यां नव जाय ॥ वीरजिणंद वखाणीयाजी, ते मे सुणीया जाय हे माडी ॥ अनु० ॥ ५ ॥ वच्छ काचलीये जीमणोजी, सरस निरस आहार ॥ भुंई पालो नितु हींडणो जीरे, जाणीश तवही सार रे जाया ॥ संयम० ॥ ६ ॥ भमतां जीव संसारमेंजी, धर्म दुहेलो माय ॥ जरा व्यापे जोबन खसेंजी, तव किम करणो जाय हे माडी ॥ अनु० ॥ ७ ॥ शीयाले शी वाजसीजी, उन्हाले लू झाल ॥ वरसाले मेला कापडाजी, जाणीश तब सुकुमाल रे जाया ॥ संयम० ॥ ८ ॥ शिवकुमार क्युं परिहरीजी, भोगवी पांचसें नारी ॥ शालिभद्र जंबू तजीजी, सूता नवि सं-

सार हे माडी ॥ अनु० ॥ ९ ॥ भरजोबन दिक्षा लीयेजी, आर्द्रकुकुमार सुजाण ॥ नंदिषेण आगे नड्योजी, विषय दुर्जय सुत जाण रे जाया ॥ संयम० ॥१०॥ सुबाहु प्रमुख दश ते हुआजी, पांचसें पांचसें नारी ॥ राजऋद्धि रमणी तजीजी, खुता नवि संसार हे माडी ॥ अनु० ॥ ११ ॥ मृगनयणी आठे रडेजी, नयणे नीर प्रवाह ॥ जोबनभरु छोइं नहीजी, मूकीश पूत अनाथ रे जाया ॥ संयम० ॥ १२॥ स्वारथ सहु जग वालहोजी, सगो न किसकोरे कोइ ॥ विषय विषम विष ए कह्याजी, किम भोगवीये सोय हे माडी ॥ अनु० ॥ १३ ॥ हंस तूलिका सेजडीजी, रूप रमण रस भोग ॥ इणमूआनी देहडीजी रे, किम देसे गुरु जोग रे जाया ॥ संयम० ॥१४॥ क्षम क्षम माय पसाय करोजी, में दीन्हो अति दुःख ॥ अनुमति द्यो ज्युं सुखी हुवुंजी, वीर चरणे लेउं दीख हे माडी ॥ अनु० ॥ १५ ॥ तन फाटे लोयण झरेजी, दुःख न सहणो जाय ॥ हुवो सुखी वच्छ त्युं करोजी, दीधी अनुमति माय रे जाया ॥ संयम० ॥ १६ ॥ मणि माणेक मोती तजेजी, तोडे नवसर हार ॥ सुकुलीणी आठे भणेजी, हिव अम्ह किसो शृंगार कुंवरजी ॥ संयम० ॥ १७ ॥ कुमर भणे सुकुलीणीयांजी, अम्ह संसार न काज ॥ नेह तुम्हारो जाणश्युं जी, जो ल्यो संयम आज सलूणी ॥ ए संसार असार ॥ १८ ॥ रथसिबिका सहु सज करीजी, कुंवर धारिणी माय ॥ श्रेणिकराय ओछव करेजी, चारित्र द्यो जिनराय हो स्वामी ॥ए संसार०॥१९॥ तप कर काया सोषवीजी, अनुत्तर गयो विमान ॥ महाविदेहे सीझशेजी, पामी केवलनाण हो स्वामी ॥ ए संसार० ॥ २० ॥ इम वैराग सदा धरीजी, विचरे जे नर नारी ॥ करजोडी पूनो भणेजी, पामे भवनो पार हो स्वामी ॥ ए संसार असार ॥ २१ ॥ इति ॥

--(*)--

॥ अथ अनाथीमुनिनी सझाय ॥

॥ शेत्रुंजाकेरी वाटडी.-ए देशी. ॥

सिद्ध साधु नमशुं मन साचें, कहिश्युं धर्म विचार प्राणीजी ॥ मगधदेशनो राजीओ, श्रेणिकराय साधार ॥ प्राणीजी ॥ १ ॥ गुणजे गाउं श्री साधुना, हीयडे आणंद पुर ॥ प्रा० ॥ चोखे चित्त सेवा करो, पाप पलाओ दूर ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ २ ॥ राय रयवाडी एक दिन जाइ, वनमांहे दीठो साधु ॥ प्रा० ॥ रूपवंत समता गुण पूरो, संतोपे निराबाध ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ३ ॥ वंदे देइ प्रदक्षिणा, पूछे वे करजोड ॥ प्रा० ॥ तरुणपणे चारित्र लीओ, ए तो मोटी खोड ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ४ ॥ चोथे आश्रमे तप आचरे, तें उतावळ कीध ॥ प्रा० ॥ मुनिवर कहे मुज नाथ न कोइ, तेणे मे संयम लीध ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ५ ॥ नाथहोश्युं हुं ताहरो, भोगवी नरनां भोग ॥ प्रा० ॥ माणस जनम दोहेलओ, भोगतणो संजोग ॥प्रा०॥ गु० ॥ ६ ॥ नाथ न कोइ ताहरो, इम भाखे मुनिराय ॥ प्रा० ॥ भूपति अचरज सांभली, मन ससंभ्रम थाय ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥७॥ हाथी घोडा माहरे, अंतेउर परिवार ॥ प्रा० ॥ केम अनाथ कहुं तम्हे, भगवन मृषा निवार ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ८ ॥ तुं न लहे पूर्ण एहनी, साभळ माहरी वात ॥ प्रा० ॥ अथिर रिद्धिनो गरव म आणीश, धर्म सरिसु धरी धात ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ९ ॥ कोसंबी पुरे मुज पिता, बहु धन तसु आवास ॥ प्रा० ॥ पीडा एक दिन उपनी, दाघ शूलनी खास ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ १० ॥ वैद्य घणा तिहां आवीया, करे औषध उपचार ॥ प्रा० ॥ दूर न टाळी को शके, एह अनाथ प्रकार ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ ११ ॥ मात पिता भाइ सगा, बहिन प्रमुख परिवार ॥ प्रा० ॥ दुःखथी कोइ न छोडावे, एह अनाथ प्रकार ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥१२ ॥ तोमें मनमें चिंतव्यो, थाय

प्रभाते समाधि ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ तो निश्चे चारित्र लेउं, टाली मन आबाधि ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ १३ ॥ नाथ थयो चारित्र लही, त्रस थावर जे प्राण ॥ प्रा० ॥ वळी जे मुनिधर्म आदरी, थाये सिथिल अजाण ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ १४ ॥ एह अनाथ विचारवा, तिणि कर्यो धर्म अभ्यास ॥ प्रा० ॥ नाथपणुं जेहथी लहुं, सिवपुरि मंडो वास ॥ प्रा० ॥ गुण० ॥ १५ ॥ इम श्रेणिक समजावीओ. समकित समजे भाय ॥ प्रा० ॥ पाळे संजम साधुजी, ब्रह्मो नमे तसु पाय ॥ प्राणीजी ॥ गुण० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ नववाडनी सझाय ॥

(ज्ञानपद भजीयेरे जगत सुहंकरुं.-ए देशी.)

सोहम सामीरे जंबू प्रते भणे, जिहां पशु पंडग नारी रे ॥ गाते वासो रे वसतिये जीण रहे, तिहां न रहे ब्रह्मचारी रे ॥ १ ॥ सील सोहावो रे साजन सेवियॆ, कीजे धर्म अभ्यासो रे ॥ जग सघळांशुं रे समता आणीए, इम लइ सिद्धि वासो रे ॥ २ ॥ बीजी वाडे रे कुल बल नारीना, जाति रूप न वखाण रे ॥ त्रीजी सय्या एके आसणे, रहिवा भाव न आण रे ॥ सील० ॥ ३ ॥ चंगा अंग उपांग जे नारीना, नयण वयण थण हासो रे ॥ चोथी वाडे रे ए नवि निरखवा, जिणे हुवे विषय विलासो रे ॥ सील० ॥ ४ ॥ परियची भींतरे अंतर नवि वसे, पंचमी वाडे प्रकारो रे ॥ काम अने वळी भोग जे भोगव्या, छे हीये ते न संभारो रे ॥ सील० ॥ ५ ॥ सत्तमीए सरस आहार निवारीए, जिण हुइ विषय विकारो रे ॥ आठमी अति घणो असन न कीजीए, शील पळे इम सारो रे ॥ सील० ॥ ६ ॥ अंग विभूषारे नवमी परिहरो, नाहण विलेवण टाळो रे ॥ दशमें पंचे विषयनी वारता, शीळशुं निरमळ पाळो रे ॥ सी० ॥ ७ ॥ इम दश ठामेरे शील जे को धरे, तसु सुर नर पग लागे रे॥

प्रभो वळी वळी तेहने विनवे, समकित सील वे मागे रे॥ शी०॥८॥

॥ आत्मप्रतेकायाकृतसिद्धा सझाय ॥

॥ पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी.–ए देशी ॥

आगे आ संसारे भमतां, पामी नारी अनंती रे ॥ मुझ सरखी कैये नही लाधी, प्रीतम तें गुणवंती रे ॥ आतमप्रते कहे मानवी काया, हुं छुं अनित्य संसारी रे ॥ मुझ विण अविचल धर्म उपार्जन, मुझ विना नहि मुक्ति सारी रे ॥ आतम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत चक्री वासुबलदेवादि, श्री गणधरसूरिरायरे॥ केवलज्ञान दर्शन सर्व विरति, मुझ विण ते न सधाय रे ॥ आतम० ॥ २ ॥ कादवनी परे अपवित्त मानी, केम उवेखो छो राज रे ॥ कमळतणीपरे आप निर्मळ रही, साधो वंछित काज रे ॥ आतम० ॥ ३ ॥ सुरगो तरुमणीथी हुं अधिकी, सुरवर अहोनिश चाहे रे ॥ विरुआ विषय वंछे मुझथी मुढ, अंते ते पछताय रे ॥ आतम० ॥ ४॥ कांचनस्थाले धूलि ते नाखे, अमृतथी पग धोवे रे ॥ चिंतामणीथी काग उडावे, कोडी कारण क्रोड खोवे रे ॥ आतम० ॥ ५ ॥ तांतणा हेतुये हारने त्रोडे, जेरथी जीवित कामे रे ॥ वंछे राख चंदन बाळीने, मृगजले सुख नवि पामे रे ॥ आतम० ॥ ६ ॥ खींटी काजे प्रासाद ते पाडे, खीला माटे झाझ फोडे रे ॥ चेतन पंच प्रमादे मातो, निज आतम पापे जोडे रे ॥ आतम० ॥ ७ ॥ एह अज्ञानि आतम कारज, समजी निज गुण धारो रे ॥ जड चेतननो विवरण जाणी, जुदा हुं तुं निरधारो रे ॥ आतम० ॥ ८ ॥ मुझथी संजम तप आराधो, विनय वियावच साधो रे ॥ मुझ संयोग उत्तम तें लाधो, सुख साधो निराबाधो रे ॥ आतम० ॥ ९ ॥ वीनति ए अवधारी प्रीतम, ध्यान धरो सुख कंदो रे ॥ वांकुं अक्षर माथे मीडुं, अधविच आधो चांदो रे ॥ आतम० ॥ १० ॥ पंचपदादि निष्पन्न ए अक्षर, थिरतालय ध-

री ध्यावे रे ॥ मानवी देह कहे तें प्रीतम–चेतन, अजरामर पद पावे रे ॥ आत्म० ॥ ११ ॥ नागपुरी वड तपगच्छ दिनमणी, श्री भ्रातृचंद्रसूरिराय रे ॥ तसु पद प्रणमी कहे मुनि सागर, शेविये श्रीगुरु राय रे ॥ आत्म० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ खंधकमुनिनी सझाय ॥

नमो नमो खंधक माहामुनी, खंधक क्षमा भंडार रे ॥ उग्र विहार मुनि विचरता, चारित्र खडगनी धार रे ॥ नमो० ॥ १ ॥ समिति गुप्तिने धारतो, जितशत्रुराजानो नंद रे ॥ धारणी उदरे जनमीयो, दरिसण परमानंद रे ॥ नमो० ॥ २ ॥ धर्मघोष मुनि देशना, पामिरो तेणे प्रतिबोधरे ॥ अनुमति लइ माय तायनी. करमसुं युद्ध थइ योद्धा रे ॥ नमो० ॥३॥ छठ अठम आदे घणा, दुष्कृत तपे तनु शोष रे ॥ रात्र दिवस परिसह सहे, तोपण मन नही रोष रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ दवदाधा पीजडा देहमां, चालतां खडखडे हाड रे ॥ तोपण तप करे आकरां, जाणतो अथिर संसार रे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ इकसमे भगिनी पुरी प्रत्ये, आवीया साधुनी सोय रे ॥ गोख बेठी चिंते बहेनडी, ए मुज बंधव होय रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ बेननें बंधव सांभर्यो, उलट्यो विरह अपार रे ॥ छातडी लागी छे फाटवा, नयणे वहे जेम जलधार रे ॥ नमो० ॥७॥ राय चिंते मनमां इस्युं, ए कोइ नारीनो यार रे ॥ सेवकने कहे साधुनी, ल्यावोजी खाल उतार रे ॥ नमो० ॥ ८ ॥

॥ ढाळ बीजी ॥

राय सेवक कहे साधुने, खालडी जीवथी हणसुं रे ॥ अम ठाकुरनी ए छे आणा, ते अमे आज करसुं रे ॥१॥ अहो अहो साधुजी समता वरिया ॥ ए आंकणी ॥ मुनीवर मनमांहे आणंद्या, परिसह आव्यो जाणी रे ॥ करम खपावा अवसर एहवो, वळी नही

आवे प्राणी रे ॥ अहो० ॥ २ ॥ एतो वळिय सखाइ मळियो, भाइथकी भलेरो रे ॥ प्राणी कायरपणुं परिहरजो, जिम न थाये भव फेरो रे ॥ अहो० ॥ ३ ॥ राय सेवकने तव कहे मुनिवर, कठिन फरस मुझ काया रे ॥ बाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहीये भाया रे ॥ अहो० ॥ ४ ॥ चारे शरणां चतुर करीने, भव चरम आवर्ते रे ॥ शुक्लध्यानसुं तान लगाव्युं, काया वोसीरावीअंते रे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ चडचड चामडी तेह उतारे, मुनि समतारस झीले रे॥ क्षपकश्रेणी आरोहण करीने, करम कठिणने पीले रे ॥ अहो० ॥५॥ चोथुं ध्यान धरतां अंते, केवल लइ मुनि सिद्धा रे ॥ अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सघळां सिद्धा रे ॥ अहो० ॥ ७ ॥ हवे मुहपत्तिने लोहीये खरडी, पंखीडे आमिष जाणी रे ॥ राजद्वारे तेने लइ नाखी, सेवके लीधी ताणी रे ॥ अहो० ॥ ८ ॥ सेवक मुखथी वातज जाणी, बहीने मुहपत्ति दीठी रे ॥ निश्चे भाइ हणियो जाणी, हिये उतरी अंगीठी रे ॥ अहो० ॥ ९ ॥ विरह विलाप करे राय राणी, साधुनी समता वखाणी रे ॥ अथिर संसार सरूप ते जाणी, संजम ले राय राणी रे ॥ अहो० ॥ १० ॥ आलोइ पातक सवि छंडी, करम कठिनने नंदी रे ॥ तप दुकर करी काया गालो, सिवसुख लहे आणंदी रे ॥ अहो० ॥ ११ ॥ भवियण एहवा मुनिवर वंदी, मानवभव फळ लीजे रे ॥ करजोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखीया कीजे रे ॥ अहो० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ पंचाश्रवपरिहार सञ्झाय ॥

सुरतरुनी परे दोहिलो रे, लाधो नरभव सार ॥ आलें मुधा महारिज्यो कांइ, करज्योरे मनमांहि विचार ॥ १ ॥ के चेतोरे चित्ते प्राणी, मत राचो रे रमणीने रंग ॥ किसेवो रे जिनवाणी, तुम्हे रमज्यो रे संयमने संग ॥ २ ॥ किचे० ॥ प्रहिलो समकित सेवियेरे,

जे सवि धर्मह मूल ॥ संयम समकित वाहिरो, जिण भाष्योरे तुस खंडण तूल ॥ ३ । किचे० ॥ अरिहंत देवज आदरोरे, गुरु गिरूआरेश्री साध ॥ धर्म केवलिनो भाषियो, ए समकितरे सुरमणि सम लाध ॥ ४॥ किचे० ॥ तहत्ति करी तुम्हे सद्दहो रे, जे भाख्यो जग नाथ ॥ पांचे आश्रव परिहरो, जिम मिलियेरे शिवपुरने साथ ॥५॥ किचे० ॥जीव जीववुं वंछे सहूरे, मरण न वंछे कोइ ॥ आपणनीपरे पालिवा, तस थावररे हणिवा नवि होइ ॥६॥ किचे० ॥ अजस अकीरति इणिभवेरे, परभवे दुःख अनेक ॥ कूड कहंता पामिये, तिणि आणोरे मनमांही विवेक ॥ ७ ॥ किचे० ॥ चोरी लीजे परतणो रे, तृण तो लागे पाप ॥ धण कंचण किम चोरीये, जिणे बाधेरे भव २ संताप ॥ ८ ॥ किचे० ॥ महिला संगे दूहवेरे, नव लख सूक्षिम जंत ॥ खिण सुखकारणे एतली, किम कीजेरे हिंसा मतिमंत ॥ ९ ॥ किचे० ॥ पुत्र कलत्र हाटनी रे, ममता कीजे फोक ॥ जे परिग्रह जगमांहि छे, ते छंडी रे गया बहुला लोक ॥१०॥ किचे० ॥ मात पिता बंधव सहूरे, पुत्र कलत्र परिवार ॥ स्वारथ लगे सहूये सगो, कोई परभविरे नहु राखणहार ॥ ११ ॥ किचे० ॥ अंजलिना जलनी परेरे, खिण खिण खीजे आउ ॥ जाइति बलियन वाहुडे, जरा घालेरे योवनने घाउ ॥ १२ ॥ किचे० ॥ अलप दिवसनो पाहुणो रे, सहु कोइ इणि संसार ॥ इक दिने ऊठी जाइवुं, कुण जाणेरे केहवे अवतार ॥ १३ ॥ किचे० ॥ व्याधि जरा ज्यां लगे नहि, त्यांलगे धरम संभाल ॥ धार सघण घण वरसतां, कुण समरथरे बांधेलो पाल ॥ १४ ॥ किचे० ॥ क्रोध मान माया तजो रे, लोभ म धरो लगार ॥ समता रस पूरी रहो, वलि दोहिलो रे मानवभव सार ॥ १५ ॥ किचे० ॥ आरंभ छंडी आतमारे, प्रिय संयमरस पूरि ॥ सिद्धिवधूस्युं जिम रमो, इम बोलेरे श्री विजयदेव

सूरि ॥ १६ ॥ किचे० ॥ इति पंचाश्रव परिहार सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ शीलविषे विजयशेठ ने विजयाशेठाणीनी सज्झाय–चोढालियुं ॥

॥ ढाळ १ ली ॥ " चालती देशीमां. "

मइ उठी रे पंचपरमेष्ठी सदा नमुं, मन शुद्धेरे तेहने चरणे तिहुं नमुं ॥ धुरि तेहनेरे अरिहंत सिद्ध वखाणीए, आचारजरे उपाध्याय मने आणिये ॥ त्रूटक ॥ आणिये निज मने भाव शुद्धे, उपाध्याय नमुं रली ॥ जे पनरह करमइ भूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जे कृष्णपक्षी ने सुकलपक्षी, जेणे सील पाल्यो ते सुणो ॥ भर्त्तार अने स्त्री बीहुं तेहनो, चरित संक्षेपे भणो ॥ १ ॥ भरतक्षेत्रमां रे समुद्र तीर दक्षिण दीसे, कच्छदेशमां रे विजयशेठ श्रावक वसे ॥ शीलव्रत रे अंधारा पक्षनो लियो, मनशुद्धेरे एहवो निश्चे मन कियो ॥त्रूटक॥ मन कीयो निश्चे तेणे एहवो, पक्ष अंधारे पालछुं ॥ हुं सील निश्चे ए, विरय विषय सेवा टालसुं ॥ एक अछे सुंदरीरूपि, विजयानाम कन्या तिहां वली ॥ तिण शुकलपक्षिनो नीम लीधो, सुगुरुयोगे मन रली ॥ २ ॥ कर्मयोगेरे मांहोमांहि ते बिहुंतणो, शुभ दिवसरे हुओ विवाह सुहामणो, तव विजयारे, सोल श्रृंगार भला करी ॥ प्रियमंदिररे पहोती उलट मन धरी ॥ त्रूटक ॥ मन धरी उलट अधिक पोहती, प्रिय पासे सुंदरी ॥ ते देखी हरखे शेठ बोले, सील निश्चे संभरी ॥ मुज सील निश्चे पक्ष अंधारे, तेहना दिन तीन छे ॥ तेह नियम पाली शुक्लपक्षे, हुं भोग भोगवस्युं पछे ॥ ३ ॥ इम सांभळी रे, तव विजया विलखी थइ ॥ प्रिय पूछेरे किम चिंता तुजने भइ ॥ तव विजयारे कहे, शुकलपक्षी में लीयो ॥ व्रत चोथोरे बाळपणे निश्चय कियो ॥ त्रूटक ॥ बाळपणे में कियो निश्चय, शुकलपक्षी व्रत पाळस्युं ॥तो उभयपक्षी हुं सील पाळी, नियमदोषने टाळस्युं ॥

तुमे अवर नारी परणीने हिवे, शुकलपक्षी भोगवो ॥ कृष्णपक्षी निज नियम पाळी, अभिग्रह इम जोगवे ॥ ४ ॥ तव बलतुं रे तसु भरतार कहे इस्यु ॥ विषयारसरे कालकूट हुवे जिस्युं ॥ तेह छंडी रे शील सबल आपण पालस्युं ॥ ए वारतारे मात पिताने न जणावस्युं ॥त्रु०॥ मात पिता जब जाणशेतव दीक्षा लेशुं धरी दया ॥ इम अभिग्रह लेइने ते भाव चारित्रीया थया ॥ एकत्र श्य्या सयन करतां खडगधारा व्रत धरे ॥ मन वचनकाया करी शुद्ध शील विवेके आचरे.

॥ ढाळ २ जी राग गोडी, गौतम समुद्रकु० ए देशी. ॥

विमलकेवळी एक चंपानयरीए, ततक्षिण आवी समोसर्या ए ॥ आणी अधिक विवेक श्रावक जिणदास, कहे विनयगुणे परिवर्या ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु मुज घर पारणो, करे मनोरथ तो फलेए, केवळज्ञानी अगाध, कहे श्रावक सुणो ॥ एह वात तो नवि मीलेए ॥ किहां एतला अणगार किहां वळी सुझतो, भातपाणी हुइ एतलुं ए ॥ ७ ॥ तो हवे तेह विचार करो भगवन तुमे, जेम फळ होए मुज तेटलुं ए ॥ छे हवे कच्छदेशे शेठविजय वळी, विजया भारज्यां तसु घरिए ॥ ८ ॥ भावजती गृहवेसि तेहने भोजन दीधे फळ होय तेटलुं ए ॥ जिणदास कहे भगवंत, तेमांहि एटला कुण गुण कुण व्रत छे घणाए ॥ केवळी कहे अनंत, गुण तस सीलना ॥ कृष्ण शुकलपक्षी व्रततणा ए ॥ ९ ॥

॥ ढाळ ३ जी ॥ धमालनी ॥

केवळीने मुखे सांभळी, श्रावक ते जिणदास रे ॥ कच्छदेशे हवे आवीयो, पुरे पुरे निज मन आसरे ॥१०॥ धन धनशील सोहामणो, शील समो नहि कोयरे ॥ सीले देव सानिधि करे, सीलथी शिवसुख होय रे ॥ ११ ॥ धन० ॥ शेठविजय विजया प्रते, भगतेसुं भोजन देइरे ॥ सहस चोराशी साधुने, पारणानो फळ लेइ रे

॥ १२ ॥ धन० ॥ मात पिता जब पूछीयो, तेहनो सील वखाणेरे ॥ केवळीने मुखे जिम सुण्यो, तिम कहे तेह गुण जाणेरे ॥१३॥धन०॥ सहस चोराशीय साधुने, पारणो दीए कोइ भाइरे ॥ कृष्ण शुकलपक्षी दंपती, भोजने ते फल थाइरे ॥ १४ ॥ धन० ॥ मात पीता जब जाणीओ, प्रगटियो सील संबंधरे ॥ शेठविजय विजयावली, चारित्र ले अप्रतिबंधरे ॥ १५ ॥ धन० ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥ माइ धन सुपन-ए देशी ॥

केवळीनी पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मन ममता मुकी, पाळे निरतिचार ॥ १६ ॥ आठ कर्म खपावी, पाम्युं केवळज्ञान ॥ ते मुगते पहुता, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १७ ॥ तेहना गुण गावे, भावे जे नरनार ॥ ते वंछित सुख लहे, पहुचे भवनो पार ॥ १८ ॥ नागोरी वडतपगच्छ, चंदकीरतीसूरिराय ॥ श्रीहरखकीरतिसूरि, जंपे तासु पसाय ॥ १९ ॥ कळश ॥ इम कृष्णपक्षी ने शुकलपक्षे, जेणे शील पाल्यो निरमलो ॥ ते दंपतीना भाव शुद्धे, सदा शुभ गुण संभलो ॥ जिम दुरिअ दोहग दूर जावे, सुख थाये बहु परे ॥ वळी सकल मंगळ मनह वंछित, कुशल नितु घरे अवतरे ॥ २० ॥

॥ इतिश्री शील विषे विजयशेठ ने विजयानी सझाय संपूर्ण ॥

॥ शालभद्रशेठनी सझाय ॥

सालभद्र मोह्यो रे शीवरमणी रसेरे, कामणगारी हो नारी ॥ चितडुं चोर्युंरे एणे धूतारीएरे, तेणे मेली माय विसार ॥ १॥सा०॥ एक दन पूछेरे सालीभद्र साधूजी रे, भाखो भगवन आज ॥ पारणु होशेरे प्रभु केहने घरेरे, बोल्या वीरजिन राज ॥ २॥ सा० ॥ मात तुमारी हाथे पारणुं रे, सांभळी शालीभद्र धन्न ॥ वोरणी पोता भद्रा आगणेरे, तपे करी दुर्बळ तन ॥ ३ ॥ सा० ॥ आंगणे आव्या केणे नवी ओळख्यारे, वळीआ ते अणगार ॥ दहि वहोराव्युं पूरव

भवनी मायडी रे, मन धरी हरख अपार ॥ ४ ॥ सा० ॥ वीरजिन वचने ते जननी सुणी रे, मन धरी अतिही वैराग ॥ गिरि वैभारे अणसण आदर्यु रे, पादोपगमन सार ॥ ५ ॥ सा० ॥ इम सुणीने भद्रा मावडीरे, अने वली बत्रीस नार॥ आव्यां जिहां ते मुनिवर पोढी यारे, विलवे अतीहि संभार ॥ ६ ॥ सा० ॥ भद्रा कहे छे पुत्र तुं मारडुं रे, किहां ते सुख विस्तार ॥ श्रेणीक घरे आव्यो नवी जाणीओ रे, कांइ करो कष्ट अपार ॥ ७ ॥ सा० ॥ भद्रा कहे छे पुत्र सोहामणो रे, मुज जीवन आधार ॥ में पापणीए सुत नवि ओळख्यो रे, सुझतो न दीधो आहार ॥ ८ ॥ सा० ॥ एकवार साहमुं जोने वाहलारे, पूरो अमारी हो आश ॥ अवगुण पाखें कांइ विसारियां रे, तुज विण घडीय छ मास ॥सा० ९॥ इम झुरंती भद्रामायडी रे, अंतेउर परिवार ॥ दुःखभर वंदी बेहु साधुनेरे, आव्यां नगर मोझार ॥ १० ॥ सा० ॥ सरवारथ सिद्धि महा सुख भोगवेरे, सालिभद्र दोये सुसाध ॥ मुनी मेघराज स्तवे गुण तेहनारे, पाम्या सुख निराबाध ॥ ११ ॥ सा० ॥

॥ आठ कर्मनी सझाय ॥

आठ करम जिणवर कह्या, ग्यानावरण विचारो रे ॥ दर्शनावरण वळी मोहनी, वेदनी आयु संभारो रे ॥ १ ॥ विषम करम गति जाणज्यो, धर्म करो मन भावरे ॥ ए भवसमुद्र तरणी जिसें, पामिय प्रवचन नाव रे ॥ वि० ॥ २॥ नाम ने गोत्र अंतरायने, आठ करमतणा नामो रे ॥ एहतणी प्रकृति सहु, एकसो अठावन ठामो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ मोह थिति सागर जाणवी, सित्तर कोडाकोडी रे ॥ सागर तेत्रीस आयुनी, त्रीस आवरण दोय जोडी रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ वेदनीकरम अंतरायनी, त्रीस कोडाकोडी जाणो रे ॥ अंतरमुहुर्त सविनणो, आयु जघन्य मन आणो रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ वीस

कोडाकोडी सागरे, नाम ने गोत्र संभारो रे ॥ आठ मुहुर्त्त जघन्य ए, जाणीय बंध निवारो रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ तिण कारण भवियण सुणो, पाप प्रमाद सवि टाळो रे ॥ ब्रह्म कहे जिन.आणसु, चारित्र मारग पाळो रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री गुरुविरह स्तवना ॥

(मारग देशक मोक्षनो रे–ए देशी.)

प्रह समे प्रणमुं प्रेमथी रे, आचारज भगवान ॥ गोतारथ गणपति गुरुरे, ज्ञान कळा निधानरे ॥ गुरु गुण सांभरे ॥ श्रीभ्रातृचंद्र सूरिरायो रे, मनथी न विसरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ नागपुरी तपगच्छमणी रे, शासननो शिणगार ॥ उपगारी जगजीवनो रे, करुणा रस भंडारो रे ॥ गुरु० ॥ २ ॥ गुणदरियो भरियो गुरुरे, वरियो स्वर्ग आवास ॥ ठरियो निज गुण ज्ञानमां रे, करियो केशनो नाशरे ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ शिरछत्र भव्यजीवनो रे, मुगटमणी शिरताज ॥ नाथ अनाथ करी गयो रे, सकल जैनसमाजरे ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ पंडित प्रवर सूरीश्वरुरे, निरभिमानी दातार ॥ गुणग्राहक गुण गुरु तणो रे, तेवो न कोइ धरनाररे ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ सूरि सानिधे कल्लोळथी रे, करता ज्ञान अभ्यास ॥ समय सार्थ करवा विषेरे, उपदेशे गुरु खासरे ॥ गुरु० ॥ ६ ॥ वच्छलभाव देखाडीनेरे, भावदया धरनार ॥ एहवा गुरु विण कोण हवे रे, करसे मोरी साररे ॥गुरु० ॥ ७ ॥ श्री पार्श्वचंद्रसूरि परेरे, फोरव्यो वीर्य अपार ॥ गोयम सोयमसम गुरुरे, हवे अम कोण आधाररे ॥ गुरु० ॥ ८ ॥ निज शिष्योपर दया धरी रे, द्यो दरिसण सूरींद्र ॥ गुरुपदकजे मन थीर करी रे, भणे मुनि सागरचंद्ररे ॥ गुरु० ॥ ९ ॥

—✻✻✻—

॥ महोपाध्याय मुनि मेघराजजी कृत ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनो लघु रास ॥

श्री वर्द्धमान जिनवरतणो, शिष्य गौतम गणधर सुजस घणो॥ मह उठीने गुरु नाम भणो, जसु समरन लाभ अनंत गुणो ॥ १ ॥ श्री वसुभूति सुपुत्र भलो, प्रसवें सुत सोहे जगत्र तिलो॥ रुद्धि सिद्धि लब्धि निलो, सुख संपत्ति दें गौतम वहिलो ॥ २ ॥ गौतम नामे चडती कळा, कुळ उत्तम घर विलसे कमळा ॥ प्रेमपुरी पुत्रवती महिला, दह दिस वाधे कीरति विमळा ॥ ३ ॥ मांगळ नाद निसांण घरे, भला भूपति उभा सेव करे ॥ पर घळ पुन्य भंडार भरे, गौतम नाम जो सदा समरे ॥ ४ ॥ आंगणे गज हय वर हिंसे, परिवारे करि पूरो दीसे ॥ भोग भला बहु परि विलसे, जो गौतम पय पंकज तूसें ॥ ५ ॥ कुशळ कल्याण आवे ठामे, बळरुप विद्या आदर पामे ॥ सिद्ध हुवे इष्ट सघळे कामे, समरंता गौतम गुरु नामे ॥ ६ ॥ गिरुआ गच्छपति धर्मतणी, मोटी महिमा सूरीसतणी ॥ ते पुण गौतम मंत्र भणी, पुजा पामे छे जगत्र घणी ॥ ७ ॥ दूर देशांतर कांय फिरो, मन आरति चिंता दूर करो ॥ गौतम नाम सदा समरो, मनवंछित आशा सफळ करो ॥ ८ ॥ नरसुर शिवपुर लछि लहे, गौतमनो मनमां ध्यानज वहे ॥ जीवंतां जय जयकार लहे, मेघराज मुनि इम सुजस कहे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री गौतमस्वामिनो लघुरास ॥

श्री वसुभूइ पुत्तो, माया पुहवीय कुच्छि संभुओ ॥ गणधार इंदभूइ, गोयम सुत्तो सुहं दिसउ ॥ १ ॥ रयण विहाणे थयो प्रभात, गौतम समरूं जग विख्यात ॥ ऋद्धि वृद्धि जस्र महिमा घणी, पय सेवे धरणीना धणी ॥ २ ॥ गौतमस्वामी लब्धि निधान, गौतमस्वामी नवे निधान ॥ सुरगोतरु मणि गौतम नाम, सेवो नाम तेवो पं-

रिणाम ॥ ३ ॥ गुव्वर गाम जन्मनो ठाम, गौतमतणा करे गुण ग्राम ॥ सहुअलोय बालापण लगे, भट्ट-चट्ट बहुला ओलगे ॥ ४ ॥ गौतम गिरूओ गुण भंडार, कळा बहोत्तर पाम्यो पार ॥ चऊदह विद्या जिण अभ्यसी, जागत ज्योत जिसि मनवसी ॥ ५ ॥ वीर जिण चउदह सहस शीश, तेह मांहि पहिलो मुजगीश ॥ तसु पय वंदु नाम्रु शीश, आश फळे मननी निसदीस ॥ ६ ॥ गीतारथ पदवीना धणी, सूरीश्वर जसु महिमा घणी ॥ गौतम मंत्र सदा समरंत, तत-खिण विद्या सहु फुरंत ॥ ७ ॥ तनु प्रणमुं वचने संथवुं, एक चित्त चित्ते चिंतवुं ॥ श्री गौतम गणधरनो नाम, महिमा मोटि गुणमणि धाम ॥ ८ ॥ उठंता बेठंता सही, पंथ चालतां हियडे ग्रही ॥ गौतम गौतम कहेतां मुखे, सहुय कार्य ते सीजे सुखे ॥ ९ ॥ गौतम नामे आरत टळे, गौतम नामे वंछित फळे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौ-तम नामे पावे भोग ॥ १० ॥ गौतम नामे नासे व्याध, गौतम नामे परम समाध ॥ गौतम नामे दुर्जन दूर, गौतम नामे हरख भरपूर ॥ ११ ॥ गौतम नामे हय गय वार, गौतम नामे सुलक्खण नार ॥ गौतम नामे सुगुण सुपुत्र, गौतम नामे सहुये मित्र ॥ १२ ॥ गौतम नामे उच्छव होय, गौतम नामे न पराभव कोय ॥ गौतम नामे मं-गल तूर, गौतम नामे क्रूर कपूर ॥ १३ ॥ गौतम नामे जय संग्राम गौतम नामे तूठे स्वाम ॥ गौतम नामे विनय विवेक, गौतम नामे लाभ अनेक ॥ १४ ॥ गौतम नामे न छीपे पाप, गौतम नामे टळे संताप ॥ गौतम नामे खपे सवि कर्म, गौतम नामे होय शिव शर्म ॥ १५ ॥ घणुं घणुं हवे कहिये किश्युं, थोडे तुमे जाणजो इश्युं ॥ गौतम समरंतां जागिये, जे लहिये ते ते मागिये ॥ १६ ॥

॥ काव्य ॥ इच्छं गौतमसंस्तुतिः सुविहिता चंद्रेण पार्श्वादिना, भक्ति स्फीत मुदालयेन गणभृत्पादांबुरुट् चंचुना, ये तस्याः स्मरणं

प्रभातसमये कुर्वंति चंगात्मका, स्ते नित्यं मनसः समीहितफलं सद्यो लभंतेतरां ॥ १७ ॥ इति गौतम लघुरास ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनो मोटो रास प्रारंभ ॥

॥ प्रथम भाषा ॥

वीर जिणेसर चरणकमळ, कमळा कय वासो ॥ पणमवि पभणिशुं सामिसाल, गौयम गुरू रासो ॥ मणतणुं वयण एकंत करवी, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरहखित्त, खोणीतल मंडण ॥ मगधदेश सेणियनरेसर, रिउ दलवल खंडण ॥ धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां जण गुणसज्ज ॥ विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, जसु पुहवी भज्ज ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय पसिद्धो ॥ चउदह विज्झाविविह रूव, नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुणगणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवे रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपंकज जळ पाडिय ॥ तेजें तारा चंद सूर, आकाश भमाडिय ॥ रूवे मयण अनंग करवि, मेल्हिओ निरधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल भीत इत्थ, गुण मेल्हा संचिय ॥ अहवा निश्चे पुव्व जम्म, जिनवर इण अंचिय ॥ रंभा पउमा गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरू कवि न कोइ, जसु आगळ रहिओ ॥ पंचसया गुणपात्र छात्र, हिंडे परवरिओ ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ५ ॥

॥ वस्तुछंद ॥

जंबूदीवह जंबूदीवह, भरह वासंमि, खोणितल मंडणो ॥ मगध देश सेणीयनरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां ॥ विप्पवसे वसुभूइ सुंदर

तसु भज्झा पुहवी सयल ॥ गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्ञानिलओ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ६ ॥

॥ द्वितीय भाषा ॥

चरम जिणेसर केवळनाणी, चउविह संघ पइट्ठा जाणी ॥. पावापुर सामी संपत्तो, चउव्विह देवनिकाये जुत्तो ॥ ८ ॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामति खीजें ॥ त्रिभूवनगुरु सिंहासण बइठो, ततखिण मोह दिगंते पइट्ठो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवदुंदुहि आकाशे वाजी, धरम नरेसर आवीओ गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहा देवा चोशठ इंद्र जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसभर भरी वरसंता, जाजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवी वद्धमाण जिण पाया, सुरनर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहे जळ झलकंता, गयणविमाणे रण रणकंता ॥ पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंडक जिम ते वहता, समवसरण पहोता गहगहता ॥ तो अभिमाने गोयम जंपे, इणि अवसरे कोपे तनु कंपे ॥ १४ ॥ मूढ लोक अजाणिऊं बोले, सुर जाणंता इम. कांइ डोले ॥ मूं आगळ कोइ जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे

॥ वस्तु छंद ॥

॥ वीर जिणवर वीर जिणवर, नाण संपन्न ॥ पावापुरि सुरमहिय, पत्तनाह संसार तारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजे करी दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविओ हुओ सुजय जयकार॥१६

॥ तृतीय भाषा ॥

॥ तो चढिओ घणमाण गजें, इंदभूइ भूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संचरीओ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ १७ ॥ जोजन भूमि

समवसरण, पेखवी प्रथमारंभ तो ॥ दहदिसि देखे विबुधवहू आवंती सुररंभ तो ॥ १८ ॥ मणिमय तोरण दंड धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वयर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ १९ ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो ॥ चिते चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रभुपाय तो ॥ २०॥ सहसकिरण सम वीर जिण, पेखवी रूप विसाळ तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाळ तो ॥ २१ ॥ तों वोलावे त्रिजग गुरु, इंदभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संशय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ २२ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, भगते नामे सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लीओ ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ २३ ॥ बंधव संजम सुणवी करे, अगनिभूइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आभाष करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २४ ॥ इणि अनुक्रमे गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशे भुवन गुरु संजमशुं व्रत बार तो ॥ २५ ॥ बिहुं उपवासे पारणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जयजयकार करंत तो॥२६॥

॥ वस्तु छंद ॥

इंदभूई इंदभूई, चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करी संचरिओ, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्झायमने, गोयम भवह विरत्त ॥ दिक्ख लेइ सिक्खा सहिय, गणहर पय संपत्त ॥ २७ ॥

॥ चतुर्थ भाषा ॥

आज हुओ सुविहाण, आज पंचेलीमां पुण्ण भरो ॥ दीठो गोयम सामि जो निय नयणे अमिय भरो ॥ २८ ॥ सिरि गोयम गणहार, पंचसया मुनि परवरिय ॥ भूमिय करय विहार भवियां जन पडिबोह करे ॥ २९ ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते तेपर उपगार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ ३० ॥ जिहां जिहां दीजे

दिक्ख, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ ३१ ॥ गुरु उपर गुरुभक्ति, सामीय गोयम उपनिय ॥ इण छल केवळनाण, रागज राखे रंगभरें ॥ ३२ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥ ३३ ॥ इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिओ ॥ तापस पन्नरस एण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥३४॥ तव सोसिय निय अंग, अम्हशक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढ काय, गज जिमे दीसे गाजतो ए ॥ ३५ ॥ गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ ३६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंड कलस धज वड सहिय ॥ पेखवी परमाणंद, जिणहर भरहेसर महिअ ॥ ३७ ॥ निय निय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ ३८ ॥ वयरसामीनो जीव, तीर्यक् जृंभक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंडरिक, कंडरीक अध्ययन भणी ॥ ३९ ॥ वळता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ ४० ॥ खीर खंड घृत आणी, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ ४१ ॥ पंचसया शुभ भाव, उज्वल भरिओ खीरमीसे ॥ साचा गुरुसंजोग, कवल ते केवळरूप हुओ ॥ ४२ ॥ पंचसया जिणनाह, समवसरण प्रकार त्रय ॥ पेखवी केवळनाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ ४३ ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती घण मेघ जिम ॥ जिण वाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ४४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

इणे अनुक्रमे इणे अनुक्रमे, नाण संपन्न ॥ पनरह सय परवरिय हरिय दुरिय जिणनाह वंदइ ॥ जाणवी जग गुरुवयण, तिह नाण

अप्पाणनिंदइ ॥ चरम जिणेसर इम भणे, गोयम म करिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही, होसुं तुल्ला बेउ ॥ ४५ ॥

॥ पंचम भाषा ॥

सामिओ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिओ ए भरहवासंमि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघे सहिअ ॥ आवीओ ए नयणाणंद, नयर पावापुरी सुरमहिय ॥ ४६ ॥ पेखीओ ए गोयम सामी, देवसर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिसलादेवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणीय जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम उपनो ए ॥ ४७॥ कुण समो ए सामिय देखी, आप कन्हे हुं टालिओ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालिओ ए ॥ अति भलुं ए कीधेलुं सामी, जाणिउं केवळ मागशे ए ॥ चिंतविउ ए बाळक जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ४८ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भगते भोळो भोळव्यो ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणे लालिओ ए ॥ इण समे ए गोयम चित्त, रागवैरागे वाळिओ ए ॥ ४९ ॥ आवतो ए जो ऊलट, रहेतो रागे साहिओ ए ॥ केवलु ए नाण उप्पन्न. गोयम सहेजे उमाहिओ ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, भवियण भव इम निस्तरो ए ॥ ५० ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ पढम गणहर पढम गणहर, वरस पंचास ॥ गिहिवासे संवसिय तीस वरिस संजम विभूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुयण नमंसिय ॥ रायगिहि नयरी ठविय बाणवइ बरिसाओ ॥ सामी गोयम गुणनिलो, होशे शिवपुर ठाओ ॥ ५१ ॥

॥ षष्ट भाषा ॥

जिम सहकारे कोयल टंहुके, जिम कुसमवने परिमल महके; जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरे लहकें, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सौभाग्यनिधि ॥ ५२ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सूरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ५३ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सूरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहस करो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ५४ ॥ जिम सुरतरु वर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वनकेतकी महमहे ॥ जिम भूमिपति भुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥ ५५ ॥ चिंतामणि कर चढियो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंभ सवि वश्य हुओ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामी गोयम अनुसरो ए ॥ ५६ ॥ पणवक्खर पहेलो भणीजे, मायाबीज श्रवण निसुणीजे, श्रीमती शोभा संभवे ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनयपहु उवज्झाय थुणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ५७ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजे, देश देशांतर कांइ भमीजे, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजे, काज समग्रह ततखण सिजे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ५८ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, "खंभनयर सिरि पास पसाये", किउं कवित उपगार करो ॥ आदेहिं मंगल एह पभणीजे, पर्व महोच्छव पहिलो कीजे, रूद्धि वृद्धि कल्लाण करो ॥ ५९ ॥ धन्य माता जिणे उयरे धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सहगुरु जिणे दि-

क्खिया ए ॥ विनयवंत विद्याभंडार, जस गुण कोइ न लन्भे पार, वड जिम शाखा विस्तरो ए ॥ ६० ॥ गौतमस्वामीनो रास भणीजे, चउव्विह संघ रळियायत कीजे, सकल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन छडो देवरावो, माणक मोतीनो चोक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए ॥ ६१ ॥ तिहां बेसी गुरु देशना देशे, भविक जीवनां काज सरशे, उदयवंत मुनि इम भणे ए ॥ गौतमस्वामीतणो ए रास, भणतां सुणतां लील विलास, सासय सुखनिधि संपजे ए ॥ ६२ ॥ एह रास जे भणे भणावे, वरमंगल लच्छि घर आवे, मन वंछित आशा फळे ए ॥ ६३ ॥

॥ इति श्री गौतमस्वामीनो मोटो रास संपूर्ण ॥



॥ श्री करेमिभंते ॥

करेमि भंते सामाइयं । सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामी । जावज्जीवाए । तिविहं तिविहेणं । मणेणं वायाए काएणं । न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामी अप्पाणं वोसिरामि ॥

श्री इच्छामि ठामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे देवसिओ अइयारो कओ । काइओ वाइओ माणसिओ । उस्सुत्तो । उम्मग्गो । अकप्पो । अकरणिज्जो । दुज्झाओ । दुव्विचिंतिओ । अणायारो । अणिच्छियव्वो । असमण पा-

उग्गो । नाणे तह दंसणे चरित्ते । सुए सामाइए । तिएहं गुत्तीणं । चउएहं कसायाणं । पंचएहं महव्वयाणं । छएहं जीव निकायाणं । सत्तएहं पिंमेसणाणं । अठएहं पवयण माउणं । नवएहं बंज्ञचेरगुत्तीणं । दसविहे समणधम्मे । समणाणं जोगाणं जं खंमियं जं विराहियं । तस्स मिछामि डुक्कमं ॥

॥ श्री श्रमणसूत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि नंते सामाइअं० ॥ चत्तारि मंगलं० ॥ इछामि पमिक्कमिउं जो मे देवसिउ० । इछामि पमिक्कमउं । इरिआवहिआए० । इछामि पमिक्कमिउं ॥ पगामसिज्जाए ॥ निगामसिज्जाए ॥ संथारा उव्वट्टणाए ॥ परिअट्टणाए ॥ आउंटण पसारणाए । छप्पई संघट्टणाए ॥ कुइए । कक्कराइए । छीए । जंन्नाइए ॥ आमोसे ॥ ससरक्कामोसे ॥ आउलमाउलाए ॥ सोअणवत्तिआए ॥ इत्थी विप्परिआसिआए । दिठी विप्परिआसिआए । मणविप्परिआसिआए । पाणनोअणविप्परिआसिआए । जो मे देवसिउ अइआरो कउ । तस्स मिछामि डुक्कमं ॥ पमिक्कमामि गोअरचरिआए ॥ निरकायरिआए ॥ उग्घामकवामउग्घामणाए । साणावछादारा संघट्टणाए ॥ मंमीपाहुमिआए । बलिपाहु-

मिश्राए ॥ ठवणापाहुमिश्राए ॥ संकिए सहसागारिए । श्रणेसणाए पाणेसणाए ॥ पाणनोश्रणाए ॥ बीश्रनोश्रणाए ॥ हरियनोयणाए ॥ पञ्चाकम्मिश्राए ॥ पुरेकम्मिश्राए ॥ श्रदिठ्हमाए । दगसंसठ्हमाए रयसंसठ्हमाए ॥ पारिसाम्णिश्राए ॥ पारिठावणिश्राए ॥ उहासणजिक्काए ॥ जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए ॥ श्रपरिसुद्धं पमिगाहिश्रं ॥ परिभुत्तं वा । जं न परिठविश्रं । तस्स मिह्रामि डुक्कमं ॥ पमिक्कमामि चाउकालं सज्जायस्स श्रकरणयाए ॥ उजउकालं जंमोवगरणस्स श्रप्पमिलेहणाए ॥डुप्पमिलेहणाए॥ श्रप्पमज्जणाए॥ डुप्पमज्जणाए । श्रइक्कमे । वइक्कमे । श्रइयारे॥ श्रणायारे॥ जो मे देवसिउ श्रइयारो कउ ॥ तस्स मिह्रामि डुक्कमं ॥ पमिक्कमामि एगविहे श्रसंजमे ॥१॥ पमिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं । रागबंधणेणं ॥ दोसबंधणेणं ॥ २ ॥ पमिक्कमामि तिहिं दंमेहिं॥ मणदंमेणं । वयदंमेणं । कायदंमेणं ॥ पमिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं ॥ मणगुत्तीए ॥ वयगुत्तीए ॥ कायगुत्तीए ॥ पमिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं ॥ माया सल्लेणं ॥ निश्राण सल्लेणं ॥ मिह्रादंसण सल्लेणं ॥ पमि० ॥ तिहिं गारवेहिं ॥ इड्ढी गारवेणं। रस गारवेणं ॥ साया गारवेणं॥पमि०॥ तिहिं विराहणाहिं ॥ नाण विराहणाए । दंसण विराहणाए । चरित्त वि-

राहणाए ॥ पडि० ॥ चउहिं कसाएहिं ॥ कोह कसा-
एणं ॥ माणकसाएणं ॥ माया कसाएणं ॥ लोह-
कसाएणं ॥ पडि० ॥ चउहिं सन्नाहिं. ॥ आहारस-
न्नाए ॥ भयसन्नाए ॥ मेहुण सन्नाए ॥ परिग्गह-
सन्नाए ॥ प० चउहिं विकहाहिं,-इत्थिकहाए, भत्त-
कहाए, देसकहाए, रायकहाए ॥ पडि० ॥ चउहिं
झाणेहिं ॥ अट्टेणं झाणेणं ॥ रुद्देणं झाणेणं ॥ धम्मेणं
झाणेणं ॥ सुक्केणं झाणेणं ॥ प० ॥ पंचहिं किरिआ-
हिं ॥ काइआए ॥ अहिगरणियाए ॥ पाउसिआए ॥
पारितावणिआए ॥ पाणाइवायकिरिआए ॥ प० ॥
पंचहिं कामगुणेहिं ॥ सद्देणं ॥ रूवेणं ॥ रसेणं ॥ गंधेणं
॥ फासेणं ॥प०॥ पंचहिं महव्वएहिं ॥ पाणाइवायाउ
वेरमणं ॥ मुसावायाउ वेरमणं ॥ अदिन्नादाणाउ वेर-
मणं ॥ मेहुणाउ वेरमणं ॥ परिग्गहाउ वेरमणं ॥प०॥
पंचहिं समिइहिं ॥ इरिआसमिइए ॥ भासासमिइए॥
एसणासमिइए ॥ आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा समिइए॥
उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाण पारिट्ठावणिआ समिइए
॥ प० ॥ छहिं जीवनिकाएहिं ॥ पुढविकाएणं ॥ आ-
उकाएणं ॥ तेउकाएणं ॥ वाउकाएणं ॥ वणस्सइका-
एणं ॥ तसकाएणं ॥ प० ॥ छहिं लेसाहिं ॥ किण्ह
लेसाए ॥ नील लेसाए ॥ काउ लेसाए ॥ तेउ लेसाए

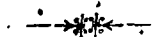
॥ पम्ह लेसाए ॥ सुक्क लेसाए ॥ ५० ॥ सत्तहिं भयठाणेहिं ॥ अठहिं मयठाणेहिं ॥ नवहिं बंभचेर गुत्तीहिं ॥ दसहिं समणधम्मेहिं ॥ इगारसहिं उवासग पमिमाहिं ॥ बारसहिं भिक्खुपमिमाहिं ॥ तेरसहिं किरिआठाणेहिं ॥ चउदसहिं भूअगामेहिं ॥ पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं ॥ सोलसहिं गाहासोलसएहिं ॥ सत्तरसहिं असंजमेहिं ॥ अठारसहिं अबंभेहिं ॥ एगूणवीसाए नायज्झयणेहिं ॥ वीसाए असमाहिठाणेहिं ॥ इक्कवीसाए सबलेहिं ॥ बावीसाए परीसहेहिं ॥ तेवीसाए सुअगमज्झयणेहिं ॥ चउवीसाए देवेहिं ॥ पणवीसाए भावणाहिं ॥ छवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेहिं ॥ सत्तावीसाए अणगार गुणेहिं ॥ अठावीसाए आयारकप्पेहिं ॥ एगुणतीसाए पावसुअ पसंगेहिं ॥ तीसाए मोहणीअठाणेहिं ॥ इगतीसाए सिद्धाइ गुणेहिं ॥ बत्तीसाए जोग संगहेहिं ॥ तित्तीसाए आसायणाएहिं ॥ अरिहंताणं आसायणाए ॥ सिद्धाणं आसायणाए ॥ आयरिआणं आसायणाए ॥ उवज्झायाणं आसायणाए ॥ साहूणं आसायणाए ॥ साहुणीणं आसायणाए ॥ सावयाणं आसायणाए ॥ सावियाणं आसायणाए ॥ देवाणं आसायणाए ॥ देवीणं आसायणाए ॥ इहलोगस्स आसायणाए ॥ परलोगस्स आसायणाए ॥

केवलीणं आसयणाए ॥ केवलि पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए ॥ सदेवमणुआसुरस्सलोगस्स आसायणाए ॥ सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आसायणाए ॥ कालस्स आसायणाए ॥ सुअस्स आसायणाए ॥ सुअदेवयाए आसायणाए ॥ वायणारिअस्स आसायणाए ॥ जं वाइद्धं । वच्चामेलिअं । हीणक्खरं । अच्चक्खरं । पयहीणं । विणयहीणं । घोसहीणं । जोगहीणं । सुट्ठुदिन्नं दुट्ठुपडिच्छिअं । अकाले कओ सज्झाओ । काले न कओ सज्झाओ । असज्झाए सज्झाइअं । सज्झाए न सज्झाइअं । तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ नमो चउवीसाए तित्थयराणं । उसभाइ महावीर पज्जवसाणाणं । इणमेवनिग्गंथं । पावयणं । सच्चं । अणुत्तरं । केवलिअं । पडिपुन्नं । नेआउअं । संसुद्धं । सल्लगत्तणं । सिद्धिमग्गं । मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं । निव्वाणमग्गं । अवितहमविसंधिं । सव्वदुक्खप्पहीण मग्गं । इत्थं ठिआ जीवा सिज्झंति । बुज्झंति । मुच्चंति । परि निव्वायंति । सव्वदुक्खाणमंतं करंति । तं धम्मं सद्दहामि । पत्तिआमि । रोएमि । फासेमि । पालेमि । अणुपालेमि । तं धम्मं सद्दहंतो । पत्तिअंतो । रोअंतो । फासंतो । पालंतो । अणुपालंतो । तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए । विरओमि विराहणाए । असंजमं परिआणामि । संजमं उवसंप-

ज्जामि । अबंनं परिआणामि । बंनं उवसंपज्जामि । अकप्पं परिआणामि । कप्पं उवसंपज्जामि । अनाणं परिआणामि । नाणं उवसंपज्जामि । अकिरिअं परिआणामि । किरिअं उवसंपज्जामि । मिडत्तं परिआणामि । सम्मत्तं उवसंपज्जामि । अबोहिं परिआणामि । बोहिं उवसंपज्जामि । उमग्गं परिआणामि । मग्गं उवसंपज्जामि । जं संजरामि । जं च न संजरामि । जं पडिक्कमामि । जं च न पडिक्कमामि । तस्स सवस्स देवसिअस्स अईआरस्स पडिक्कमामि । समणोहं संजय विरयपडिहयपच्चरकायपावकम्मे । अनिआणो । दिठिसंपन्नो । मायामोसविवज्जिउ अढ्ढाइज्जेसु दीवेसु दोसुसमुद्देसु । पन्नरससु कम्मनूमीसु । जावंत केविसाहू । रयहरण गुञ्चपडिग्गहधारा । पंचमहवयधारा । अढारसहस्स सीलंगरहधारा । अकआयारचरित्ता । ते सबे सिरसा मणसा मन्नएण वंदामि ॥ खामेमि सवजीवे । सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सवनूएसु । वेरं मऊ न केणइ ॥१॥ एवमहं आलोइअ । निंदिअ गरहिअ डुगंडिअ सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो । वंदामि जिणे चउवीसं ॥२॥ इतिश्री यतिप्रतिक्रमणसूत्रं ॥

—※—

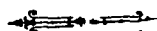
पक्खि अतिचार.



वय ५ समणधम्मे, १० संयम १७ वेयावच्चं १० बंभचेरगुत्तिओ, ए नाणाई तियं ३ तव १२; कोह मिग्गहाइय ४ चरणमेयं ॥ १ ॥

पिंम विसोही ४ समिई ५, भावण १२ पमिमाय १२ इंदियनिरोहो, ५ पमिलेहण २५ गुत्तिओ ३, अभिग्गह ४ चेव करणं तु ॥ २ ॥

एवंकारे चरण सित्तरिना ७० बोल, करणसित्तरिना ७० बोल, १४० बोलने विषे पक्खि दिवसमां जे कांइ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्युं होय ते सवि हुं मन वचन कायाइं करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.



पाक्खिक सूत्रं.



तिथ्थंकरे अ[१]तिथ्थे,[२] अतिथ्थसिद्धेअ तिथ्थसिद्धेअ;
सिद्धे जिणे रिसी मह, रिसी[३] अ[४] नाणं[५] च[६]वंदामि. १
जे अ इमं[७] गुणरयणसायर, मविराहिऊण तिन्नसंसारा;
ते मंगलं [८]करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो. २

१ અ શબ્દોઽતીતાનાગતભેદસંગ્રહાર્થઃ २ તીર્થં. ૩ લબ્ધિયુતાન્ ઋષીન્. ४ ચકારાત્ પરમર્ષીન્ ૫ શ્રુતજ્ઞાનં ૬ ચ શબ્દાત્ દર્શનચારિત્રે અપિ. ७ જિનશાસનં. ८ આત્વાઇત્યર્થઃ.

मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुश्रं च धम्मो श्र;
खंती गुत्ती मुत्ती, श्रज्जवया मद्दवं चेव. ३
लोगंमि संजया [1]जं, करंति परमरिसिदेसिश्र मुश्रारं;
श्रहमवि उवठिउ तं. महव्वय उच्चारणं काउं. ४

[2]सेकिंतं महव्वयउच्चारणा ? महव्वयउच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई नोश्रणवेरमणछठा; तंजहा,–सवाउ पाणाइवायाउ वेरमणं, सवाउ मुसावायाउ वेरमणं, सवाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं, सवाउ मेहुणाउ वेरमणं, सवाउ परिग्गहाउ वेरमणं, सवाउ राईनोश्रणाउ वेरमणं.

तत्थ खलु पढमे नंते महव्वए पाणाइवायाउ वेरमणं. सवं नंते पाणाइवायं पच्चक्कामि; से सुहुमं वा, बायरं वा, तसं वा, थावरं वा, नेव सयं पाणे श्रइवाइज्जा,[3] नेवन्नेहिं पाणे श्रइवायाविज्जा, पाणे श्रइवायंतेवि श्रन्ने न समणु–जाणामि; [4]जावज्जीवाए, तिविहं[5] तिविहेणं–मणेणं वायाए काएणं–न करेमि न कारवेमि करंतंपि श्रन्नं न समणुजाणामि; तस्स[6] नंते पम्किमामि निंदामि[7] गरिहामि[8] श्रप्पाणं वोसिरामि.

---

१ यां. २ અથ. ૩ વિભક્તિવ્યત્યયાત્ અતિપાતયામિ. ૪ યાવજ્જીવં. ૫ ત્રિવિધં પ્રાણાતિપાતં. ૬ તસ્ય અતીતં અવયવં. ૭ આત્મ સાક્ષિકં. ૮ પરસાક્ષિકં.

से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नत्ते; तंजहा,–दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ. दव्वओणं पाणाइवाए–छसु जीवनिकाएसु, खित्तओणं पाणाइवाए सव्वलोए कालओणं पाणाइवाए दिआ वा राओ वा भावओणं पाणाइवाए रागेण[1]वा दोसेण[2]वा.

जं[3]मए, इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स[4] अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स[5] संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स[6] निव्विआरस्स निवित्तलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स[7] अविसंवाइअस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स, पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं, अभिगमेण[8] वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए[9] तिगारवगुरुयाए चउक्कसाओ-

---

१ માંસભક્ષણાદ્યભિપ્રાયેણ. २ શત્રુહનનાદિપરિણામેન ૩ યઃ ૪ નવ બ્રહ્મચર્યગુપ્તિગુપ્તસ્ય, પ્રાકૃતત્વાત્ ગુપ્તિશબ્દ લોપઃ ૫ નિરગ્નિસ્મરણસ્ય. ૬ ગુણગ્રાહિકસ્ય.

૭ સંનિધિર્મોદકાદેઃ સંચયો, હરીતક્યાદેઃ. ૮ વિભક્તિવ્યંત્યયાત્ અભિગમે વા. ૯ ક્રીડતીતિ ક્રીડઃ ક્રીડાકારીત્યર્થઃ તદ્ભાવ સ્તત્તા તયા.

वगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं[1] पडुप्पन्नभारिआए[2] साया सुखमणुपालयंतेणं, इहं वा भवे, अन्नेसु वा भवग्गहणेसु, पाणाइवाओ कओ वा काराविओ वा कीरंतो वा परेहिं समणुन्नाओ, तं निंदामि गरिहामि तिविहं, तिविहेणं--मणेणं वायाए काएणं, अइअं, निंदामि, पडुप्पन्नं[3] संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं. जावज्जीवाए अणिस्सिओहं, नेवसयं पाणे अइवाइज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा, पाणे अइवायंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा; तंजहा,--अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं[4]देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं; एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, [5]दिआ वा राओ वा, एगओ[6] वा परिसागओ वा, सुत्ते वा जागरमाणे वा. एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए[7] सुहे[8] खमे[9] निस्सेसिए[10] आणुगामिए, पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं[11], स-

१ પંચેંદ્રિયાણું ઉપ સામીપ્યેન વશં આયત્તતા, તેનયત્ આર્ત્તં આર્ત્તધ્યાનં તેન ૨ પ્રત્યુત્પન્નભારતયા કર્મગુરૂતયેત્યર્થં. ૩ વર્ત્તમાનસમય ભાવિનં. ૪ સમ્યગ્દૃષ્ટિદેવસાક્ષિકં. ૫ સંયતઃ, વિરક્તઃ વિશેષેણ તપસિ રતઃ), પ્રતિહતં (સ્થિતિહ્રાસાત્ વિનાશિતં) પ્રત્યાખ્યાતં પુનરકરણેન નિરાકૃતં) પાપકર્મ યેન સ તથા, તતો દ્વંદ્વઃ ૬ એકકઃ, એકાકી. ૭ કલ્યાણં ૮ સુખકારિત્વાત્, ૯ યુક્તં. ૧૦ નૈઃશ્રેયસિકં (મોક્ષહેતુત્વાત્) પ્રાકૃતત્વાત્ યકારલોપઃ ૧૧ પંચેંદ્રિયાણાં.

वेसि नूआणं[1], सवेसिं जीवाणं[2], सवेसिं सत्ताणं[3], अडुक्कणयाए असोअणयाए अजूरणयाए[4], अतिप्पणयाए[5], अपीमणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए[6], महन्ने महागुणे महाणुन्नावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पमत्ने; तं[7] डुक्कक्कयाए[8] कम्मक्कयाए मुक्काए बोहिलान्नाए संसारुत्तारणाए[9] त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि.

पढमे नंते महवए उवठिओमि[10]. सवाओ पाणाइवायाओ वेरमणं.

अहावरे डुच्चे नंते महवए सवाओ मुसावायाओ वेरमणं, सवं नंते मुसावायं पच्चक्कामि—से कोहा वा, लोहा वा[11] नया वा. हामा वा[12], नेव सयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसंवयंतेवि अन्न न समणुजाणामि, जाव०[13] वोसिरामि.

से मुसावाए चउविहे पन्नत्ते; तंजहा, दवओ० (४). दवओणं, मुसावाए, सवदवेसु, खित्तओ णं

---

१ भूजलदीना २ दनारकादीना ३ तिर्यग्मनुष्यदीद्रियादीना ४ शरीरजीर्णतानुत्पादनेन ५ अश्रुपातकारणवर्जनेन ६ अनवद्रावणतया ७ यतश्चैव अतस्तत् ८ दुःखक्षयाय ९ मम भविष्यति इति गम्यते. १० ततश्च इतिआरभ्य ममेति २५ ११ क्ष लोभ ग्रहणात मानमाने अपि ज्ञातव्ये १२ भयहास्य ग्रहणात्तद तर्गतपद्मह १३ सक्षेपंयिषात् सर्वोपि सन्नालापको बोध्य

मुसावाए, लोए वा अलोए वा, कालओणं मुसावाए, दिआ वा राओ वा, भावओणं मुसावाए, रागेण वा दोसेण वा.

जं मए० अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओ वा, भासाविओ वा, भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ, तं निंदामि० सव्वं मुसावायं, जावज्जीवाए, अणिस्सिओ हं, नेवसयं मुसं वइज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायाविज्जा. मुसं वयंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा; तंजहा, अरिहंतसक्खियं०; जागरमाणे वा, एस खलु मुसावायस्स वेरमणे हिए०

दुच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं.

अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि;-से गामे वा नगरे वा रन्ने वा, अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थुलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गिन्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिन्हाविज्जा, अदिन्नं गिन्हंतेवि अन्ने न समणुजाणामि, जाव०

से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा, दव्वओ० (४) दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु.

खित्तओ णं० गामे वा नगरे वा रन्ने वा कालओ णं० दिआ वा राओ वा भावओ णं० रागेण वा दोसेण वा

जं मए० अन्नेसु वा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहिअं वा गाहाविअं वा घिप्पंतं वा परेहिं समणुन्नायं तं निं० सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए, अणिस्सिओ हं, नेव सयं अदिन्नं गिन्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिन्हाविज्जा, अदिन्नं गिन्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा; तंजहा, अरिहंत० सुत्ते वा जागरमाणे वा. एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिए सुहे०

तच्चे भंते महव्वए उवठिओमि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं.

अहावरे चउत्थे भंत्ते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि;--से दिव्वं वा माणुस्सं वा तिरिक्खजोणिअं वा, नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणामि. जाव०

से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते; तंजहा,--दव्वओ० (४) दव्वओ णं मेहुणे, रूवेसु वा रूवसहगएसु वा खित्तओ णं मेहुणे, उड्ढलोए वा अहोलोए वा तिरिअलोए वा, कालओ णं मेहुणे, दिआ वा राओ वा, भावओ णं

मेहुणे, रागेण वा दोसेण वा.

जं मए० अन्नेसु वा ज्ञवग्गहणेसु मेहुणं सेविअं वा, सेवाविअं वा, सेविज्जंतं वा परेहिं समणुन्नात्त, तं निं० सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए. अणिस्सिओहं, नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा; तंजहा, अरिहंत० जागरमाणे वा.

एस खलु मेहुणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे०

चउत्थे भंते महव्वए उवठिओमि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं.

अहावरे पंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्कामि; से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थुलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सयं परिग्गहं परिगिन्हिज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिन्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिन्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव०

से परिग्गहे चउविहे पन्नते; तंजहा, दव्वओ० (४) दव्वओ णं परिग्गहे, सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु खित्तओणं परिग्गहे, सव्वलोए कालओणं परिग्गहे, दिआ वा राओ वा, ज्ञावओ णं परिग्गहे, अप्पग्घे वा महग्घे वा, कयेवा विक्कयेवा रागेण वा दोसेण वा.

जं मए० अन्नेसु वा ज्ञवग्गहणेसु परिग्गहो ग-

हिश्रो वा, गाहाविश्रो वा. घिप्पंतो वा परेहिं समणुन्नाश्रो तं निंदामि० सव्वं परिग्गहं जावज्जीवाए. श्रणिस्सिश्रो हं. नेव सयं परिग्गहं परिगिन्हिज्जा. नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिन्हावेज्जा परिग्गहं परिगिन्हंतेवि श्रन्ने न समणुजाणिज्जा तंजहा० जागरमाणे वा. एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए०

पंचमे भंते महव्वए उवठिश्रोमि, सव्वाश्रो परिग्गहाश्रो वेरमणं.

श्रहावरे छठे भंते वए राईभोश्रणाश्रो वेरमणं. सव्वं भंते राइभोश्रणं पच्चक्कामि; से श्रसणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, नेव सयं राइं भुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजाविज्जा, राइं भुंजंतेवि श्रन्ने न समणुजाणामि जाव०

से राईभोश्रणे चउविहे पन्नत्ते; तंजहा, दव्वश्रो० (४). दव्वश्रो एं राईभोश्रणे, श्रसणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा, खित्तश्रोणं राईभोश्रणे, समय खित्ते, कालश्रोणं राईभोश्रणे दिश्रा वा राश्रो वा भावश्रोणं राईभोश्रणे, तित्ते वा कडुए वा कसाए वा श्रंबिले वा महुरेवा लवणे वा, रागेण वा दोसेण वा.

जं मए० इहं वा भवे श्रन्नेसु वा भवग्गहणेसु रा-

इन्नोअणं जुत्तं वा, जुंजाविअं वा, जुंजंतं वा परेहिं समणुन्नात तं निंदामि० सव्वं राईन्नोअणं जावज्जीवाए. अणिस्सिओहं, नेव सयं राइं जुंजिज्जा, नेवन्नेहिं राइं जुंजाविज्जा, राइं जुजंतेवि अन्ने न समणुजाणिज्जा; तंजहा, अरिहंत० सुत्ते वा जागरमाणे वा. एस खलु राईन्नोअणस्स वेरमणे हिए सुहे०

छठे नंते वए उवठिओमि, सव्वाओ राईन्नोअणाओ वेरमणं.

इच्चेआइं पंच महव्वयाइं राईन्नोअणवेरमणछठाइं अत्तहिअठयाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि.

अप्पसत्था य जे जोगा, परिणामा य दारुणा;
पाणाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. १
तिव्वरागा य जा नासा, तिव्वदोसा तहेव य;
मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. २
उग्गहं च अजाइत्ता, अविदिन्नेअ उग्गहे;
अदिन्नादाणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. ३
सद्दा रुवा रसा गंधा, फासाणं पविआरणे;
मेहुणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. ४
इच्छा मुच्छा य गेहीअ, कंखा लोजे अ दारुणे;
परिग्गहस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. ५
अइमत्ते आहारे, सूरखित्तंमि संकिए;

राइन्नोअ्रणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे. ६
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
पढमं वयमणुरक्के, विरयामो पाणाइवायाओ. ७
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
बीअं वयमणुरक्के, विरयामो मुसावायाओ. ८
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
तइअं वयमणुरक्के, विरयामो अदिन्नादाणाओ. ९
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
चउत्थं वयमणुरक्के, विरयामो मेहुणाओ. १०
दंसण नाण चरित्ते. अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
पंचमं वयमणुरक्के, विरयामो परिग्गहाओ. ११
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे;
छट्ठं वयमणुरक्के. विरयामो राइन्नोअणाओ. १२
आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे;
पढमं वयमणुरक्के, विरयामो पाणाइवायाओ. १३
आलय विहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे;
बीअं वयमणुरक्के, विरयामो मुसावायाओ. १४
आलय विहार समिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे;
तइयं वयमणुरक्के, विरयामो अदिन्नादाणाउ. १५
आलयविहार समिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे;

चउत्थं वयमणुरक्के, विरयामो मेहुणाउ. १६
आलय विहार समिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समण धम्मे;
पंचमं वयमणुरक्के, विरयामो परिग्गहाउ. १७
आलय विहार समिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे;
छठ्ठं वयमणुरक्के, विरयामो राईभोयणाउ. १८
आलय विहार समिउ, जुत्तो गुत्तो ठिउ समणधम्मे;
तिविहेण अप्पमत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. १९
सावज्जजोगमेगं, मिच्छत्तं एगमेव अन्नाणं;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २०
अणवज्जजोगमेगं, सम्मत्तं एगमेगनाणं तु;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २१
दो चेव रागदोसे, दुन्निअ झाणाइं अट्टरुद्दाइं;
परिवज्जतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २२
दुविहं चरित्त धम्मं, दुन्निअ झाणाइं धम्मसुक्काइं;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २३
किण्हानीला काउ, तिन्निअ लेसाउ अप्पसथ्थाउ;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २४
तेउ पम्हा सुक्का, तिन्निअ लेसाउ सुप्पसथ्थाउ;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २५
मणसा मणसच्चविउ, वायासच्चेण करण सच्चेण;

तिविहेण वि सच्चवित्त, रक्कामि महव्वए पंच. २६
चत्तारि अ्रुहसिज्जा, चउरो सन्ना तहा कसाया य;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २७
चत्तारि अ सुहसिज्जा, चउविहं संवरं समाहिं च;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २८
पंचेवय कामगुणे, पंचेवय अन्हवे महादोसे;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. २९
पंचिंदिअ संवरणं, तहेव पंच विहमेव सज्जायं;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३०
छज्जीवनिकाय वहं, छप्पिअ न्नासाउ अप्पमत्थाउ;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३१
छविहमज्जिंतरयं, बज्जंपि अ छविहं तवो कम्मं;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३२
सत्त य जयट्ठाणाइं, सत्तविहं चेव नाणविन्नंगं;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३३
पिंमेसण पाणेसण, उग्गहं सत्तिकया महज्झयणा;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३४
अट्ठय मयट्ठाणाइं, अट्ठय कम्माइं तेसिं बंधं च;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३५
अट्ठय पवयण माया, दिट्ठा अट्ठ विह निट्ठिअट्ठेहिं;

उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३६
नव पाव निआणाइं, संसारबाय नवविहा जीवा;
परिवज्जंतो गुत्तो. रक्कामि महव्वए पंच. ३७
नव बंजचेर गुत्तो, ऽुनवविहं बंजचेर परिसुद्धं;
उवसंपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३८
उवघायं च दसविहं, असंवरं तहय संकिलेसं च;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ३९
सच्च समाहिठाणा, दसचेव दसाउं समणधम्मं च;
उव संपन्नो जुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ४०
आसायणं च सव्वं, तिगुण इक्कारसं विवज्जंतो;
परिवज्जंतो गुत्तो, रक्कामि महव्वए पंच. ४१
एवं तिदंम विरउं, तिगरण सुद्धो तिसल्ल निसल्लो;
तिविहेण पमिक्कंतो, रक्कामि महव्वए पंच. ४२

·इच्चेइअं महव्वय उच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं । धिइबलं ववसाउं । साहणठो पाव निवारणं । निकायणा जावविसोही पमागाहरणं । निज्जूहणाराहणा गुणाणं । संवरजोगो पसञ्चयाणो । वउत्तया जुत्तयाय नाणे परमठो उत्तमठो । एसखलु तिञ्चंकरेहिं । रइ राग दोस महणेहिं । देसिउं पवयणस्स सारो । बजीवनीकाय संजमं । उवएसिअं । तेलुक सक्कअंठाणं । अब्जुवगया

नमोत्थु ते । सिद्ध बुद्ध मुत्त निरय । निसंग माणमूरण । गुण रयण सायर । मणंत मप्पमेय्य । नमोत्थु ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स । नमोत्थु ते अरहन्त । नमोत्थु ते भगवन्त । तिकट्टु । एसा खलु । महव्वय उच्चारणाकया ॥

इच्छामो सुत्त कित्तणं काउं । नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइयं । छव्विहमावस्सयं । भगवंतं तंजहा । सामाइयं । १ । चउवीसत्थउ । २ । वंदणयं । ३ । पडिक्कमणं । ४ । काउस्सग्गो । ५ । पच्चखाणं । ६ । सव्वेहिंपि एयंमि । छव्विहे आवस्सए । भगवंते ससुत्ते । सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तीए । ससंगहणिए जे गुणावा भावावा । अरिहंतेहिं भगवंतेहिं । पन्नत्ता वा । परूविया वा । तेभावे सद्दहामो । पत्तियामो । रोएमो । फासेमो । पालेमो । अणुपालेमो । तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं । रोयंतेहिं । फासंतेहिं । पालंतेहिं । अणुपालंतेहिं । अंतोपक्खस्स जं वाइयं । पढियं परियट्टियं । पुच्छियं अणुपेहियं । अणुपालियं । तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए । मुक्खयाए । बोहिलाभाए । संसारुत्तारणयाए । तिकट्टु । उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतोपक्खस्स । जं नवाइयं । नपढियं नपरियट्टियं । नपुच्छि-

श्रं नाणुपेहिश्रं । नाणुपालिश्रं संते बले संते वीरिए । मं-
ते पुरिसक्कारपरिक्कमे । तस्स श्रालोएमो । पमिक्कमामो ।
निंदामो गरिहामो । विउट्टेमो विसोहेमो । अकरणया-
ए अप्नुट्ठेमो । अहारिहं तवोकम्मं । पायच्छित्तं पमिवज्जा-
मो । तस्स मिछामि डुक्कमं ।

नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइश्रं । श्रंग-
बाहिरं उक्कालिश्रं नगवंतं । तंजहा । दसवेश्रालिश्रं ।
कप्पिश्राकप्पिश्रं । चुल्लकप्पसुश्रं । महाकप्पसुश्रं । उ-
ववाइश्रं । रायप्पसेणिश्रं । जीवाजिगमो । पन्नवणा । म-
हापन्नवणा । नंदी । अणुजगदारा‍इं । देविंदथ्थउ । तं-
डुलवेश्रालिश्रं । चंदाविज्जियं । पमायप्पमायं । पोरि-
सिमंमलं । मंमलप्पवेसो । गणिविज्जा । विज्जाचारण-
विणिच्छउ । झाणविजत्ती । मरणविजत्ती । श्रायविसो-
ही (मरणविसोही चरणविसोही) । संलेहणासुश्रं । वी-
यरायसुश्रं । विहारकप्पो । चरणविहि । आउरपच्चक्का-
णं । महापच्चक्काणं । २० । सबेहिंपि एश्रंमि । श्रं-
गबाहिरे उक्कालिए । नगवंते ससुत्ते । सश्रच्छे०

नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइश्रं श्रंग-
बाहिरं कालिश्रं नगवंतं । तंजहा—उत्तरज्झयणाइं । द-
साकप्पो । ववहारो । इसिजासिश्राइं । निसीहं । म-

हानिसीहं । जंबुद्दीवपन्नत्ती । सूरपन्नत्ती । चंदपन्नत्ती । दीवसागरपन्नत्ती । खुड्डियाविमाणपविन्नत्ती । महल्लिआविमाणपविन्नत्ती । अंगचूलिआए । वग्गचूलिआए । विवाहचूलिआए । अरुणोववाए । वरुणोववाए गरुलोववाए । (धरणोववाए) । वेलंधरोववाए । वेसमणोववाए । देविंदोववाए । उठाणसुए । समुठाणसुए । नागपरिआवलिआणं । निरयावलिआणं । कप्पिआणं । कप्पवर्मिमिआणं । पुप्फिआणं । पुप्फचूलिआणं । वण्हीयाणं । वण्हीदसाणं । आसीविसन्नावणाणं । दिठिविसन्नावणाणं । चारणसुमिणन्नावणाणं । महासुमिणन्नावणाणं । तेअग्गिनिसग्गाणं । ३६ । सवेहिंपि एअंमि । अंगबाहिरे कालिए नगवंतेः ससुत्ते०

नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइअं । डुवालसंगं गणिपिमगं । नगवंतं । तंजहा । आयारो । सुअगमो । ठाणं । समवाउ । विवाहपन्नत्ती । नायाधम्मकहाउ । उवासगदसाउ । अंतगमदसाउ । अणुत्तरोववाइअदसाउ । पन्हावागरणं । विवागसुअं दिठिवाउ । १२ । सवेहिंपि एअंमि । डुवालसंगे गणिपिमगे । नगवंते । ससुत्ते । सअत्ने०

नमो तेसिं खमासमणाणं । जेहिं इमं वाइअं डु-

वालसंगं गणिपिम्नगं । नगवंतं तं जहा सम्मं काएणं। फासंति । पालंति । पूरंति । तीरंति । किट्टंति। विसोहंति । सम्मं आणाए आराहंति । अहं च नाराहेमि । तस्स मिन्नामि डुक्कमं ॥

सुअदेवआ नगवई; नाणावरणीअ कम्मसंघायं । तेसिं खवेउ सययं; जेसिं सुअरुायरे नत्ती ॥ १ ॥ इति पाक्षिकसूत्रमसमाप्तं ॥

॥ श्री पाक्षिकखामणा. ॥

इन्नामि खमासमणो पिअं च मे जंने । हठाणं तुठाणं । अप्पायंकाणं । अनग्गजोगाणं । सुसीलाणं। सुव्वयाणं । सायरिअवज्ञायाणं । नाणेणं । दंसणेणं । चरित्तेणं । तवसा । अप्पाणं नावेमाणाणं । बहुसुनेण ने दिवसो पोसहो । पक्को वश्क्कंतो । अन्नो ने कल्लाणेणं । पच्चुवठिउं । सिरसा मणसा । मन्नएण वंदामि ॥ १ ॥ (तुन्नेहिं समं) ॥

इन्नामि खमासमणो । पुव्विं चेइआइं वंदित्ता ! नमंसित्ता । तुन्नएहं पायमूले । विहरमाणेणं । जे केइ बहुदेवसिआ । साहुणो दिठा । समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं डुइज्जमाणा वा । राइणिआ संपुन्नंति । उमराइणिआ वंदंति । अज्जया वंदंति । अज्जियाउ

वंदंति । सावया वंदंति । मावियाउ वंदंति । अहंपि निस्सल्लो । निक्कसाउ । त्तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥ (अहमवि वंदामि चेइआइं) ॥

इच्छामि खमासमणो । अब्भुठिओहं । तुब्भन्हं । संतिअं । अहाकप्पं वा । वत्थं वा । पडिग्गहं वा । कंबलं वा । पायपुछणं वा । रयहरणं वा । अक्खरं वा । पयं वा । गाहं वा । सिलोगं वा । सिलोगद्धं वा । अट्ठं वा । हेउं वा । पसिणं वा । वागरणं वा । तुब्भेहिं चिअत्तेणं दिन्नं । मए । अविणएण । पडिच्छिअं । तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३ ॥ (आयरियसंतिअं) ॥

इच्छामि खमासमणो । अहमपुवाइं । कयाइं च मे । किइकम्माइं । आयारमंतरे । विणयमंतरे । सेहिउ । सेहाविउ । संगहिउ । उवग्गहिउ । सारिउ । वारिउ । चोइउ । पडिचोइउ । चिअत्ता मे । पडिचोयणा । अब्भुठिओहं । तुब्भण्हं तवतेयसिरीए । इमाउ चाउरंत संसारकंताराउ । साहट्टु । नित्थरिस्सामि तिकट्टु । सिरसा मणसा । मत्थएण वंदामि ॥ ४ ॥ (नित्थारगपारगा होह) ॥

उदयशिखरिचन्द्राः सद्‍चोंन्निधिचन्द्राः,
सुकृतकुमुदचन्द्रा ध्वान्तविध्वंसचन्द्राः ।
कुमतनलिनचन्द्राः कीर्तिविख्यातचन्द्राः,
प्रमदजननचन्द्राः श्रेयसे पार्श्वचन्द्राः
श्रेयसे भ्रातृचन्द्राः ॥१॥